स्याद्वाद ज्ञान गंगा
ओ का र ध्व नी
जीव तत्त्व
अजीव तत्त्व
आश्रव तत्त्व
बंध तत्त्व
सम्वर तत्त्व
निर्जरा तत्त्व
मोक्ष तत्त्व
स्याद्वाद वाणी
स्याद् अस्ति स्याद नास्ति. स्याद आस्ती-नास्ति
स्याद् अवक्तव्य
स्याद अस्ति अवक्तव्य
स्याद नास्ति अवक्तव्य
स्याद अस्ति नास्ति अवक्तव्य

श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज

श्री सम्मेदशिखरजी पचकल्याणिकमे भगवानके
मातापिता पदासिन शेठ रिखवलाल एव
उनकी धर्मपत्नी लिलावतीवेन
समस्त परिवार के साथ

श्री सम्मेद शिखर पचकल्याणिकमे भगवाणके मातापिता
पदासिन शेठ रिखवलाल एव उनकी धर्मपत्नी
लिलावेनको आशिर्वाद देते हुअे आचार्य
विमल सागरजी महाराज

♠ || श्री. चंद्रप्रभू जितेंद्राय नमः || ♠

श्री स्याद्वाद ज्ञान गंगा

—: "विमल स्वर्ग सोपान" :—

# आचार्य विमलसागर
# जयंती गौरविका

## द्रव्यदाता

o गुरुभक्त दानवीर o

**शेठ रिखवलाल गुलाबचंद शाह**

नीरा

## अधिष्ठाता

श्री. स्याव्दाद शिक्षण परिषद शाखा नीरा

(जि पुना, महाराष्ट्र)

# स्याद्वाद ज्ञान-गंगा

( आचार्य विमलसागरजी जयंती गौरविका )

**संस्थापक** –

श्री १०५ क्षु सन्मति सागर "ज्ञानानन्दजी" महाराज ।

**प्रकाशक** –

✰ श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद ✰

(केद्रीय प्रधान कार्यालय, सोनागिरजी जि दतिया (म प्र )

**संपादक मंडळ** –

श्री डॉ पन्नालालजी साहित्याचार्य, सागर

श्री डॉ दरबारीलालजी कोठिया, वाराणसी

श्री प श्यामसुन्दरलालजी, फिरोजाबाद

श्री प सुमतिचन्दजी शास्त्री, मुरेना

श्री प श्रीपाल जैन खादीसाहब, भुसावल

श्री धर्मचन्दजी शास्त्री टडा (सागर)

**प्रधान संपादक** –

श्री दर्शनाचार्य गुलाबचद जैन, एम ए ए, जबलपूर

**गौरविका व्यवस्था संपादक** –

श्री रमणीकलाल आर कोठाडिया, नीरा

**मुद्रक** –

प्रमोदकुमार मोहनलाल शहा,

आदर्श मुद्रणालय, वाल्हे –

**सप्टेंबर-ऑक्टोबर अंक**

**मुल्य - सदुपयोग**

# सन्मार्ग दिवाकर

क्षु. सन्मतिसागर

संस्थापक श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद

कितना गौरवानुवित हो रहा हूँ स्याद्वाद ज्ञानगगा का आचार्य विमलसागर जयन्ती विशेषांक की सफलता को देख कर। गंगा लोकोक्ति के अनुसार पतित आत्माओ को पावन बना देती है, परतु वास्तविकता तो यह है कि जबतक यह प्राणी स्याद्वाद ज्ञानगगा मे डुबकी लगा लगा कर स्नान नही करेगा तबतक कितने भी उपाय क्यो न कर ले, पाप मल धोकर आत्मा को शुद्ध नही बना सकता।

यह स्याद्वाद ज्ञान गगा वह गगा है जिसमे नहा नहा कर असख्यात आत्माये कर्ममल को धोकर वास्तविक स्वच्छतारुप ज्ञायक स्वभाव सच्चे सुख को प्राप्त हो चुके है। वर्तमानमे जो निमग्न है वह भी पाऐंगे स्वानुभूति।

जिस प्रकार नारी की शोभा शील से होती है, राजा की शोभा नि पक्ष सत्य से होती है, गृहस्थ की शोभा दान से होती है, साधू की शोभा अनुकूल, प्रतिकूलता मे समता रखने से होती, उसी प्रकार धर्म की शोभा स्याद्वाद ज्ञानगगा से होती है।

अनादि मिथ्या दृप्टि भी अगर स्याद्वाद ज्ञानगगा मे अवगाहन कर ले तो उसका ज्ञानदर्शन चारित्र गुण धुलकर परम पावन बन जाता है, तीनो लोको के मूल्य से भी अधिक मूल्यवान स्वसपदा को प्राप्त कर लेता है।

स्याद्वाद ज्ञानधारा का सरक्षण एव सम्वर्धन अनादि काल मे ऋषि मुनियोके द्वारा होता आया है। इसी सत परपरा मे सन्मार्ग दिवाकर दिगवराचार्य श्री विमल सागरजी महाराज है, आपकी यश

पताखा आकाश मे मडरा रही है। आपकी कीर्ति हर हृदय मे समाई हुई है।

आपका आशिर्वाद लेकर कोई भी कार्य प्रारभ करो सफलता मिलती है। अनुभूत बात है, परिषद के माध्यम से जितने भी कार्य कियै है वह सब आप के आशिर्वाद का प्रताप है। यह स्याद्वाद ज्ञान-गंगा अक्षुण्य रुप से निकल कर भव्यात्माओ को परम पावनता रुप सच्चा सुख कराने मे सहाय्यक हो यह आशिर्वाद लेते हुअे आपकी ६५ जन्मजयन्ती पर यही शुभकामना है कि उत्कृष्ट आयू आप को प्राप्त हो ओर युग युगान्तरो तक आपका नाम अमर रहे।

आपके सघमे ध्यान एव तपौलीना श्री १०८ उपाध्याय भरत सागरजी महाराज है; उनकी जितनी भी प्रशसा की जाय वह थोडी है, आपकी स्याद्वाद रस से ताल प्रवचन शैली अत्यत सरस एव मधुर हे, लेखनी मे भी सबलता है, तत्त्वकी खोजमे प्रखरता है, आपने अपनी स्याद्वाद कमल से "विमल स्वर्ग सौपान" अर्थात आचार्य विमल सागरजी महाराज का जीवन दर्शन प्रारभ से मेरे ऊपर असीम कृपा एव आशिर्वाद है, समय समय पर आपका स्याद्वाद के माध्यम से युवाजागृती कार्य मे सहयोग भी मिलता रहता है।

श्रीमान सेठ रिखवलालजी की दानवीरता, गुरु भक्ति प्रससनीय है, आचार्य विमल सागरजी महाराज के विशाल सघ के नीरा नगर मे चातुर्मास एव जयती अक का श्रेय श्री रिखवलालजी को ही है।

श्री रमणीकलाल कोठाडिया "मत्री श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद शाखा नीरा एव स्थायी कार्यक.रिणी मध्यस्थ केन्द्रीय परिषद" का उत्साह एव कार्यक्षमता सराहनीय है।

निरा नगर समस्त श्रावक श्राविकाएँ अहर्निश देवशास्त्र एव गुरु भक्ति मे, धर्म प्रभावना मे तत्पर है अत सभी धन्यवाद के पात्र है।

पुन. सन्मार्ग दिवाकर विश्ववद्य स्वपर हितेशी ममोपकारी श्री १०८-आचार्य विमल सागरजी महाराज के चरण कमलो मे श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुअे शत-शत वार नतमस्तक नयमन।

☆ म

☆ नो

☆ का

☆ म

☆ ना

## मुनिक : श्री. रिखवलाल गुलाबचन्द शहा

मेरे जीवन को एक अच्छा-सा मोड देनेवाले परमपूज्य आचार्यश्री १०८ विमलसागर महाराज तथा मेरी भेट बडे सौ भाग्यसे मध्यप्रदेशके अशोकनगर मे १९६२ मे हुई। तबसे मेरे मनपर उनके प्रभावी व्यक्तित्वका ऐसा असर हुआ कि उनके दर्शनकी प्यास ही मुझे लगी सालमे एक–दो बार दर्शन करनेके सिवा मेरा मन खुश नही होता। मेरा दिल सश्रद्ध हो चुका, आचार्यजीका आशीर्वाद, तथा किसानोका प्रेम तथा सहकार्य से मेरा वैभव दिन-ब-दिन बढता चला। उसका सद्व्यय दान–धर्मसे कैसा किया जायेगा इसकी राह आचार्यजीने मुझे बतलायी।

निरा मेरी कार्यभूमी उसमे आचार्य श्री का चातुर्मास होवे ऐसी मेरी उत्कट कामना थी, मैं ८ से १० सालो तक उनसे विनती करता रहा, आखिर इस साल मेरे भाग्य खुल गए और आचार्यजी तथा उनके सघकी सेवा करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ।

यह चातुर्मास सफल हो जानेकी दृष्टीसे निरा तथा वाल्हाके श्रावको ने जो सक्रिय सहयोग दिया उनका मैं हृदयसे ऋण मानता हूँ जिन अनेक जाति सम्प्रदायोके किसानोने यह वैभव मुझे प्राप्त कराके आचार्यजी की सेवा करनेका मौका दिया, उनका दिलोजानसे ऋणी हूँ।

इस चौमासमे महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान उत्तर प्रदेश आदि प्रातोके लोगोने धार्मिक भावनासे प्रेरित होकर यहाँ भक्ति आनदमे सराबोर हुए उन सबका मै हार्दिक ऋणी हूँ ।

ऐसे ही अनेक धर्म-कर्म मेरे हाथोसे भविष्यमे होनेके सुअवसर मुझे मिलते रहे और आ विमलसागरजी आ देशभूषणजी, आ निर्मल सागरजी आदिके आशीर्वादसे अनेक धर्म-कार्योकी प्रेरणा मुझे मिलती रहे यह ही मेरी उत्कट इच्छा हैं। वैसेही उपाध्याय भरतसागरजी मुनिसंघके क्षुल्लक तथा माताजी इनके भी आशिष मुझे हमेशा मिलते रहे ऐशी महावीर भगवानके चरणोमे प्रार्थना ।

परमपूज्य आचार्यश्री जीकी ६५ वी जयतीके शुभावसरपर मुझे सपारिवार शरीक होने का सौभाग्य मिला इसमे मै खुदका भाग्योदय समजता हूँ ।

आचार्यश्री विमलसागरजी दीर्घायु होवे और धर्म-प्रभावना करके जैन धर्म की कीर्ति बढाते रहे इसके अलावा क्या मॉगू भगवान महावीरसे ?

मुझे चाहिए केवल उनका आर्शीवाद, और प्रेरणा ।

★

महानुभाओ परम सौभाग्य की बात है कि इस वर्ष हमारी छोटीसी नीरा नगरीको सभार्ग दिवाकर आचार्य विमलसागरजी महाराज कि चातुर्मास एव सेवा भक्तिका अवसर प्राप्त हुआ है। यह सर्व श्रीमानशेठ रिखबलालजी म्हसवडकर कि अत पुरूषार्थ एव दानविरता का ही फल है।

विश्ववद्य आचार्य विमल सागरजी महाराज की ६५ वी जन्म जयतीके उपलक्षमे श्री स्याद्वाद परिषद द्वारा "स्याद्वाद ज्ञान गगा-आचार्य विमलसागरजी जयती अक" श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज एव श्री १०५ क्षु सन्मतीसागर की प्रेरणासे प्रकाशीत करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका श्रेय श्री रिखबलालजी शाह म्हसवडकर को ही है।

जयंती अंकमे आचार्य श्रीकी जीवन क्राती उपाध्याय भरतसागरजी महाराज की कलमसे "विमल स्वर्ग सोपान" के नामसे प्रथम परिच्छेदणे प्रस्तुत है।

द्वितिय परिच्छदमे श्री रिखवलालजी शाह म्हसवडकर द्वारा कि गयी हुयी धर्मप्रभावना एव उदारताका दिग्दर्शन किया गया है। त्रितिय परिच्छेदमे पूज्यमुनिराज आर्यिका माताजी क्षुल्लकजी महाराज, एव त्यागी व्रतोयो को साथ देशकें मान्य अनेक विद्वानोके स्याद्वाद, अनेकात, अहिसा आदी सिद्धातीक विपयोपर लेख प्रस्तुत है चतुर्थ

परिच्छेदमे आचार्य विमल सागरजी महाराज से सबधीत सस्मरण एव आचार्य श्री को शुभकामनाएँ साधुसत, त्यागी व्रती विद्वान, श्रीमान आदि द्वारा सबोधी गयी है। पचम परिच्छेदमे श्री स्याद्वाद शिक्षण परिपदके उदभवके विषयमे तथा कार्यक्षेत्रके विषयमे सक्षिप्त जानकारी एव परिषदके उद्देश जनजनमे पहुँचाने की दृष्टीसे परिषदका विधान भी दिया गया है।

अनेक विद्वानो के द्वारा प्रेशीत लेख एव शुभकामना प्राप्त हुई समयपर न आनेसे कुछ लेख एव शुभकामना छापनेमे असमर्थ रहे। अत. उन लेखोको अगले अकमे क्रमसह प्रकाशित करनेका प्रयत्न करेगे।

हमारी मातृभाषा मराठी होनेसे और समयाभाव होनेसे अकमे गलतियाँ रहना स्वाभाविक है। अत विद्युतजन सुधाकर करे।

अल्प समयमेही वाल्हेकर, नानचद रावजी शहा की 'आदर्श मुद्रणालय' से प्रमोदकुमार मोहनलाल शहा प्रिंटीग प्रेस वालोने यह अक छापकर समयपर दिया है। वह भी धन्यवाद के पात्र है। समस्त सहयोगी भाईयोका एव उपाध्याय महाराजजी क्षु महाराज एव श्री रिखबलालजी का त्रै विशेष आभार मानता हुँ। जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शनसे मुझे चातुर्मास व्यवस्था आकार्य श्री की जयती, एव सम्यक-ज्ञान के प्रसारमे सफलता मिल रही है।

प पू प्रातःस्मरणीय सन्मार्ग दिवाकर श्री १०८ आचार्य विमल सागरजी महाराजसे "मुझसे समाजसेवा-देशसेवा एव सम्यक ज्ञान का प्रसार होता रहे"। यह आशिर्वाद चाहते हुए यही शुभकामना करता हुँ आचार्य श्री की ६५ वी जन्मजयती पर कि आचार्य श्री दीर्घायुप्राप्त कर चिरकालतक धर्मप्रभावना करते हुए भव्य जिवोको मोक्षमार्ग पर चलनेका उपदेश देते रहे।

अक व्यवस्था सपादक

**श्री रमणिकलाल रामचंद्र कोठडिया**

मत्री स्याद्वाद शिक्षण परिपद शाखा नीरा

# मनोभावना

## श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज

यद्यपि आचार्य श्री की जीवन गाथा को मैं लिखने मे समर्थ नही था। फिर भी भक्तिवशात मैने हठात् यथाशक्ति इस गाथा को लिखने का प्रयत्न किया है। क्यो कि गुरु ओ की गौरव गरिमा वचनातीत हैं कहा भी है कि

" गुरु की महिमा वरणी न जाय,
गुरु नाम जपो मन वचन काय "।

जब गुरु ओ के गुणो को वचन से नही कहा जा सकता है तब मेरी यह जड कलम उन गुणो को लिपिवद्ध करणे मे समर्थ हो सकती है ? कभी नही। जैसे एक कवि ने ठीक ही कहा है कि

" पृथ्वी तो कागज करु,
लेखनी सब वन राय।
सप्त समंदर स्याही करु,
गुरु गुण लिखा न जाय "।

यदि समस्त पृथ्वी तल का कागज किया जाय, समस्त वनो की लेखनी बनाई जाय, और सात समुद्रो के जल की स्याही बनाई जाय फिर भी गुरुओं के गुण रूपी रत्नों की विवेचना नही की जा सकती, कारण ये समस्त वस्तुएं तो परिमित है कोई परिमाण नही है।

मैंने इससे पूर्व भी आचार्य श्री के जीवन सबंधित एक संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत की थी। वह जीवन झांकी भक्तजनो के हृदय को आनन्द

दायिनी एव रोचक रही। अत दिनोदिन इसकी माग बढती गई। पुस्तक की बढती हुई माग को देखकर हमने विचार किया कि आचार्य श्री की जीवन रेखा अब इस प्रकार नया रूप नया मोड देकर प्रस्तुत किया जाना चाहिये, जिससे यह प्रत्येक युवा युवतियो, प्रौढ वर्ग तथा जैन ही नही अखिल जनमानस के लिये प्रेरणास्पद बने तथा प्रत्येक की उन्नती का कारण साधन बने। इसी मनोभावना को लेकर मैने श्री १०५ क्षु 'सन्मीतसागरजी एव श्री १०५ क्षु अनगमति माताजी से विचार विमर्श किया।

विचार विमर्श के उपरान्त हमने यह निर्णय लिया कि आचार्यश्री की बाल्यपन एव प्रत्येक इनके जीवन की प्रत्येक घटना को इस प्रकार क्रमबद्ध प्रस्तुत किया जाय कि आबाल-वृद्ध सभी अपने हृदय पटलपर इसे अकित कर अपने जीवन को नया मोड देने मे समर्थ हो सके। इसी भावना को लेकर मैने यह जीवन चरित्र लिखना प्रारभ किया। आचार्य श्री की भक्ति शक्ति प्राप्त हुई एव श्री १०५ श्री क्षु अनगमती माताजी का सहयोग प्राप्त हुआ जिससे मै यह आचार्य श्री का सक्षिप्त जीवन चारित्र पूर्ण कर सका।

जो अन्य इस चरित्र को पढेगा, सुनेगा व मनन करेगा वह आचार्य श्री के समान पद को प्राप्त कर ससार के समस्त सुखो को योग कर श्वास्वत सुख मोक्ष को प्राप्त करेगा।

आचार्य श्री के चरणो मे मेरा शत् शत् बार नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

लेखक—

श्री क्षुल्लिका १०५

**अनंगमतीजी**

प्रातः का झुर पुट था,
उषा का सिन्दूर था।
गगन का अम्बर फटा,
पृथ्वी ने पट खोला।
तभी भारत का विधाता युग का अवतार हुआ ॥१॥
मा का लाडला
पिता का प्यारा
गगन का सितारा
युग का विधाता नेमीचद अवतार हुआ ॥२॥
बालपन से वैरागी था,
ब्रम्हशील व्रत धारी था।
दूज का चाद खिला
अब पूनम का चाद हुआ
युग का विधाता नेमीचद अवतार हुआ ॥३॥
महावीर कीर्ति का प्यारा बना,
सरस्वती का दुलारा वना।
वह तेज पुन्ज अब
युग का विधाता भारत का रत्न विमल सागर हुआ ॥४॥
क्षमा का भूप यह, मार्दव स्तूप है
आर्जव का कूप यह शौच रस भूप है।

सत्य का शिरोमणी, संयम का रुप है।
तप मे लीन यह, त्याग का स्वामी हैं।
आकिंचन्य पूर्ण यह, ब्रम्ह्चर्य का स्वामी हुआ।
युग का विधाता भारत रत्न विमलसागर हुआ ॥५॥
वात्सल्य का राजा
युग का विधाता
दीनो का दाता, दुखियो का स्वामी
भारत भू का भाल यह
युग का विधाता विमलसागर हुआ ॥६॥
यह भारत मा का सपूत
युग का दूत
विश्व का सितारा
युगो युगो तक चमकता रहे
कर वन्ध वन्दन है हामरा ॥७॥

संदेश

भारत के उपराष्ट्रपति के सचिव, नई देहली

प्रिय महोदय, ४ सितम्बर १९८०

आपका पत्र दिनांक १५ अगस्त १९८० का उप-राष्ट्रपति जी के नाम प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

उप-राष्ट्रपति जी को यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद की निरा शाखा द्वारा आचार्य श्री विमलसागर का ६५ वा जन्म-जयन्ती समारोह दिनांक २९ सितम्बर १९८० से दिनांक १ अक्तूबर, १९८० तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 'श्री स्याद्वाद ज्ञानगंगा' नामक पत्रिका का एक विशेषांक भी प्रकाशित होगा। इसकी सफलता के लिए वह अपनी शुभ कामनाए भेजते है।

आपका,

(अमरनाथ ओबेराय)

कृषि मन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली–११०००१

८ सितम्बर ११८०

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय परिषद की ओर से श्री विमलसागरजी जन्म–जयन्ती के शुभ अवसर पर एक विशेषांक वा प्रकाशन किया जा रहा है: उक्त विशेपांक के प्रकाशन से नागरिकों मे देश प्रेम की भावना तथा रचनात्मक कार्यो मे सहायता मिलेगी।

मै विशेषांक के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

आपका,

( राव बीरेन्द्र सिंह)

राज्य मंत्री
अन्न व नागरी पुरवठा, पशुसवर्धन व
मत्स्यव्यवसाय व दुग्धविकास
महाराष्ट्र शासन
मंत्रालय, मुंबई ४०० ०३२
१२ सप्टेंबर ८०

---

श्री. स्याव्दाद शिक्षण परिषद, निरा शाखा आचार्य विमलसागरजी महाराज की ६५ वी जन्म जयंती २९ सितम्बर १९८० के अवसर पर एक विशेषांक प्रकाशित कर रही है, यह ज्ञात होकर प्रसन्नता हुओ ।

संपूर्ण भारत ने महात्मा गांधीजी की सत्य व अहिंसा की प्रणाली को स्वीकार कर लिया है। विश्वबंधुत्व की भावना निर्माण करने के लिए ऐसीं संस्थाए बहुत ही काम कर सकती है ।

अन्य राज्योंकी तरह महाराष्ट्र की निरा शाखा व्दारा भी अहिसा धर्म के प्रचार एवं प्रचार की दिशा मे जो महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है वह सदा ही सराहनीय है ।

इस अवमरपर आनेवाले महान आचाओं के आदर्श विचार सुनने से आपकी परिषद को सतत प्रोत्साहन मिलते रहेगा ।

इस विशषांक को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ /

( दि शि. कमळे)

राज्यमंत्री शिक्षण, उर्जा, ग्रामविकास
महाराष्ट्र शासन मंत्रालय, मुबई ४०००३२
१० सितम्बर १९८०

सादर वन्दे

आपका दि. १५ अगस्त १९८० का पत्रप्राप्त हुआ. प्रसन्नता की बात है कि श्री स्याव्दाद शिक्षण परिषद की निरा (पुणे) मे आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज की जन्म जयंती मनाई जा रही है और इस शुभ अवसरपर जन्म जयंती विशेषांक भीप्रकाशित किया जा रहा है. भारतकी इस पुण्य भूमि ने अनेक महात्माओ संन्यासिओ और प्रकाण्ड विव्दानोको जन्म दिया है, जिन्होने जनकल्याणार्थ अपना सर्वस्व कर दिया. हमे चाहिए कि हम उनके आदर्शो का पालन करे
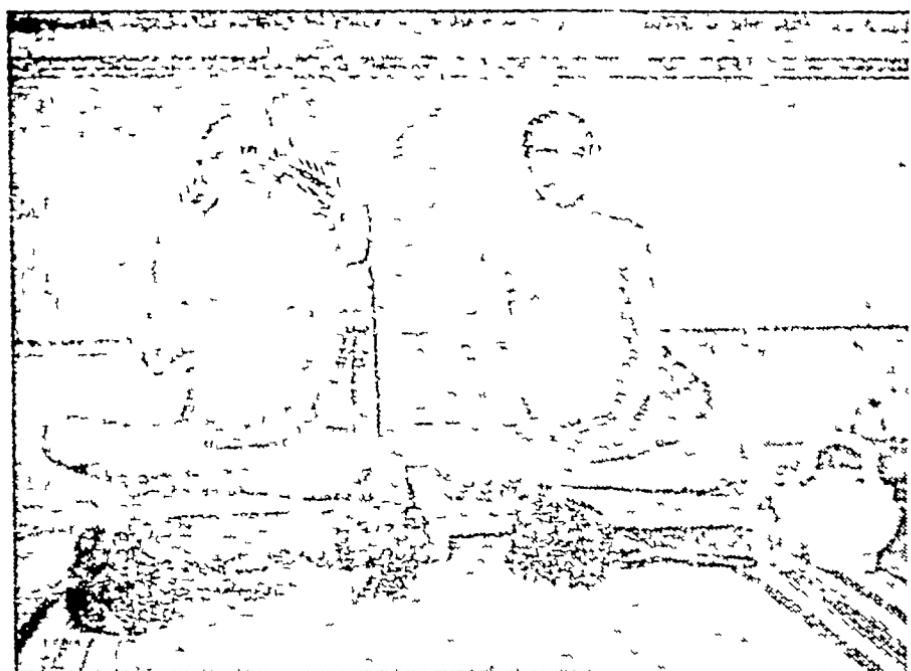
समारोह की सफलता चाहता हूँ।

भवदीय

(सु ब देवतळे)
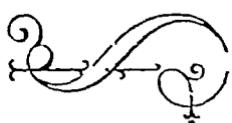
श्री आचार्य विमलसागर महाराज की ६५ वी जन्म जयंती समारोह के अवसर पर श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद निरा शाखा द्वारा प्रकाशित होनेवाले विशेषांक के लिए और आचार्य श्री विमलसागर महाराज के लिए शुभकामना भेजते है।

शरदचन्द्रजी पवार
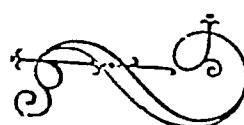
श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज एवं
श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज

सन्मार्ग दिवाकर श्री १०८ आचार्य
विमलसागरजी प्रायश्चित
देते हुओ

श्री १०५ क्षुलक सन्मति सागरजी महाराज

सम्यग्ज्ञानकी उपयोगिता एव स्याद्वाद

की महिमा वताते हुये

श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराजसे प्रायश्चित्त मांगते हुये शिष्यगण
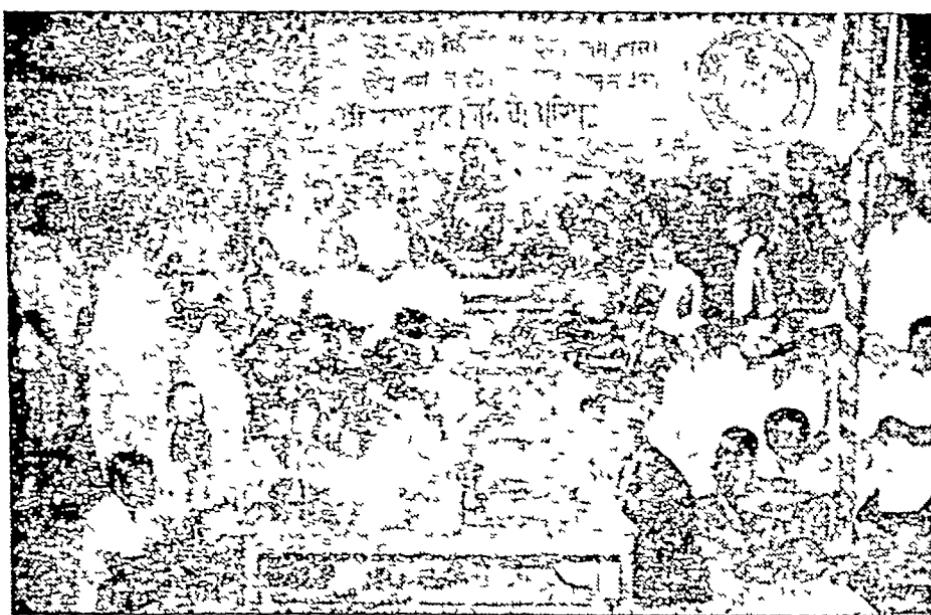
ससघ श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी
महाराज एव भक्तगण
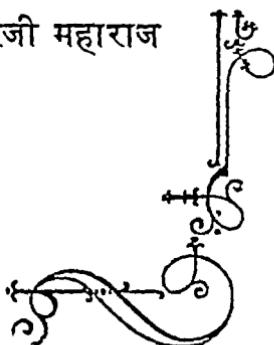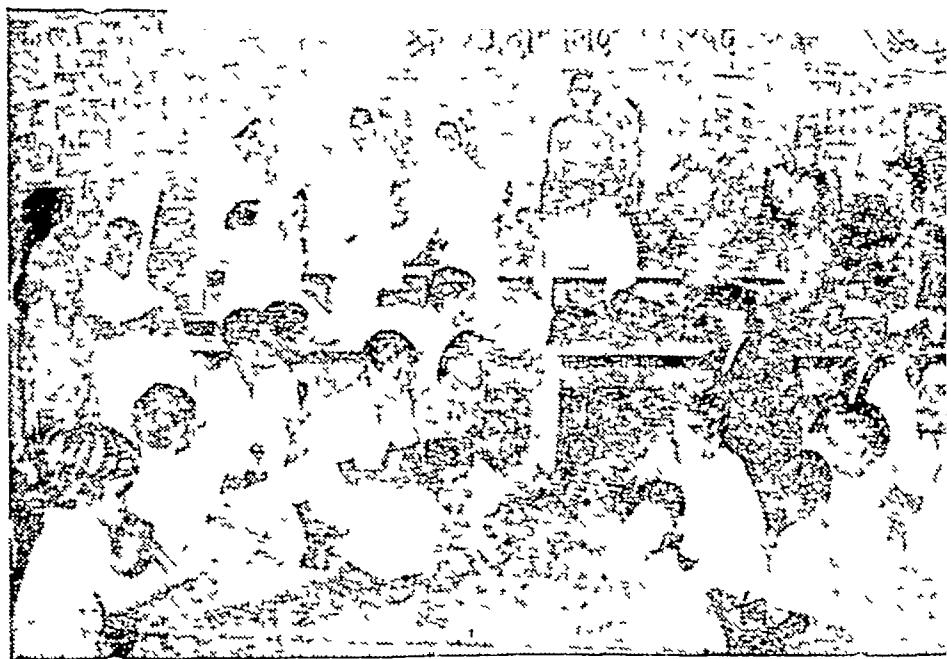
सन्मार्ग दिवाकार १०८ आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज की वदना करते हुये समस्थ

शिक्षणगण

श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज
शिष्यसमुह को प्रशिक्षण देते हुअे

ध्यान करते हुअे श्री १०८

उमाध्याय भरतसासगरजी महालाज

व शिप्यमडळी
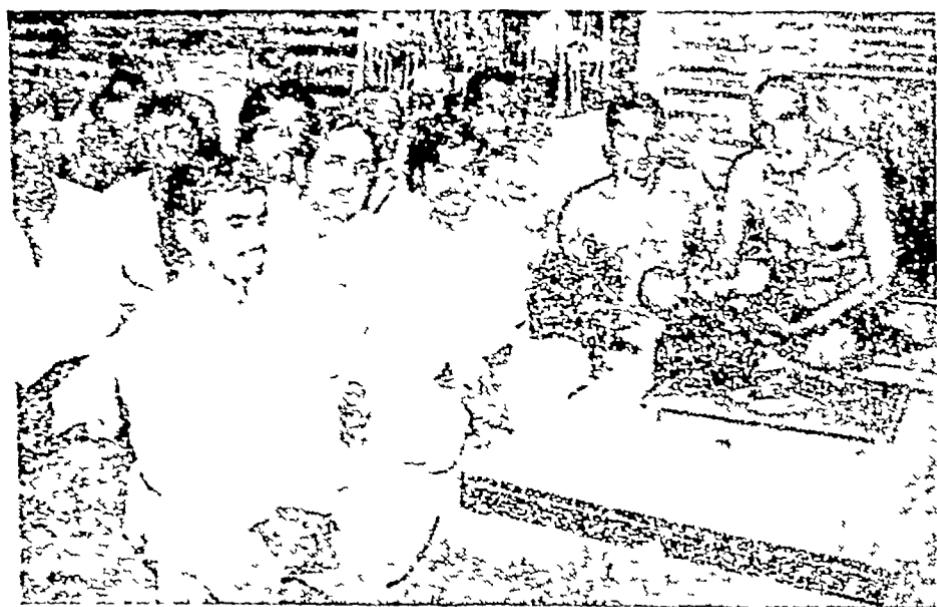
सन्मार्ग दिवाकर श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज की वैयावृत्ती करते हुए श्री १०५ क्षु सन्मतीसागरजी महाराज

मध्यप्रदेश के राज्यपाल महोदय एव उनकी
धर्मपत्नी को आशिर्वाद देते हुए श्री १०८ आचार्य
विमलसागरजी महाराज एव सुमतीसागरजी महाराज
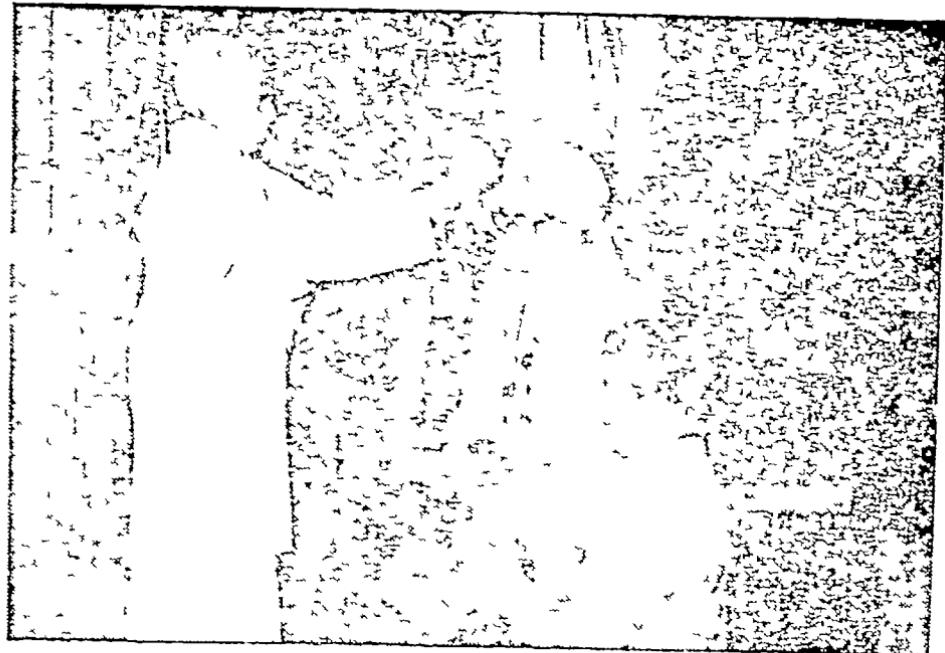
आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के समीद
बिराजे हुअे शानानदजी महाराज प्रकाशचन्दजी मुबई
नेमिचन्दजी दतिया, जिनेद्रकुमारजैन
मॅनेजर, महेन्द्रकुमारजैन देहूली, शिखरचन्द जैन
भोपाल, शातिलाल जैन,

आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज
से आशिर्वाद लेते हूअे श्री महेन्द्रकुमार जैन
देहली अध्यक्ष केन्द्रीय स्याव्दाद शिक्षण
परिषद कार्यकारिणी समिती सोनागिर
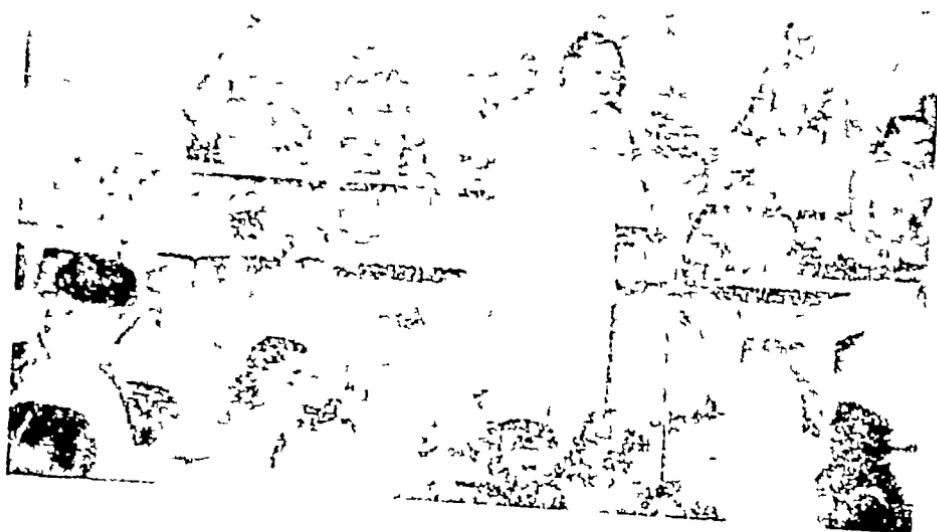
केन्द्रीय श्री स्याव्दाद शिक्षण परिषद सरक्षण समिती
के महामत्री चैनरूप बाकलीवाल ढीमापूरवालो के
युवारत्न पदवीसे विभूषित करने हुए श्री पडीत
सुमतीचद्रजी शास्त्री उपाध्यक्ष सस्कृत
विद्यालय सोनागिर, पास मे खडे
है श्री स्याव्दाद शिक्षण परिषद
कार्य कारणी समिती के
मत्री श्री दिलीपकुमार
खापरा

श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद संरक्षणसमिती के अध्यक्ष श्रीमान शेठ श्रीपतीजी जैन अजमेरवाले सोनागिरजी पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसरपर ध्वजा रोहण के लिए साथमें है श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज ससंघ

स्याव्दाद एव अनेकान्तात्मक वस्तुस्वरूप
की व्याख्या करते हुओ आचार्य
श्री विमलसागरजी की
प्रवचन सभामे
डॉ कुलभुषण लोखडे सोलापूर

नेमीनाथ मुरारी काणे बाहुबली अष्टक का विमोचन करते हुए

दिनांक [illegible]।०।८० को आचार्य विमल-सागरजी महाराजजी

सानिध्य

मगलाचरण करते हुये श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज पाससे बैठे हुए है। श्री १०५ क्षु सन्मतीसागरजी महाराज

सन्मार्ग दिवाकर पदके लिए प्रस्ताव रखते हुए
श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज
पास मे बैठे हुए श्री १०५ क्षुल्लक
सन्मतीसागरजी महाराज
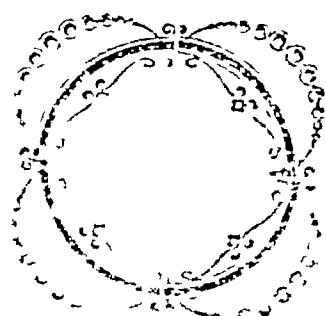
श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज व्दारा
श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज को
सन्मार्ग दिवाकर पद के लिए रखे प्रस्तावका
समर्थन करते हुए श्री १०५ क्षुल्लक
सन्मतीसागर ज्ञानानदजी
महाराज
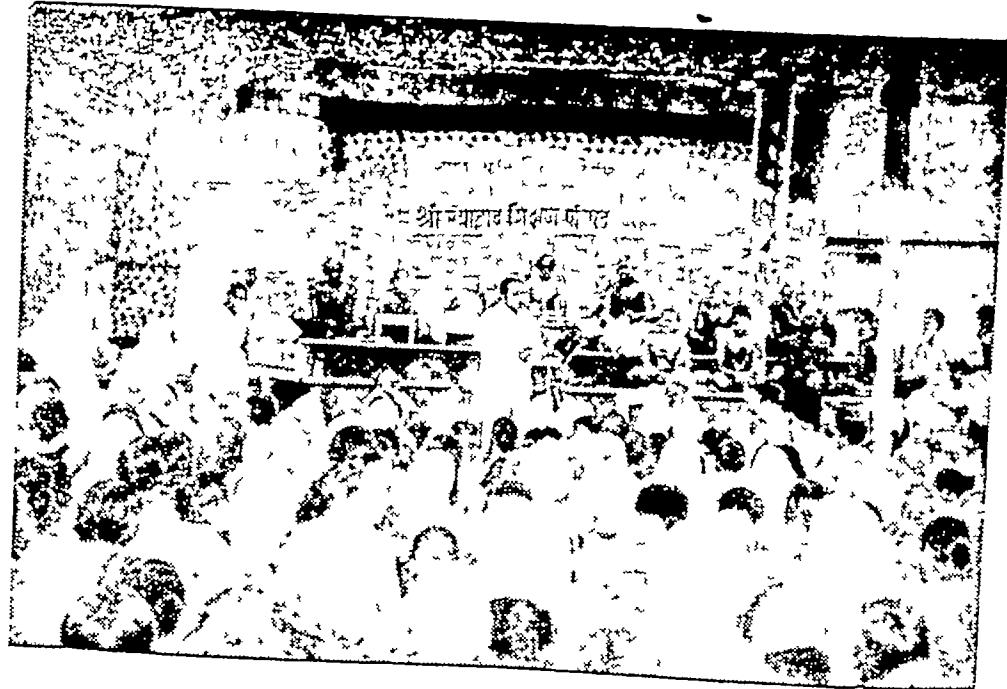
सन्मार्ग दिवाकर पदसे १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज को विभूपित करते हुए श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज, श्री १०५ क्षुल्लक मन्मती सागरजी महाराज एव श्री १०५ क्षुल्लक तीर्थ सागरजी महाराज, पडीत शिखरचदजी प्रतिष्ठाचार्य सेठ श्रीमती जैन आदि भक्तगण

सन्मार्ग दिवाकरपद को स्विकार करते हुए १०८
आचार्य विमलसागरजी महाराज

श्रीमान गुरुभक्त शेठ रिखवलाल जी को समर्पित की जानेवाले मानपत्र को आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज की केशलोच सभा मे पढते हुअे डॉ कुलभुषण लोखडे सोलापूर

स्याव्दाद शिक्षण शिबीर का ज्ञानदी प्रज्वलीत
करते हुअे श्रीमती रजनी विजयकुमाराशहा

卐 श्री विमलसागराय नमः 卐

कल्पान्त काव्य वचना विषया गुरुणां,
लोकोत्तराखिल गुणस्तवन प्रशंसा ।
स्वामिनमोऽस्तु शिरसा मनसा: वचोभिः,
जीयाच्चिरं विमलसागर साधुवर्यः ।।
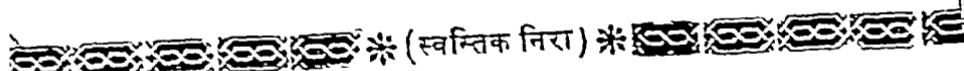
(प. श्यामसुन्दरशास्त्री विरिचीत)

# – विमल स्वर्ग सोपान –

## (जीवन झांकी)

– लेखक –

ज्ञान दिवाकर श्री १०८ उपाध्याय
भरत सागरजी महाराज ।

## 卐 श्री विमलसागराय नमः 卐

**कल्पान्त काव्य वचना विषया गुरुणां,**
**लोकोत्तराखिल गुणस्तवनं प्रशंसा।**
**स्वामिनमोऽस्तु शिरसा मनसाः वचोभिः,**
**जीयाच्चिर विमलसागर साधुवर्यः ॥**

(प. श्यामसुन्दरशास्त्री विरिचीत)

**न्म** – कोसमा ग्रामे, जिला एटा अन्तर्गत स १९७३

प्राकृतिक छटा से भरपूर छोटे से झरनेसे वहती हुई सुरीली मन्द स्कान रुप आवाज से गुंजित कोसमा ग्राम की गोदीमे अपनी ा युक्त किरणो से सर्वससार को लुभावणा एक बालसूर्य आ । सागर से कटोरी को भरते हुअ तो सारे ससार ने देखा है गग का अनुपम आश्चर्य है कटोरी से सागर को निकलते अभी सी ने नही देखा। जगत्सुखदायिनी माँ कटोरीदेवी ने कटोरी र रुप नेमीचद को प्रदान किया। सागर तो खारा है किन्तु इस ो निकला सागर अपूर्व मिठास, वात्सल्य से युक्त है। सागर का ास को बुझा नही सकता है किन्तु यह अनुपम सागर ऐसे मीठ पूरित है कि भव–भव से प्यासे जीवो की प्यास बुझाने मे ही ाधना को लगाए हुअे है। धन्य है वह सवत १९७३ का आश्विन सप्तमी का दिन जिसने प्रात भौतिक वालसूर्य के साथ ही मक वालसूर्य को उत्तर प्रदेश के एटा जिलान्तर्गत जलेसर कस्वा मा को दीप्तीमान किया है। प्रिय माता छ माह के वाल को चल वसी पिता विहारीलाल ने उसे प्रचड प्रतापी सूर्य में किया। भुवा दुर्गा देवी ने कोमल कली को सिंचित करे किया।

**न्म** –

लक नेमी दूज के चाँद की तरह विकास को प्राप्त हो सहसा एक दिन नेमीचन्द ने सुना श्री १०८ आचार्य श्री रजी महाराज सघसहित फिरोजाबाद पधार चुके हैं। धर्म–

भक्ति सम्पन्न बालक उत्साहित हुआ, उत्कठा हुई गुरु दर्शन की। परन्तु परिवार के बधन ने इन्हे रोकना चाहा, वीर तेजस्वी बालक के सामने किसी की नही चल पायी। बालक ने खाने के लिये ज्वार के फूले, चना, गुड, मूगफली अपने जेब मे रख ली और गुरु दर्शन को चल पडा। मार्ग मे विशेष विचार घूम रहे है। अहो पुण्य है आज देखेंगे वास्तव में दिगबर मुनि और उनकी चर्या क्या चीज है। आचार्य श्री एव अन्य त्यागियो के दर्शन कर मन-मयूर नाच रहा है। सभी भक्त भक्तिरुपी श्रद्धापुष्प गुरु चरणो मे भेट कर रहे है। बालक का मस्तक भी भक्ति से गुरु चरणो मे सहसा झुक गया। और मस्तक झुकते ही सारी खाने की वस्तूए इसके जेब से खनखनाती हुई गिर पडी। मानो यह सूचित कर रही है कि देव, गुरु, राजा, वैद्य, ज्योतिष के पास खाली हाथ नही जाना चाहिये इसी नीति वाक्यानुसार सभी तो हातो से अपनी भक्ति समर्पित कर रहे है। परन्तु नेमी की भक्ति गगा अन्तर्हृदय से फूट पडी है और उसने सारा वैभव ही गुरु चरणो मे समर्पित कर दिया है। इससे सिद्ध होता है कि शुभ भावना छिपाये नही छिपती है प्रकट होकर ही रहती है।

अब जैसे बालक ने चारों ओर दृष्टि दौडायी देखा सभी भक्त अपने-अपने अनुकूल व्रत, सयम, नियम आचार्य श्री से ले रहे है। किसी का यज्ञोपवीत संस्कार भी हो रहा है। तभी इसने भी आचार्य श्री से सविधि अपने लिये यज्ञोपवीत सस्कार की प्रार्थना की। गुरु गंभीर है, परीक्षा ले रहे है देखे भावुकता है या वास्तविकता है। अतः सघस्थ सप्त ऋषियो के पास क्रम-क्रम उन्हे भेजा, सबने इन्कार कर दिया। दृढ प्रतिज्ञ बालक पुन आचार्य के पास जाता है बोलता है— गुरुदेव ! जो यज्ञोपवीत नही लेना चाहते है उन्हें तो आप जबरन देते है, मै सहर्ष लेना चाहता तो मुझे धकेलते है, इसका क्या कारण है ? कसौटी पर जब यह खरे उतर चुके आचार्य श्री मुस्कराये और फिरोजाबाद मे यज्ञोपवीत संस्कार विधिपूर्वक किया।

आचार्य श्री समझते है—बेटे यह यज्ञोपवीत रत्नत्रय का सूचक है। इसके बिना श्रावक देवपूजा, गुरुपास्ति का अधिकारी नही है। कुगुरु

कुदेव की उपासना कभी मत करना। गुरुद्वारा डाले सस्कारोके प्रभाव मे जो बालक अभी तक प्रतिदिन कुदेवो के मदिरो मे जाता है, ब्राम्हणो के चरण छूता है, सभी बुरे कार्यों को तत्काल त्याग कर सम्यक्त्व को प्राप्त करता है।

**३ विद्यार्थी जीवन –**

इसकी प्रारभिक शिक्षा गाव मे ही हुई है। खेलने मे विशेष रूचि है तैराकी करना इसका अपना शौक है। घुडसवारी हरियादडा लम्बा जम्प High Jump आदि विशेष खेलों मे तो इसी गावमे वरदान ही प्राप्त है। पढने मे विषेश रुचि न रखते हुए भी, प्रभु भक्ति से रग-रग इतना अधिक सना हुआ है कि पढते है तो णमोकार पढकर, परीक्षा पत्र देते समय लिखने के पूर्व अनादि निधन मन्त्रका ध्यान भक्तिसे करता है फलत. अन्य विद्यार्थीयो की अपेक्षा अच्छे नवरो से पास होता है।

मोरेना विद्यालय की भूमि इस योग्य विद्यार्थी को पाकर धन्य हो उठी है। वहाँ से उच्च शिक्षा प्राप्त कर बालक नेमी ने शास्त्रीय परीक्षा अच्छे नम्बरो से उत्तीर्ण की। अब बालक नेमीचद "पडित नेमीचन्द शास्त्री" के नामसे प्रख्यात हो गया है।

**४. अध्यापन कार्य –**

अध्ययन पूर्णकर ज्ञानविकासी पं. नेमीचद अध्यापन कार्य में जुट गये है। प्रधानाध्यापक के पद पर रहकर पद का पूर्ण निर्वाह कर रहे है। कडा अनुशासन, सत्य की कठोरता जीवन के प्रमुख अग बन चुके हैं। अध्यापक के पूर्ण गुणो मे प्रभावित इनका जीवन

**"गुरु कुम्हार शिशु कुंभ है, घड घड काढत खोट।**
**अन्दर हाथ पसारिके बाहर मारत चोट॥"**

रूप मे प्रभावित होता जा रहा है।

**५. तर्कणा शक्ति –**

इनकी अद्भुत तर्कणा शक्ति के समक्ष कोई टिक नहीं पा रहा है। एक समय प अपनी शिष्य मडली और अयोध्याप्रसाद ज्ञानचद

लाला पदमचद आदि पडितो के साथ टटेरीमडी से गुजर रहे है कि सहसा आर्य समाजी विव्दानो से मुठभेड हो गई । ये लोग मूर्ति को नही मानते हैं । हास्य के रसिक, स्याद्वाद जड को मजबूत बनाने में है लगन जिसकी । प. नेमीचन्दजी ने दयानद सरस्वती का फोटो लिया और अपने जूते पर रख लिया । यह देख आर्य समाजी विन्दान नाराज हुए परन्तु इस तेज के सामने बोल नही पा रहे है । तभी पडित ने बोला – विव्दानो आप लोग मूर्ति पूजक नही है, फिर मैंने इस फोटो को यदि इसप्रकार लगा लिया तो आपको नाराजी या इतना दुख क्यों हो रहा है । आपके इस व्यवहार से तो सिद्ध होता है कि आप भी मूर्ति पूजक है । इस प्रकार पडितजी स्याद्वाद का डका पीटकर आनद विभोर हो उठे ।

तभी एक आर्य समाजी ने प्रश्न किये–

१. ऐसा भोजन होना चाहिये जो किसी खेत का बोया नही हो, किसी अन्न का भी नही हो, और जिस अग्नि मे वह पकाया गया हो वह अग्नि न कोयले की हो, न लकडी की ओर नही गॅस, स्टोव किसी भी प्रकार की हो। और पेट भी भर जाय ।

२. पानी ऐसा चाहिये जो न कुए का हो, न नल का, न बावडी सागर, न तालाब या कुड का ही हो और प्यास भी बुझ जाय ।

३ जिस वस्तु से यह भोजन परोसा जाय वह वस्तु भी चम्मच अदि न हो ।

४. भोजन का ग्राहक न देव हो, न नारकी हो, न तिर्यन्च हो और न ही मनुष्य हो ।

सभी विव्दान प नेमीचन्द की ओर इशारा कर रहे है क्यो कि जहाँ पाडवो के समय पर भगवान नेमीनाथ ने केवलज्ञान प्राप्त कर सही दिशा दान दिया वहाँ इस नेमी ने मानो जग के अज्ञान तम को दूर करने के लिये ही जन्म लिया है । वीर नेमी ताड गये घबराये नही फूट पडी उनके मुखमे स्याद्वाद ज्ञानगगा । उत्तर मिला ।

"ज्ञानरुपी भोजन अपनी आत्मा से आत्मा मे ही उत्पन्न कर, समता रुपी जल का सिंचन कर, अनुभव रुपी चम्मच से आस्वादन करता हुआ योगी निरन्तर अैसे भोजन का पान करता हुआ कभी भी आघाता नही है। सभी विव्दान अपलक नेत्र से पडितजी को देख रहे है, आर्य समाजी विव्दान अत्यत हर्षित हो रहे हैं, धन्य है धन्य है इन विव्दान पडितजी की ज्ञान की गरिमा को, धन्य हैं अपूर्व तर्कणा शक्ति को।

## ६ चुनोतियो के बीच –

पडित नेमीचन्द स्थान-स्थान पर जाकर प्रतिष्ठादि कार्य कर रहे है। कही उपसर्गादि का कार्य नही है। उत्तरप्रदेश के केलई ग्राम मे मुसलमानी वस्ती मे जैन बधुओ ने एक सुन्दर विशाल मदिर का निर्माण कराया। प्रतिष्ठा के लिये पडितजी पहुचते है। मुसलमानो मे विव्देष की अग्नि फूटी पड रही है। मुसलमानो के गुरु हाफिस ने पडितजी को देखते ही कहा देखे कितनी ताकत है इस पडित्की। मदिर का कार्य नही होने दूगा। जैसे ही यह बात पडितजी के कानों मे पडी। सोचा ठीक है, भक्ति जागृत हो उठी पौरुष ने वल खाया। प्रतिष्ठा मडप मे पहुचते ही नीबू रखकर कीला गाड दिया। अव क्या था हाफिस मुस्लिम गुरुजीने मंत्रशक्ति का प्रयोग किया फलत पडितजी पेट दर्द की तीव्र पीडा से तडफ रहे है। पडितजी समझ गये कहा यह सब उसी मुसलमान गुरु की करामात है। पडितजी भी कम नही है लिया एक चाकू और जमीन काटने लगे। इधर ये जमीन काट रहे है उधर उस शत्रु के पेट मे तीव्र काट चल कर ऐसे दस्त चालू हो गये कि बन्द ही नही हो रहे है। वाल-वच्चे यह देख के दुखी हो रहे है। तभी एक वालक पडितजी से आकर बोला– सुना है आप वहुत वडे वैद्य हं, हमारे पिताजी को वहुत दस्त हो रहे है आप उपाय वताइये। पडितजी वाणी के खरे है वोले मै कुछ नही कर सकता उसने जो किया है उसीका यह फल है। जाओ उसके दस्त वन्द हो सकते है यदि कुछ शर्तो को वह मजूर करे तो। वह नियम करे कि "मै

जैन मंदिरो के निर्माण मे बाधा नही डालूंगा, यहाँ जो रथ निकलने से मैने रोका है, वह अब नही रोकूगा इतना ही नही प्रत्येक मुस्लिम साम्प्रदायिकता, जातिवाद का झगडा छोड इस धार्मिक कार्य मे २-२ रुपया देगे तभी वह हाफिस अभी ठीक हो जायगा। उसी समय हाफिस ने आकर सारी शर्ते मजूर की। बडे उत्साह से धर्मप्रभावना करते हुए सारे कार्य निर्विघ्न हुए। पडितजी जैन सस्कृति का इतिहास निर्माण कर सकुशल वहा से चल दिये।

## ७ वैद्य -

वैद्य नेमीचन्द की वैद्यगिरि तथा सच्ची सेवा, भावना से सभी परिचित है। एक दिन वैद्यजी अपना भोजन बना रहे है कि कार्य करते हुए मन मे कुछ चिडचिडाहट आ रही है। मन मे शान्ति नही है। इसी समय एक बूढी अम्मा आई बोली भैय्या बुखार तेज आ रहा है कुछ दवा दे दो। ऐसी असमजस की स्थिति मे भी सेवा भावना जागृत हो उठती है। तभी चूल्हे मे मे थोडी सी राख उठाते है। णमोकार मत्र पढते, मत्र पढते पढते उस राखकी दो पुडिया वाधते है। दोनो को बाधकर बूढी अम्मा से बोलते है अम्मा इस दवाई को णमोकार मत्र का स्मरण करके दिन मे दो बार पानी के साथ ले लेना। बुखार ठीक हो जायगा। उस वैद्य के वचन और औषधि पर बूढी मा का पूर्ण श्रद्धान है। दवा लेती है स्वास्थ्य ठीक हो गया। बूढी मा पुकार रही है धन्य है वेटा नेमीचन्द तेरे सेवा युक्त भावो को।

## ८ शारीरिक शक्ति -

शारीरिक शक्ति इतनी सुगठित है कि मानो वजन साईकिल पर लादकर गाँव-गाँव फिरते है। व्यापार करते है। यदि कही गाडी विगड गई तो गाडी सहित माल को पीठपर लादकर मीलो पैदल चल देते है। ब्रेक रहित गाडी मे ही यात्रा करते हुए कई दिन गुजर गये है। उनके पास ब्रेक रहित गाडी है किन्तु शरीर ब्रेक रहित नही है। मन पर संयमरूपी ब्रेक लगा हुआ है। भक्ति श्रद्धा का ब्रेक जीवनरूपी नौका को

आगे बढा रहा है। इसी बीच सहसा सिद्धक्षेत्र शिखरजी का पाव। स्मरण हो आया, और चल पडे, पडितजी ब्रेकरहित साईकिल लेकर शिखरजी की यात्रा करने। निर्विघ्न जलेसर से शिखरजी तक का सारा मार्ग पूर्ण कर सकुशल पर्वतराज की वंदना कर ली, धन्य है अद्‌भुत साहस, शरीर की क्षमता को।

एक दिन इसी साईकिल को लिए घने जगल मे चले जा रहे है। हाथ मे एक पप हैं। अचानक बीच जगल मे गाडी बिगड गयी हैं, णमोकर मत्र का स्मरण करते है कि देखते क्या है, सामने एक बाबा जिसकी दाढी बढ रही है, खडा हुआ तथा साईकिल सुधारने के यत्रोमे छोटी सी दुकान सज रही है। पडितजी बोलते है, बाबा हमारी साई-किल सुधारेगे क्या, जी हुजूर अभी सुधार देता हुँ। बाबा साईकिल सुधारते हैं। नेमी साईकिल लेकर वहा से चल देते हैं, हाथ का पप वही भूल जाते हैं। दो मील करीब पहुँचे है, कि पप स्मृति पटल पर झूमने लगता है। पुन उसी घने जगल मे लौटते है, परतु क्या देखते है न वहा कोई बाबा है, न कोई दुकान ही है, और पप यथास्थान रखा हुआ हे। यह हैं इनके परिणामो की निर्मलता का अद्‌भूत चमत्कार।

**९ पिता के वचन –**

भगवान नेमीनाथ अपनी माँ के इकलौते पुत्र तीर्थंकर थे तो नेमीचद माँ कटोरी के इकलौते पुत्र तीर्थंकर रुप है जिस प्रकार भगवान नेमीनाथ शादी के बारात सजाकर दुल्हन पाने पहुचे किन्तु देखा, मेरे कारण जीवो की हिसा, यह पीडा यह तीव्र वेदना! नही! नही! कभी नही। मै इस प्रकार जीवो की हिसा नही होने दूगा। बस अब क्या था। चल दिया नेमी गिरनार पर्वत की उच्च शिखर पर नेमीनाथ बनने।

उसी प्रकार एक दिन बालक नेमीचद पिताजी के पास आते हे प्रमादवश पृथ्वी को बिना झाडे ही जमीन पर बैठ जाते हैं पिताके वचन सहसा पुत्र सबोधन हेतु निकल पडते है–कुत्ते भी जमीन साफ करके बैठते हैं। शब्दो ने चोट पहुचाई जीवन को गहरा आघात पहुंचता है तभी प्रचार

मे मुख मुड जाता है। मेरे द्वारा जीवो की हिसा हो रही है, ईर्यास मिति का पालन नही हो रहा है अहिंसाणुव्रत का भी पालन नही है। अहिंसा के दूत को वहिन अहिसा पुकार रही है। भैय्या वहीन के पास पहुचने को वहुत आतुर है। कव पूर्ण अहिसाव्रत को पालन कर मैं प्राणी मात्र का रक्षक वनूगा

अव नेमीचन्द घर मे उदासीन प्रवृत्ति से रह रहा है। पिताजी को उसकी उदासिनता देखकर अत्यत खेद हो रहा है कि कही यह वैरागी न हो जाय। अत पुन. पुन पुत्र मोहवश पुत्र से शादी करनेके लिये आग्रह कर रहे है। पुत्र पूर्ण रुपसे इन्कार कर रहा है। पिता कहा माननेवाले है। पिताजी ने शादीकी पूर्ण तैयारिया कर ली है शादी का दिन भी निश्चित हो चुका है किन्तु जिस महात्मा ने पूर्व मे ही अहिसा व्रत को जीवन मे पूर्ण रुपसे पालन करने की धारणा बना ली हैं क्या वह कभी पुन. अज्ञान वश हिसा का आगार ऐसे ग्रहस्थ जीवन मे प्रवेश कर सकता है ? नही। वदल गयी है दुनिया से दृष्टि जिसकी ऐसे नेमीचन्द ने गुरु चरणो का आश्रय ले लिया है। श्री १०८ आचार्यकल्प चन्द्रसागरजी महाराजके चरणो मे पहुच शूद्र जलका त्याग कर दिया है। पश्चात वीरसागरजी महाराज के समीप २ प्रतिमा के व्रत और अखंड व्रम्हचर्य व्रत ले लिया है। कुछ दिनो पश्चात पुन आत्मशो-धन मे लग गई है दृष्टि जिसकी ऐसे आपने सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण कर लिये है।

**१०. गुरुभक्ति**

ब्र. नेमीचद, ब्र. गुलाववाई जयपूर वालो के साथ श्री १०८ सुधर्मसागरजी महाराज के दर्शनो को पहुँचते है। इधर क्या हो रहा हैं। महाराज को ७ दिन बीत चुके आहार की विधी नही मिली है। व्रत परिसख्यान वडा विचित्र है। आम का मौसम नही है। फिर आम से जो पडगाहन करेगा तथा आहार मे भी सर्वप्रथम आम देगा वहा आहार करुगा। वडी विचित्र अटपटी है। अचानक गुरुभक्त ब्र नेमी कही से आम लिए आते है, गुरु चरणो मे आम चढाते हैं। आहार

के लिए चौके मे पहुंचते है, गुलाबबाई से बोलते है, बाईजी आज मुझे ऐसा लगता है, महाराज को शायद आम का ही व्रत है, मै उन्हे आम से पडगाऊगा तथा खाने मे भी आम दूगा। आप आम सुधार लेना महाराज को कई दिनोसे बुखार आ रहा है, अत बाईजी ने आम नही सुधारने दिया बोली, क्या महाराज को और अधिक बीमार करना है? ये चुप रहे।

गुरुभक्त ने दो आम से महाराज का पडगाहन किया। चौके मे पहुँचे थाली मे आम नही था। महाराज लौट गये। अब तो ब्र नेमीजी के होश ठडे पड गये। बाईजी आपने मुझे आम नही सुधारने दिया। मै समज गया महाराज को आम लेनेका नियम है, रो पडे, उदसीनता छा गई है, उस दिन उपवास कर लिया है। अपूर्व भक्ति का फल पुन दूसरे दिन ब्र नेमीचदजी ने आम से महाराज का पडगाहन किया तथा आहार मे सर्व प्रथम आम देकर निरन्तराय महाराज का आहार कराकर अपूर्व पुण्य के अधिकारी बन जाते है।

## ११ अपूर्वसाधक

ब्रम्हचारी अवस्थामे ही बडवानी सिद्धक्षेत्र मे वटवृक्ष के नीचे सो रहे है, कि एक बडा भारी सर्प आता है, और इनके मस्तक पर छाया करके बैठ जाता है। सुधर्मसागरजी महाराज यह सब हाल देख रहे है। सुबह ब्र जी गुरु चरणो मे दर्शनार्थ पहुँचे, आशिर्वाद मिलता है, बेटे रात्रिमे नागराज तुम्हारे मस्तकपर छाया करके बैठा हुआ था वह सूचित करता है कि तुम भविष्यमे महान बनोगे तथा महानात्माओकी छत्र-छाया तुम्हे सतत मिलेगी। महाराज की वाणी धीरे धीरे सत्य हो रही है। जीवन पुष्प खिलता जा रहा है।

अब तो मत्र, तत्र मे विशेष सिद्धी प्राप्त हो रही है। इस अवस्था मे घटो श्मशान आदि घने सुनसान स्थानो मे घटो ध्यान मग्न रहते है। परन्तु इन्हे आत्मशाति कही भी नजर नही आ रही है। अत- आत्मशोधन के कार्य मे लगकर निरन्तर शाति की सच्ची खोज मे जुट जाते है। विचार ते है "दुनिया मे सबसे बडी शक्ति आत्म–

शक्ति ह।" अब क्या था यहा तो जो सोचा सो पूर्ण करना ही जन्मसिद्ध अधिकार है। जुट गये सच्ची शाति की खोज मे, और पूर्ण शाति के पुजारी श्री १०८ आचार्य महावीरकीर्तिजी महाराज के चरणो मे पहुचकर वडवानीपर आषाढ शुक्ला ५ स २००७ को क्षुल्लक दीक्षा के व्रत ले लेते है।

अब तो प नेमीचन्दजी क्षु. वृषभसागर नाम से पूकारे जा रहे है। फिर भी आत्मशाति मे चादर और लगोट बाधक लग रहे है अत स २००७ माघ सु १२ धर्मपुरी मे आचार्य महाराज से ऐलक पद की दीक्षा ले लेते है। क्षु वृषभसागर अब ऐलक सुधर्मसागर रुपमे अवतरित हुए है।

ऐलक अवस्था मे ही ये सघ के एक मत्रसिद्ध, निमित्तज्ञानी विशेष विव्दान साधुओ मे गिने जा रहे है। परन्तु कभी कभी जब सामायिक मे बैठते है तो अन्दर मे पूर्ण शान्ति का अनुभव नही पाते है। विचार चलता है ऐसा कौन सा कारग है जो मुझे पूर्ण आत्मशान्ति को नही होने दे रहा है। खोज रहे है। बस अब तो ऐलक सुधर्म-सागरजी का कला कौशल रुप आत्मज्ञान इतना मुखरित हो चुका है कि ऐलक अवस्थाकी लंगोटी का भार भी असहच हो गया है। शुद्धात्मा के रसास्वादन की प्यास से तृषित इन्होने पावन तीर्थराज सोनागिरजी सिद्धक्षेत्र पर फाल्गुन सुदी ९ स २००९ को आ महावीर कीर्तिजी महाराज से पूर्ण अहिंसा व्रत का पालक मुनिव्रत अगीकार कर लिया है। ऐलक सुधर्मसागरजी अब मुनि-विमलसागरजी के नाम से प्रख्यात हो रहे है। श्री सोनगिरजी सिद्धक्षेत्र का आकाश एवसम्पूर्ण वायुमंडल श्री १०८ आ महावीरकीर्तिजी एव मुनि श्री १०८ विमल-सागरजीमहाराज एव मुनिसघ के जयनाद से गुज रहा है। यह जयनाद वायु तरंगो पर प्रवाहित हो समस्त धर्मप्राण लोगो के हृदयो मे अकित हो गया। अब परिणामो की निर्मलता, वात्सल्यवृत्ति, निमित्तज्ञान स्थितिकरण आदि गुगो की विशेपता ने इनके जीवन मे चार चाद लगा दिये। इनकी यश पताका चारो ओर फहरा रही है।

**१२. व्रतपरिसंस्थान—**

मुनी श्री अनेक स्थानोपर धर्मप्रचार करते हुए इन्दौर पधार रहे है। सारे शहर मे धूम-धाम मची हुई है। समस्त समाज चिंतित नजर आ रहा है। मुनि श्री विमलसागरजी को आठ दिन हो गये आहार नही हुआ है कोई भाग्यशाली श्रावक उन्हे आहार देने मे समर्थ नही है। आजका मानव जहाँ आहार का कीडा बना हुआ है, वहा आठ-आठ दिन तक मुनि श्री का आहार नही होना, सबके लिए एक दुखद घटना बनी हुई है। अटपटी ही नही मिल रही है, आठवे दिन इनकी अटपटी मिल तो गई किन्तू सिर से कलश गिर जाने के कारण मुनिश्री फिर मदीर मे लौट आये है। ९वे दिन गुरुभक्त कवरलालजी कासलीवाल के घर मुनिजी को निरन्तराय आहार हो जाता है। (अटपटी है— तीन सुहागन स्त्रियो के सिर पर ३-३ कलश होगे तभी आहार करुगा। )

**१३. आचार्यपद—**

मुनि विमलसागरजी को ८ वर्ष हो गये, धर्म की अजस्त्र धारा बहा रहे है। दीक्षा शिक्षा ध्यान अध्ययन के व्दारा विशेप प्रभावना कर रहे हे, अभी तक ८-१० दीक्षाए दे चुके है। सघ सहित विहार करते हुए आप ईशरी, पावापुरी, मिर्जापूर, इदौर, फलटण, पन्ना से टूण्डला आये। और स २०१८ ई. सन १९६१ मे टूण्डला मे वर्षानु-योग धारण किया। यही है वह अविस्मरणीय ऐतिहासिक वर्ष तथा यही है वह पावन भूमि जहा के विव्दान जनसमुदाय ने आपके शौर्य धैर्य एव पराक्रम को अनुभव कर आपसे आचार्य पद स्वीकार करने की प्रार्थना की। सर्वप्रथम मुनिश्री ने वहुत इन्कार किया। किसी प्रकार भी स्वीकृति देने मे जब इनको समर्थ नही पाते है, तो विव्दत्समुदाय गुरुजी श्री महावीरकिर्तिजी के पास जाते है। तथा उनसे आज्ञा पाकर मगसर वदी २ को शुभ लग्न मे न्यायाचार्य प माणिकचन्दजी कौन्देय, धर्मरत्न प लालारामजी शास्त्री एव विशाल जनसमुदाय के समक्ष मुनिश्री को आचार्य पद से विभूपित करते है। इस शुभ अवसर आप दीक्षाए देते है।

**१४ वात्सल्य मूर्ति –**

आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज आज भारतके कोने कोने मे अपने वात्सल्य गुण की विशेषता ,से प्रसिद्ध है । "पापसे घृणा करो पापी से नही" जीवन का एक महान सिद्धान्त है । "कैची न बनो सुई बनो" यही जीवन का प्रमुख उपदेश है । आबाल वृद्ध गरीब अमीर जैन अजैन सभी को जो अपनी भुजाओ मे उदारता स्नेह समेटते है । जिनके चरणो मे आकर व्यक्ति जीवन के सभी दुखोको भूल अतुल अनुपम छत्र-छाया मिठास का अनुभव करता है, ऐसे आचार्य का वात्सल्य गुण प्राणी मात्र के कल्याण का भाजन बना हुआ है ।

**१५ अकृपण हसी –**

निरन्तर मुस्कराता हुआ चेहरा खिलता हुआ वदन अन्तरात्मा की विशुद्धता को साक्षात् बिखेरता रहता है ।

**उदये सविता रक्त रक्तर चात्मने तथ' ।**

**सम्पतौ च विपत्तो च महता मेकरुपता"**

जिसप्रकार सूर्य उदयावस्था और अस्तावस्था मे समरुप है उसी प्रकार समता रस के स्वादी आ. विमलसागरजी का रोम-रोम अन्तरग की विशुद्धता रुप आनद की किरण को निरन्तर बिखेरता रहता है ।

**१६ पद्मचक्र –**

महापुरुष के शरीर मे चिन्हित चिन्ह उनके महानता को उद्योतित करते है । इनके दाहिने पैर का पद्मचक्र सूचित कर रहा है कि यह पुरुष निरन्तर भ्रमण कर आत्मसाधना द्वारा स्वपर का उपकारी होगा और हम प्रत्यक्ष देख रहे है । आचार्य श्री की भारत के सभी क्षेत्रो की वदना ३–३ वार हो चुकी है यह ४था दौरा चल रहा है ।

**१७. श्रीवत्स चिन्ह**

तीर्थंकर के समान हृदय मे श्रीवत्स चिन्ह अपूर्व धैर्य और वीरता को प्रकट कर रहा है । वर्तमान के भीषण कलयुग मे इतने विशाल

संघका काषतानवत् पालन करना अपूर्व धैर्य और वीरता का ही परिणाम है। भिन्न–भिन्न साधुओ की वृत्ति अनुसार संघस्थ साधुओ की कठिन वार्ता को भी आप हसते हसते झेलते है, आप जब भी किसी को दीक्षा देते है तो उसके जीवन निर्वाह की पूर्ण जिम्मेदारी लेते है। अपने व्दारा दिक्षित त्यागियो के व्रतो की पूर्ण रक्षा का ध्यान तो रखते ही है किन्तु दूसरे संघसे आये हुये व्रती त्यागियो का भी पूर्ण जिम्मेदारी के साथ निर्वाह करते है। धन्य है आचार्य श्री की विशालता, उदारता एवं सुहृदयता को। धन्य निरीह वृत्ति साधु को।

## १८ अपाय विचय धर्मध्यान के प्रमुख नेता

अपाय विचय धर्मध्यान के प्रमुख नेता की सारी चर्या ही अलौकिक नजर आ रही है। सुबह से श्यामतक तनरोगी, मनरोगी धर्मरोगी जीवो का इनके चरणोमे ताता लगा रहता है। एकसमय भी परचिन्ता से रहित देखने मे नही आते है। भीषण जंगल मे भी ठीक १ बजा कि गाडीपर गाडी खडी हुई है, महाराज को चैन नही मिलता यह सब क्या है? कभी कभी दर्शकगण यह सब देख यह कहते हुए भी पाये जाते हैं कि महाराज दिन भर परचिन्ता मे डूबे रहते है समझ मे नही आता ये अपनी साधना कब करते है यह सब साधु का कर्तव्य नही है ?

आचार्य कहते है जिस समय यह संसार सोता है उस समय दिगंबर साधु आत्मलीन हो अध्यात्म क्रीडा में मग्न हो जाते हैं।

**या निशा सर्वभूताना तस्यां जागर्ति संयमी।**
**यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥**

गीता

**जो सुत्ते व्यवहारे सो जोई जागदे सकज्जम्मि।**
**जो जागीद ववहारे सो सुत्तो अप्पणे कज्जे"॥**

पट् पाहुड

समीप मे रहकर जो इनकी अलौकिक चर्या को देखता है, आचार्य मे विभोर हो जाता है। इतनी आयु मे भी प्रमाद इन्हे छू तक नही पाया है। सायकाल समायिक के वाद कुछ विश्राम कर दस वज से एक बजे तक ध्यान, स्वाध्याय करते है, रात मे २०० माला नियम से फेरते है। पदस्थ ध्यानातर्गत भिन्न मत्रो का जाप्य करते है पस्यात एक ऐसी अद्भूत रील इन्होने अपने अन्दर खीची है कि मन रुपी बटन दबाते ही सारे क्षेत्रोके दृष्य सामने दिखाई देते है। बैठे बैठे प्रतिदिन ३ लोकस्थित तीर्थक्षेत्र की पचपरमेष्ठी भगवतोकी ९ देवतावो की वदना करते है। देखकर ऐसा लगता है मानो पहले आचार्य श्री ने सारे क्षेत्रो की परिक्रमा दी थी अव सारे क्षेत्र इनकी परिक्रमा दे रहे है अलौकिक पुरूष की अलौकिक वृत्ति। जिस समय साधुवृन्द प्रतिक्रमण आदि क्रियाके लिये गुरु के निकट पहुचते है उस समय आचार्य श्री अपने दैनिक कार्य प्रतिक्रमणादि क्रिया से निवृत्त हो स्वाध्याय करते हुए पाये जाते है।

हमे विचार करना है कि तीर्थकर प्रकृति का वध कब किससे होता है?

जो भव्यात्मा अपाय विचय धर्मध्यान का उत्कृष्ट नेता है। जिसके हृदय मे विशेष करुणा एव अनुकपा जागृत हो चुकी है जो दूसरोके दुख देखने मे समर्थ नही है वह सभी आत्मा को जो अपने सदृश मानता है। निरन्तर यही विचार है ...... ...... ....

**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख पापभाक्॥**

तीन लोक के समस्त प्राणी सुखी हो ऐसा कौनसा उपाय करु जिससे समस्त जीव सुखी हो जावे सभी का कल्याण यही भावना यही वात्सल्य यही उदारता तीर्थकर पद की प्राप्ति का वीज है। और यही अपाय विचय धर्मध्यान से सनी आत्मा महापुरुष आचार्य श्री की है। सर्वोदय की उच्च भावना इनके जीवन मे पग-पग पर दृष्टिगत होती है

जिसे उनके इन शब्दो मे समझा जा सकता है "मेरा हृदय कमल उसी दिन खिल उठेगा जिस दिन विश्व का प्रत्येक आदमी दिगम्बर अवस्था को प्राप्त कर जीवन की सर्वोच्च शिखर पर पहुंच जायेगा"। यही कारण है प्रतिदान सैकडो दीन-दुखी दरिद्री रोगी गुरू चरणो मे आते है गुरुजी इन्हे णमोकार मंत्ररूप औषधि का जाप्य देकर उससे रात्रि भोजन का त्याग करते है प्रभु भक्ति का फल उसे समझाते उस प्रसाद से उस भक्त का सारा असाता वेदनीय कर्म साता मे बदल जाता है गुरु चरणो मे अपूर्व सुख और शान्ति का रस प्राप्त होता है।

**१९. तपस्वी–**

आचार्य श्री की त्याग संयम की ओर विशेष रुचि गाढ श्रद्धा नजर आती है। आपका कहना है बाह्य व्रतसंयम अन्तरंग प्रमाद को दूर करने के महान साधन है। आपके तप की वर्णन महिमा शब्दो मे तो अवर्णनीय है। घी नमक तेल दही का आजन्म त्याग है। आपने चरित्र शुद्धि के १२३४, गणधारो के १४५३ उपवास कर लिये है और भी छोटे छोटे कई व्रत इनके पूर्ण हो चुके है। चातुर्मास मे चार माह तक एक आहार एक उपवास करते है। कभी कभी दो उपवास एक आहार भी करते है। अभी ६२० उपवास का व्रत चल रहा है। महत्व नाम के १००८ उपवास भी हो चुके। इन उपवासो के अलावा अन्न का त्याग तो प्राय. आचार्य श्री वर्षो के लिये कर देते है और वैसे भी एक वर्ष मे मुश्किल से ३-४ माह अन्न लेते है। इतना ही आप की चरित्र के प्रति इतनी श्रद्धा है कि आप हर स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध को युवा-युवती को व्रति सयमी देखना चाहते है। छोटेसे छोटे व्रतो द्वारा भी प्राणी मात्र के कल्याण की भावना आपके जन-कल्याण की भावना की सूचक है।

## "आचार्य श्री का तीर्थक्षेत्र भ्रमण और दीक्षाकार्य"

जिनके आगमन की सूचना मात्र से प्राणियो के हृदय कमल खिल उठते हो, भव्य जीवो के हृदय मे अजस्त्र धारा धर्म की बहने लगती हो तथा प्राणीमात्र आनंदकी हिलोरे ले झूम उठता हो ऐसे आचार्य श्री का तीर्थयात्रा भ्रमण मानो तीन लोक के कल्याण के लिये ही हो रहा है। ऐसे चरित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री कृत धर्म प्रभावनादि की यशोगाथा लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है फिर भी मै अल्पज्ञ भक्तिवश अपने हृदयोद्‌गार प्रगट करने का लोभ सवरण नही कर पा रहा हू ।

मुनिदीक्षा के पश्चात प्रथम चातुर्मास ',गुनौर मे किया । यहा चारो ओर हिंसा का आतक छाया हुआ है । भैसो की बलि दी जाती है । दया एव करुणार्द्र हृदय यह सब नही देख पाया तत्काल जनसमुदाय को हिंसा रोकने का उपदेश दे स्वयं ने अन्न जल का त्याग कर दिया। परिणामस्वरुप सभी लोगोने बलि प्रचार को त्याग कर मुनिचरणो में अहिंसाणुव्रत धारण किया। यह है (Live and let live) जीओ और जीने दो की भावना से ओतप्रोत निर्मल तेजोमयी आत्मा की साधना का ज्वलन्त निदर्शन । इस प्रकार अहिंसा धर्म का जनमानस मे प्रचार करते हुए ईशरी पहुँचे वहा ब्र. जिनेद्रकुमारजी को क्षुल्लक दीक्षा के

तें प्रदान कर उनको क्षु जिनेद्रवर्णी बनाया। जो आज जिनेद्रवर्णी के नाम से प्रख्यात है। लगभग आठ वर्ष मुनि अवस्था मे भ्रमण करते हुए आप "टुण्डला" पहुँचे वहा "आचार्य पद" की महानता को प्राप्त किया। इस अवसरपर क्षुल्लक दीक्षाए दी वहा से अतिशय क्षेत्र 'राजमल" को पधारे। एक ठाकुर साहव को यहा जैन वनाकर आचार्य श्री ससंघ फिरोजाबाद होते हुए श्री १००८ जम्बू स्वामी की निर्वाणभूमि मथुरा चौरासी सिद्धक्षेत्र पहुँचे। यहा केशलोच कर भेद विज्ञान से आत्म सिद्धि के साथ साथ विशेष धर्मप्रभावना आपके द्वारा हुई।

मथुरा से आचार्य संघवाडीग होते हुए कामा मे पदार्पण हुआ। यहा पर दिगबर मुनियो का सर्वप्रथम पदार्पण होने से धर्मबधुओ मे विशेष उल्लास दिखाई दिया। यहा आचार्य श्री के सानिध्य मे पच कल्याणक महोत्सव एव ब्र शातिकुमार की क्षुल्लक दीक्षादी धार्मिक कार्य सम्पन्न हुए। क्षुल्लक जी का नामकरण अदिसागर रखा गया। इस प्रकार जैनधर्म के सिद्धात, संस्कृति का इतिहास स्थान-स्थान पर निर्माण करते हुए संघ जलेसर पहुच गया। यहा वृहत्सिद्ध चक्र विधान सानंद सम्पन्न हुआ। इसी पुनीत अवसर पर कामा और जबलपूर की दो महिलाओ ने सप्तम ब्रम्हचर्य प्रतिमा के व्रत धारण किये इसके बाद संघ आगरा पधारा। ब्र शरबती देवी को चैत्र वदी ३ स २०१९ को आर्यिका पद प्रदान किया गया नामकरण श्री १०५ आ विजयमतीजी रखा गया। जो आज विदुषी आर्यिका के रुप मे निरन्तर धर्मप्रचार कर रही है।

संघ पुन विहार करता हुआ ईसरी की ओर वढ रहा है मार्ग मे अनेको उपसर्गो का सामना धैर्यता वीरता से करते हुए सघ ईसरी पहुचा। ईसरी मे श्री १०८ श्री चन्द्रसागरजी महाराज की समाधि हुई। तत्पश्चात् सघ पावन तीर्थराज सिद्धक्षेत्र शिखरजी पहुचा। सभी ने सिद्धो की वदना कर अनतगुणी कर्मो की निर्जरा कर आत्मरस का पान किया। ब्र चिरजीलाल एव ब्र जिनेद्रकुमार की दीक्षा हुई नाम

क्रमश. निर्वाणसागर एव जिनेद्रसागर रखा गया । ब्र. उग्रसेन की क्षुल्लक दीक्षा क्षु. नेमिसागरजी की मुनिदीक्षा, भी यहा ही हुई नाम क्रमश क्षु. १०५ श्री आदिसागर, मुनि १०८ श्री सभवसागरजी एव मुनि १०८ श्री सन्मतिसागरजी रखा गया ।

सन् १९६३ मे आपका चातुर्मास बाराबकी मे हुआ यहा आपको "चारित्र चक्रवर्ती" विभूषण से अलकृत किया गया । यही ब्र मोहनलालजी को ऐलक पद प्रदान किया गया ।

सन् १९६४ आचार्य श्री के लिये वह पावन वर्ष है जब, पावन तीर्थराज बडवानी मे गुरु श्री आचार्य महावीरकीर्ति महाराज के पावन चरणों की धूलि को मस्तक पर लगाकर वर्षो से गुरु दर्शन के बिना तृषित आत्मा की प्यास को दर्शन से तृप्त किया था । यहा दोनो आचार्यो का साथ मे चातुर्मास हुआ । विशेष धर्मप्रभावना हुई । यहा ब्र. चन्द्रभान को क्षु श्रेयाससागर के रुप मे अलकृत किया तथा ऐलक जी को मुनि श्री १०८ वीरसागर नाम से सुशोभित किया । इसी वर्ष मरसलगज मे पचकल्याणक प्रतिष्ठाद्वारा विशेष धर्मप्रभावना आपके द्वारा हुई ।

बडवानी से विहार कर सघ मुक्तागिरिजी आया इस पवित्र भूमि पर माघ वदी १४ को श्री क्षु. १०५ विमलमतीजी, श्री विशुद्धमतीजी एवं निर्मलमतीजी को आचार्य श्री ने आर्यिका व्रत दिये नया नाम श्री आ आदिमतीजी आ. श्रेयमतीजी आ. सूर्यमतीजी क्रमश रखा गया । तथा ब्र. शिवसागरजी को माघ सुदी ३ को क्षु दीक्षा हुई नामकरण श्री १०५ क्षु सुमतिसागर हुआ ।

सन् १९६५ मे कोल्हापूर मे आचार्य सघ का चातुर्मास हुआ ॥ यहा ब्र. इन्द्रकुमार ब्र सूरजमलजी दाहोदवालो की क्षु दीक्षा हुई नाम क्रमश श्री १०५ क्षु. विजयसागरजी एवं क्षु. १०५ श्री ज्ञानसागरजी रखा गया । धर्मप्रभावना अच्छी होती रही । वहाँ से विहार कर मुक्तागिरि, मागीतुगी गजपथा, वम्बई, कलिकुड, कुभोज, वाहुवली, स्तवनिधि, श्री श्रवणबेलगोला, शंखेश्वर, हुबली, हुमच, आवता, सिवन,

राजपूर, अतिशय क्षेत्र कुन्दनाविर, कारकल, वेडूर, मूडबद्री, धर्मस्थल, गोम्माटगिरि, कुथुलागिरि आदि तीर्थक्षेत्रो की वदना कर विशालसच सोलापूर पधारा।

सन् १९६६ श्री आ रत्न ज्ञानमती माताजी के ससघ सहित आ ाय श्री का चातुर्मास सोलापूर मे हुआ। धर्म की अक्षय धारा चतुर्दिक प्रवाहित हुई। यहाँ कुआर की अष्टमी को सौ चतुरबाई पढर-पूरवालो ने क्षु. दीक्षा ली तथा नाम हुआ १०५ क्षु. वैराग्यमतीजी। कु शु. १० को क्षु कुन्थुसागर मुनिपद मे विभूषित हुये। मुनिपद का नाम श्री १०८ मुनिश्री सुधर्मसागरजी हुआ। सोलापूर के पास आ ुष्ठा विषहर पार्श्वनाथ मे अनेकानेक लोगो ने २ प्रतिमा से ७ प्रतिमा तक के व्रत सहर्ष स्वीकार किये।

वहाँ से विहार कर एरोला मागीतुगी, महुर, विघ्नेश्वर बडोदा पावागढ आदि क्षेत्रो की वदना करता हुआ सघ पावन सिध्दक्षेत्र नेमीनाथ भगवान की सिध्द भूमि गिरनार जा पहुचा। यहाँ क्षुल्लक श्री १०५ शीतलसागरजी ने जेठ वदी १ स २०२४ को निग्रथ व्रत धारण किया उनका नया नाम मुनि श्री नेमीसागरजी रखा गया। मार्ग मे अनेक जीवो ने व्रत धारण किये। कई आजैनो ने आचार्य श्री के चरणो मे मासभक्षण आदि का त्याग किया। तारगा सिध्दक्षेत्र के दर्शन करते हुए आप सघसहित इडर पधारे।

सन् १९६७ मे चातुर्मास इडर मे हुआ। यहाँ विशेष धर्मप्रभावना ही नही हुई अपितु विव्दान पंडित श्री पन्नालालजी न्यायतीर्थ भिन्ड-वालो का दीक्षा समारोह धूमधाम से मनाया गया। प जीका नाम श्री १०५ क्षु. प्रबोधसागर रखा गया। इडर से अदेश्वर पार्श्वनाथ सघ का पदार्पण हुआ। वहाँ से पारसोला पहुचा यह गाव आचार्य श्री के चरणो से ही पावन तीर्थक्षेत्र बन गया अत यहाँ ब्र मागरबाई (भिंडनिवासी) ब्र. ककुबाई ने फाल्गुन सु. १२ को क्षुल्लिका व्रत धारण किया। नया नाम क्रमश श्रीपार्श्वमतीजी एव जिनमतीजी रखा

गया । फाल्गुन सु १५ को ब्र सागरबाई की क्षु दीक्षा हुई नाम पद्मश्री रखा गया ।

ज्येष्ठ कृष्णा १४ पावन दिन अजमेर शहर में श्री बाल ब्र. उन्नीस वर्षीय युवा होनहार बालक छोटेलाल ने क्षुल्लक दीक्षा के व्रतो को सहर्ष अगीकार किया । दीक्षा समारोह अपूर्व था । अन्वर्थ नाम सज्ञा शान्तिसागर हुई । काफी धर्म प्रभावना हुई । अभी अल्पवय नवदीक्षित शान्तिसागरजी की दीक्षा को १९ दिन ही बीते थे कि घोर उपसर्ग के शिकार हुए । अजमेर से विहार कर सघ नागेलाव नामक ग्राम में पहुँचे । वहा अर्थलोलुपी, दुष्ट आदमियो ने प्रात काल सौच के समय ही सुकुमार को पकड लिया एव अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति नही होनेपर घोर कूप मे डाल दिया । क्षु. जी घबराये नही, वहा कुप मे णमोकार मत्र का स्मरण करते हुए खडे है, उपर से नागराज फण फैलाये रक्षा कर रहे है, नीचे से मछलिया पैरो को खा रही है । उपसर्ग विजेता दृढ प्रतिज्ञ से प्रभुका स्मरण कर आत्मचिंतन मे मग्न है । ७ घटे बीत चुके शान्तिसागर, को न पाकर सघ मे जनसमाज में कोलाहल मच गया । परन्तु आचार्य श्री ने आश्वासन दिया कि क्षु किसी गहरे स्थान मे डाल दिये गये है, अभी जीवित अवस्था मे है । घबराओ नही । चारो ओर खोजने पर दैवी चमत्कार से ग्रामवासियो ने आपका कूप से उध्दार किया ।

पावन सिद्धक्षेत्र शिखरजी में इनकी मुनिदीक्षा हुई । अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी में लीनता देख आचार्य श्री अन्वर्थ नामकरण भरतसागरजी दिया । वर्तमान मे आप सघ के एक युवा ज्ञान, ध्यान मे लीन सघकी शोभा रुपमे सुशोभित है । सन १९७९ सोनागिरीजो सिद्धक्षेत्र पर आ श्री ने इनकी ज्ञान की महिमा से गदगद हो विशाल जनसमुदाय एव सघस्य साधुओं की सलाह लेकर महान केवल ज्ञान ज्योति का उत्पादक उपाध्याय पद प्रदान किया है । पूर्ण नाम है, "उपाध्याय मुनि श्री भरतसागरजी"

धन्य है ऐसे उपसर्ग विजेता, अभीक्ष्ण- ज्ञानोपयोगी साधुओ को इन्ही साधुओ की महिमा पचम काल के अन्ततक जैन धर्म अजस्त्र रुप से वहता रहेगा।

इडर चातुर्मास के पश्चात सघ विभन्न स्थानो की वन्दना करता हुआ धारियाबाद (श्री १०८ अदिसागरजी की समाधिभूमि) पालोदा (मुनि देवेद्रसागरजी की समाधि भूमि) प्रतापगढ आदि स्थान होता हुआ ब्यावर पहुँचा वहा ज्ञान ज्योति प्रदायक श्रुतपचमी धूमधाम से मनाकर लाडनू होता हुआ सघ सुजानगढ आ पहुचा। सन १९६८ का चातुर्मास गुरु भक्तो की स्थली सुजानगढ मे हुआ। चातुर्मास मे सेठ श्री चन्दनमलजी पाड्या, रामचद्रजी, फुलाबाई पाड्या एव श्री विद्यावती गोलामारे ने कार्तिक शु पूर्णमासी वि. स २०२५ मे क्षुल्लक, क्षुल्लिका व्रत अगीकार किये उनके नाम क्रमशः उदयसागरजी, रतनसागरजी विनल्मतीजी, सयममतीजी रखे गये।

सुजानगढ से विहार कर आचार्य सघ अतिशय क्षेत्र श्री पदमपुरी पहुचा। यहा पचकल्याणक महोत्सव हुआ उसी वीच ब्र श्री रतनलालजी लुहाटिया नरायन निवासी ने फाल्गुन सुदी ४ को क्षु. दीक्षा के व्रत लिया नया नाम वृषभसागरजी रखा गया। पुन विहार करता हुआ सघ दिन चैत्र शु १३ सन १९६९ को पावन अतिशय क्षेत्र "महावीरजी" आ पहुचा। यह दिन पचमकाल मे भी चौथे काल का हृदय उपस्थित करता है यहा चारित्र चक्रवर्ती आ. श्री विमलसागरजी के सघ का सम्मिलन श्री १०८ आचार्य श्री धर्मसागरजी के सघ के साथ हुआ। इस समय ७७ त्यागियो के तप से यह भूमि निखर उठी। आहार की चर्या का दृश्य अत्यत मनोरम देखते नही अघाते थे। यहा महावीर जयती उत्साह उल्लास धर्म प्रभावना के साथ मनाई गई। मुनि वृन्द एव त्यागियो के हित-मित प्रिय प्रवचनो मे गुजित सारा नभोमडल धर्ममय हो गया था।

यहा से विहार कर आचार्य श्री सघ सहित मथुरा सिद्ध भूमि पर पहुचे। श्रुतपचमी पर्व मनाया एव ज्येष्ठ शु ६ को श्री [illegible]

ब्र. भिण्ड निवासी को क्षुल्लक पद प्रदान किया। नया नाम जम्बूसागरजी रखा गया। इसका प्रकार अनवरत विहार वन्दता कार्य करते हुए सन् १९६९ ता. ६ जु सघ का पदार्पण दिल्ली पहाडी धीरज मे हुआ। सघ का विशेष स्वागत किया गया। यही आचार्य सघ का चातुर्मास हुआ। चातुर्मासमे श्रावण शु १५ वि स २०२६ के दिन ब्र सुनन बाई पचन गिजोनी एव क्षु विजयसागरजी की क्रमश क्षुल्लिका एव ऐलकदीक्षा हुई, नाम क्षुल्लिक शान्तीमती एव ऐलक कुन्थुसागरजी क्रमश रखा गया। सिद्धचक्र विधान द्वारा सिद्धो की विशेष आराधना की गई एव ब्र. शुक्लाबाई अग्रवाल दिल्लीने मगसर सुदी १० को क्षुल्लिका पद ग्रहण किया नया नाम ज्ञानमती पाया।

मोक्ष पथ के पथिक आचार्य श्री ने सघ सहित श्री शिखरजी की ओर विहार कर दिया मार्ग मे कई धर्मप्रभावक कार्य हुए। फिरोजाबाद मे जयमाला पुरवाल आगरा निवासिनी ने माघ शु १ सन १९७० को क्षुल्लिका व्रत लिया नामकरण श्री १०५ क्षु प्रभावती हुआ। एटा मे सिद्धचक्र विधान विशेष विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। बरातो मे श्री छोटेलाल ने सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किये। भिण्ड टुरावा मे श्री रतनलालजी लमेचूवालो ने सप्तम प्रतिमा एव चैत्र शु १५ अशर्फीलाल ब्र इटावावालो ने कोडा जैनाबाद मे वैशाख वदी ९ को आचार्य श्री से क्षुल्लक व्रत ग्रहण किये क्षुल्लकजी का नाम श्री श्रुतसागर हुआ। इस प्रकार विहार करते हुए अतिम पडाव के लिए प्रस्थान हुआ मार्ग मे राजगृही, कुण्डलपुरी गुणावा, नवादा अदि स्थानो के दर्शन करते हुए पर्वतराज शिखरजी के चरणों मे आ पहुचे। आषाढ शु २ सवत २०२७ को मधुवन मे पहुचे। श्री सोहनलालजी पहाडिया ने यही चातुर्मास करने का आचार्य श्री से अनुरोध किया। संघ का चातुर्मास यहा सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री सुरेशकुमारजी सागर निवासी ने यहा ७ प्रतिमा तथा क्षु. दीक्षा के व्रत ग्रहण किये। नामकरण चन्द्रसागरजी हुआ। क्षुल्लिका अनत-मतीजी ने आर्यिका पद की दीक्षा ली और श्री पार्श्वमतीजी नाम पाया सिद्ध क्षेत्र की महिमा अनुपम है अनेकानेक जीवो ने शक्ति अनुसार

व्रतो को ग्रहण किया। लक्ष्मीबाई ने दो प्रतिमा मथुराप्रसादजीने सात प्रतिमा, राजबाई ने दो, जयनेमी ने दो एव कलकत्ता निवासी रेवनी बाई ने सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किये। श्री सोहनलाल पहाडिया ने सिद्धचक्र विधान कर महती धर्मप्रभावना की।

दि ३०-३-७१ को श्री शिखरजी से विहार कर राजगृही चम्पा-पुरी, मन्दारगिरी, नवादा गुनावा से पावापुरी की वदनार्थ सघ आया। श्रुतपचमी पर्व मनाया एव जेष्ठ शु १० को पावापुरी से विहार कर कुडलपूर होता हुआ आचार्य सघ जेष्ठ शु १३ दि. ६-६-७१ को पुन. राजगृही पहुचा। यही चातुर्मास हुआ। यहापर श्रावण शु पूर्णमासी के दिन ब्र शक्करबाई की आर्यिका दीक्षा, आसौण शु. १२ मालतीबाई की सप्तम प्रतिमा हुई। आर्यिका जी का नाम ब्राम्हीमती रखा। तथा श्री १०५ क्षु प्रबोधसागरजी मुनिपद पर आसीन हुए नाम श्री १०८ मुनिसुव्रतसागरजी रखा गया। यहा भी सिद्धचक्र विधान उत्साह मे श्रीपालजी पटनावालो की तरफ से कराया गया २ से ७ प्रतिमाधारी व्रती भी बने। यही मिती माघ वदी ६ शुक्रवार को श्री १०८ आ महावीरकीर्तिजी महाराज का समाधि दिवस अत्यत खेद के साथ मनाया गया और उनकी स्मृति रुपमे यहा पर श्री महावीरकीर्तिजी सरस्वती भवन का निर्माण कराया गया। ता. १८-३-७२ को मालती बाई सिकडी निवासिनी ने क्षुल्लिका पद की दीक्षा ली नाम १०५ क्षु श्रीमतीजी पाया।

दिनाक २९-३-७२ को सघ का विहार हुआ विभिन्न क्षेत्रों कुण्डलपुर, पावापुरी, आदि की वदना करते हुए सघ पुन. सम्मेदशिख-रजी आ पहुचा श्रुतपचमी उत्साह से मनाई तथा दि. २५-७-१९७२ आषाढ शु १४ मगलवार को आ. श्री १०८ विमलसागरजी महाराज एव श्री १०८ मासोपवासी मुनि श्री सुपार्श्वसागरजी दोनो ने अपने-अपने विशाल संघ के साथ चातुर्मास स्थापन किया। यहाँ ब्र लक्ष्मी-चन्दजी घाटोल निवासी ने श्रावण शु. १५ के दिन मुनिव्रत लिया। पत्र नाम मुनि निजयसागरजी रखा। आसोज वदी ११ को मुनि श्री

अनतसागरजी की एव आश्विन सुदी को आर्यिका श्री पार्श्वमतीजी की समाधि हुई। श्री ब्र अम्वालालजी ने दशहरा के दिन मुनि दीक्षा ली पद नाम श्री १०८ मुनि विजयसागरजी रखा। इसी पावन क्षेत्र पर श्री क्षु सुमतिसागरजी व क्षु. श्री शान्तिसागरजी (उपसर्ग विजेता) की कार्तिक शुक्ला १ को मुनि दीक्षा हुई। दोनो के नाम मुनि श्री बाहुवली सागरजी एव मुनि श्री भरतसागरजी क्रमसे रखे गये। ये आज सघ की शोभा बढा रहे है। कार्तिक सु २ को ४ क्षुल्लिका यो की आर्यिका दीक्षा हुई। एव १ ब्रम्हचारणि की आर्यिका दीक्षा हुई उनके नाम क्रम से आर्यिका पार्श्वमतीजी, जिनमतीजी, शातिमतीजी नदामतीजी और सुनन्दामती रखा। कईयों ने प्रतिमा रुप व्रतो को अगीकार किया। कार्तिक शु १२ ब्र प्रेमचन्द ने मुनिव्रत ग्रहण किया पद नाम श्री १०८ मुनि शीलसागरजी रखा गया। वैशाख वदी २ को श्री क्षु वर्धमानसागरजी की मुनि दीक्षा हुई पद नाम आनदसागरजी हुआ। मुनि श्री मल्लिसागरजी की यहाँ चैत्र सु १५ को समाधि हुई।

पुन पावन सिध्दक्षेत्र शिखरजी पर दि. १४-६-१९७३ के दिन आ विमलसागरजी एव आ श्री सन्मतिसागरजी दोनो गुरु शिप्य के सघ की एक साथ आषाढ शुक्ला १४ को चातुर्मास की स्थापना हुई। इस चातुर्मास मे आचार्य श्री ने आ महावीरमतीजी, दयामतीजी एव मुनि सकलकीर्ति की समाधि कराई।

शिखरजी से आपका सघ विहार कर १४-५-७४ को सिध्दक्षेत्र खडगिरि उदयगिरि पहुचा। वहाँ से पुन शिखरजी लौटते समय अनेक अजैनो ने मद्य, मधु, मास का आचार्य श्री से त्याग लिया। मार्ग मे ही सघ प्रधान आर्यिका श्री १०५ सिध्दमतीजी माताजी को बस से टक्कर लगने-के कारण काफी चोट आई। सघस्थ समस्त त्यागीवृन्द मे मानसिक वेदना व्याप्त हुई। वर्ष १९७४ मे सघ का चातुर्मास स्थापन पुन सम्मेद-शिखरजी मे हुआ। पूज्य आ श्री सिध्दमतीजी की आपने समाधि-सिध्द कराई। इसी चातुर्मास मे श्री १००८ भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाणोत्सव के उपलक्ष मे आचार्य श्री

१०८ श्री विमलसागरजी के सानिध्य मे समवशरण पचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मि माघ सु ८ से १३ तक सानन्द सम्पन्न हुआ । देश के कोने-कोने से यात्री बधुओने पधारकर इस पुण्य अवसर पर धर्मार्जन किया । भगवान पार्श्वनाथ के केवलज्ञान के दिन लौहारिया जिला वासवाडा निवासी भी ब्र जिनेद्रकुमारजी ने आ श्री से क्षु दीक्षा ग्रहण की तथा पद नाम श्री १०५ क्षु पाश्वकिर्ती जी प्राप्त किया यही मदनलालजी चूर्ड वाले की धर्म पत्नी श्री मौनीवाई को आर्यिका दीक्षा देकर समाधि कराई । चैत्र वदी ११ को श्री मुनी वीरसागरजी जिन्होने ५ वर्षो से सल्लेखना ले रखी थी का बडे ही नियमपूर्वक समाधि मरण कराया । जिससे काफी धर्म प्रभावना हुई ।

दि ३१-६-१९७५ को श्री सम्मेद शिखरजी से आपका विहार ईसरी कोडरमा हुआ । वहा आपने समाज को गये चैत्यालय के ऊपर शिखर वनाने की प्रेरणा दी समाज ने स्वीकार कर लिया । नवादा गुणावा पावापुरी होते हुए राजगृही पहुचे । दि २२-७-१९७५ को राजगृही मे चातुर्मास की स्थापना की । यहा चातुर्मास मे गुणमालावाई ने सप्तम प्रतिमा के व्रत लिये । तथा सिद्ध चक्र विधान हुआ ।

चातुर्मास सम्पन्न कर आचार्य श्री पुन - जिनकी एक बार श्रद्धा से वदना करने से सर्व पाप क्षम हो जाते है ऐसे शिखरजी की ओर पुन लौट गये । दिनाक १०-७-७६ को मधुवनमे चातुर्मास स्थापना किया । ब्र शान्तिबाईने क्षु दीक्षा ली नाम श्री चेलनामतिजी पाया । एक ब्रम्हचारीजी की क्षु दीक्षा हुई पद नाम श्री विपुलसागरजी रखा गया । चातुर्मास के वाद ब्र बोधुलाल जी ने दीक्षा ले ली नाम पाया क्षु १०५ श्री उत्साहसागरजी ब्र कमलादेवी की फाल्गुन शु ९ को यही पर क्षु दीक्षा हुई नाम पाया श्री १०५ कीर्तिमतीजी । फाल्गुन शु १५ को ही ब्र छोटेलालजी की क्षु दीक्षा हुई नाम पाया क्षु मतिसागरजी ।

दिनाक ७–४–१९७७ को सम्मेद शिखरजी से विहार कर सघ भागलपुर, चम्पापुर, पावापुर, वैशाली (कुण्डलपुर) आदि क्षेत्रो की दना करते हुए श्री अयोध्याजीमे पधारा । अयोध्याजी मे श्री १००८ आदिनाथजी, अजितनाथजी, अभिनदननाथजी, सुमतिनाथजी, अनन–

नाथजी एव शीतल नामा मुनिजी आदि की जन्मभूमियो के दर्शन कर सघ वहा से श्री धर्मनाथजी की जन्मभूमि रत्नपुरी के दर्शन कर पुन: अयोध्या लौट आया। आचार्य श्री के ससघ आगमन के समाचार फूल की खुशबू की तरह चारो ओर फैल गये। तभी टिकैसनगर की गुरुभक्त धर्म प्रेमी समाज के प्रतिनिधियो ने आकर गुरु चरणो मे टिकैतनगर के लिए चातुर्मास करने की प्रार्थना की। आचार्य श्री की स्वीकृति मिल गई। दिनाक १९–६–१९७७ आ शु ३ रविवार को टिकैतनगर इन्द्रपुरी की तरह सज चुका तभी आचार्य सघ विशाल जुलूस बाजा के साथ निकला चारो और जय-जयकार की ध्वनि से आकाश गुजायमान हो उठा। दि ३०–६–१९७७ को चातुर्मास स्थापना हुई। काफी धर्म प्रभावना के साथ यहा चातुर्मास सम्पन्न हुआ।

इस चातुर्मास मे आपने कई धार्मिक अनुष्ठान के साथ तीन लघु पच कल्याणक सम्पन्न कराये। दशहरे के दिन ब्र जिनमतीजी को सात प्रतिमा व्रत प्रदान किये। आश्विन कृष्णा सप्तमी को बडेही धूमधाम से आपकी जन्म जयति मनाई गई जयति के उपलक्ष मे श्री सेठ पन्नालाल सेठी ने आये हुई जनसमूह को प्रीतिभोज दिया। कार्तिक कृष्णा अमावस्या को चातुर्मास योग विसर्जन कर यहासे कार्तिक सुदी पूर्णिमासी को मगल विहार करके त्रिलोकपुर नेमिनाथ अतिशय क्षेत्र के दर्शन करते हुए गणेशपुर मे प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई। यहा से विहार करके आप अयोध्या पचकल्याणक प्रतिष्ठा मे पहुचे।

इस पचकल्याणक मे आपने मगसर वदी अमावस्याको भगवान के दीक्षा कल्याण के समय ही श्री १०५ क्षु मतिसागरजी को मुनिदीक्षा प्रदान की एव उनका नामकरण मुनि १०८ श्री मतिसागरजी रखा। यहा पर आपने करीव १॥ माह रह करके अनेक शान्तिविधान व ऋषिमडल विधान कराके धर्मप्रभावना की। यहा से विहार करके आप श्री १००८ सभवनाथ भगवान की जन्मभूमि श्रावस्ती पधारे यहा पर आपने ३ दीन रह करके जैन अजैन आदि को धर्मोपदेश देकर मास शराब आदि का त्याग कराया। यहा से विहार करके वहराईज गये।

यहा पर श्री १०८ आ महावीरकीर्तिजी महाराजकी सातवी पुण्यतिथि वडे धूम धाम से मनाई। यहा से बारावकी होते हुए लखनऊ डालीगज वसतपचमी के धार्मिक मेले पर पहुचकर मेले की शोभा बढाई। यहा के समस्त मन्दिरो के दर्शन करके आप महमूदाबाद के पचकल्याणक मे पहुचे और धर्मप्रभावना की।

यहा से विहार कर शिछोली होते हुए सीतापूर मे वेदी प्रतिष्ठा का कार्य आपके सानिध्य मे सम्पन्न हुआ। सेठजी निर्मलकुमारजी ने अपने मिल मे श्री सिद्धचक्रविधान वडे धूम-धाम से कराया। यहा से शाहा-जापूर होते हुए वरेली पहुचे यहाँ मदिर के सामने एक मानस्तभ कराने का प्रस्ताव आपने रखा। सारी समाज ने इसे स्वीकार किया एव शुभमुहूर्त ही करने का आदेश दिया। यहा से आपने भी अतिशय क्षेत्र अहिच्छत्र पार्श्वनाथ प्रभु के केवलज्ञान स्थान पर पहुचकर पचकल्याण प्रतिष्ठा करवाई। यहा से विहार कर आप अतिशयक्षेत्र मरसलगज श्री १००८ आदिनाथ भगवान के दर्शन करते हुए फिरोजा-बादसे आगरा पहुचे। यहा पर श्री १०८ आचार्य सुमतिसागरजी महाराज के सघ का मिलाप हुआ जिससे वडी अच्छी धर्मप्रभावना हुई। यहा से विहार कर धौलपूर होते हुए मौरेना पहुचे। वहा आपने वडे धूम-धाम से श्रूतपचमी पर्व मनवाया जिससे लोगो को ज्ञान हुआ कि आज के दिन हमे हस्तलिखित जिनवाणी प्राप्त हुई उसके पहले हस्तलिखितशास्त्र नही थे।

यहा से आप शिहोनिया शान्तिनाथ अतिशय क्षेत्र दर्शन के लिये पधारे। वहा से पुन मौरेना आये। वहा से विहार कर लश्कर चम्पा-बाग मदिर मे आये। यहा आपने सब मदिरो के दर्शन को पहुचे तो ज्ञात हुआ कि हमारी प्राचीन सस्कृति किसी प्रकार महानता को लिये हुए है किन्तु आज उनका रक्षक कोई नही है। यहा पर श्री १०८ आ सन्मतिसागरजी गणधर श्री १०८ कुन्थुसागरजी एव गणिनी आर्यिका श्री १०५ विजयमतीजी माताजी के सघ का मिलाप हुआ। आपने व

अन्य त्यागियोने केशलोच कर मुनिचर्या का दिग्दर्शन कराया। इसप्रकार आपकी चर्या को देखकर यहां के नवयुवक मडल तथा यहा की समाज ने मिलकर सोनागिरजी सिद्धक्षेत्र पर चातुर्मास करने के लिये श्रीफल चढाकर प्रार्थना की आपने उस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार किया। दिनाक २८-६-१९७८ आषाढ वदी ८ रविवार को सोनागिर क्षेत्र पर चातुर्मास के लिये लश्कर से विहार किया। यहा से डबरा होते हुए दि ३-७-७८ आषाढ वदी १३ सोमवार को क्षेत्र पर आपने पदार्पण किया। यहा पर पहले से ही श्री १०८ गणधर मुनि कुन्थुसागरजी एव श्री १०५ प्रगणिनी आ विजयमतीजीका सघ विराजमान था। दोनो सघो ने मिलकर आषाढ शुक्ला १४ को चातुर्मास स्थापना की। यहा पर चातुर्मास मे श्री १००८ चन्द्रप्रभु मदिर प्रागण मे अनेक शान्तिनाथ विधान, भक्तामर विधान और ऋषिमडलविधान कराये। यहाँ पर आपने देखा कि श्री १००८ मुनि नगानगजी के चरण तो है किन्तु मूर्तियो का अभाव है। सो आपने मूर्तियो के विराजमान कराने के लिये दो छत्रियो का शुभ मुहूर्त मे शिलान्यास कराया। एव छत्रियो का काम चालू करवाया। दोनो मूर्तियो के विराजमान करने की स्वीकृति श्री युवारत्न सेठ श्री चेनसपजी बाकलीवाल व युवारत्न सेठी श्री पन्नालालजी ने सहर्ष दी। चातुर्मास मे आश्विन कृष्णा सप्तमी को आप की जन्म-जयन्ती वडे धूम-धाम से मनाई गई। इस अवसर पर श्री पन्नालालजी सेठी ने आनेवाली समस्त जनता को प्रीतिभोज दिया। यहाँ पर आपने दशहरे के दिन श्री मोतीलालजी कामावालो को विधिपूर्वक सप्तम प्रतिमा के व्रत दिये। कार्तिक कृष्णा अमावस्या को दोनो सघो ने सानन्द चातुर्मास सम्पन्न किया। चातुर्मास समाप्ति के उपलक्ष मे वीसपथी कोठी के मंत्री श्री नेमीचन्दजी ने व श्री इजीनियर सा ताराचन्दजी ने वडे ठाट बाट से सिध्दचक्र विधान कराया।

यहाँ पर उपदेश सुनने के लिये विशाल जनसमूह बैठ सके ऐसा कोई स्थान नही था उसकी पूर्ति के लिये आपके यहाँ एक “ विमल

सभा भवन " का शिलान्यास करवाया जिसे बनाने की स्वीकृति श्री ब्र चित्राबाईजी ने दी। यहाँ पर आपके केशलोच के शुभ अवसर श्री १०५ क्षु सन्मतिसागरजी एव श्री १०५ क्षु गुणसागरजी का पदार्पण हुआ। जैसे ही सन्मतीसागरजी ने आपके दर्शन किये वैसे ही उनकी अन्तरग भावना को आपने जान लिया और कहा कि आप सागर से इसलिये आये है कि स्याद्वाद ज्ञान जन-जन मे कैसे फैलाया जाय यह आपकी समस्या है सो आपकी यह भावना पूरी होगी। आचार्य श्री का आशिर्वाद पाकर क्षुल्लकजी फूले न समाये। आपने यहाँ से बुन्देलखंड के लिये दिनाक १४ १-७९ मे विहार किया। दतिया झासी होते हुए करगुवा अतिक्षेत्र पहुच श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन किये। यहाँ पर आपने वेदी प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न कराके भगवान पार्श्वनाथजी को विराजमान किया। इस अवसर पर अनक त्यागियो के केशलोच हुए क्षेत्र मे विशेष आमदानी हुई। और बडी धर्म प्रभावना हुई। यहाँ से विहार कर बरूआसागर छतापूर, बमीठा होते हुए श्री प्राचीन अतिशयक्षेत्र खजुराहो में पहुच कर श्री १००८ शान्तिनाथ भगवान के दर्शन किये। वहा से आप राजनगर के दर्शन करके बडा मलहरा होते हुए द्रोणागिरी सिद्ध-क्षेत्र पर पहुचे। जहा से गुरुदत्त दि मुनि मुक्ति गये थे उनके चरणो का दर्शन कर मन प्रफुल्लित हुआ। यहा पर ब्र राजेन्द्रकुमार ने पाच प्रतिमाके व्रत धारण किये। यहा से आप विहार कर छत्तीस मील होते हुए नैनागिर सिद्धक्षेत्र के दर्शन के लिये पधारे। यहा पर आप तीन दिन रहकर दरगुवा होते हुए आहारजी सिद्धक्षेत्र पधारे। यहाँ के दर्शन कर पपौराजी अतिशय क्षेत्र के दर्शन को पहुचे। यहा पर श्री ब्र राजेन्द्रकुमार को सप्तम प्रतिमा के विधि पूर्वक व्रत दिये। यहा पर आपका व अन्य त्यागियो के केशलोच भी हुए और बडी धर्म प्रभावना हुई। यहाके सब मदीरो के दर्शन कर दिगोडा होते हुए वधा अतिशय क्षेत्र के दर्शन को पहुचे। फिर वहा से पृथ्वीपुर दतिया होते हुए आपने सोनागिर होली पर मेले मे पहुचकर मेले की शोभा बढाई। यहा पर श्री १०८ आचार्य सुमतिसागरजी महाराज के सघ का भी मिलाप हुआ। यहा पर श्री १०५ क्षु सन्मतिसागरजी के सानिध्य मे ५ दिन तक शिक्षग

शिविर लगा जिसमें अनेक युवक युवतियों ने भाग लिया और धर्म के मर्म को जाना। और भी अनेक धार्मिक उत्सव हुए जिससे बडी धर्म प्रभावना हुई।यहा पर ज्येष्ठ वदी १४ से ज्येष्ठ ५ तक श्री १०८ आ. विमलसागरजी के सानिध्य मे श्रुत सप्ताह का आयोजन रखा गया जिसमे सात तत्वोका विवेचन बडे ढग से हुआ और अन्तिम दिन श्रुतपचमी पर्व की महानता बताते हुए ज्ञान गगा का महान गौरव बढाया। यहा पर ही श्री १०५ क्षु. सन्मतिसागर ने श्री १०८ आ. विमलसागरजी के कर-कमलो द्वारा "स्याद्वाद नगानग कुमार सस्कृत महाविद्यालय की स्थापना ५ जून १९७९ में कराई। यहा पर श्री सुमतिप्रसादजी देहली वालोंने अष्टान्हिका महापर्व मे श्री सिद्धचक्र विधान कराया। इसी पर्वमे श्री १०५ क्षु सन्मतिसागरजीने "ध्यान शिविर" का आयोजन आठ दिन तक किया। जिसमे अनेक भव्यो ने ध्यान के महत्व को जान उसकी महानता से लाभ लिया। इसी पर्वके अन्तर्गत श्री १०८ आ पार्श्वसागरजी के सघ का और ऐलक पार्श्व-कीर्तिजी के सघ का इस पावन क्षेत्र पर पदार्पण हुआ। इसी पर्व मे श्री सेठ सुमतिप्रसादजी एव केवलचन्दजी ने आचार्य श्री से यहा पर चातुर्मास करने की प्रार्थना की। आचार्य श्री ने सहर्ष चातुर्मास की स्वीकृति दे दी। आषाढ सुदी १४ रविवार को तीनों संघोने मिलकर चातुर्मास की स्थापना की। उस समय साधुओं की कुल सख्या २८ थी। इसी चातुर्मास मे श्री १०५ ऐलक पार्श्वकीर्तिजी ने आचार्य श्री से मुनि बनने की एव ब्र राजेन्द्रकुमार ने क्षु दीक्षा की प्रार्थना की। आचार्य श्री ने श्रावण सुदी ९ दिनाक २-८-१९७९ गुरुवार के शुभमुहूर्त मे दोनो पात्रो को दीक्षा देकर नामकरण श्री १०८ मुनि पार्श्वकीर्तिजी एवं श्री १०५ क्षु तीर्थसागरजी रखा। इसी सदर्भ मे श्री १०५ क्षु आगमनतीजी एवं ब्र कु सुधर्मावाईने ब्र. कु. एरावतीवाईने आचार्य श्री से दीक्षा की प्रार्थना की। आचार्य श्री ने श्रावण शुक्ला १२ दिनाक ५-८-१९७९ रविवार को दीक्षा देकर नामकरण श्री १०५ आर्यिका भरतमतीजी व श्री १०५ क्षु अनगमतीजी रखा। श्रावण शुक्ला पूर्णिमा रक्षाबधन के दिन श्री सुधर्मावाईजी को आर्यिका पदकी दीक्षा देकर नामकरण श्री १०५ आ. नगमतीजी रखा।

आश्विन कृष्णा सप्तमी को वडे धूम-धाम से आपकी ६८ वीं जन्मजयन्ति मनाई गई। इसी शुभ वेलामे आपने समस्त त्यागियो की अनुमति से श्री १०८ मुनि भारतसागरजी को उपाध्याय पद विधिवत प्रदान किया। सेठ पन्नालालजी सेठी ने आये हुए समस्त यात्रियो को प्रीतिभोज दिया। इसी चातुर्मास मे श्री १०५ क्षु. सन्मतिसागरजी महाराज ने युगल आचार्यो के सान्निध्य मे सात दिन तक शिक्षण शिविर का आयोजन किया। जिसमे अनेक त्यागियो और विद्वानो के नाना विषयो पर प्रवचन हुए और युवा वर्ग मे धर्म के प्रति विशेष रुची जागृत कराई गई। कार्तिक कृष्णा अमावस्या को तीनो सघोने एकसा चातुर्मास विसर्जन किया।

चातुर्मास के वाद दिनाक २९-११-१९७९ मे मगसर सुदी ११ से लेकर मगसर सुदी १५ तक श्री १०८ आ. विमलसागरजी के सानिध्य मे श्री प्रतिष्ठाचार्य श्री प शिखरचन्दजी ने श्री नगानग कुमारकी प्राण प्रतिष्ठा कराई। मेले का समस्त खर्च श्री निर्मलकुमारजी दिल्लीवालो ने किया। इसी अवसर मे भगवान के दीक्षा कल्याण पर अनेक त्यागियो ने केशलोच किये ज्ञानकल्याण के दिन श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज को "सन्मार्ग दिवाकर" पद से विभूषित किया गया। इसी दिन स्याद्वाद परिषदका द्वितीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इसी क्षेत्र श्री ब्र चन्द्रकान्त भूपाल उपाध्यायने श्री १०८ आ विमल-सागरजी महाराज से क्षु दीक्षा की प्रार्थना की। आ श्री ने दिनाक २०-१२-१९७९ को दीक्षा देकर नामकरण श्री १०५ क्ष नगनागर रखा। दिनाक ३-१-१९८० के दिन आचार्य श्री सघ एव अन्य त्यागियो ने केशलोच किया। इसी दिन स्याद्वाद नगानग सस्कृत महाविद्यालय का शिलान्यास आचार्य श्री के सानिध्य में हुआ। फिर यहा से दिनाक ९-१-१९८० को श्री १००८ भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के लिये आचार्य श्री ने सघ सहित विहार किया।

अतिशय क्षेत्र करगुवा, सिद्धक्षेत्र पावागिर के दर्शन करके ललितपुर होते हुए आप मालथोन पहुचे । यहा पर आचार्य श्री के दर्शन के लिये १०५ श्री ऐलक दर्शनसागरजी एव ऐलक शिलसागरजी पधारे । आचार्य श्री ने युवक ऐलको को सबोधित किया कि "लगोट क्यो पहन रखी है क्या मुनि बनने के लिये हमारे पास आये हो' दोनों ऐलक बोले आज तक हम सुन ही रहे थे कि आचार्य श्री निमित्त ज्ञानी है परन्तु आज प्रत्यक्ष देखलिया कि आपने हमारे बिना कहे हमारी भावना को बता दिया । दोनो ऐलको ने आचार्य श्री की आज्ञा स्वीकार की और दिनाक ३१-१-१९८० गुरुवार माघ सुदी पूर्णमासी श्री अतिशय क्षेत्र बालाबेट पारस प्रभु के चरणो मे आचार्य श्री ने युगल ऐलक को मुनिदीक्षा प्रदानकर नामकरण मुनि १०८ श्री भूतबलीजी एवं पुष्पदन्तजी रखा । इस वैराग्य दृश्य को देखकर अनेक भव्योने व्रत ग्रहण किये । यहा पर पहले से ही श्री त्रिलोक मडल विधान श्री १०५ आर्यिका अभयमतीजी एवं क्षु चन्द्रसागरजीके सानिध्य मे चल रहा था । विधान की समाप्ति भी उसी दिन आचार्य के सानिध्य मे हुई ।

यहा से खुरई अतिशय क्षेत्र ईसरवाडा होते हुए सागर पहुचे । सागर मे विहार कर गढाकोटा होते हुए अतिशय क्षेत्र पटेरा के दर्शन किये । यहा से कुंडलगिरि सिद्धक्षेत्र के दर्शन को पधारे । यहा पर अनेक त्यागियो ने केशलोच किये, ९ दिन तक सघ यहा विराजमान रहा अनेक भव्यात्माओ ने धर्मामृत पान किया । यहा से विहार कर दमोह होते हुए पाटनगज अतिशय क्षेत्र के दर्शन करते हुए सागर पहुचे । यहापर आचार्य श्री एंव अन्य त्यागियों के केशलोच हुए सभी मदिरो के दर्शन किये । अच्छी धर्मप्रभावना हुई ।
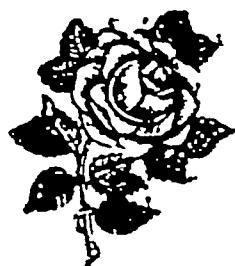
यहा से विहार कर जाखलोन होते हुए अतिशयक्षेत्र देवगढ पहुचे । यहा क्षेत्र के दर्शन करने पर प्राचीन जैन सस्कृति एव कला जानकर विशेष हर्ष हुआ किन्तु खेद है कि हम अपनी संस्कृति और कला की रक्षा भी नही कर पा रहे है अत उसकी रक्षा के लिए

अनेक योजनाए आचार्य श्री ने समाज के सामने रखी। जिसकी समाज ने भूरि–भूरि प्रशसा की। यहा से विहार कर अतिशय क्षेत्र चदेरी खधारगिरी, थूबौनजी के दर्शन करते हुए आप अशोकनगर पधारे। यहाँ पर कई त्यागियो ने केशलोच कर मुनिचर्या का दिग्दर्शन कराया। यहाँ से आप गुना होते हुए शान्तिनाथ अतिशय क्षेत्र बजरग गढ पहुँचे। यहा के दर्शन कर राघवगढ मे पहुँच कर श्री १००८ महावीर प्रभुकी जयति बडी प्रभावना के साथ मनवाई।

यहा से विहार कर सारगपूर अतिशय क्षेत्र मक्सी पार्श्वनाथ और उज्जैन और बनेडिया अतिशय क्षेत्र के दर्शन करते हुए इन्दौर मे पधारे। यहा पर धर्मानुरागिणी जनता ने बडी धार्मिक प्रभावना के साथ आचार्य सघ का प्रवेश कराया। यहा पर आपने व अन्य त्यागियोने केशलोच किये इसी शुभ अवसर पर ब्रम्हचारिणी सुलोचना ने ५ प्रतिमा के व्रत तथा आजीवन ब्रम्हचर्य व्रत धारण किया। इन्दौर नगरीसे दिनाक १ को विहार कर के सिद्धवर कूट सिद्धक्षेत्र ओर पावागिरी के दर्शन करते हुये बडवानी सिद्धक्षेत्र पर पहूँचे। यहा पर श्री १०८ आचार्य पार्श्वसागरजी जो कि आपके प्रथम शिष्य थे उनका मिलाप हुआ। दोनो सघो ने मिलकर बावनगजा सिद्धक्षेत्र की वदना की। यहा दोनो सघोका चतुर्दशी को सामूहिक प्रतिक्रमण एव कई त्यागियो का केशलोच हुआ। इसी केशलोच के अवसर पर श्री उमेशकुमार, कनकमाला व सनावद की एक बहन ने आजीवन ब्रम्हचर्य लिया।

यहा से आप विहार कर कुसुम्बा मे आये यहा श्रुतपचमी पर्व धूमधाम से मनाया। इस शुभ अवसर पर श्री मागीलालजी ने सप्तम प्रतिमा के व्रत लिये जिनका नामकरण ब्र श्रुतकिर्तीजी रखा। इसी दीक्षा के अवसर पर तीन युवको ने आजीवन ब्रम्हचर्य व्रत अगीकार किया। यहा से विहार कर मागी तुगी सिद्धक्षेत्र पर आये। यहा पर आचार्य श्री के सानिध्य मे एक मदीर व एक धर्मशाला का शिलान्यास श्री दानवीर सेठ हरकचन्द व सेठ नकरलालजी के कर कमलो व्दारा पडीत तेजपालजी काला ने करवाया।

यहा से विहार कर आप गजपथा सिद्धक्षेत्र पधारे। यहांपर श्री १०५ क्षु सन्मतिसागरजी ने २-६-८० श्री स्याव्दाद परिषद का चयन कराया। श्री स्याव्दाद गजकुमार पाठशाला का उद्‌घाटन श्री ब्रम्हचारिणी गुणमाला ने किया। दूसरे दिन आचार्य श्री १०८ शातिसागरजी महाराज के जन्मदिवस पर आचार्य श्री उपाध्याय श्री एव अनेक त्यागियो ने केशलोच किया एव इसी अवसर पर नीरा निवासी श्री रिखवलाल गुलाबचन्द म्हसवडकर वालो ने आचार्य श्री के चरणो मे नीरा चातुर्मास हेतु श्रीफल चढाया। आचार्य श्री ने चातुर्मास की सहर्ष स्वीकृती दे दी। आषाढ कृष्णा सप्तमी को यहा से नीरा के चातुर्मास के लिये विहार किया। दिनाक १८-६-१९८० शुक्रवार आषाढ शुक्ला षष्ठी को नीरा नगर मे चातुर्मास हेतु प्रवेश किया। नीरा के जनता ने बडी धूम-धाम से आचार्य श्री का अपने नगर मे मगल प्रवेश कराया। इतने विशाल सघ के आगमन का नीरा की भूमि मे यह प्रथम स्वर्ण अवसर है।

# "आचार्य श्री और उपसर्ग"

ससार मे कोई भी पदार्थ बहुमूल्य या आदरणीय बहुत परिश्रम तथा कष्ट सहन करने के पश्चात बना करता है। गहरी खुदाई करने पर मिट्टी पत्थरो मे मिला हुआ भद्दा रत्नपाषाण निकलता है उसकी छैनी टाकी हथोडो की मार सहनी पडती है शान की तीक्ष्ण रगड खानी पडती है तब झिल मिलाता हुआ बहुमूल्य रत्न प्रकट होता है। अग्नि के भारी सताप मे बार बार पिघल कर सोना शुद्ध चमकीला बनता है। तभी संसार उसका आदर करता है और पूर्ण मूल्य देकर उसे खरीदता है।

इसी प्रकार आत्मा अनत वैभव का पुज्य है। उसके समान अमूल्य पदार्थ ससार में नही स्वर्ण रत्न की तरह उसका वैभव भी अनादिकालीन कर्म के मैल से छिपा हुआ है। उस गहन कर्ममल मे छिपे हुए वैभव को पूर्ण कर शुद्ध प्रकट करने के लिये महान परिश्रम करना पडता है और महान उपसर्गो व परीषहो को सहन करना पडता है। तव कही यह आत्मा परम शुद्ध एवं विश्ववद्य परमात्मा बना करता है।

उपसर्ग और परीषह जैन साधुओ के जीवन के शृंगार है। उप-सर्ग पर कृत होते है और परीषह स्वकृत सहे जाते है। उपसर्ग और

परीषहों से युक्त जीवन ही अपनी वास्तविक निधि को प्राप्त करने मे सक्षम होता है। जैन सस्कृति के इतिहास को पलटकर देखने पर ज्ञात होता है कि जैन साधुओ ने उपसर्ग विजेता बनकर आत्मारुपी सूर्य की ज्ञान किरणो से स्वपर को प्रकाशित किया है।

भगवान पार्श्वनाथ, भगवान बाहुबली, पाच पाडव, गजकुमार मुनि, आदि का नाम याद आते ही रोम-रोम पुलकित हो उठता है। धन्य है ऐसी महान आत्माओ की। ससार मे वास्तविक और सुगधित उत्तम जल कौनसा है ?

गुरु ने पूछा – ससार मे उत्तम जल कौनसा है।

१ शिष्य – गगाजल
गुरु – नही
२. शिष्य – वर्षाजल
३. शिष्य – ओस का जल
४. शिष्य – पुत्र के वियोग मे विरहणी मा के नैत्रोंका निकला पवित्र जल

गुरु कहते है पुत्रो वास्तविक जल कौनसा है सुनिये आत्मा मे लगे हुए कर्मरुपी शत्रुओ को निकालने के लिये ध्यानरुपी अग्नि से उपसर्ग परीषहो को जीतकर महा पुरुषार्थ से निकला हुआ श्रम जल ही वास्तविक पवित्र है जिस जल की सुगधी से पवित्र समस्त दिग–दिगत सौरभमय बनता है। और आत्मा पूर्ण शुध्द बन जाता है

एलक ह। चत्रवदी २ मिर्जापूर गाव से विहार कर आपने किसी एक जगल मे विश्राम किया। एक श्रावक ने महाराज श्री से विनती की कि इस जगल मे प्रतिदिन शेर आता है अत आप सुबह देर से विहार करियेगा। महाराज ध्यान मे लीन ही बैठे है कि सुबह–सुबह अचानक एक श्रावक घवराता हुआ गुरुदेव के सम्मुख आया। प्रभु बचाओ आज तो हमारे प्राण पखेरु ही उड जायेगे। गुरुदेव ने उसे आशिर्वाद दिया। वीर सिह वृत्ति मुनि सिह से घबराये नही। दोनो सिंहो का मुकाबला था परतु विजय तो आत्मार्थी सिह की ही निश्चित है। आत्मार्थी सिह ऋषिराज ने उसी समय णमोकार मत्र का चिंतन किया। चारो दिशाओ मे सीमा बाध कर लकीर की और समाधिस्थ हुए। तभी कुछ समय वाद वनराज ने गुरुदेव चरणो मे नमस्कार किया और छलाग मारता हुआ चला गया। धन्य है अनुपम सिहवृत्ति को।

श्री सम्मेद शिखरजी पर्वतराज पर यात्रा करते समय तो कई वार शेर चन्द्रप्रभु टोक, जलमदिर, पार्श्वनाथ टोक आदि पर दर्शन करते समय मिले। और सदैव आचार्य श्री के चरणो को नमस्कार कर च ठ दिये। यह सब आपकी निर्ग्रंथ मुनि तपस्या की शक्ति का प्रभाव है।

एक बार चित्ती (अजगर) सामने मुह फाडे आता दिखाई दिया। आपने स्वय अविचलित रहते हए अपने साथ चल रहे भक्त गणो को आश्वस्त किया। आपकी आत्म साधना प्रखर ज्योति के सामने वह टिक न सका और चुपचाप अन्यत्र खिसक लिया हम आपके इस अपूर्व धैर्य की शत शत वन्दना करते है।

आपकी गोदमे सर्प तो कई बार घटो क्रीडा करते रहे है। और आप ध्यानस्थ इस सबसे बेखबर निश्चिन्त आत्मध्यान मे लीन रहते है।

एक दिन महाराज श्री सामायिक के वाद कुछ विश्राम कर रहे थे कि सर्प उनके हाथ पर चढ कर क्रीडा करने लगा। महाराज तो णमोकार मत्र के चिन्तवन मे लीन थे। उसी समय जव महाराज का ध्यान सर्प की ओर गया। उन्होने उसे हटाने की चेष्टा न की और

आत्म स्वरुप का ध्यान करते हुए समाधिस्थ हुए। सर्प आधा घटे हाथ पर क्रीड़ा करके मानो गुरुवर के दर्शन करने आया और चला गया।

परम तीर्थ गिरनार जी की वंदना करके जब आप पावा पहुँचे तो वहा पर भररिया मे आने पर वहा के निवासीयो के झुण्ड वहा पर आपको मारने आये। परन्तु आपके तपोबल के प्रभाव से सब नतमस्तक होकर चले गये।

४

# आचार्य श्री और निमित्तज्ञान

शास्त्रो के माध्यम से हमने आज तक यह जाना था कि जैन साधुओ के तपोवल मे इतना अतिशय होता है कि उन्हे ऋद्धिया उत्पन्न होती है। उनकी वाणी से जो निकलता है वही सत्य होता है, तथा उनका निर्मलज्ञान अतिशय प्रभावना का कारण वनता है। किन्तु इस भारत वसुन्धरा का अहोभाग्य है कि ऐसे क्रातिमय समय मे दिगवर साधु ही नही अपितु विशेष परिणामो की निर्मलता से जिन्हे विशेप सिद्धिया प्राप्त हुई है, तथा जिनके चमत्कार को देखकर सारा भारत का जन मानस जिनकी ओर दृष्टि किये हुये है ऐसे आ श्री के दर्शन हमे आज प्रत्यक्ष रुपसे प्राप्त है।

आपका वौद्धिक मान्त्रिक ज्ञान चमत्कार बहुत उच्च कोटि का है। मत्र शास्त्रो पर आपका पूर्ण अधिकार है। स्वरज्ञान आपका विशेप ज्ञान है। आप के निमित्त ज्ञान के सामने किसीका वश नही चल पाया है। मनुष्य के चेहरे को देखकर ही उसकी अतकरण मे घुमडती भावना का सहज तुरन्त ही अनुमान कर लेते है। और आपके तत्सवधी कथन प्राय सभी सत्य होते है।

सन १९६१ मे एकबार आचार्य श्रीजी श्री सम्मेद शिखरजी से राजगृही की ओर विहार कर रहे थे कि आकाश की ओर नजर पहुँची सहसा विजली चमकी। विजली चमकते ही आचार्य श्रीजी ने अपने निमित्तज्ञान से देखा और कहा इस वर्ष ऐसी घोर वाढ आयेगी कि गाव के गाव वह जायेगे। ठीक दो माह वाद पटना, आरा, दानाधानी आदि गावो मे इतनी भयानक वाढ आयी कि लोगो के घर उजड गये। वेघरवार लोगो को हवाई जहाज के माध्यम से भोजन पहुचाया गया। पद्रह दिन तक भयकर वाढ रही।

आचार्य श्री शिखरजी मे थे। एक वार आपके दर्शनार्थ राव साहव सेठ चादमलजी गोहाटीवाले पधारे। आचार्य श्री जी ने उनसे

कहा कि आप दो प्रतिमा के व्रत ले लीजिये। परन्तु सेठजी ने कहा अभी नही लेता हू। मै महावीर निर्वाणोत्सव पर दिल्ली मे व्रत लूगा जिससे अन्य जनता पर भी त्याग धर्मका प्रभाव होगा। परन्तु आचार्य श्री ने स्पष्ट रुप से कह दिया व्रत तो जाने दो तुम भी उस समय वहा नही पहुच पाओगे। सेठजी को उस समय गहरी चोट पहुची। बोले आप कैसे कह रहे है। मै तो २५०० वे निर्वाणोत्सव का अध्यक्ष हू मै कैसे नही जाऊगा। आपने कहा आगे की बात मै कुछ नही कहूगा यदि अभी व्रत ग्रहण करना चाहते हो तो कर लो अन्यथा अव्रती अवस्था मे ही तुम्हारी समाधि हो जायगी। सेठजी ने स्वीकृति नही दी। फलत ठीक २५०० सौ वे निर्वाणोत्सव के १ माह पूर्व सेठ सा· जयपुर मे स्वर्गवासी हो गये।

एक वार राजगृही मे एक बुढिया महाराज श्री के चरणो मे आई। वह अन्यमतावलवी थी बोली– गुरुदेव मेरा इकलौता पुत्र गुम गया है मिलेगा या नही, हृदय फट रहा है, मेरा आधार टूट रहा है। महाराज श्री तो वात्सल्य मूर्ति है, दुखियो के दुख दूर करने मे सतत प्रयत्नशील रहते हैं। परोपकार तो आपका विशेष महत्व पूर्ण गुण ही है। यही कारण है कि आपके चहुं ओर सदैव एक मेला सा लगा रहता हैं।

आचार्य कहने लगे मा जी तुम रविवार को नमक मत खाओ पानी छानकर पीओ तथा रात्री भोजन कभी नही करो सत्य है कि तुम्हारा पुत्र मेरे होते हुए इस चातुर्मास मे ही आ जायेगा। ठीक १ माह पश्चात मा जी का पुत्र सकुशल घर लौट आया। दोनों ने अणुव्रत ग्रहण किये। आज भी वह मा जी आचार्य श्री के चरणो में श्रध्दारूपी पुष्प अर्पण करते रहती है।

मे अवश्य सिद्धचक्र विधान कराऊगा। गुरुवाणी खिरी अरे तू क्या कहता है जा १ लाख रुपयो का लाभ तो तुझे कल ही हो जायेगा। जैसे ही सेठजी घर पहुचते है बर्तनो के व्यापारी थे, बर्तनो के भाव बढ गये उन बर्तनो मे सेठजी को सवा लाख रुपयो का लाभ हुआ। यह गुरु आशिर्वाद एव उनकी वाणी का फल प्राप्तकर उस सेठ ने जो कि कभी मदिर भी नही जाता था, सिद्धचक्र विधान बहुत उत्साह एव ठाट बाट से कराया। यह है आचार्य श्री की रहस्यमयी, अनुपय वात्सल्यमयी वाणी का प्रभावपूर्ण चमत्कार।

एक बार सेठ रिखबचद जी नीरावाले आकर महाराज श्री से कहने लगे। मेरे पास पैसा आता तो है किन्तु टिकता नही है। आचार्य श्री ने कहा घबराओ नही मै तुम्हे एक ठर का यत्र देता हू जिससे तुम्हारे घर मे अटूट सम्पत्ति रहेगी तुम उसे अपने गल्ले मे रखना। तुम्हारे व्दारा जैन धर्म की की अतिशय प्रभावना होने वाली है।

सेठजी ने घर जाकर मत्र को गल्ले मे रख दिया तथा आपने समस्त कीमती जेवर भी उसी मे रख दिये। एक दिन कर्मोदय से सेठजी के घर मे चोर घुस गये वे उनकी सारी सम्पत्ति तो ले गये किन्तु तिजोरी या उस गल्ले को चोरो ने हाथ भी नही लगाया। यह सब देखकर सेठजी दग रह गये उन्होने सोचा यह सारी महिमा आचार्य श्री के व्दारा प्रदत्त यत्र की ही है उसी समय उन्होने प्रतिज्ञा की कि गल्ले मे जितना धन है वह सारा मै धार्मिक कार्य मे ही लगाऊगा। तभी से इनकी सम्पत्ति अटुट बढती जा रही है। ऐसा कोई क्षेत्र नही है जहा पर इन्होने अपनी सम्पत्ति का उपयोग नही किया हो।

५

# सच्ची श्रद्धा

आचार्य श्री की सच्ची श्रद्धा और भक्ति का अटूट फल है। जो भव्यात्मा सच्ची श्रद्धा से हर समय इनका नाम जपता है उसके सब सकट दूर होते है। अपने घर बैठे बैठे भी यदि कोई सच्ची भक्ति से इनके चरणो मे नमस्कार कर देता है और सकट मे गुरु चरणो का आश्रय लेता है तो निश्चित ही सारे सकटो से बच कर अपने जीवन का सुखद बना लेता है। सच्ची भक्ति का साक्षात् फल आपके सामने है।

डीमापुर आसाम का एक गरीब परिवार। पुत्र जुआरी, माता पिता आचार्य श्री के चरणो के परम भक्त। सारा परिवार दुखी हो रहा है। अचानक एक दिन पिता गुरुजी के चरणो मे बैठे थे कि अविरल अश्रुधारा वह निकली। गुरुदेव तो परम कृपालु करुणार्द्र हैं ही बोले—बेटा क्यो रो रहे हो क्या संकट है घबराओ नही सारे सकट टल जायेंगे।

पिता बोलता है – गुरुदेव मेरा पुत्र आपका पुत्र है आप इसे समझाइये। हमारा जीवन दुखी हो गया है।

गुरुजी की कितनी निस्पृह वृत्ति बोले भैय्या मै क्या करू इसको णमोकार मन्त्र का जाप्य दो सब अच्छा होगा।

पिता -- नही गुरुदेव आपही हमारे रक्षक है हमारा सकट आपको दूर करना ही होगा।

इसी समय आचार्य श्री के सामने बच्चा आकर खडा है।

आचार्य श्री-- बोलो बेटा तुम जुआ क्यो खेलते हो ?

बच्चा -- गुरुजी पैसा चाहिये।

आचार्य श्री -- अच्छा जाओ नियम करो आजसे मै जुआ नही खेलूगा तुम मालामाल बन जाओगे।

बच्चा कहने लगा जो आज्ञा महाराज जी। परन्तु भूल से कभी खेल लिया तो दोष पाप लगेगा इसलिये नियम सही लूगा

आचार्य श्री बोले नियम तो ले लो भूल हो जावे तो मेरे पास आ जाना।

ठीक है गुरुदेव आज्ञा शिरोधार्य है।

बालक के हृदय में गुरुदेव के वात्सल्य से श्रद्धा और भक्ति रुपी अकुर फूट चुके हैं अब क्या हुआ।

घर पहुचते ही कुछ दिनो तो नियम ठीक पला परन्तु ज्यो ही जुआरी की सगति मिली बाबूजी ने जुआ खेलना आरभ कर दिया। पुन एक दिन महाराज श्री की याद आई। "तू जुआ नही खेलेगा तो मालामाल बन जायेगा" बस अब क्या था उसी समय घर से चल दिया और गुरु चरणो मे आकर सही-सही बात कह सुनाई। गुरुजी गल्ती हो गई।

आचार्य श्री--कोई बात नही वेटा, हम तुम्हे एक व्यापार वताते हैं वह करो और णमोकार मत्र के १। लाख जाप्य करो। तथा सप्त व्यसन का त्याग करो।

बालक पुन गाव को आया सप्त व्यसन का त्यागी वह अब विधिवत णमोकार मत्र के जाप्य करता हुआ महाराज की आज्ञानुसार सारा कार्य करने लगा। जब भी सकट आता तभी आचार्य श्री का

स्मरण कर लेता। दिन पर दिन उसका व्यापार बढने लगा। गुरु वचनो पर अटूट श्रद्धा हुई। बाद मे उसने कभी जुआ आदि बुरे कार्य नही किये।

देखते ही देखते वह एक लखपति बन गया। अब वह सोचने लगा— यह सब जो मैने एकत्रित किया है सब महाराज श्री के आशिर्वाद का फल है यदि वे मुझे सही मार्ग नही बताते तो मैं कैसे इस योग्य बनता। पुन गुरु के चरणो मे पहुचता है। गुरूजी यह सब सम्पत्ति आपके आशिर्वाद का फल है। उसी समय लाखो रुपये धर्म कार्य मे दान करता है।

आज भी उसके हृदय मे गुरुभक्ति का स्त्रोत इस प्रकार वह रहा है कि प्रतिवर्ष आचार्य श्री की जयती पर लाखो रुपये खर्च करता है। हजारो व्यक्तियो को इस अवसर पर वह प्रीतिभोज देता है। अपनी चचल लक्ष्मी का सारा उपयोग धार्मिक कार्यों मे करता है। सं।नागिरजी मे अनगकुमार की विशाल ७ फीट ऊची प्रतिमा इन्होने ही विराजमान की है। आज यह स्थिति है कि हजारो रुपया धार्मिक कार्यों मे खर्च करना तो इनके लिये खेल सा बन गया है। जो आज गावकी करोडपति पार्टी के रूप मे हमारे समाज के सामने है। तथा पन्नालाल सेठी के नाम से प्रख्यात है।

यह हैं आचार्य श्री के चरणो की भक्ति एव श्रद्धा विनय का सच्चा फल। एक ही नही ऐसे अनेको उदाहरण हमारे सामने है जिन्होने गुरूदेव के चरणो की शरण पाकर अपने जीवन को कृतकृत्य बनाया है।

# "आचार्य श्री और निर्माण कार्य"

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुख भाक भवेत"

ससार के समस्त प्राणियो के सुख निरोगी कल्याण की भावना से ओतप्रोत जिनका जीवन है ऐसे सर्वोदय तीर्थ के नेता "आचार्य श्री १०८ विमल सागरजी महाराज जहा भी अपने चरण कमल रखते है वही भूमी उन पावन आत्मा के जीवन को सुगध से सुरभीत हो जाती है। और वह पिछडा हुआ स्थान उन्नत वन जाता है। जिस भूमी पर इनका चरण पडा वही धन्य हो उठी। नई दिशा नया निर्माण नई चेतना से सारी भूमी पवित्र हो जाती है।

'ये गुरु चरण जहां धरे
जग में तीरथ होय"

आचार्य श्री के उपदेशामृत से कई भव्य पठशालाओ धार्मिक पाठशालाओ, चैत्यालयो एव मदिरो स्वाध्यायशालाओ औपधालयो एव धर्मशालाओ का निर्माण कार्य हुआ। इनमे भी कई सस्थाए कई भव्य रचनाए आपकी ऐसी अमर कृति है। जिनके द्दारा जैन सस्कृति का इतिहास युगो तक चमकता रहेगा। इनमे विशेष उल्लेखनीय है

१ टूडला मे औपधालय २ श्री सम्मेदशिखरजी पर भव्य समवशरण ३ राजगृही मे आचार्य महावीर कीर्ति सरस्वती भवन, ४ सोनागिरजी मे नगानग कुमार मुनियो की उन्नत ७ फीट ऊची मनोहर प्रतिमाओ का स्थापन. ५. नगानग स्याद्वाद विद्यालय की सोनागिर मे स्थापना आदि ।

## १. टूंडला औषधालय–

आचार्य श्री का विशाल उदार चरित्र है । **"उदारचरितानां वसुधैव कुटुम्बक"** अनुसार आपकी सदैव यही भावना रहती है कि समस्त प्राणी व्रतो का आचरण करे, शुद्ध खान-पान रखे । शुद्ध एव सही चारित्र के लिये शुद्ध आहार शुद्ध आवश्यक है । जैसी भक्ष्याभक्ष्य वस्तु पेट मे जाती है उसी प्रकार के भाव वनते है । अत सभी प्राणीयोको निरोग अवस्था तो प्राप्त हो । ही किन्तु यदि पूर्व कर्मोदय से शरीर रोग युक्त हो जाय तो औपधदान का प्रतिक ऐसे विशाल औषधालयका निर्माण आचार्य श्री ने टूडला मे करवाया । यह इनका सर्व प्रथम निर्माण कार्य है ।

इस औपधालय मे शुद्ध औपधि तैयार की जाती है । जिससे आज भी हजारों त्यागी व्रती एव भव्यात्माओ को शारीरिक सुख का पूर्ण लाभ प्राप्त हो रहा है ।

## २. सम्मेद शिखरजीका भव्य समवशरण

महान उपसर्ग विजेता श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान की मुक्ति स्थली शिखरजी की पवित्र भूमि का दर्शन करके सभी भव्यात्माओ का मन मयूर हर्षोन्मुख हो जाता था किन्तु आचार्य श्री को एक कमी वहा खटकती रही कि इस पावन क्षेत्र पर किस प्रकार प्रभु पार्श्वनाथ का चन्द्रप्रभु आदि तीर्थंकरो का समवशरण आया और किस प्रकार धर्म की गंगा को वहाया, और किस प्रकार उन्होने साधना के व्दारा मुक्तिलक्ष्मी का वरण किया । इन सभी प्रतीक ऐसी एक भव्य रचना का निर्माण होना चाहिये ।

आप के अन्दर धर्म और सस्कृति की रक्षा के प्रति जब भावना आई तब तब आपने साहस रुप कदम बढाया कि भक्तो की झोली आपके सामने स्वत मुक्त हस्त से झुकी है। इसी प्रकार यहा भी आचार्य श्री ने निश्चय किया कि यहा "पार्श्व प्रभु के समवशरण की रचना होना अति आवश्यक है।" भक्तो को ज्योही आपके अन्तस्थल की भावना ज्ञात हुई उन्होने सहर्ष स्वीकृति देकर लाखो रुपयोको इस शुभ कार्य मे लगाकर पुण्यार्जन किया।

यह अनुपम भव्य समवशरण जैन सास्कृति की एक मनोस चिरस्मरणीय रचना है। कुबेर सम विशाल एव अद्भुत हैं। जिसके दर्शन मात्र से मन-मयूर नाच उठता है। सामने ही धर्मध्वज फहरा रहा है तथा विशाल मानस्तभ मिथ्यात्व का नाशक है। जिस प्रभु के दर्शन कर सम्यग्दृष्टी आत्मा साक्षात् समवशरण मे स्थितवत् अनुभूति को प्राप्त कर अपने आपको धन्य मानता है ऐसे प्रकृति की गोद मे सुशोभित, रम्य, उन्नत समवशरण की शोभा, सौन्दर्य का वर्णन अव्दितीय है।

जिस प्रकार चौथे काल मे प्रभु के समवशरण मे पहुचकर मिथ्यात्व गलित हो जाता था उसी प्रकार इसी प्रकृतिक छटा से युक्त समवशरण को हमारे बीच से क्षति नही हुई है। आज की हम इस बारह सभा के मध्य बैठकर अज्ञानाधकर दूर कर सही ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

धन्य है पचम काल मे चौथे का दृश्य उपस्थित कर भव्य समवशरण की रचना व्दारा मित्त्यात्व के नाश के लिये विकसित हुआ है हृदय जिनका ऐसे परम पूज्य आचार्य शिरोमणी को। इस रचना ने उस भूमि पर मानो चार चाद ही लगा दिये है।

## २. आचार्य महावीरकीर्ति सरस्वती भवन

यह पावन क्षेत्र कैवल्य ज्योति का प्रतीक है। पावन सिद्धक्षेत्र पर तीर्थंकरो के समवशरण आये। यह पच पहाडी क्षेत्र ज्ञान ज्योति

का प्रखर स्थान है। तीर्थंकरो की दिव्यध्वनि इस स्थान पर खिरी थी। परन्तु यहां भी एक कमी थी।

तीर्थंकरो की दिव्यध्वनि किस प्रकार खिरी गणधरो ने इसे किस प्रकार झेली तथा वह जिनेन्द्रवाणी कैसी है इसका प्रतीक यहा आज तक कोई नही था। जिनेन्द्रवाणी का रसपान कराने का या करने का सही या सच्चा माध्यम है "स्वाध्याय"।

तो इस राजगृही की सुन्दर पहाडी पर आचार्य श्री स्वाध्याय भवन की कमी देखी। उसी समय निश्चय किया और यहा एक विशाल "महावीर कीर्ति सरस्वती भवन" का निर्माण कराया। आज इस सरस्वती भवन ज्ञान की पिपासु आत्माएं ज्ञानामृत का पान कर अपनी प्यास को बुझाती है। धन्य है केवल ज्ञान ज्योति के प्रतीक सरस्वती भवन के निर्माण कर्ता आचार्य देव की निर्मल ज्ञानज्योति को।

## ४. सोनगिरीजी पर नंगानंग कुमार मुनियों की उन्नत मूर्तियों की स्थापना

सोनागिरीजी सिध्दक्षेत्र प्राकृतिक रमणीयता से समस्त जनमानस के लिये मनोरम स्थल वना हुआ है। इस पावन स्थली से नगानग मुनि आदि ५॥ करोड मुनि मुक्ति पधारे। यहा नगानग कुमार मुनियो के चरण-कमल तो विराजमान थे किन्तु मुनियो की मूर्तियो का अभाव था।

आचार्य ने जैसे ही इस पावनभूमि पर पदार्पण किया भूमि का भाग्य जाग उठा। आचार्य श्री के विचारो ने करवट ली यहा राजपुत्रों की त्यागमयी मूर्ति की स्थापना अवश्य होगी अन्यथा हमारी जैन संस्कृति मे किस प्रकार बडे बडे राजपुत्रो ने त्याग किया इसका आगे आनेवाली पीढी को ज्ञान नही हो पायगा। भावना ने मूर्त रूप लिया और चन्द्रप्रभु मंदिर के विशाल प्रांगण मे ८ फीट ऊंची भव्य प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा आचार्य श्री के सानिध्यमे हुई।

धन्य हैं त्यागमूर्ति आचार्य श्री की जनमानस मे त्यागमयी भावना को भरने की अपूर्व भावना को ।

दोनो मूर्तियो के दर्शन करते ही रोमांच हो उठता है । उन की त्यागमयी अवस्था का दिग्दर्शन पाकर हमे नया पथ, नई दिशा की प्राप्ति होती है ।
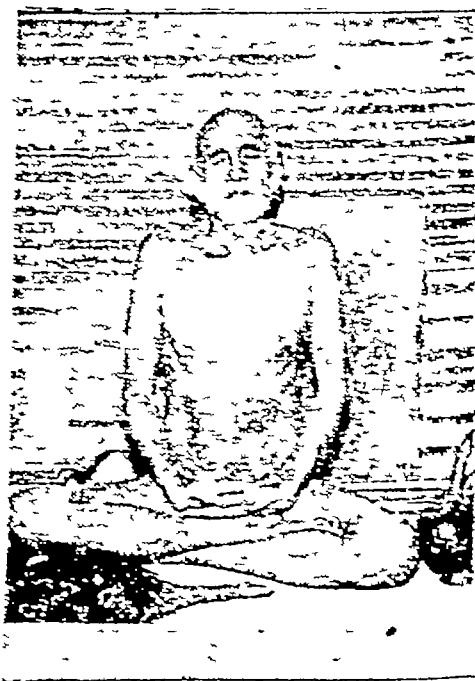
## ५ नंगानंग संस्कृत महाविद्यालय

पावन भूमि की और भी कमिया आचार्य श्री को रोक नही पाई । उन नगानग आदि मुनियो ने सही ज्ञान की प्राप्ति किस प्रकार की ? कौन सी वह ज्ञानगगा है जिसमे स्नान कर प्राणीमात्र अपने अज्ञान नेत्रो को धोकर पवित्र और निर्मल वना सकता है ? विचार आया स्याद्वाद ज्ञानगगा ही एकमात्र साधन है ।

तभी एक विद्यालय की स्थापना की भावना जागृत हुई और क्षु सन्मतिसागरजी की भी ज्ञान प्रसार की भावना को बल मिल गया । तभी आचार्य श्री के आशिर्वाद से अज्ञानाधकार का नाशक श्री स्याद्‌वाद सस्कृत महाविद्यालय की स्थापना का कार्य हुआ । आज इस विद्यालय मे कई विद्यार्थी अध्ययन करते है ।
धन्य है परम पावन आचार्य श्री की ज्ञान ज्योति के प्रसार की अपूर्व भावना को ।

## आचार्य श्री और ध्यान

मोक्ष कर्मो के क्षय से ही होता है। कर्मो का क्षय सम्यग्ज्ञान से होता है और वह सम्यग्ज्ञान ध्यान से सिद्ध होता है। अर्थात ध्यान से ज्ञान की एकाग्रता होती है, इस कारण ध्यान ही आत्मा का हित हैं। जिस प्रकार दूध मे घृत विद्यमान रहते हुये भी उसे पाने के लिये दधि तैयार करके पश्चात उसका मथन करके नवनीत पर्याय प्राप्त करते हैं। आगे उस मक्खन को अग्नि पर रखने रुप उद्योग की आवश्यकता पडती हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शरीर मे आत्मा (सिद्धस्वरुप) विद्यमान रहते हुए भी उसे पाने के लिये प्रथम सम्यग्दर्शन प्राप्त करकें, पश्चात ज्ञान के द्वारा तत्व का मथन करके चारित्र रुप पर्याय प्राप्त करते हैं आगे उस चारित्र को पूर्ण निर्मल वनाने के लियें ध्यान रुपी अग्नि की आवश्यकता होती है। और ध्यान रुपी अग्नि के तप मे तपाने पर ही शुध्दात्मा की प्राप्ति होती है।

आत्म ध्यान के प्रेमी सज्जन पुरुष का परिपूर्ण सामग्री का संग्रह किये विना मोह शत्रु पर विजय प्राप्त करना असंभव है।

मंग त्यागः कपायाणां निग्रह-व्रत धारणम्,<br>
मनोक्षाणां जयश्चेति सामग्री-ध्यान जन्मनः।

परिग्रह का त्याग, क्रोध, मान, माया, लोभ रुप कषायो को जीतना, अहिंसादी व्रतों को पालना, मन और इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करना इस सामग्री के व्दारा विशुद्ध ध्यान की उत्पत्ति होती है। इस उचित और उपयोगी मार्ग पर चलने वाला सच्चरित्र मानव आत्मध्यान रुप कठिन कार्य मे सफल प्रयत्न होता है। जब लौकिक क्षणिक तथा नकली सुख के लिये यह मोही मानव अपार कष्ट उठाया करता है, तब क्या सच्चे अविनाशी सुख की प्राप्ति के लिये इस महान उद्योग और पुरुषार्थ नही करना पडेगा ? अवश्य ही करना पडेगा। सच्चा पुरुषार्थ ध्यान के व्दारा ही सिद्ध होता है। तो प्रश्न उठता है कि ध्यान किसे कहते है ? उत्तर मिलता है ''एकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यान'' एक वस्तु को अग्र करके चिन्ताओ का निरोध करना अथवा मन की एकाग्रता ही ध्यान है।

ध्यान के दो भेद है १. प्रशस्त ध्यान २. अप्रशस्त ध्यान। प्रशस्त ध्यान के भी दो भेद है १ धर्मध्यान २. शुक्ल ध्यान।

आचार्य श्री से प्राय शिष्य पूछते है गुरुदेव ! आप हमसे माला फेरने को कहते है किन्तु हमारा मन तो माला मे लगता ही नही है हम अपना मन कैसे लगाये ?
आचार्य श्री कहने लगे घबराओ नही तुम लोग अपने मस्तक पर सम्मेदशिखरजी बनाकर पावन सिद्धक्षेत्र के दर्शन करो मन लग जायगा मै प्रतिदिन करता हूं।

शिष्य कहते है— गुरुदेव हम नही समझ पाये आपही बताइये।
**आचार्य श्री—** अपने दोनो ओठो को मधुबन समझो। उनके दाहिने ओर तेरा पथी कोठी, बीच मे श्वेताम्बर कोटी और बायी ओर बीस पथी कोठी समझो। बीस पथी कोठी से तुम वदना को रवाना हो जावो। अपने दोनो नाक के छेदों को गधर्व नाला समझो। आगे चलो और अपने दोनो आखो के मध्य स्थान को सीतानाला समझो फिर आगे ? मस्तक के ऊपर के पहले भाग को गणधर टोक समझो समीप ही कुन्थुनाथजी टोक से वदना प्रारभ करो। फिर क्रमसे टोकोकी रचना करन

हुए मस्तक के ठीक पीछे जलमंदिर समझो फिर वहा से वंदना करते हुए सिर के दुसरे भाग को पार्श्वनाथ प्रभु की टोक समझ वदना करते हुए जिस मार्ग से चढे थे उसी प्रकार उतर कर नीचे आ जाईए। इस प्रकार करोगे तो आप लोगो का मन एकाग्र हो जायेगा।

इस प्रकार आचार्य श्री के व्दारा ध्यान की महिमा सुनकर शिष्य कहने लगे, गुरुदेव मन को एकाग्र करने के लिये और भी ध्यान है। आचार्य श्री कहने लगे हा हा बेटा और भी ध्यान मे क्रमश सभी बताऊँगा। देखो अष्टान्हिका पर्व मे मन को एकाग्र करने के लिए मै पचमेरु, नदीश्वरव्दीप और सिद्धचक्र का ध्यान करता हू।

शिष्य कहने लगे जी हा गुरु वताइये इसे पूर्ण समझाइये क्यो कि हम वहां तो जा नही सकते है, कैसे ध्यान करे। आचार्य श्री कहने लगे देखो बेटा तुम्हारे एक हाथ मे कितनी अगुलिया है। पाँच। वीच में कौनसी अगुलि है? मध्यमा है। मध्यमा अगुली को सुदर्शन मेरु समझो फिर समीप की अगुली विजय, अचल, मदर विद्युमाली समझकर इसमे ४-४ वनो की स्थापना कर ध्यान करो मन निश्चित होगा।

**शिष्य** – गुरुदेव नदीश्वर के ध्यान का उपाय वताइये।

**आचार्य श्री** – पचमेरु की स्थापना हृदय मे करो और उनके चारो ओर उत्तर मे १. अजनगिरि ४. दधिमुख ८. रतिकर = १३ चौत्यालयो को विराजमान कर, पूर्व दक्षिण और पश्चिम चारो दिशाओ में १३–१३ = ५२ चैत्यालयो की स्थापना कर नदीश्वर द्वीप का ध्यान करो।

**शिष्य** – गुरुदेव यह तो पर्वो के दिन का हुआ परन्तु और भी कोई साधन है जिससे हम अपने मन को प्रतिदिन एकाग्र कर सके।

**आचार्य** – हा बेटा देखो अभी बताता हू।

अपने शरीर में तीन लोक की रचना करो उर्ध्व लोक, मध्य लोक पाताल लोक। ऊपर भाग उर्ध्व लोक है, मध्यका भाग मध्य लोक तथा नाभी से नीचे का भाग अधो लोक है। उर्ध्व लोक मे देवो के विमानो मे

मे ढाई व्दीप है। सबसे मध्य मे जम्बूव्दीप है। उसके सात भाग है मध्य मे हृदय पर विदेह क्षेत्र की स्थापना कर। सीमधर परमात्मा के दर्शन करो। विदेह क्षेत्र की पुण्डरीकणी नगरी मे हृदय कमल मे विराजमान अष्ट प्रातिहार्य से युक्त प्रभु के प्रतिदिन दर्शन करना चाहिये। विशाल भव्य समवशरण है बारह सभा लगी हुई है। मनुष्य के कोठे मे हम बैठे है इसी समय दिव्यध्वनि खिर रही है प्रभु का उपदेश सुनकर अपने आपको धन्य मानो। इसप्रकार अर्हन्त प्रभु के साक्षात् दर्शन कर मध्य लोक के ४५८ चैत्यालयो के दर्शन करना चाहिये। तथा पश्चात अधोभाग मे व्यतर भवनवासी के विमान की स्थापना कर वहा के असरकात अकृत्रिम चैत्यालय और ७ करोड ७२ लाख चैत्यालयो के दर्शन करना चाहिये। इस प्रकार प्रतिदिन तीन लोक की वदना करने से असरकात गुणी कर्म की निर्जरा होती है।

**शिष्य :-**

दर्शन के व्दारा मन एकाग्र करने के लिये और भी साधन है ?

**आचार्य श्री :-**

हा वहुत है। शिखरजी के दर्शन करो चम्पापुरी, पावापुरी कैलाश पर्वत सोनागिरी आदि जिन जिन क्षेत्रो से जो महापुरुष मोक्ष गये उन उन महापुरुषो की वहा स्थापना करके उनके वहा पर भाव पूर्वक दर्शन करना चाहिये।

अथवा जिन-जिन मदिरो के क्षेत्रो के हमने दर्शन कर लिये ह प्रतिदिन उनका ध्यान करना चाहिये। जिस प्रकार रील मे जो चित्र एक बार आ जाता है जब भी वटन दबाया वह चित्र दिखाती है। उसी प्रकार आप सभी का कर्तव्य है कि मन को एकाग्र करने के लिये जिन मदिरो की सिद्ध क्षेत्रो की, अतिशय क्षेत्रो की एक सुन्दर रील अपने मानस पटल पर खीच ली और जव भी इच्छा हो ध्यान रुपी वटन को दवा दो सारी रील अचेतन से चेतन मस्तिष्क मे आयेगी। और आप घटो भी उस फिलम को देखोगे तो थक नही पाओगे। मन कही नही भटकेगा।

**शिष्य :-**

दर्शन के अलावा मन को एकाग्र करने का और भी कोई तरीका है ?

**आचार्य श्री :-**

हां बेटे और भी तरीके है।

अपने हृदय मे एक सिद्धचक्र यत्र, बनाकर सिद्ध प्रभु का चिन्तवन करो। मै प्रतिदिन ऋषीमडल यत्र, सिद्धचक्र, यत्र, विनायक यत्र आदि यत्रो का चिन्तवन करता हू इससे भी मन बहुत एकाग्र हो जाता है।

**शिष्य :-**

माला फेरने मे स्थिरता लाने के लिये क्या किया जाय ?

**आचार्य :-**

अष्टदल कमल हृदय मे बनाकर १-१ पाखुडीपर १२-१२ बिन्दु स्थापित करो, कर्णिका मे भी १२ बिन्दु स्थापित करो मन चचल नही हो पायेगा। तुरन्त रुक जायेगा।

आचार्य श्री एकदिन शिष्यो से कहन लगे मैं एक हीरे का २४ लडी का सुन्दर हार रोजाना पहनता हू। बडा अच्छा लगता है। कई वार तो २४ घंटे पहना रहता हू।

**शिष्य :-**
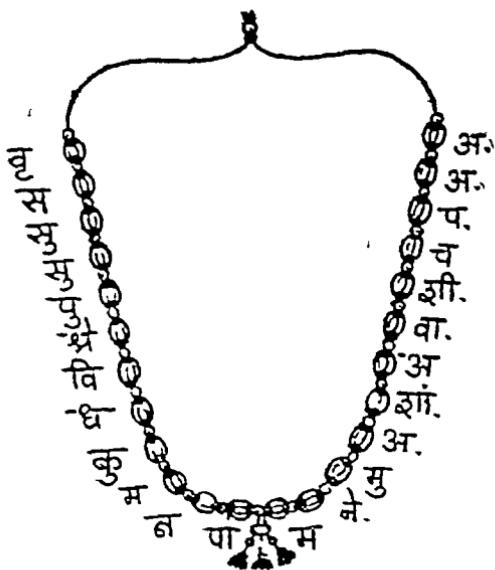
निर्ग्रंथ साधु भी कभी हार पहनते है। हसता है

**आचार्य :-**

अरे! हसते हो मैं मच कहता हू।

शिष्य – गुरुदेव वही हार हम भी पहनना चाहते है।

आचार्य श्री – लो अभी पहनाता हू।

चौवीस भगवान को हृदय में दोनो ओर विराजमान करके सुन्दर हार हर समय पहने रहने से मन एकाग्र होता है

आचार्य श्री– हमारे हाथोमे २४ हीरे हर समय चमकते रहते है

शिष्य – कैसे?

आचार्य श्री – आपकी अगुलिया कितनी है। आठ आठ अगुलियो के पोखे कितने है २४। २४ ही पोखो मे १–१ भगवान रुप हीरो की मूर्तिया चमचमा रही है। १६ भगवान पीतवर्ण है २ श्वेतवर्ण (चन्द्रप्रभु पुष्पदन्त) २ लाल वर्ण (पद्मप्रभु, वासुपुज्य) २ शामवर्ण ( मुनिसुव्रत, नेमिनाथ) और २ भगवान हरितवर्ण (सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ) है।

आचार्य श्री –

हमारे हाथ पाच रत्नो से सुशोभित है।

शिष्य –

कैसे समझाईये ?

आचार्य श्री –

पांच अगुलिया पर पाच परमेष्ठी रुप रत्न विराजमान हैं।

इस प्रकार चौबीस भगवान और पचपरमेष्ठी को अपने में ही स्थापित करके इनके गुणोंका चिन्तवन करना चाहिये।

शिष्य –

कभी कभी हमे बहुत भय लगता है उस समय क्या करना चाहिये। मन आकुलित हो जाता है।

आचार्य श्री –

एक चार पाखुडी का कमल बनाकर बीच मे अर्हंत भगवान को विराजमान करो, ऊपर सिद्ध भगवान को विराजमान करो, दाहिनी ओर आचार्य की मूर्ति, बायी ओर अध्ययन कराते उपाध्याय की मूर्ति नीचे साधु परमात्मा को विराजमान करो। अब विचार करो अरहन्त भगवान कैसे आठ प्रातिहार्य सहित सुन्दर समवशरण मे विराजमान है। दिव्यध्वनि खिर रही है, अपने को मनुष्य के कोठे मे विराजमान करो। बस दिव्यध्वनि सुनने लग जाओ सारा डर भाग जायगा।

शिष्य –

पदस्थ ध्यानके व्दारा भी मन रोका जा सकता है क्या ? कैसे रोकते है उपाय बताईये।

आचार्य –

पदस्थ ध्यान के व्दारा मन बहुत सरलता से रुक जाता है। ध्यान देकर सुनिये – इस शरीर मे द्वादशाश के अक्षरो की स्थापना कीजिये। १. मस्तक के दोनो ओर अ, आ २. आखो मे दाई ओर इ व ई ओर ई ३. कर्ण मे उ, अ ४. नासा मे ऋ, ॠ ५. गण्डस्थल पर ऌ, ॡ ६. दातोकी पक्ति मे ऊपर नीचे ए, ऐ ७ दोनो स्कधो पर ओ, ओ ८. जिव्हा पर अ, औ ऊपर सिर पर अ. इस प्रकार १६ स्वर की स्थापना कीजिये। पश्चात हाथो पर दाई ओर क वर्ग वाई ओर च वर्ग, फीर हृदय के दाई ओर ट वर्ग वाई ओर त वर्ग, दाये

पाव पर प, बाये पाव पर फ, गुह्य स्थान पर ब, पीछे भ नाभि मे म, हृदय पर य, ऊपर मस्तक पर र, कठ मे पीछे गर्दन पर ल, आगे व, दाये पैर पग श बीच मे स बायी ओर ष और हृदय मे ह इस प्रकार द्वाद–शाग के अक्षरो का शरीर मे स्थापन करने से मन एकाग्र होता है।

शिष्य –

इनको स्थापना करने के बाद क्या करना चाहिये ?

आचार्य श्री –

एक-एक अक्षर पर चिन्तवन करना चाहिये।

शिष्य –

कैसे करे आप बता दीजिये।

आचार्य श्री

जैसे अ है, अ के ऊपर प्रभु का चिन्तवन करो हे प्रभो आप 'अ' रुन है अक्षर है, अनंत दर्शन, अनत ज्ञान, अनंत सुख, अनत वीर्य स्वरुप हैं। और फिर अपने आत्मा की ओर विचार कीजिये हे आत्मन् तू भी अ रुप हैं कैसे ? अनंत चतुष्टय रुप है, अनत ज्ञान रुप हैं, इस प्रकार समस्त अक्षरो के द्वारा प्रभु का ध्यान करते हुए अपने आत्म स्वरुप का मनन चिन्तवन करने से मन बिल्कुल एकाग्र होता है और अपने स्वरुप की प्राप्ति भी होती है।

शिष्य – गुरुदेव पदस्थ ध्यान के और भी तरीके है ? जिससे मन भी एकाग्र हो और बुद्धि का विकास हो।

आचार्य – हा बेटे और उपाय हैं। देखो नाभि मे १४ पाखुडी का एक कमल बनाकर उसमे १४ स्वरो की स्थापना करो। हृदय मे २४ पाखुडी का एक कमल बनाओ उसमे "क" से "भ" तक के वर्ण और बीच की कर्णिका मे "म" का स्थापन करो पुन ऊपर मुख पर दोनो ओठो पर ओठ पाखुडी का कमल बनाओ यहां "य र ल व श प स ह" की स्थापना करो। इस प्रकार व्दादशाग के अक्षरो का चिन्तवन स्थापन करने से मन एकाग्र हो जाता है तथा बुद्धि बल बढता है।

शिष्य – और भी कोई उपाय है गुरुदेव

आचार्य – भिन्न भिन्न मंत्रो का जाप्य करने से मन एकाग्र होता है। जैसे णमोकार मत्र, ऋषिमडल मत्र, सिद्ध मत्र

शिष्य – गुरुदेव आप तो रात्रि मे बहुत देर जाप्य देते है आप एक दिन मे कितनी माला फेर लेते है ?

आचार्य – बेटे हम एक दिन मे २०० से कुछ अधिक माला फेर लेते है। १३५ माला तो णमोकार मत्र की १ दिन मे फेरते ही है और भी जो इच्छा हो वही जाप्य करते है।

शिष्य – जब कोई हमे कुत्ता, पागल, कुजडा आदि बुरे शब्दो से बोलता है, गाली देता है तो मन विचलित हो जाता है उस समय क्या करना चाहिये ?

आचार्य – अरे विचलित क्यो होते हो देखो हम वास्तव मे ही तो कुत्ते है, हम पागल हैं, हमही कुजडे है वह ठीक ही तो कहता है। आपनी ओर झाको तुम्हारे सही रुप को वह बता रहा है और तुम दुखी हो रहे हो आश्चर्य है।

शिष्य – नही गुरुदेव हम कुत्ते, पागल कैसे है ? जरा समझा दीजिये।

आचार्य– पागल किसे कहते है ?

पा याने पाप

गल याने गलना

पाप गालयीत इति पागल अर्थात जो पापोको गलाये वह पागल है। बताओ तुम कौन हो ?

शिष्य– जी गुरुदेव हम वास्तव मे पागल है।

आचार्य कुत्ता किसे कहते है ?

कु याने कुमार्ग

त याने तपमार्ग

कु मार्ग को छोडकर तप मार्ग को जिसने ग्रहण किया है वह कुता है अथवा

कु याने पृथ्वी

त याने तप

पृथ्वी के समान समता धारण करके जो १२ तपो को तपता ह, वह कुत्ता है। अव बताओ तुम कुत्ता हो या नही ?

शिष्य– जी गुरुदेव कहनेवाला ठीक कहता है। हम कुत्ता भी है

आचार्य– कुजडा किसे कहते है ?

कु याने कुमार्ग

कुमार्ग को छोडकर सच्चे पथ को जान लिया है, जिसने और चारो गतियो के दुखो से जो डरता है वह है कुजडा। बताओ हमारी क्रिया के अनुरुद कोई कहता है तो वह गलत है या हम।

इसी प्रकार पाखडी किसे कहते है।

पा याने पाप

खड याने खडन

पाप खडयति इति पाखडी। बताओ तुम पाप बढाते हो या खडन करते हो।

इसी प्रकार हे शिष्यो शब्द की सही सिद्धि करोगे तो कोई कुछ भी कहे मन कभी भी खराब नही होगा। हमेशा शब्द सिद्धि करना चाहिये

इस प्रकार समस्त गालियो को और अन्य शब्दो को सिद्धो के नाम पर या अपने आत्म स्वरुप पर घटाना आपकी अपनी विशेषता हैं।

एक बार की घटना है सघ विहार करता हुआ "खुरई" गाव के निकट पहुचा कि तुरन्त खुरई के श्रीमन्त सेठ लोग आचार्य श्री के चरणो मे पधारे। गुरुदेव को श्रीफल चढाकर प्रार्थना करने लगे "गुरुदेव खुरई पधारकर हमारी भूमि को भी पावन कीजिये"।

आचार्य श्री बोले अरे भैय्या हम तो हर समय खुरई मे ही रहते है अब नये तो थोडी ही जाना है। श्रावक जन आश्चर्य मे पड गये महाराज जी आप क्या कह रहे है हम नही समझ पाये।

आचार्य श्री – भैय्या मै बिलकुल ठीक कहता। बताओ खुरई किसे कहते है ? देखो
खु – अनादि कालीन मिथ्यात्वरुपी (खूबी)
र – रत होना
ई – इक्ष याने देखना

अर्थात् नष्ट कर दिया है अनादि कालीन ससार की खूबी को जिसने और रत हो गया है अपनी आत्मा मे तथा देख लिया है अपने आत्मस्वरुप को जिसने उसे कहते है "खुरई" बताओ अब तुम लोग वास्तव मे खुरई मे रहते या हम हर समय रहते है आचार्य श्री के अपने स्वरुप की इतनी एकाग्रता देखकर सभी श्रावक जन्य आश्चर्य चकित हुए। कहने लगे धन्य है गुरुदेव आपको धन्य है आपके ध्यान को।

शिष्य – गुरुदेव जब तक परावलबन है तब तक तो आत्म सिद्धि नही फिर इस प्रकार दर्शनादि के व्दारा मन को एकाग्र करने से क्या लाभ ?

आचार्य श्री –

ठीक है परावलव मे भी आकुलता हैं। किन्तु जव तक स्वावलबन की प्राप्ति नही हुई है तव तक ससारी आत्माओ को आवलवन की आवश्यकता है। हा इसे ही साध्य मानकर चुप नही रहना है। साध्य की प्राप्ति के लिये ये सव साधन हैं। जैसे सिद्ध क्षेत्र पर सिद्धो का ध्यान करते करते जव एकाग्रता आ जाती हैं तव अपने अन्दर विराजमान सिद्धात्मा के दर्शन कर आत्मानद का पान करना चाहिये। इसी प्रकार प्रत्येक स्थिति मे ध्यान द्वारा मन की एकाग्रता होते ही अपनी ओर लक्ष्य

करो और विचार करो मै भी उसी सिद्ध स्वरुप आत्मा हू, मै ही अनंत चतुष्टय का पुज्य अरहंत हू, मै ही सिद्ध सम शुद्ध हू, मै ही पच परमेष्ठी रुप हू। इस प्रकार साधन से साध्य की प्राप्ति करने का निरन्तर पुरुषार्थ करते रहने से एक दिन यह आत्मा स्वय सिद्ध बन जायेगा।

शिष्य –

गुरुदेव ! शारीरिक पीडा होने पर मन आकुलित होता है। मन बिल्कुल नही लगता। शारीरिक रोग दूर करने के लिये भी कोई उपाय हो तो बताईये।

आचार्य श्री –

हा बेटा साधु लोग हर समय दवाई का उपयोग तो नही कर सकते परन्तु ध्यानरुपी ऐसी औषधी है जिससे सब रोग दूर हो जाते है।

शिष्य –

पेट मे किसी प्रकार की पीडा हो जाय तो क्या उपाय करना चाहिये।

आचार्य श्री –

१ पेट के रोगी को ॐ ह्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो नम इस मत्र को पेट पर स्थापन करना चाहिये। इसका जाप्य देना चाहिये जिससे पेट के रोग शमन हो जाते है।

२. "ह्री" बीजाक्षर या "ब" को गुह्य स्थान मे स्थापन करते गुह्य रोग नष्ट हो जाते है।

३ "भ" का नाभि मे स्थापन करके ध्यान करने से भी पेट सबधी रोग दूर होते है।

४. १६ स्वरों की स्थापना नाभि मंडल मे कर चिन्तवन करने से भी पेट सबधी समस्त बिकार दूर हो जाते है।

शिष्य– हृदय रोग (हार्ट की बीमारी) कैसे दूर हो सकता है।

आचार्य श्री– हृदय मे क से म तक के व्यजनो की स्थापना करो सारा चिन्तवन करो सारा रोग दूर से ही भाग जायगा।

शिप्य- गुरुदेव। दातो से खून निकलता है' मंजन कर नहीं सकते। व्रतो मे दोष लगता है। हमे पायरिया हो गया है कुछ उपाय बताइये।

आचार्य श्री- दातो की पवितयो मे य, र, ल, व, श, ष, स, ह वर्णों की स्थापना करो जाओ सब रोग भाग जायेगा।

शिष्य- सिर दर्द के कारण हमे अध्ययन मे बाधा आती है।
गुरुदेव कुछ उपाय बताईये।

आचार्य श्री- मस्तकपर अ-आ "वर्णों" को स्थापना करो। उन वर्णो का ध्यान करो। मस्तक सबधी सब रोग दूर हो जायेगे।

शिष्य- आख की ज्योति कमजोर हो रही है, आखो मे जलन अदि पीडा होती है। कुछ उपाय बताइये।

आचार्य श्री- नैत्रो मे "इ, ई" की स्थापना कर इनका चिन्तवन करो। नैत्रसबधी रोग दूर होते है।

## ८ चारित्र चक्रवर्ती श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज द्वारा दीक्षा प्राप्त करनेवाले त्यागियों के नाम

### मुनि पुंगवों के नाम

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | श्री | १०८ | मुनि | सुवर्णसागरजी | (मेरठ में समाधि) |
| २ | ,, | ,, | ,, | चन्द्रसागरजी | (पुरलिया मे समाधि) |
| ३. | ,, | ,, | ,, | पार्श्वसागरजी | |
| ४. | ,, | ,, | ,, | अरह सागरजी | |
| ५. | ,, | ,, | ,, | सुमतिसागरजी | (ईशरी मे समाधि) |
| ६. | ,, | ,, | ,, | संभवसागरजी | |
| ७. | ,, | ,, | ,, | सन्मतिसागरजी | आचार्य पद |
| ८. | ,, | ,, | ,, | वीरसागरजी | श्री सम्मेदशिखरजी मे समाधि |
| ९. | ,, | ,, | ,, | सुधर्मसागरजी | श्री गजपथ मे समाधि |
| १० | ,, | ,, | ,, | नेमिसागरजी | |
| ११ | ,, | ,, | ,, | अनतसागरजी | श्री सम्मेद शिखरजी मे समाधि |
| १२. | ,, | ,, | ,, | मुनिसुव्रतसागरजी | |
| १३ | ,, | ,, | ,, | विनयसागरजी | |
| १४ | ,, | ,, | ,, | विजयसागरजी | |
| १५ | ,, | ,, | ,, | वासुपूज्यसागरजी | सम्मेदशिखरजी में समाधि |
| १६ | ,, | ,, | ,, | सकल कीर्तिजी | ,, |

१७ ,, ,, ,, वाहुबलीसागरजी
१८. ,, ,, ,, भरतसागरजी उपाध्यायपद सोनगिरजी में
१९. ,, ,, ,, शीलसागरजी
२०. ,, ,, ,, आनदसागरजी
२१ ,, ,, ,, मतिसागरजी
२२. ,, ,, ,, पार्श्वकीर्तिजी

## आर्यिकाओं के नाम

१. श्री १०५ आर्यिका सिद्धमतीजी शिखरजी मे समाधि
२. ,, ,, ,, विजयमतीजी
३. ,, ,, ,, आदिमतीजी
४. ,, ,, ,, श्रेयमतीजी शिखरजी मे समाधि
५. ,, ,, ,, सूर्यमतीजी
६ ,, ,, ,, पार्श्वमतीजी
७ ,, ,, ,, पार्श्वमतीजी श्री शिखरजी मे समाधि
८. ,, ,, ,, ब्राम्हीमतीजी
९. ,, ,, ,, पार्श्वमतीजी
१०. ,, ,, ,, जिनमतीजी
११ ,, ,, ,, नन्दामतीजी
१२ ,, ,, ,, सुनन्दामतीजी
१३. ,, ,, ,, पद्मावतीजी श्री शिखरजी मे समाधि
१४. ,, ,, ,, विमलमतीजी
१५ ,, ,, ,, भरतमतीजी
१६ ,, ,, ,, नंगमतीजी

## ऐलक के नाम

१. श्री १०५ ऐलक चन्द्रसागरजी
२ श्री ,, ,, वैराग्यसागरजी

## क्षुल्लको के नाम

१. श्री १०५ क्षुल्लक ज्ञानसागरजी
२ ,, ,, ,, उदयसागरजी
३ ,, ,, ,, रतनसागरजी
४, ,, ,, ,, श्रुतसागरजी
५ ,, ,, ,, जम्बूसागरजी
६ ,, ,, ,, वृषभसागरजी
७ ,, ,, ,, विपुलसागरजी
८ ,, ,, ,, उत्साहसागरजी
९ ,, ,, ,, तीर्थसागरजी
१० ,, ,, ,, नगसागरजी

## क्षुल्लिकाओं के नाम

१ श्री १०५ क्षुल्लिका वैराग्यमतीजी
२ ,, ,, ,, पद्मश्रीजी
३. ,, ,, ,, संयममतीजी
४ ,, ,, ,, विमलमतीजी
५ ,, ,, ,, श्रीमतीजी
६ ,, ,, ,, जयश्रीजी
७ ,, ,, ,, चेलनामतीजी
८ ,, ,, ,, ज्ञानमतीजी
९ ,, ,, ,, कीर्तिमतीजी
१०. ,, ,, ,, अनगमतीजी

# आचार्य श्री और चातुर्मास

श्री परमपूज्य सन्मार्ग दिवाकर, चारित्र चक्रवर्ती, श्रमणोत्तम निमित्त ज्ञानभूषण श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज के चातुर्मास... ... ..

| क्रम | स्थान | सन | वि संवत | दीक्षापद |
|---|---|---|---|---|
| १ | बडवानीजी | १९५० | २००७ | क्षुल्लक |
| २ | इन्दौर | १९५१ | २००८ | ऐलक |
| ३ | भोपाल | १९५२ | २००९ | ऐलक |
| ४ | गुनौर | १९५३ | २०१० | मुनिअवस्था |
| ५ | ईशरी | १९५४ | २०११ | ” |
| ६ | पावापुरी | १९६५ | २२१२ | ” |
| ७ | मिर्जापूर | १९५६ | २०१३ | ” |
| ८ | इन्दौर | १९५७ | २०१४ | ” |
| ९ | फलटण | १९५८ | २०१५ | ” |
| १० | पन्ना | १९५९ | २०१६ | ” |
| ११ | टुंडला | १९६० | २०१७ | ” |
| १२ | मेरठ | ११६१ | २०१८ | आचार्यपद |
|  |  |  |  | ” |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १३ | ईश्वरी | १९६२ | २०१९ | " |
| १४ | बाराबकी | १९६३ | २०२० | चा चक्रवर्ती पदसे गुरुशिष्य साथ मे विभूषित |
| १५ | वडवानजी | १९६४ | २०२१ | |
| १६ | कोल्हापूर | १९६५ | २०२२ | " |
| १७ | सोलापूर | १९६६ | २०२३ | " |
| १८ | ईडर | १९६७ | २०२४ | " |
| १९ | सुजानगढ | १९६८ | २०२५ | " |
| २० | दिल्ली (पहाडी धीरज) | १९६९ | २०२६ | " |
| २१ | श्रीसम्मेद शिखरजी | १९७० | २०२७ | " |
| २२ | श्री राजगृहीजी | १९७१ | २०२८ | " |
| २३ | श्री सम्मेद शिखरजी | १९७२ | २०२९ | " |
| २४ | श्री सम्मेद शिखरजी | १९७३ | २०३० | निमित्तज्ञान भूषण पद |
| २५ | श्री सम्मेद शिखरजी | १९७४ | २०३१ | युगल आचार्य चातुर्मास गुरुशिष्य |
| २६ | श्री राजगृहीजी | १९७५ | २०३२ | " |
| २७ | श्री सम्मेद शिखरजी | १९७६ | २०३३ | " |
| २८ | टिकैतनगर | १९७७ | २०३४ | " |
| २९ | श्री सोनागिरीजी | १९७८ | २०३५ | " |
| ३० | श्री सोनागिरीजी | १९७९ | २०३६ | सन्मार्ग दीवाकर |
| ३१ | नीरा | १९८० | २०३७ | " |

## आचार्य श्री के ३६ मूलगुणों के उपलक्ष में ३६ पुष्प

१. अगर देखने की इच्छा हो तो यह देखो कि " मैं कैसा हूं " ।

२. डरने की इच्छा हो तो अपने कुकृत्यो से डरो ।

३. पचाने की अभिलाषा हो तो दुसरो के अवगुणो को पचाओ ।

४. ग्रहण करना हो तो सब के उत्कृष्ट गुणो को ग्रहण करो ।

५. पालने की इच्छा हो तो सच्चे धर्म को सदा पालो ।

६. कुपित होना है तो अपने क्रोध पर कुपित होवो ।

७ अभिमानी बनना है तो सदा अपने धर्म के अभिमानी बनो ।

८. कुछ करने इच्छा हो तो सब का भला करो ।

९. यदि बोलने की इच्छा हो तो सदासत्य व मधुर वचन बोलो ।

१०. यदि नष्ट करने की इच्छा होती हैं तो अपने कर्म शत्रुओ को नष्ट करो ।

११. निंदा किये बिना रहा न जाए तो सदा अपनी निंदा करो ।

१२ लोभ न छुटे तो सदा सद्‌गुणो का लोभ करो ।

१३. किसी से वचना है तो पाप से वचो ।

१४. सुनने की लालसा हो तो सदा धर्म की कथा सुनो ।

१५. सघ करना है तो सुदा सज्जनो का सघ करो ।

१६. व्यसन करना हो तो सिर्फ दान करने का व्यसन करो ।

१७ यदि हसना है तो गुणीजनो को देखकर हसो (प्रसन्न)

१८. यदि दूर भागना हो तो सदा दुर्जन से दूर-दूर भागो ।

१९ नाम निशान मिटाना हो तो अधर्म का नाम निशान मिटाओ ।

२० शत्रु अगर किसी को मानो तो सिर्फ राग-द्वेश को मानो .

२१ तैरना सीखना हो तो सदा ससार समुद्र पार करना सीखो ।

२२ नाटक देखने की इच्छा हो तो ससार का नाटक देखो ।

२३ दूसरो की निंदा और अपनी प्रशसा मत करो ।

२४ वृक्ष की शोभा पात से नही फल से है ।

२५ नदी की शोभा रेत से नही जल से है ।

२६ मानव की शोभा सुन्दरता से नही सयम से है ।

२७ जो पर द्रव्य का स्वामी बनता है वह सबसे बडा चोर है ।

२८ अज्ञान ही विपदा और ज्ञान ही सपदा है ।

२९ दुख की उत्पत्ती प्रतिकूल सामग्री मिलने पर होती है ।

३० आनद की अनुभूति सम्पत्ति से मिलती है ।

३१ पर की शरण ही मरण है ।

३२. लोभी मन अर्थ को ही जीवन का आधार मानता है ।

३३ मोही मन विकार को ही अमृत की धारा मानता है ।

३४ ज्ञानी मन सदाचार को ही जीवन का सार मानता है ।

३५ शक्ति से शक्ति पर विजय की जा सकती है ।

३६. भक्ति से दूसरो के हृदय की प्रीती मिलती है ।

श्री. महावीराय नमः
श्री. परमगुरुभ्यो नमः

# श्री. १०८ भरतसागरजी महाराज

ले. क्षु. श्री. तीर्थ सागरजी महाराज

" एक उभरते हुये व्यक्ति का संक्षिप्त जीवन परिचय "
एक कहावत है :-

" शैले शैले न माणिक्यं, मौत्तिक न गज गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने ॥ "

हर पर्वत पर हीरो की खान नही होती, हर हाथी के मस्तक पर मोती नही होता और हर वन मे चन्दन के वृक्ष नही होते, उसी प्रकार सच्चे और उत्तम साधु सभी जगह नही पाये जाते है। जैसे साधू का व्यक्तित्व होता है और उसमे गुण होते है वैसे सभी आप मे विद्यमान है। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने मुनियो के लिये मुनियो के गुण कहे है।

**" विषयशावशातीतो निरारम्भो ऽपरिग्रह।**
**ज्ञान ध्यान तपोरक्त-रतपस्वी स। प्रशस्येत ॥**

जो इन्द्रियोंके विषय से रहित है, आरम्भ परिग्रह से रहित और ज्ञान, ध्यान, तप व अध्यपन मे लीन रहते है उन्हे साधु कहते हैं। उपरोक्त सभी गुण जिस व्यक्तित्व मे मौजुद है वे है कुमार योगी निस्कषाय ज्ञानमूर्ति वात्सल्य मूर्ति मुनि श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज! जिन्होने इस अल्प आयु मे ही माँ सरस्वती को आत्मसा कर लिया है और आज देश के हर नागरिक के हृदय सम्राट बने हुए है।

वैसे तो मुझ मे इतनी शक्ति नही है की मैं पूज्यनीय सरस्वती माँ के महान पुत्र के बारे मे कुछ लिख सकू यह तो ऐसे हैं जैसे सुर्य को दीपक दिखाने का काम फिर भी मै अल्प बुद्धि गुरु भक्ति के उत्साह मे आकर अपने मन के उद्गारो को रोक नही पा रहा हू और सूर्य को दीपक दिखाने जैसी हीन चेष्टा कर रहा हु।

उपाध्याय श्री का जन्म बासवाडा (राजस्थान) के लोहारिया नामक एक छोटे से गॉव मे चैत्र शुल्का नवमी सवत २००६ को स्वर्गीय श्री किशनलालजी माता श्रीमती गुलाबीबाई के आगन मे एक सूर्य के रुप मे अवत्रित हुए। आपका जन्म नाम छोटेलालजी रखा गया, आपके सस्कार गर्भ अवस्था से ही पूर्ण धार्मिक रहे अत सभी प्रकार के छल व प्रपंच से दूर रहते हुए धर्म पर अविरुद्ध बढते हुए मा जिनवाणी की सतत आराधना करते रहे।

आपने दिनाक २२-२-१९६८ गृह त्याग कर के आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज के सघ मे प्रवेश किया और पूर्ण ब्रम्हचर्य का व्रत ग्रहण किया तत्पश्चात दिनाक १५-४-१९६८ दूसरी प्रतिमा के व्रत और दिनाक २६-५-६९ को आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की और नामकरण हुआ। श्री १०५ शान्तिसागरजी महाराज।

जीवन मे यही से उपसर्ग प्रारम्भ हो गया अभी दीक्षा लिए ११ दिन ही बीते थे कि कुछ बदमाशो ने आपको कुए के अन्दर डाल दिया चौबीस घंटे कुए अन्दर ही व्यतीत करने पडे। ऐसे घोर उपसर्ग के समय आपने बील्कुल भी धैर्य नही खोया और उपसर्ग पर्यन्त समाधि धारण की। चौबीस घटे पश्चात गॉव के लोगोने आपको कुए से बाहर निकाला। सच है जो लोग ससार मे महान कार्य करने आते है। उनके उपर उपसर्ग आते ही रहते है, क्यो कि काटो मे गुलाब खिलते है आपकी मुनि दीक्षा दिनाक ६-११-१९७२ को महान सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी पर आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज व्दारा हुई और नामकरण हुआ मुनि श्री १०८ भरतसागरजी महाराज।

अभी गुरुवर आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महारज की ६४ वी जन्म जयती दिनाक ७ सितम्बर १९७९ को आपको उपाध्याय पद से विभूषित किया गया।

जिस प्रकार दिन में सूर्य अपने प्रकाश से समस्त जगत को प्रकाशमान करता हैं। रात को चन्द्रमा आपनी चान्दनीसे समस्त जगत को शीतलता प्रदान करता हैं। उसी प्रकार मुनि श्री १०८ उपाध्याय भरतसागजी महाराज "सन्मार्ग दिवाकर" गुरूवर आचार्य श्री १०८ श्री विमलसागरजी महाराज के सघ मे रहते हुए, अपनी ज्ञान ज्योती से चराचर जगत को प्रकाश मान कर रहे हैं।

आपका व्यक्तित्व एवं विचार हिमालय से भी ऊंचे व सागर से भी गभीर आप विचारो के ज्वालामुखी है, साथ ही हिम से भी अधिक
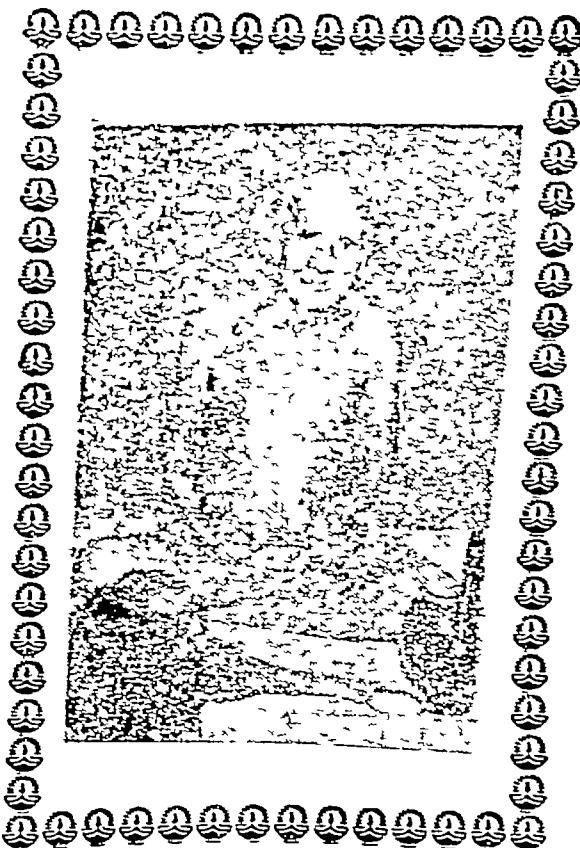
शीतल, आपके विचारो मे उत्तेजना नही किन्तु चिरस्थायी विवेक व गभीरता कूट कूट कर भरी है। जब आप किसी बात पर चिन्तवन करते है तब उस बात की गहराई तक आपकी प्रतिभा शीघ्र ही पहुँच जाती है। सत्मुख व्यक्ति का तर्क जितना कठिन होता हैं उतनी आपकी बुद्धि प्रखर हो जाती है। तत्व चर्चा मे आप मा जिनवाणी के साक्षात पुत्र हैं।

आपने इस अल्प आयु मे ही जो ज्ञान प्राप्त किया हैं तपस्या का है वह आज के युवा वर्ग के लिये एक सकेत दे रहा हैं। अगर आजका युवक चाहे वह पुरुषार्थ करे तो निश्चय ही जैन धर्म के ध्वज को ससार के शिखर पर लाकर बैठा सकता है। आपने युवा वर्ग को एक चेतना दी है कि उठो ! और धर्म ध्वजा लेकर भगावन महावीर के इस अमर महामत्र जियो और जिने दो को जन जन मे पहुचा दे।

आप दिगंबर जैन समाज और जिनवानी के एक सजक सचेत और सतेज विचारक महात्मा है, आपने अपनी आत्मा मे जिस सत्य का और अहिंसा का साक्षात्कार किया उसका विपूल प्रचार ससार के सामने किया है आप सत्य और अहिंसा को केवल शास्त्रो मे ही नही आपके मानव मात्र के जीवन मे देखना चाहते हैं।

आप मानवो के रुढिवादी सिद्धातो और रुढिवादी क्रियाओ को तोडते हुये युवा वर्ग मे धर्म का प्राण फुक रहे हैं। आप भगवान महावीर के जियो और जिने दो का अमर महामत्र का प्रचार एव प्रसार प्राणी मात्र मे करते हुए निरन्तर धर्म मार्ग पर अग्रसर ही रहे है। हमारी वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप चिरआयु होते हुये समस्त विश्व मे सम्यकज्ञान की ज्योती को निरन्तर प्रज्वलित करते रहे।
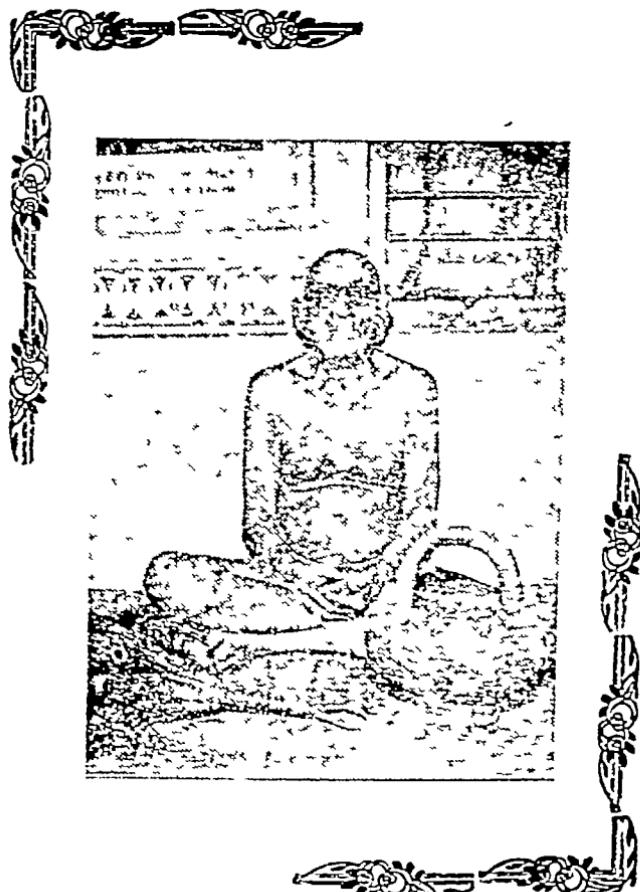
## श्री १०८ मुनि अरहसागरजी
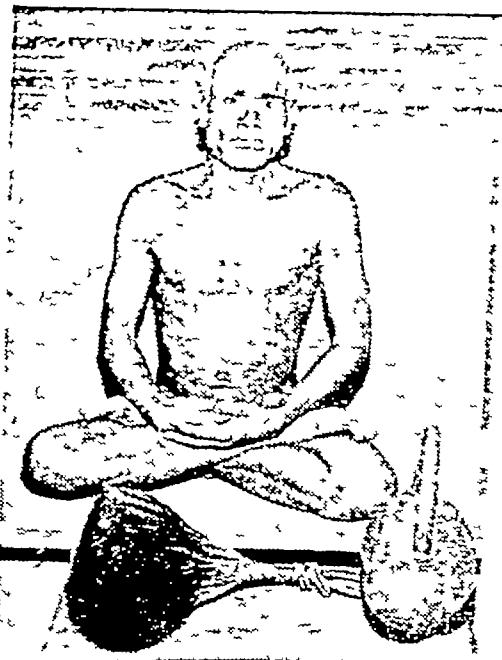
आप पिता श्री रज्लूलालजी एवं माता श्री मांडला देवी के पुत्र रत्न है। आपका जन्म स. १९७२ मे परवार जाति मे टीकमगढ मे हुआ था। आपके दो भाई है। आपका गृहस्थावस्था का नाम लखमीचन्द था। आपने दूसरी प्रतिमा आचार्य विमलसागरजी से तथा ७ प्रतिमा आचार्य श्री महावीर कीर्तिजी से चम्पापुर मे ली। क्षु. दीक्षा स. २०१५ से श्री सम्मेद शिखरजी मे तथा मुनि दीक्षा स. २०१८ अगहन वदी ११ को वडोत मे आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज से ली। आप वालब्रम्हचारी है, तथा अहर्निश जप तप ध्यान मे लीन रहते है।
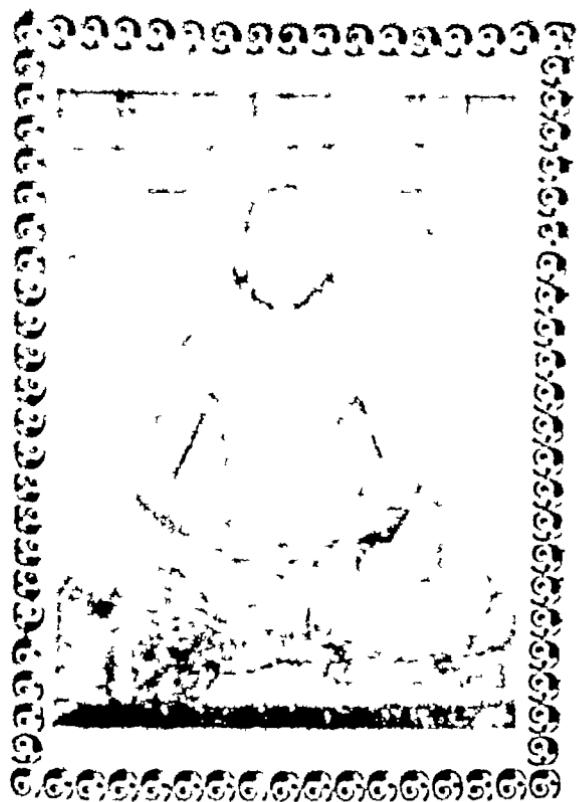
## मुनि श्री १०८ संभवसागरजी

आपका जन्म रेमजा (आगरा) निवासी श्री पन्नालालजी एव माता दुर्गाबाईजी जाति पुरवाल के घर श्रावण शुक्ला ३ रविवार स १९४९ मे हुआ। आपने ब्र शान्तिकुमार के नाम से मिर्जापुर मे ब्रम्हचर्य व्रत ग्रहण किया। कामा (भरतपुर) मे माघ शुक्ला १३ सं. २०१५ को क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की तथा श्री आदिसागरजी नाम से जाने गये। श्री सम्मेद शिखरजी मे कार्तिक शुक्ला १२ स. २०१९ को आचार्य श्री विमलसागरजी से मुनि दीक्षा ग्रहण की और श्री सम्भवसागरजी नाम पाया। आप आचार्य श्री के गृहस्थावस्था के बुआ के लडके है। आप बालब्रम्हचारी है। आप संघ के वयोवृद्ध शान्त परिणामी तपस्वी साधु है।

# श्री १०८ मुनि बाहुबली सागरजी
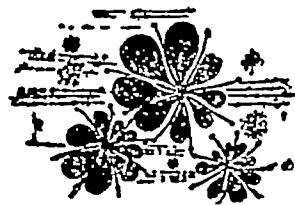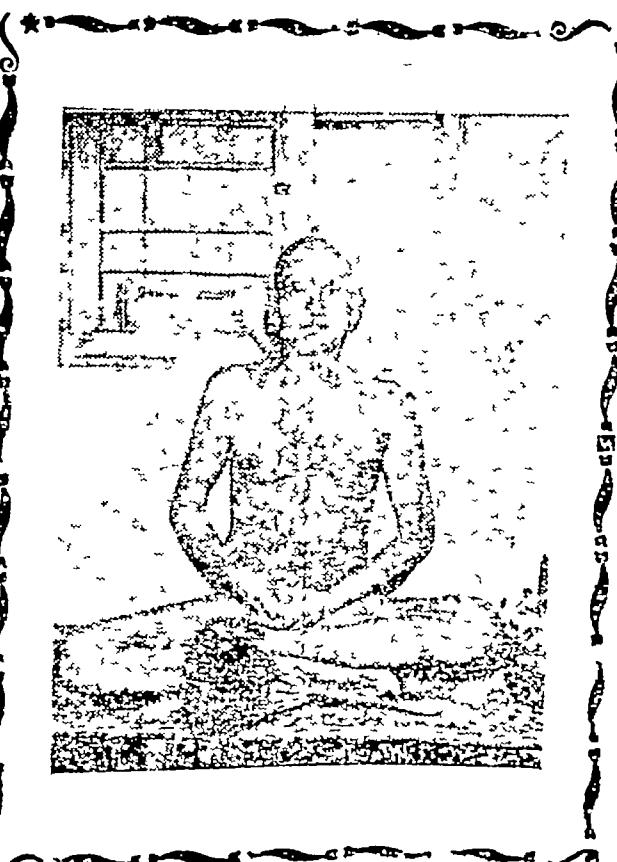
आपका जन्म पिडावा (जि झालरापाटन निवासी श्री भवरलाल जी एवं माता श्री तारावाई के घर स, १९९० मे हुआ) आप जैसवाल जाति के रत्न है। आपका गृहस्थावस्था का नाम गिरवरसिंह था ' आपने सातवी प्रतिमा स २०१९ मे कम्पिला जी क्षेत्र पर तया क्षुल्लक दीक्षा स २०२१ मे मुक्तागिरीजी क्षेत्रपर ली । श्री सम्मेद शिखर मे स. २०२९ कार्तिक शु १ सोमवार ३-११-७२ वी. स. २४९९ को आचार्य श्री विमलसागरजी से निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण की तथा श्री वाहुवली सागरजी नाम पाया। आप सघ के शान्त एव तपस्वी साधू है एवं बाल ब्रम्हचारी है।

## श्री १०८ मुनि मतिसागरजी
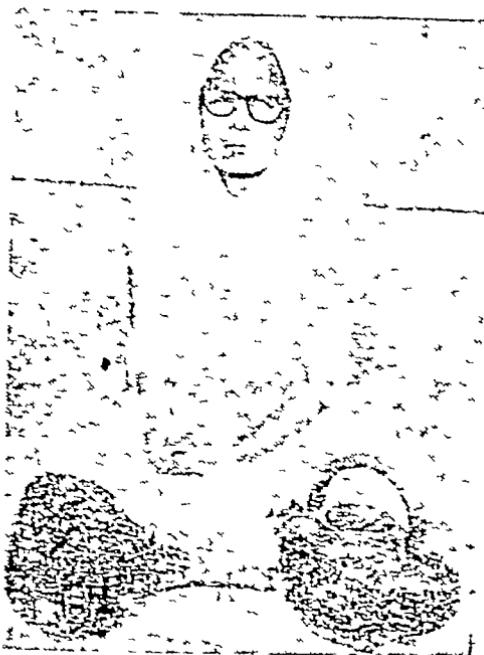
आपका जन्म स. १९७९ में पौषवदी १४ शनिवार को पिता श्री इन्दरलाल जी एव माता श्री गूरीबाई की उज्जवल कोख मे ग्राम भागोनी कला जिला दमोह (म प्र) पोस्ट तेजगढ मे हुआ गृहस्थावस्था का नाम श्री छोटेलालजी था। आप परवार जाति मे गोहिल गोत्र नगाडिम भूरी है। आपकी स. १९९६ मे शादी हुई और आपकी ६ सताने हुई। तत्पश्चात आपने गृहस्थाश्रम से उदासीन हो वैराग्य की ओर अग्रसर होकर ७ वी प्रतिमा मुनि श्री पुष्पदत्त-सागरजी से ग्रहण की। क्षु दीक्षा सम्मेद शिखरजी मे फाल्गुनी शु. १५ स. २०३३ को एव मुनि दीक्षा अयोध्या मे आचार्य विमलसागरजी महाराज से ग्रहण की। नाम करण श्री मतिसागरजी हुआ आप सरल एव शान्त स्वभावी है।

## मुनि श्री. १०८ उदयसागरजी

आपका जन्म सं. १९७८ मे उदयपुर के समीप वाढेडा ग्राम मे हुआ। आप पिता श्री खेमराजजी एव माता भूरीवाई के लाडले है। सारा परिवार धार्मिक था। आपका विवाह स. २००० मे ग्राम कुरवाड के नरसिंहपुरा जाति के कालूलाल की सुपुत्री सौ. कमलावाई के साथ हुआ। आपके ८ पुत्र-पुत्रियो मे अभी महावीर पुत्र जीवित है।। आपका गृहस्थाअवस्था का अधिकाश समय मुनियो की सेवा मे बीता है। आपने सं. २०२९ मे आचार्य महावीर कीर्तिजी से ब्रम्हचर्य लिया। ७ वी प्रतिमा आचार्य श्री १०८ सन्मतिसागरजी से एव मुनि दीक्षा की श्री १०८ सन्मतिसागरजी से ग्वालियर मे ज्येष्ठ शु ८ सं २०३५ मे ली। आप उदयसागर महाराज के नाम से जाने जाते है। हमेशा प्रशान्त मुख एव धर्मध्यान मे रहते है।

## श्री. १०५ आ. आदिमातीजी

आपका जन्म कामा ( भरतपूर ) निवासी अग्रवाल जाति के श्री सुन्दरलालजी एव माता श्री मोनीबाई के घर मे हुआ। आपका गृहस्थावस्था का नाम मैनाबाई था आपका विवाह कोसी निवासी श्री कपूरचन्द से हुआ। १ वर्ष बादही वैधव्य ने आ घेरा। जगत को असार जान सं. २०१७ मे कम्पिलाजी मे क्षुल्लिका दीक्षा ली। तद्परान्तर स. २०२१ मे मुक्तागिरी पर आचार्य श्री विमलसागरजी से आर्यिका व्रत लिया। आप सघ की पूज्य तपस्वी आर्यिका है।

## श्री १०५ आ. जिनमतीजी

आपका जन्म पाडवा ( सांगीवाडा ) निवासी नरसिंहपुरा जाती के श्री चन्द्रदुलाजी के घर सं. १९७३ मे हुआ । आपकी माताजी का नाम दुरोबाई एव आपका नाम मंकुवाई था । आपको दो भाई, दो बहने है । आपका विवाह पारसोला में हुआ । ६ माह वाद ही वैधव्य का भार आ गया अत वैराग्य धारण कर आ महावीर कीर्तिजी म. से १ ली प्रतिमा, वर्धमानसागरजी से ७ वी प्रतिमा एवं क्षुल्लिका दीक्षा सं २०२४ मे एवं आर्यिका पद सम्मेदशिखरजी में आ विमलसागरजी से स. २४९९ मे कार्तिक सुदी २ को लिया । आप सघ मे तपस्विनी आर्यिका है ।

## श्री १०५ आ. नंन्दामतीजी

आपका जन्म अहारन (आगरा) निवासी पद्मावती पोरवाल जाति की श्रीमती कपूरीदेवी । एवं पिता श्री मुन्नीलाल के घर भादो सु ११ सन् १९२९ मे हुआ। गृहस्थावस्था मे आपका नाम जयमाला देवी था । आपका विवाह आग्रा निवासी श्री सुगधीलाल खाडा से हुआ। कर्मोदय से २॥ वर्ष बाद ही वैधव्य आ गया । आप घर मे अध्यापिका का कार्य करती थी । आचार्य श्री की प्रेरणा से आपने आगरा म ज्येष्ठ सु ६ सन १९६९ मे २ री प्रतिमा तथा सन १९६९ भाद्र सु ११ को फिरोजाबाद के मेले पर क्षुल्लिका दीक्षा एव श्री सम्मेद शिखरजी म कार्तिक सु २ मगलवार को वीर सं २४९९ मे आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज से आयिका दीक्षा ग्रहण की । आप सघ की विदुषी एव शान्त परिणामी आयिका हैं ।

## श्री १०५ आर्यिका नंगमतीजी

आपका जन्म सन १९५१ में इन्दौर में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री माणिकचन्द्जी कासलीवाल एवं मातजी का नाम माणिक बाई है। आपका पूर्व नाम सूदर्मा बाई था। आपका पूरा परिवार धार्मिकता से ओत प्रोत रहा है। आपने १८ वर्ष की आयु मे ही श्री १०८ ज्ञानभूषण जी महाराज से ब्रम्हचर्य व्रत धारण किया था। ७वी प्रतिमा श्री १०८ आ श्री विमलसागरजी महाराज से श्री शिखरजी में ली। आपने जीवकाड कर्मकान्ड आदि परिक्षा उत्तीर्ण की है। आपने आर्यिका दीक्षा सोनगिरजी मे सावन सुदी १५ ता ८-८-१९७९ में श्री चन्द्रप्रभु प्रागण मे श्री १०८ आ. श्री विमलसागरजी महाराज से ली। आप बहुत सरल स्वभावी मृदुभाषी एव गुरुभक्त है।
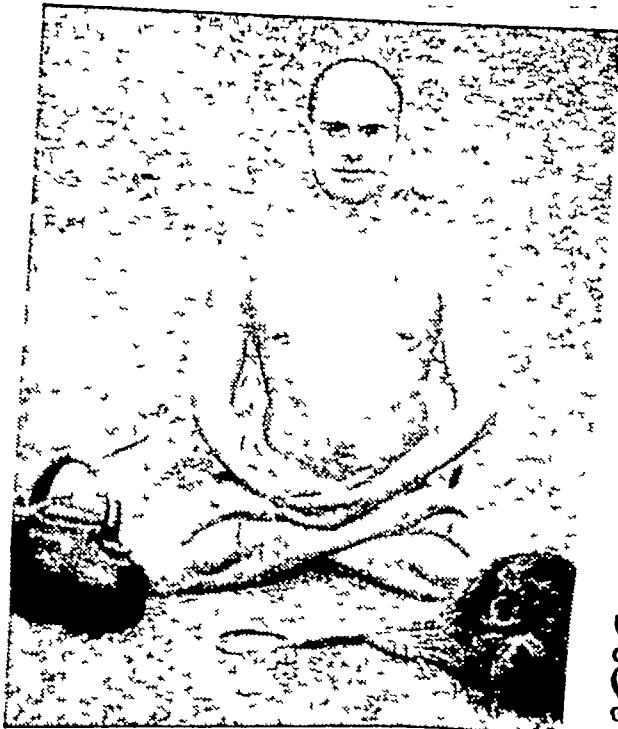
**श्री ऐलक १०५ चन्द्रसागरजी**

आपका जन्म कैलवारा (ललितपुर) निवासी श्री दटयावसिहं व माता श्री सरस्वतीबाई के घर स १९६२ मे हुआ। आपका नाम ोरेलाल था। आपने दो शादिया की। आपको तीन लडकियां और ो लडके थे। आपने सप्तम प्रतिमा आचार्य श्री विमलसागरजी से कोल्हापुर मे ली। एव क्षु- दीक्षा बाराबकी में ली, और ऐलक दीक्षा आचार्य श्री विमलसागरजी से सम्मेदशिखरजी मे ली। नामकरण ऐ. चन्द्रसागर हुआ। आप सघ के शान्त परिणामी साधु है।
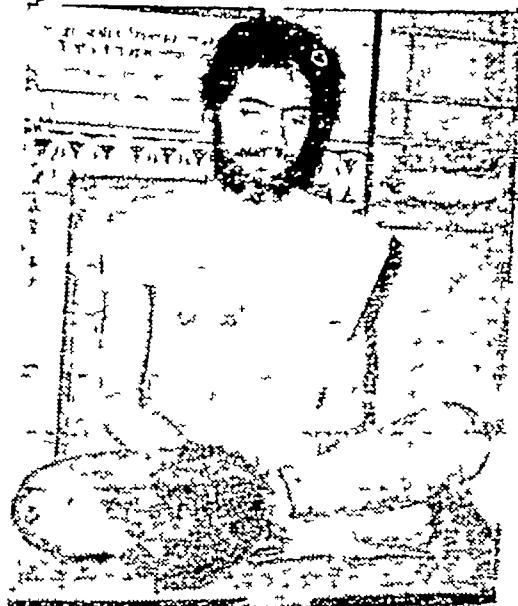
**श्री १०५ क्षु. सन्मतिसागरजी**

यह भारत वसुन्धरा अनेक महान ऋषि मुनि एव तपस्वियो की जननी है। इस वसुन्धरा पर उन्ही का जन्म लेना सार्थक है जिन्होंने भारत देश की गौरव गरिमा को वढाया है। इसी शृखला ग्रामवरवाई जिला मुरैना के सेठ वावूलाल जी के घर दिनाक १० नवम्बर १९४९ को मा सरोजवाई की कोख से वालक सुरेशचन्द का जन्म हुआ। सरल हसमुख स्वभाव, साहस प्रवल आत्म विश्वास आपमे शुरु से ही है। सभी सुख सुविधाओ से युक्त आपका घर आपको अपने मोह मे नही फसा सका। आपने २२ वर्ष की अल्पायु मे व्रम्हचर्य धारण कर लिया। वैराग्य सरिता मे स्नान करते हुए १ फरवरी १९७२ को आपने

म्मेदशिखरजी मे आचार्य श्री १०८ सुमतिसागरजी महाराज से क्षु
क्षा ग्रहण कर ली, नाम श्री १०५ क्षु सन्मतिसागरजी पाया।
र्मान मे श्री "ज्ञानदजी" के नाम से भी जाने जाते हैं। आपने
ोतिष, व्याकरण सिद्धान्तादि का गहन अध्ययन किया है। आप
न्चकोटि के वक्ता होने के साथ-साथ २ कवि एव लेखक भी हैं।
ापने "मुक्ति पथ की ओर" तथा चौबीस तीर्थंकरो जन्म जयन्ति
र २४ पुस्तके तथा स्याद्वाद शिक्षण प्रथम एव द्वितीय खड भी लिखी
। ज्ञान प्रसार मे विशिष्ट रुचि होने से आपने सोनगिरी मे आचार्य
ी विमलसागरजी के आशीर्वाद से एक स्याव्दाद शिक्षण परिषद,
व नगानग सस्कृत महाविद्यालय की स्थापना कराई हैं। आपकी
ामना है कि प्रत्येक प्राणी ज्ञानी बनकर मुक्ति पथ का अनुसरण
रे।

卐
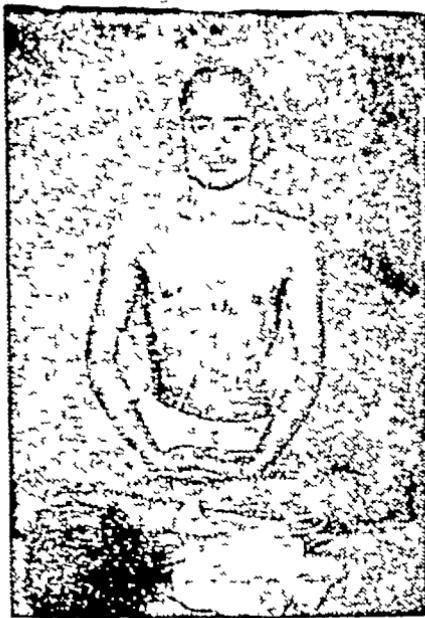
## श्री १०५ क्षुल्लक तीर्थसागरजी

आपका जन्म अलवर जिला राजस्थान मे सन १९५१ में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री बाबूलालजी व माताजी का नाम श्रीमती दुलारीबाई है। आपके ६ भाई एव ३ बहिने है। आपके पिताजी १५ साल से मुनि सेवा में रहे हैं वे धार्मिक प्रवृत्ति के है। आपकी भावना एकदम वैराग्य की ओर जाग्रत हुई और थोडे ही समय में आचार्य श्री विमलसागरजी के साथ रहकर आपने क्रमशः दूसरी पांचवी व सातवीं प्रतिमा धारण की वं धार्मिक ग्रथो का अध्ययन किया। सावन सुदी ९ ता० २-८-७९ को सोनगिरीजी मे चन्द्रप्रभु प्रागण मे आचार्य श्री विमलसागरजी से क्षुल्लक दीक्षा ली। दीक्षा लेने के ३ मह पूर्व महाराज श्री के आदेशानुसार भारत वर्ष के सभी तीर्थो व अतिशय क्षेत्रो की वदना की। आप वडे शान्तचित्त व मृदुभाषी हैं। आपका अधिकतर समय धार्मिक ग्रंथो का अध्ययन करने मे व्यतीत होता है।
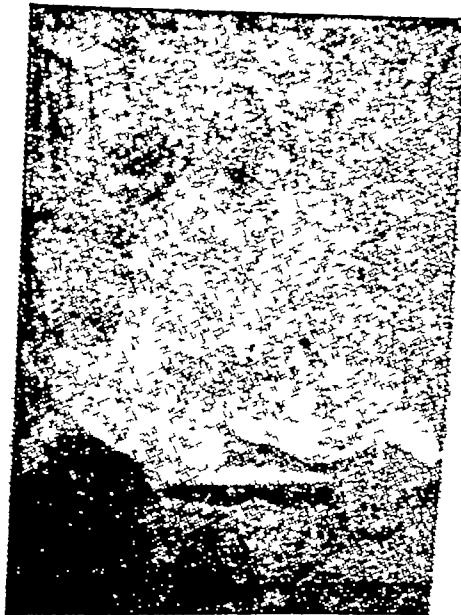
## श्री १०५ क्षुल्लक नंगसागरजी

आपके पिता का नाम श्री भूपाल उपाध्यायजी एव माताका नाम श्री चम्पाबाई है। आपका जन्म जैन वाडी महाराष्ट्र प्रान्त मे हुआ आपके बचपन का नाम चन्द्रकात उपाध्याय है। आपकी तीन बहिने है। आप अपने पिता के एकलोते पुत्र है। आपने ब्रम्हचर्य व्रत श्री १०५ भट्टारक श्री लक्ष्मीसेनजी से लिया सात प्रतिमा के व्रत श्री १०८ बालाचार्य मुनि बाहुबली से लिये। आप का लोकि अध्ययन ९ क्लास तक का है। आपने क्षुल्लक दीक्षा पौष सुदी १ गुरुवार दिनाक २०-१२-१९८० मे सोनगिरी सिद्धक्षेत्र पर सन्मार्ग दिवाकर श्री १०८ आचार्य श्री विमलसागरजी से ली। आप की उम्र अभी २४ वर्ष की है।

## क्षुल्लिका १०५ पद्मश्रीजी

आपके पिता का नाम श्री पूनमचन्द एव माता का श्रीमती रुपीबाई था। आपका जन्म स्थान पारसोला (प्रतापगढ) है ग्रहस्थावस्था का नाम सीधारबाई था। आपके पति का नाम दीपचन्दजी था। आपको एक पुत्र भी हुआ था। आपने दूसरी प्रतिमा मुनि श्री शान्तिसागरजी से सातवी प्रतिमा आचार्य महावीर कीर्तिजी से ग्रहण की। क्षुल्लिका दीक्षा आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज से सवत २०२४ फाल्गुन सुदी १५ को पारसोला में हुई। आपका सारा समय वैय्यावृत्ति जप तप स्वाध्याय में जाता है।

## श्री १०५ क्षुल्लिका श्रीमतीजी
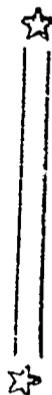
आप पिता श्री नेमीचन्द माता श्री सोनीबाई की पुत्री है। आपका जन्म रुकडी कोल्हापुर में हुआ। गृहस्थावस्था का नाम मालतीबाई था। आपका विवाह छीरी शिरहदी ( बैलगाँव ) निवासी श्री पारिसा आदिनाथ उपाध्याय से हुआ। दुर्भाग्य से १० वर्ष बाद ही आपको वैधव्य दुख उठाना पडा। आपको एक पुत्री हुई थी उसका भी स्वर्गवास हो गया। आपने आचार्य श्री विमलसागरजी के सघ मे ३-४ वर्ष रहकर धर्मध्यान किया बाद मे चैत्र सुदी ४ शनिवार १८-३-१९७२ को राजगृहीजी क्षेत्र पर क्षुल्लिका दीक्षा ली। आप काफी शान्त भद्र परिणामी अध्ययनशील एव जिज्ञासु क्षुल्लिका हैं।

卐

## श्री १०५ क्षुल्लिका कीर्तिमतीजी

आपका जन्म कुसुम्बा जिला धूलिया (महाराष्ट्र) मे हुआ। पिता का नाम श्री हीरालाल ब्रजलाल शहा तथा माताका नाम झमकोर बाई है। १५ वर्ष की आयु मे ग्राम सिरसाले जिला जलगाव के श्री गोकुलदास दोधुसा शहा के सुपुत्र श्री खरदुमन दास शहा के साथ आपका पाणिग्रहण हुआ। आपके दो बच्चे है। बचपन से ही वैराग्यमयी परिणाम होने से २४ वर्ष की आयु मे आपने आ देशभूषणजी से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर लिये। दो वर्ष तक सघमे भी रही। आचार्य श्री देशभूषणजी ने आपको आर्यिका ज्ञानमती माताजी के पास पढने की प्रेरणा दी थी। लेकिन फलटण अधिवेशन मे आपकी भेट क्षु चारित्र-सागरजी से हुई उनके साथ आपने शिखरजी आकर आ. श्री विमलसा-गरजी से फाल्गुन शु ५ स. २०३३ को क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण कर ली। आप ज्ञान स्वभावी मनन अध्ययन शील है

## क्षुल्लिका १०५ श्री अनंगमतीजी

आपका जन्म १४ मई सन १९५३ को इन्दौर (म प्र ) मे हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री धन्नालालजी पाटनी एव माताजी का नाम श्रीमती कमलादेवी है। आपके १ भाई एव ७ बहिने है। आपका पूर्व नाम कु. एरावती पाटनी था। आपने बी ए फायनल की परीक्षा उत्तीर्ण की है। १६ वर्ष की उम्र मे मुनि श्री ज्ञानभूषणजी महाराज के उपदेश से धर्म की ओर मोड लेकर ब्रम्हचर्य व्रत अंगीकार किया तथा साथ ही धार्मिक ग्रथो का अवलोकन करते हुए ज्ञानर्जन किया। आपने अपने जीवन काल मे अध्ययन मनन चिन्तन के साथ ही श्रेष्ठ साध्वी जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया आप मे वचपन से ही वैराग्य की भावना थी इस कारण से आपने राग-द्वेपापिक से युक्त सासारिक सुखो को तिलाजलि देकर आत्म साक्षात्कार करने के लिये श्रावण सुदी १२ ता ५-८-७९ रविवार को श्री सोनगिरजी सिद्ध-क्षेत्र पर आचार्य श्री विमलसागरजी से क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की उस समय आपका नाम अनगमती रखा गया।

## ब्र. चित्राबाई

श्रीमती चित्राबाईजी कोल्हापूर की रहने वाली हे और वर्तमान मे आप परमपूज्य श्री १०८ आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के सघ की व्यवस्थापिका है। आपका जन्म हुपरी (दक्षिण) निवासी श्री पारस महोदय के घर मे हुआ। आपकी माता का नाम श्रीमती कृष्णाबाई गडकरी था। आपको बचपन से ही धर्म मे विशेष लगन है आपका विवाह कोल्हापूर निवासी श्री रामचन्द्र दीघे के साथ हुआ आपको एक पुत्र की प्राप्ति हुई बाद मे अशुभ कर्मोदय से आपको वैधव्य दुख सहना पडा। तब आपके सामने दो कार्य थे। अपने पुत्र को पढाना और साधु त्यागियो की वैय्यावृत्ति करना। आप लगभग २६ वर्षो से परमपूज्य आचार्य विमलसागरजी महाराज के सघ का सचालन बडी योग्यता से और तत्परता से कर रही है। सघ की व्यवस्थापिका काम कितना दुरुह है। विशेष आज के समय मे यदी हम सभी जानते है। परन्तु सौभाग्य से सघ को चित्राबाई जैसी कर्तव्य निष्ठ, कर्मठ महिला व्यवस्था एव सचालन करने वाली मिली है। आप समदृष्टि से सघ सेवा मे निष्ठापूर्वक रात दिन लगी रहती है।

# आचार्य श्री की ६५ वीं जन्म-जयन्ति की उपलक्ष मे

# ६५ पुष्प

## संग्रहकर्ता श्री १०५ आर्यिका नंगमतीजी

१. कैंची मत बनो सुई बनो ।

२ प्रेम महान वस्तु है । वह कठोर शुष्क क्रूर हृदय को भी मुलायम कर देता है ।

३ वात्सल्य स्वर्गीय जीवन का प्रथम सोपान है ।

४ जिसे अपने आप पर विश्वास नही उसकी असफलता निश्चित हैं ।

५ मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से लोभ को दान से तथा मिथ्याभाषन को सत्य से जीत सकता है ।

६. आत्म विश्वास, आत्म सयम और आत्म ज्ञान ये तीन जीवन को वल प्रदान करते है ।

७ अपने आपको पहचानना सबसे कठिन है ।

८ क्षमा दूसरो के लिये है अपने लिये नही ।

९ मनुष्य प्रकाश से नही चारित्र से पहचाना जाता है ।

१० ईश्वर प्रकाश है अधकार नही वह प्रेम है घृणा नही, वह सत्य है असत्य नही ।

११ जो किसी का अन्याय सहता है वह अत्याचारी से भी वढकर है ।

१२ अनुभव ज्ञान की जननी है ।

१३ विना ज्ञान के न्याय सभव नही है ।

१४ जगलगाकर खत्म होने की अपेक्षा घिस-घिसकर खत्म होना बेहतर है ।

१५. ईर्ष्या और क्रोध मनुप्य की आयु को छोटा कर देते है ।

१६ तुम्हे यदि कोई प्रेम नही करता है तो यह वात तय समझो कि तुम्हारे मे कोई कमी है ।

१७. परमात्मा पूजा का नही प्रेम का भूखा है ।

१८ सतुलित नस्तिप्क, निश्चित कार्यक्रम और व्यवस्थित क्रिया पद्धति सफलता की कुजी है ।

१९ शक्तिशाली व्यक्ति वह है जो अकेला है । कमजोर वह है जो दूसरो का मुह ताकता हैं ।

२० जिस समय क्रोध उत्पन्न होने वाला हो उस समय उसके परिणामो पर विचार करो ।

२१ व्रतशील जीवन का अर्थ है जीवन लक्ष्य पूति के लिये अभीष्ट साधन और साहस का सुसचय ।

२२ आत्मा की सम्पन्नता का परिमाप उसकी सवेदनशीलता है, दरिद्रता की असवेदनशीलता ।

२३. स्वय को बुद्धिमान समझने वाला आमतौर पर महान मूर्ख होता है ।

२४ रक्त का विषाक्त हो जाना कोई वात नही किन्तु सिद्धान्त का विपाक्त हो जाना सर्वनाश हैं ।

२५ धन का नाश, मानसिक दुख, घर के दुश्चरित, ठगा जाना और अपमान इन पाच वातो को बुद्धिमान पुरुष प्रकाशिन नही करे ।

२६. खोटे गाव का निवास, दुर्जन की सेवा, वुरा भोजन, क्रोध-वाली स्त्री, मूर्ख पुत्र और विधवा कन्या ये सव वस्तुए विना आग के ही शरीर को भस्म करती है ।

२७ ब्रम्हचर्य का पालन नही करने से आयु, तेज, वल, वीर्य, विवेक, लक्ष्मी, कीर्ति पुण्य और प्रीति का नाश हो जाता है ।

२८ वह सभा नही जिसमे वृद्ध पुरुष नही, वे वृद्ध नहीं जो धर्म का स्वरुप न वतावे, वह धर्म नही जिसमे सत्य न हो, वह धर्म नही जिसमे छल हो ।

२९. यौवन धन सम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक इन चारो मे से एक-एक वस्तु भी अनर्थ के लिये होती है तो फिर जहा चारो वस्तुए मौजूद हो वहा के अनर्थ का क्या कहना है ।

३० विद्या के समान नेत्र नही, सत्य के समान तप नही, राग समान दुख नही, त्याग समान ससार मे सुख नहीं

३१. भले ही सैकडो सूर्यो का उदय हो जावे, भले ही सैकडो चन्द्रमाओ का उदय हो जावे परन्तु विद्वानो के वचनो विना भीतरी अधकार जो अज्ञान है वह नष्ट नही होता है ।

३२ दानी पुरुप के धन, शूरवीर पुरुष के मरण, विरक्त पुरुष के भार्या तथा निर्मोही पुरुष के ससार तृणवत होता है ।

३३. दयाशील अन्त करण प्रत्यक्ष स्वर्ग है ।

३४. वडा भारी अधा वह है जो कामवश व्याकुल हैं । जन्म से अधे नही देखते, काम से अधे को सुझता नही, मदोन्मत्त किसी को देखते नही, और स्वार्थी मनुष्य दोषो को नही देखते है । अधकार प्रकाश की ओर चलता है किन्तु अधापन मृत्यु की ओर ।

३५. जिसे शास्त्रो का ज्ञान नही वह एक प्रकार का अधा है ।

३६ जैसे अन्त करण मे जरा भी कण पड जाने पर कोई वस्तु ठीक-ठीक नही दीख पडती हैं, वैसे ही अन्त करण मे थोडी भी वासना रहने से आत्मा के दर्शन नही होते हैं ।

३७ मधुर वचनो के साथ दान, गर्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त वीरता दान मे खर्च होने वाला धन ये चारों बाते ससार मे दुर्लभ है ।

३८ एक वार अन्त करण की ओर आख घुमाओ समस्त अर्थ समझ मे आ जायेगा ।

३९ अकृतज्ञता इसानियत के प्रति धोखा हैं ।

४०. शेरनी एकही पराक्रमी पुत्र के रहने ,पर निर्भीकता पूर्वक सोती है तथा गधी दस दुर्बल पुत्रो के रहते हुए भी वोझा ही ढोती हैं।

४१. अकेला विचरना अच्छा है परन्तु मुर्ख साथी अच्छा नही।

४२. विश्व मे सर्वशक्तिमान वह है जो अकेला रहता है।

४३ अकृतज्ञ मनुष्य से एक कृतज्ञ कुता-श्रेष्ठ हैं।

४४. भलाई का बदला न देना क्रुरता है और उसका बुराई मे उत्तर देना पिशाचता है।

४५. अज्ञानी आत्मा पाप करके भी अहकार करता है।

४६. जिसे तू मारना चाहता है वह तू ही है। जिसे तू शासित करना चाहता है वह तू ही है, अर्थात स्वरुप दृप्टी से चैतन्य एक समान है, यह अद्वैत-भावना ही अहिंसा का मूल आधार है।

४७ अहिसा से मोक्ष के बजाय अहिंसा मे मोक्ष है।

४८ जीवन की गहराई की अनुभूति के कुछ क्षण ही होते है वर्ष नही।

४९ धन खोकर यदि हम अपनी आत्मा को पा सके तो यह कोई महगा सौदा नही है।

५० जिस प्रकार घडे का प्रकाशक भास्कर घडे को नष्ट होने पर नष्ट नही होता है उसी प्रकार देह का प्रकाशक आत्मा देह के नष्ट होने पर नप्ट नही होता है।

५१ आत्मा का परिपूर्ण सत्य है परमात्मा मे।

५२ भोग के बधन मे जडित आत्मा अपने विशुद्ध स्वरुप को उपलब्ध नही कर पाता है।

५३ जो आत्मा है वह विज्ञाता है, जो विज्ञाता है वह आत्मा है, जिस से जाना जाता है वय आत्मा है जानने की इस शक्ति से ही आत्मा की प्रतीति होती है।

५४ आत्मा अपने स्वय के कर्मो से बधन मे जकडता है, कृत कर्मो को भोगे बिना मुक्ति नही है।

५५ आत्मा स्वय अदृप्ट रहकर भी दृप्टा है।

५६ धर्म का अर्थ है साहस

५७ परधन और परनिंदा को त्यागे, परनारी को माता सम समझे।

५८ जो दुर्जन मन पर सवार होगा वह बलवान से भी बलवान है।

५९ परमार्थ पथ मे धन, स्त्री और प्रतिष्ठा ये तीन खाईयाँ है।

६० सब से अच्छा और सरल काम कम बोलना है यदि एक शब्द काम चलता तो दूसरा कभी ना बोलो।

६१ चारीत्र एक ऐसा हीरा है जो हर पत्थर पर घिस सकता है।

६२ आत्म श्रद्धा मुक्ति की जननी है तथा आत्म ज्ञान से इसकी पूर्ति होती है।

६३ चारित्र मानवता का कलश है ब्रम्ह स्वरुप मे रमण करना यह इसका फल है।

६४. ब्रम्हचर्य स्वाधीनता का मार्ग है एवं सर्वव्रतों का शिरोमणी है।

६५ ब्रम्हचर्य अपना निजी स्वभाव है उसको प्राप्त करने के लिये सब की दृढ़ता पूर्वक साहस से काम लेना चाहिए।

## श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज की पूजा

" रचयता - श्री झन्डूलालजी "

परम पूज्य है विमल सिन्धु आचार्य जी
नग्न दिगम्बर भेष बने मुनिरायजी
आव्हाजन मै करु विराजों आई के
पूजू मन वच काय हर्ष चित लाई के

ओंम न्ही श्री मदाचार्य श्री विमलसागर स्वामिन अत्र अवतर अवतर सर्वोषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरण।

अष्टक

अति विमल सम नीर निर्मल हेमझारी मे भरुं।
अरु जन्म मृत्यू विनाशवे कू तुम चरण आगे धरु ॥
श्री बिमल सूरि गुरु चरण को मै सदा पुजा करुं।
ससार के सब दुख छूटे जाय शिव रमणी वर ॥

ओम न्ही श्री १०८ आचार्य श्री विमलसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यू विनाशनाय जल निर्वपामीनि स्वाहा ॥१॥

केशर कपूर मिलाय चन्दन स्वच्छ कर लाइया।
गुरुके चरण कू चर्च करके भवताप मिटाइया ॥ श्री विमल ॥
॥ चन्दन ॥२।

अक्षत अनुपम खण्डवर्जित धोय करके लाइया।
अक्षय सुपद के कारणे गुरु चरण माहि चढाइया ॥ श्री विमल ॥
॥ अक्षत ॥३॥

वेला चमेली और चम्पा विविध फूल मगाइया।
काम वाण विनाशने के हेतु चरण चढाइया ॥ श्री विमल ॥
॥ पुष्प० ॥

व्यजन अनुपम सरम ताजे स्वर्ग की थाली भरे।
निज क्षुधा रोग विनाशवे कू गुरु चरण आगे धरे ॥ श्री विमल ॥
॥ नैवेद्य ॥५॥

शुभ स्वच्छ मणिमय दीप लेकर, गुरु चरण आगे धरुं ।
मम मोह तिमिर विनाश होवे आरती गुरुकी करु ।।श्री विमल।।
।। दीपं ।।

दशविधि सुगधित धूप लेकर, चरण माहि चढाय दू ।
श्री विमल गुरु के चरण पूजू कर्मकाष्ठ जलाय दू ।।श्री विमल ।।
।। धूप ७ ।।

उत्तम सरस सुन्दर मनोहर फल अनुपम लाइया ।
आचार्य पद मे भेट करके चित्त अति हरणाइया ।। श्री विमल।।
।। फल ८ ।:

जल गध आदिक द्रव्य आठो स्वर्ग थाली मे भरुं ।
श्री विमलसागर गुरू चरण की अर्घ ले पूजा करु ।। श्री विमल।।
।। अर्घ ।।०।।

## -:- जयमाला -:-

" विमल सिन्धु आचार्य की अव वरणू जयमाल ।
मेरे सब सकट हरो प्रभु तुम दीनदयाल,, ।।१।।

श्री विमल ऋषीश्वर शान्तिदाय तुम चरण नमू मन वचन काय ।
जय शूर शिरोमणि वीतराग, जय-परम दिगम्बर नग्न काय ।।२।।
तुम वाल ब्रम्हचारी मुनीश, तुम धर्म धुरन्धर हो गुणीश ।
तुम सिहवृति धारक महान, सब शास्त्रो के तुम ज्ञानवान ।।३।।
ससारी सुख सब क्षणिक जान, सब छोडि बने त्यागी महान ।
महावीर कीर्ति गुरू पास जाय, मुनि दीक्षा लीनी मोक्ष दाय ।।४।।
गुण मूल अठाइस धार लीन, तब नर,-नारी जय-जय सुकीन ।
तुम पच महाव्रत धार लीन, धरू पच समिती पालन प्रवीन ।।५।।
द्वादश विधि गुरू तुम तप तपत, धरु तीन गुप्ति पालन महत ।
जय विमल सिन्धु मुनिवर महत त्रस थावर की रक्षा करन ।। ६ ।।
सव जीवो पर करुणा जु कीन निज आतम मे नित रहतलीन ।
आहिंसिंह आदि उपसर्ग कीन सम भावो से रहे आत्मलीन ।। ७ ।।

श्री बन्धा अतिशय क्षेत्र जाय सूखा कुआ दीन भराय ।
इत्यादिक अतिशय दिये दिखाय शुभभाग्य उदय तुम दरश पाय ॥ ८॥
गुण सूर योग छत्तीस धार आचार्य भये लहि गुण अपार ।
तुम सौम्य शान्ति मुद्रा धरत सबजीवो पर करुणा करन्त ॥ ९ ॥
जय मूरु तीस पट् गुणन धार, तप उग्र तपत आनन्द कार ।
जय सहत परीषह बीन ढोय, अरु बारह भावन भाय लोय ॥१०॥
आजन्म रसो का त्याग कीन, घृत तेल नमक दधि त्याग दीन ।
धनि धनि कटोरी मात जान, अरु धन्य आप के तात जान ॥११॥
यह पदमावती पुरवाल पुरवाल जाति, हुई धन्य सुगुरु तुमरे प्रताप
है धन्य कोसमा ग्राम जान, जहा जन्मे श्री गुरुवर महान ॥ १२ ॥
है धन्य हमारा भाग्य जान जो ऐसे गुरु निरखे दयाल ।
कर जोड़ वीनवे "झडूलाल" मम सकट मेटो हे कृपाल ॥१३॥

## – घत्ता –

विमल सिन्धु आचार्य की पूजा करी बनाय ।
पडे सुने जो भाव से, पहुचे शिवपूर जाय ॥
ओम न्ही श्री १०८ आचार्य श्री विमल सागराय पूर्णार्घ्य नि स्वाहा ।

## दोहा

विमल सिन्धु आचार्य को जो पूजे मन लाय ।
रोग शोक आदिक नशै, सुख सम्पत्ति विलसाय ॥

इत्याशिर्वाद

## आरती

विमल सागर की गुण अगार की, शुभ मंगल दीप सजाय हो,
आज उतरु आरतिया ।टेक।
विहारीलाल श्री कटोरीवाई कें गर्भ विषे गुरु आये,
कोसमा गॉव मे जन्म लियो, तव सव जन मगल गाये ॥
गुरूजी सव जनमगल गाये ॥

नै रागी की, न द्वेशी की, दे आतम ज्योति जगाय हो,

आज उतारू आरतिया ।।१।।

गुरु उपवास व्रतों के धारी, आतम ब्रम्ह बिहारी ।

खडगधार शिव पथ पर चलकर, शिथिलाचार निवारी ।।

गुरुजी शिथिलाचार निवारी

गृह त्यागी, की वैरागी, ले दीप सुमन का थाल हो,

आज उतारू आरतिया ।।२।।

गुरूवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया,

भक्ति भाव से स्तुति करके, फूला नही समाया ।

गुरुजी फूला नही समाया ।।

ऐसे ऋषिवर को, ऐसे मुनिवर को, कर वन्दन बारम्बार हो,

आज उतारु आरतिया । ।।३।।

# संघस्थ अन्य साधु

# वर्ग के लिए

**—० अर्घ ०—**

जल गध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप लुभावना ।
फल ललित आठो द्रव्य मिश्रित, अर्घ लीजे पावना ।।
जो चरण पूजे भक्ति पूर्वक, भरतसागर मुनिवरा ।
तिन घर सदा सौभाग्य आनन्द रहत जो सेवक खरा
ओम् ह्री श्री १०८ उपाध्याय मुनि श्री भरतसागराय नम ।।
अर्घ नि स्वाहा ।।१।।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज दीप धरु ।
ले धूप और फलसार, सब को अर्घ करु ।।
श्री अरहसिधु मुनिराज, चरणोमे भेट धरु ।
मम कर्म होय सब नष्ट, भव तरि मोक्ष वरु ।।
ओम् ह्री श्री १०८ अरहसागर मुनिद्राय अर्घ नि. स्वाहा ।।२।।
जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज दीप धरुं ।
ले धूप और फलसार, सब को अर्घ करुं ।।
श्री सभवसिधु मुनिराज, चरणो मे भेट धरु ।
मम कर्म होय सब नष्ट, भव तरि मोक्ष वरू ।।
ओम् ह्री श्री १०८ मुनि श्री सभव सागराय अर्घ नि स्वाहा । ।।३।।
जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज दीप धरू ।
ले धूप और फलसार, सब को अर्घ करू ।।
श्री वाहुवली महाराज, चरणो मे भेट धरू ।
मम कर्म होय सब नष्ट, भव तरि मोक्ष वरूं ।।
ओम् ह्री श्री १०८ वाहुवलीसागर मुनिन्द्राय अर्घ नि. स्वाहा । ।।४।।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज दीप धरुं।
ले धूप और फलसार, सब को अर्घ करु ॥
श्री भद्रसागर मुनिराय, चरणो में भेट धरु।
मम कर्म होय सब नष्ट, भव तरि मोक्ष वरु ॥

ओम् ह्री श्री १०८ भद्रसागर मुनिन्द्राय अर्घ नि. स्वाहा। ॥५॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प नेवज दीप धरु।
ले धूप और फलसार, सबको अर्घ करु ॥
श्री मतिसागर मुनिराय चरणो मे भेट धरु।
मम कर्म होय सब नष्ट भव तरि मोक्ष वरु ॥ ६॥

ॐ ह्री श्री १०८ मतिसागर मुनिन्द्राय अर्घ नि. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प नेवज दीप धरु।
ले धूप और फलसार सबको अर्घ करु ॥
श्री उदयसागर मुनिराय चरणो मे भेट धरु
मम कर्म होय सब नष्ट भव तरि मोक्षवरुं ॥ ७॥

ओम ह्री श्री १०८ मुनि श्री उदयसागराय अर्द्ध नि० स्वाहा।

आदिमतीजी मात को नमन करु त्रयवार।
अप्ट द्रव्य शुभ लेय के अरपू चरण मझार ॥

ॐ ह्री श्री १०५ आदिमती आर्यिका अर्घ - नि० स्वाहा ॥८॥

जिनमतीजी मात को नमन करु त्रयवार।
अप्ट द्रव्य शुभ लेय के अरपू चरण मझार ॥

ओम ह्री श्री १०५ जिनमती आर्यिकायै अर्घ नि० स्वाहा ॥ ९॥

नन्दामतीजी मात को नमन करु त्रयवार।
अप्ट द्रव्य शुभ लेय के अरपू चरण मझार ॥

ओम ह्री श्री १०५ नन्दामतीजी आर्यिकायै अर्घ नि० स्वाहा ॥१०॥

नगमतीजी मात को नमन करु त्रयवार।
अप्ट द्रव्य शुभ लेय के अरपू चरण मझार ॥

ओम ह्री श्री १०५ नगमती आर्यिकायै अर्घ नि० स्वाहा ॥ ११॥

जल चन्दन अक्षत पुप्प नेवज दीप धरु।
ले धूप और फलसार सबको अर्घ करु ॥

श्री चन्द्रसागर महाराज चरणो में भेट धरूं ।
मम कर्म होय सव नष्ट भव तरि मोक्ष वरु ॥
ओम न्ही श्री १०५ ऐलक चन्द्रसागराय अर्घ नि० स्वाहा ॥१२॥
जल चन्दन अक्षत पुष्प नेवज दीप धरूं ।
ले धूप और फल सार सबको अर्घ करु ॥
श्री सन्मतिसागर महाराज चरणो मे भेट धरुं ।
मम कर्म होय सव नष्ट भव तरि मोक्ष वरु ॥
ओम न्ही श्री १०५ क्षु सन्मति सागराय अर्घ नि० स्वाहा ॥१३॥
जल चन्दन अक्षत पुष्प नेवज दीप धरु ।
ले धूप और फल सार सबको अर्घ करु ॥
श्री तीर्थसागर महाराज चरणो मे भेट धरु ।
मम कर्म होय सव नष्ट भव तरि मोक्ष वरू ॥१४॥
ओम् न्ही श्री १०५ क्षु- तीर्थसागराय अर्घ नि० स्वाहा ।
जल चन्दन अक्षत पुष्प नेवज दीप धरू ।
ले धूप और फल सार सबको अर्घ करु ॥
श्री नगसागर महाराज चरणों में भेंट धरु ।
मम कर्म होय सव नष्ट भव तरि मोक्ष वरु ॥
ओम् न्ही श्री १०५ क्षु नगसागराय अर्घ नि० स्वाहा ॥१५॥
पद्मश्रीजी मात को नमन करु त्रयबार ।
अष्ट द्रव्य शुभ लेय कर अरपू चरण मझार ॥
ओम् न्हीं श्री १०५ क्षु पद्मश्री मातायै अर्घ नि० स्वाहा ॥१६॥
श्रीमतीजी मात को नमन करु त्रयबार
अष्ट द्रव्य शुभ लेय कर अरपू चरण मझार ॥
ओम् न्हीं श्री १०५ क्षु श्रीमती मातायै अर्घ नि० स्वाहा ॥१७॥
कीर्तिमतीजी मात को नमन करु मयबार ।
अष्ट द्रव्य शुभ लेय कर अरपू चरण मझार ॥
ओम् न्ही श्री १०५ क्षु कीर्तिमती मातायै अर्घ नि० स्वाहा ॥१८॥
अनगमतीजी मात को नमन करु त्रयबार ।
अष्ट द्रव्य शुभ लेय कर अरपू चरण मझार ॥
ओम् न्ही श्री १०५ क्षु अनगती मातायै अर्घ नि० स्वाहा ॥१९॥

श्री स्याद्वाद ज्ञान गंगा श्री १०८
आचार्य विमलसागरजी जयंती अंक

## द्रव्यदाता

श्री १०८ आचार्य विमलसागर
जी महाराज के परम भक्त
श्रीमान दानवीर सेठ रिखवलाल शाह
निरा के विषय मे संक्षिप्त जानकारी

# धर्म परायण तथा दानी
# शेठ भाई
# रिखवलाल
# शहा

"छायामन्यस्य कुर्वंत्ति, नितिष्ठत्ति स्वयमातपे
फलानि अपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव।"

खुद अनंत कष्टोसे, आफतोसे सामना करके दूसरो के सुखो के लिए, उन्हे छाया, फल प्रदान करने के लिए आम्रवृक्ष खुद का जीवन न्योछावर करता है, यह आम्रवृक्षका मसलन हमारे निरा ग्राम वासियों का देवता दानशूर श्रीमान मुनिभक्त रिखबलाल सेठ तथा आपकी धर्मपत्नी सो. लिलावती भाबी इनके बारे मे सोलहो आने सच निकलता हैं।

**सच्चा सुयोग्य भक्त :–**

इसकी वजह यदि हम देखने जायेगें तो हाल में ही जैन मंदिर के प्रागंण में सन्मार्ग दिवाकर आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज श्रीमान रिखबलाल सेठजी तथा आपकी धर्मपरायण पत्नी सौ लिलावती भाबी के सच्ची तथा निष्ठापूर्ण भक्ति से आकर्षित होकर यहाँ पधारे हैं। आपके साथ आपका महासघ चातुर्मास हेतु यहाँ श्रावको को लाभ देनेके लिए कृपाप्रसाद लाया हैं– लेकिन यहाँ आनेका आश्वासन जब भी महाराजसाहब ने दिया तब सेठजी के सामने जगह की समस्या बहुत

वडी समस्या बनकर आयी, लेकिन धर्म भावनासे प्रेरित उस दिलने मंदिर के प्रांगण मे 'शांतिनगर' नाम की बस्तिका केवल १५ दिनो में तैय्यार करवाई, उसका और यहाँ के सारे प्रबंधका खर्चा खुद सेठजी हर्ष आनंद तथा बहुत श्रद्धासे कर रहे हैं।

आचार्यजी की कृपा लाभ सभी जैन-जैनेतर भाई-वहनो को मिले इसीलिए दपति दत्तचिन्त है। इसीलिए वडी प्रसन्नतासे आपने तन-मन-धन के साथ आप सेवारत है। भगवान १००८ महावीर प्रभुकी असीम कृपासे आपका दिन दूना रात चौगुना उत्कर्ष हो रहा है आचार्य विमलसागरजी के आशीर्वाद का वरदहस्त भी आप पर है।

**यश की कुजी कार्यरतता :-**

उन के इस उत्कर्ष के तरफ हम देखते है तो मन मे विचार आता है कि इस यश की कुजी आखिर है कौनसी ?

यदि हम आपकी दूकानपर जाते है तो वहाँ हमे आप अपने कार्यांमे दिनरात व्यस्त लगे हुए दिखायी देते है। "आलस्य आपका शत्रू है दिलोजान से जो किया जाता है, वह ही है साधना! वह ही तपस्या!! वही ही है सफलता!!!

आप रईस होकर भी रईसोमे होनेवाली लापरवाही का आपमें कही नामो निशाना नही । व्यापार व्यवसायकी दूरदृष्टी सद्भाव गुमराहोको सुयोग्य मार्गपर लानेकी जिद् आदि सद्‌गुणोसे लक्ष्मी आपपर प्रसन्न है ।

**सच्ची इन्सानियत और विनयशीलता :-**

"वैष्णवजन तो तेणे कहिए पीर पटाई जाने रे ।" जो पराया दुख जानता है, वह ही भगवान का सच्चा भक्त होता है । आपके दूकानपर सभी जाति, धर्म तथा सप्रदाय के लोग है, उन मे आप-पर भाव नही, मानो ये सभी आपके परिवार के ही लोग है । किसी के घर मे कोई आफत हो तो उसे आप तुरत हाथ देकर सात्वनाही नहीं देते किंतु उन्हे उवारते भी है । ऐसे वहुतसे मसलन निरा के जनता ने देखे है, उनके दिल में 'भगवान' के समान आपका स्थान हैं । आप भी सदैव कहते है कि, 'किसान मेरा मित्र है, भाई हैं' आज का आचार्यजी का जो चातुर्मास हो रहा है उस के लिए मैं केवल 'निमित्त मात्र' हूँ, यह चातुर्मास केवल किसानो का है, उनके ऋण से मुक्त होने का फर्ज मैं निभा रहा हूँ ।' कितनी निरहकारी वृत्ति ! कितनी विनम्रता ! ! कितनी हृदय की विशालता ! ! !

**दानशूरता :-**

**शतेषु जायते शूरः सहस्त्रेषुच पंडित'**

**वक्ता दशसहस्त्रेषु दाताभवति वानवा ॥**

इस धरापर सौ मे एक शूर-वीर हो सकता है, हजारोमें एक विद्वान पंडित भी, सच्चा वक्ता दशहस्त्रमे एक हो सकता है किंतु दान देनेवाली दानी एक भी पैदा होगा या नहीं इसमे सदेह है किंतु यहाँ सत्यरुप मे कलियुगका श्रेयास दोनोंसे अपने हाथोको पवित्र बना रहा हैं, हस्तस्य भूषणम् दानम् को वास्तविकतामे ला रहा है । ऐसे कौन से क्षेत्र है कि जहाँ आपके दानी हाथ आगे नही वडे ।

'धर्म भावना' 'दान भावना' आपके दिलकी सच्ची धरोहर हैं। इसके बारेमे रत्नत्रय मे गौरवपूर्ण लिखा गया है कि श्रीमान रिखवलालजी के हाथसे ज्ञान औषधि, आहार तथा अभय ऐसे चतुर्विध दानरुपसे द्रव्य-सपति प्रवाहित हो रही है। जब ममत्व पिंडीत द्रव्य लोभका अधिकार आपसे दूर भाग गया है, उसी वक्त ही आपने संतोष तथा शाति का अलोकिक प्रकाश देखा हैं। यह गौरव पूर्ण उचीत है।

आप कहेगे कि ऐसा कौनसा दान-धर्म किया हैं श्रीमानजीने, एक कि दो है पूरी फेहरिस्त आपके सामने रखना मेरे बस की बात नही किंतु प्रयास तो कर रही हूँ।

तीर्थराज सम्मेदशिखरजी = यहाँ नूतन समवशरण मंदीर में मनोवेधक मानस्तभ की प्रतिष्ठा के वक्त माता पिता बनकर पति पत्नी ने इकतालिस हजार की बोली ली थी, वहाँ भी आचार्य विमलसागरजी की प्रेरणा थी तथा आशिष भी। इस से हमारे महाराष्ट्र का मस्तिष्क विहारमे श्रीमान सेठजीने आपके सद्हस्त दानधर्म से ऊँचा किया हैं। इसके बारेमे भारत जैन सभा कोल्हापूर के मत्री दादोबा चौगुलेजीनें अभिनदन करते हुए प्रशंसोग्दार निकाले। आपने सम्मेदशिखर तीर्थपर गर्भकल्याण तथा मानस्तभ का सवाल लेकर दक्षिण के जैन समाज का मस्तिष्क ऊँचा किया हैं, वैसेही भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सवके कालमे श्रीक्षेत्र शिखरजी मे आपने पंचकल्याणक पुजाका सम्मान प्राप्त करके पुण्यका सचय किया है इसीलिए इस सभा के तरफसे मै आपका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

१. राजग्रही के स्वाध्याय मदिर मे संगमरवर का फर्श तथा शास्त्रो के उपकरण दान में दिए है।

२. रामटेक तीर्थ के प्रवेशद्वार को भव्य तथा सुरक्षित बनवाया।

३ इडर (गुजराथ) मानस्तभ पीठा वेदी का भूमिपूजन किया।

४. पावापुरी तीर्थपर जैन मदिर के प्रवेश द्वारका जीर्णोद्धार किया।

५ चपापुरी में मानस्तभ के लिए दान दिए।

६ शेळुवाळ मे आचार्य शातिसागर छात्रालय मे पानीका आयोजन किया।

७ गुणावा (बिहार) यहाँ के धर्मशाला के कार्यालय का जीर्णोद्धार किया।

८ हुमचा (पद्मावती का देवस्थान) वहाँ स्वाध्याय मदिर के लिए भव्य देन दी है।

९ कोथळी (बेळगाव) वहाँ आचार्य देशभूषणजी की प्रेरणासे छात्रालय के लिए प्रेसभवन, पानी का प्रबध, तथा जिन मदिर मे चार मूर्तियो की प्रस्थापना की। आचार्य देशभूषणजी कहते है कि, "रिखवशेठ मेरी बँक हैं। उनके पास से लिया हुआ द्रव्य मै उनके उपर (स्वर्ग के) खाते मे जमा कर रहा हूँ।

१० इतना ही नही तो "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसि।" इसके अनुसार आपने जन्म भूमि–म्हसवड मे माता पिता तथा जन्म भूमि के ऋण से मुक्ति पाने के लिए आदिनाथ जैन मदिर मे सभा मंडप की निर्मिती की।

इतना दान धर्म कर के भी आपने कभी मुखसे इसका उच्चारण नही किया। कितनी यह निरलस वृत्ति।

**विशेषता पूर्ण यात्राएँ :–**

आपने विविध तीर्थक्षेत्रो की यात्राएँ की हैं। खास कर तीर्थराज सम्मेदशिखरजी की पद्रह से अधिक यात्राएँ की हैं इस मे आप के और आपकी सच्छित तथा धार्मिक पत्नी के हाथ दान धर्म से पुनीत हो गए आपके पास अनेक किसान, आपकी दूकान याने परिवार के लोगो को आपने सभी तीर्थो के दर्शन करवाए। उनको हिंदू, मुस्लिम, जैन सभी तीर्थस्थानोंके दर्शन करवाये। उनकी आत्माओ को इससे जो सात्वना मिली, यह आत्मिक तथा धार्मिक उन्धपन नही तो और क्या?

**सर्वधर्म समानत्व –**

भगवान महावीर ने बतलाया था कि सच्चा धर्म 'भूतदया' है। इसमे न जगतिका बधन होता है, न धर्म का बधन सर्व धर्म समानता की सकल्पना यहा देखी जाती है इसका ही पालन आप आजीवन कर रहे है। आपकी पेढीपर हिदूधर्म के अनेक उत्सव दत्तजयंती समारोह,

रामजन्म, कृष्णाष्टमी, गणेशोत्सव आदि मनाए जाते है। उसमे वडे उत्साह के साथ आप और आपका परिवार शरीफ होता है।

आप मदद सहायता करते वक्त किसकी जाति, धर्म नही देखते तो उसे कितनी जरुरत है और उसमे इस दान का सदुपयोग करने की कितनी क्षमता है यह आप देखते है। जो कोई आपके पास जो कोई दान मागने आया या मदद मागने आया किसी को भी आपने कभी खाली हाथ नही लौटाया।

**शैक्षणिक तथा सामाजिक कार्य :–**

आपको शैक्षणिक कार्य मे भी वहुत रुची है। यहा निरा मे रयत शिक्षण सस्था की दो शाखाए है इस सस्थाका ध्येयवाक्य है 'स्वावलवी शिक्षा' जिसके सस्थापक कर्मवीर भाऊराव पाटील हैं, जिन्होने जैन होकर भी सभी जाति धर्म के अमीर गरीबो के छात्रोके लिए शिक्षाकी गगा खुली करा दी 'वहुजन हिताय–वहुजन सुखाय' यह जिनका नारा था, वे नाही कार्य निरा के कर्मवीर रिखवलालजी कर रहे है। यहा की दोनो शाखाए महात्मा गाधी विद्यालय तथा कन्याशाला उस के स्कूल कमिटी के अध्यक्षके नाते उनके विकास के लिए तथा छात्रोके उत्कर्पके लिये आप सदैव कार्य कर रहे है। वहा तथा प्राथमिक स्कूलमे पानीका आयोजन करके छात्रोकी अडचन दूर कराके पुण्य सचय किया, इतना ही नही तो स्कूल मे एक 'कक्ष' बधवाकर दूसरे ग्रामस्थो को प्रेरित करने का महान कार्य किया। गगापूजन के उपहार पर आए हुए सभी चिजोको इसी हाथ विद्यालय को दान स्वरुप देना कोई सहज बात नही, जिसकी लागत लगभग रु २५००–०० से अधिक थी। कितनी अत करणी विशालता है यहाँ !

जन्म ग्राम म्हसवड के जैन मदिरके साथ जन्मभूमिके भाई-बहनो की इच्छा जान कर यहाँ के प्रसिद्ध नाथमदिरमे फर्श बिठा दी, मरुमाता का मदिर बँधवाकर दलित भाई-बहोनो के आशिर्वाद पा लिए। उस वक्त म्हसवड ग्रामवासियो की दृष्टिसे यह केवल एक 'देवता' था। उस वक्त फलटण कॉलेजके प्राचार्य शिवाजीराव भोसलेजीने आपका गौरव करते हुए कहा था "यह एक समाजवादक उत्तम उदाहरण है।

ऐसा मातृभूमिका ऋण चुकानेवाला बिरलाही पैदा होता है। वडप्पन आतेही सामान्य लोग मातृभूमि को भूल जाते है।

**साहित्यिक कार्य -**

"द्रव्यसग्रह" "मैना सुदरी" सिद्धचक्रपाठ तीर्थयात्रा सगम आदि धर्मग्रथोकी छपाई तथा सभी खर्चा खुदही आपने उठाया और धर्म प्रभावना के लिए सभी भाई - बहनोको नि शुल्क बॉट दिया है। अभी अभी ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री की ६५ वी जयतीपर "आचार्य विमल-सागर जयती विशेष क श्री केद्रिय स्याद्‌वाद शिक्षण परिषद की ओरसे प्रकाशित हो रहा है, इसमे भी उत्कृष्ट सहयोग श्रीमान् सेठ रिखबलाल जी द्वारा ही दिया जा रहा है।

आज यदि हम निरा स्टेशनपर उतरते है तो वहाँ पहले - पहल धार्मिक सगीत हमारा स्वागत करता है और हमारे तन-मन को आकर्षित करता है, मदिरके पास जातेही मन भक्ति से सराबोर हो जाता हैं। यहा तीर्थक्षेत्रही पैदा तो नही हुआ ऐसा सदेह पैदा होता है, लेकिन यहा पर तो जिनकी श्रीमान रिखबलाल सेठपर असीम कृपा है आशीर्वा-दका वरदहस्त है ऐसे आचार्य श्री विमलसागरजी स-संघ पधारे है। विविध धार्मिक कार्य यहा हो रहे है। मानो महाराष्ट्र के लिए यह पर्वणी है। अनेक लोग सारे भारतसे यहाँ भगवान महाविरके तथा आचार्यजी के दर्शन के लिए पधार रहे है उनकी सेवा के लिए ये पती-पत्नी यहाँ ही घर वनवा कर रहे है।

**उदार हृदयी पत्नी :-**

आपके सभी कार्यो मे आपकी धार्मिक तथा उदार हृदयी पत्नी हाथ वटाती हैं। भावी की अभिलाषा हैं कि "मेरे द्वारपर हरदम ऐसे ही धार्मिक कार्य होते रहे, जिस से मेरा हृदम उमग तथा भक्ति से भर जाता है।" वे भगवान के पास सुख सपत्ति माँगती नही तो धर्म

तथा मानवता के लिए हो सके इतने कष्ट करने के लिए शक्ति मांगती है। उसमे ही वह अपने जन्म को धन्य मानती है।

आचार्यजी के भव्य सघ का चातुर्मास निरा जैसे छोटे स देहात मे करना टेढी खिर है किंतु श्रीमान रिखबलालजी ने उसे अपनी कृति से बाएँ हाथ का खेल बनाया है। आचार्यजी के चरणारविंदो से पुनीत यह भूमि सभी धर्म-जाति के भाई-बहनोपर कृपा बरसा रही है। इसका सारा श्रेय भाई रिखबलालजी को ही है। सब को आचार्यजी का कृपा प्रसाद मिले इसीलीए तो यहाँ आचार्यजी की प्रार्थना कर के सेठजी ने यहाँ बुलाया, दूसरो का विचार करने वाला यह अंत:करण सागर-सा विशाल है।

**निरंहकारी वृत्ति :-**

इतने कार्य हाथोसे हो रहे है तो भी आप कर्तृत्व खुदके तरफ नही ले रहे। "किसानोका ही चातुर्मास" कह रहे है। कितनी निरहकारी वृत्ति, कितनी विनम्रता सस्कृत सुभाषित कारने 'विद्या विनयेन शोभते' के स्थानपर 'सपदा विनयेन शोभते' ऐसा परिवर्तन करने को

जी ललचाता है। आपके हृदय मे स्वार्थ का नामोनिशाना नही। धन का तो आप सद्व्यय कर रहे है।

आप मुझे पूछेगे कि क्या यहाँ द्रव्य की गगा बह रही है ? नही कष्ट कर के पैसा कमाते है आप। सदैव कार्यरत रहना, व्यवसाय के ज्वार भाटे का आभ्यास व्यापार की दूर दृष्टी तथा मुख्य–सद्भावना ये ही आपके यश की कुजी है। कलियुग का श्रेयांस भाई रिखबलाल तथा भाबी के हाथो से ऐसे ही सत्कार्य होते रहे, और हम जैसे सामान्य ,लोगो को इसका लाभ इसीलिए भगवान आप पर दीर्घ आयुरारोग्य, सपदा बरसता रहे आपकी कीर्ति – दान की कीर्ति सारे जहाँ म फैलाएँ यह कामना तथा आरजू भगवान महावीर के चरणो मे

क्यो कि "**मूरत से कीरत बडी, बिना पंख उड जाय**
**मूरत तो जाती रहे, कीरत कभी न जाय।**"

श्रीमान दानवीर शेठ रिखवलालजी को अभिनंदनपत्र भेट करते हुए डॉ कुरुभूषण लोखंडे संपादक दिव्यध्वनि सोलापूर

ऐसी अमर कीर्ति उन्हे मिले यह प्रार्थना।

आज आचार्य विमलसागरजी की ६५ वी वर्ष गाँठ बडे उत्सा[illegible] उमग तथा आनद से मनायी जा रही है। आप त्यागी है, तपस्वी है [illegible]नस्वी हैं, धर्म प्रभावना का पवित्र कार्य करने के लिए ईश्वर आपको [illegible]र्घ आयु, सेहत तथा शक्ति प्रदान करे। इसके अलावा क्या माँ[illegible] [illegible]वान से ?

आखिर एक ही नारा

"सर्व मगल्यं मांगल्यं, सर्व कल्याणम् कारणम्
प्रधानाम् सर्व धर्मानाम, जैन जयति शासनम्॥"

सौ. उषा रिखबदास [illegible]

स्याद वाद ज्ञान गंगा आचार्य विमलसागरजी अंक ........

# स्याद्वाद पथ दर्शक लेख

## साधक संत त्यागी व्रती एवं विद्वान तथा

## श्रावक श्राविकाओं की ओर से

....... श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद सोनागिरीजी 'दतिया' (म. प्र.)

श्री १०८ आचार्य
विमलसागरजी महाराज से
आशिर्वाद लेते हुए

श्री १०५ क्षुल्लक
सन्मतिसागरजी महाराज

# शरीर की नश्वरता

जरा सोच तो रे, चेतन, कब तक की दिलाशा है !
ये तन कुछ भी नही, शक्कर का बताशा है ॥ टेक ॥

ये पल मे गल जायगा, पडते ही बूंद पानी ।
तू प्रभु का भजन कर ले, बन जयगा नर ज्ञानी ॥
मत चूकरे क्षण भर भी, मुक्ती की दिलाशा है ॥
ये तन कुछ भी नही शक्कर का बताशा है ॥ १ ॥

तू सफल अगर चाहे, करना नर जीवन को,
निज भेदज्ञान करले, लेकर मुक्ती पथ को ।
शुद्धातम की ले ले शरण, तन से तज वासा है ।
ये तन कुछ भी नही, शक्कर का बताशा है । ॥ २ ॥

सुत नार नही तेरे, तुझे सौख्य दिलायेगे ।
सब प्यार करे झूठा, मरघट मे जलायेगे ॥
ले ले आगम गुरु की शरण, सुख की कुछ आशा है ।
ये तन कुछ भी नही, शक्कर का बताशा है ॥ ३ ॥

बिष भोगो मे पड के, क्यो निज को भूला है ।
ससार बढाये ये, नरको का हि झूला है ॥
जरा दृष्टि तो निज मे बदल, भवमे ना, फिर वासा हैं ॥
ये तन कुछ भी नही, शक्कर का बताशा है ॥ ४ ॥

अतिम बस कहना है, गर सौख्य पूर्ण चाहे ।
हो रत्नत्रय स्वामी, शिव नार पास आये ॥
नरजीवन सफल होगा, "सन्मति" ये भाषा है ।
ये तन कुछ भी नही, शक्कर का बताशा है ॥ ५ ॥

## ☆ जीवन का सागर ☆

(१) क्यो निष्फल चिन्ता करते हो, किस से व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हे मार सकता है? आत्मा किसी काल मे न जन्मता है, और न मरता है।

(२) जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है, जो होगा वह अच्छा होगा। तुम भूत का शोक न करो, भविष्य का डर न करो, वर्तमान चल रहा है।

(३) तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो, तुम क्या लाये हो जो खो दिया, तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया? न तुम कुछ लाये, जो लिया यही से लिया जो दिया यही पर दिया। खाली हाथ आए सो खाली हाथ चले, जो आज तुम्हारा है। कल किसी और का होगा, कल किसी और का था, तुम इसको अपना समझ कर प्रसन्न होते हो... यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःख का कारण है।

(४) परिवर्तन ससार का नियम है... जिसको तुम मृत्यु समझते हो वही तो जीवन है! एक मिनट् मे तुम करोडों के स्वामी होते हो दूसरे ही क्षण मे दरिद्री बन जाते हो, मेरा-तेरा, छोटा-बडा, अपना-पराया मन से मिटा दो, विचार से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा है तुम सब के हो।

(५) न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो, यह आग, मिट्टी, पाणी और वायु से बनता है; इसी मे लीन हो जाता है। फिर भी तुम्हारी आत्मा वैसी की वैसी स्थिर है, फिर तुम क्या हो?

(६) तुम अपने आप को उसके अर्पण करो यही सबसे उत्तम सहारा है। जो उसके सहारे को जानता है वह शोक, भय और चिन्ता से सर्वदा के लिए मुक्ति पा जाता है।

(७) जो कुछ भी करता है वह प्रभु के अर्पण कर। ऐसा करने से सदा जीवन मुक्ति का आनन्द अनुभव करेगा तथा शरीर त्यागने पर तत्क्षण उसके स्वरूप मे लीन होगा।

# नौकाविहार

**श्री १०८ गणधर मुनि कुन्थुसागरजी महाराज**

नौका विहार। क्यो? मार्गाभाव के कारण। इसमे उद्देश्य मनो-
जन नही है। हे आत्मन् तू निश्चय समझ भगवद् भक्ति, अतिशय
क्षेत्र वन्दना, जिन भक्ति के लिए यह कार्य है। अस्तु यह कार्य कर्मवन्ध
का हेतु न होकर कर्म निर्जरा का ही कारण है। वैशाली क्षेत्र मे जिनेद्र
प्रभु वीर स्वामी का प्रादुर्भाव हुआ। इस पावन क्षेत्र का महामहात्म्य
है कि एक क्षण के लिए नारकियों को भी सुख शान्ति का अनुभव हुआ
फिर मनुष्य की क्या बात? क्या आज हम उस भूमि प्रदेश पर सुख
शान्ति की अनुभूति नही कर सकते? कर सकते। कर सकते हैं यदि
उसी श्रद्धाभक्ति और अनुरागसे उसको अवलोकन करे। सत् का कभी
नाश नही होता, असत् का प्रादुर्भाव नही होता, अत जो पुग्दलवर्गणाएँ
रत्नादि राशिएँ, उपदेशामृत रूपी वचन वर्गणाएँ जितनी भी थी सर्व
अभी थी सर्व अभी भी वहाँ के द्रव्य, क्षेत्र, कालभाव मे समाहित है
हाँ उनका रूपातरण अवश्य हो गया है। आप वैशाली क्षेत्र को
देखिये। वहाँ की रम्य छटा शान्तिका स्रोत वहा रही है, वहाँ की रूज
अति कोमल, अत्यन्त मृदु, अतिशय रूपलघु हलकी, चन्दन सी चिकनी,
मानो केशर का पराग बिखरा हो। बाहची धूली क्या भगवान के गर्भ,
जन्म कल्याण मे वार्षिक रत्नों का चूर्ण होकर छा गया है? या शचि
द्वारा मडित चौक का रत्न पूर्ण बिखरा पडा है। महान आश्चर्य आल्हाद
और चमत्कारी है वहाँ की रज। रह रहकर प्रभु के जन्मोत्सव का स्मरण
दिलाती है। वनस्थली की सुषमा हृदय तत्री के तारों को स्वत. संकेत
कर देती है। एकान्त, शान्त, निराबाद, वन प्रदेश प्रभु के त्याग, ध्यान
और तपश्चर्या का स्मरण दिलाकर भव्योंका मनोविकार धो डालती है।
लहलहाते क्षेत्रो की शाखाएँ शीतल पवन के झकोरो से डोलायमान हुए
मानो भव्योका भव्य स्वागत कर रहे है। छोटी, पतली, साफ सुथरी

पगडडियाँ पलक फावडे बिछाये साधु सतो का मार्ग दर्शन कर रही है। वाहरी सौम्य मुद्रा, श्री वीर प्रतिबिम्ब। लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन, कृष्णवर्ण, नाशाग्र दृष्टि, सौम्य छवि, सुन्दराकत, प्रसन्नमुद्रा मानो सप्त-भङ्गी वाणी का आज भी प्रतिपादन कर ससार के झगडो विसवादो और पारस्परिक कलहो का नाश करना चाहती है। हाथ पर हाथ रक्खे कह रही है हे, भोले भव्य प्राणियो क्यो ससार क्रिया मे फसकर अनत ससारी वन रहे हो, छोडो इस प्रपच को और मेरे समान पदमासन लगाकर मन इन्द्रिय विषय व्यापार को रोककर आओ और चुप शान्त एकान्त मे निश्चल बैठकर फलक झपका चुपचाप अपने से अपने को देखो, समझो, श्रद्धा करो। जहाँ निज स्वभाव है वही सुख है शान्ति है निजस्वरूप की प्राप्ती है। अत हे भव्य जन हो पच कल्याणाकित क्षेत्रो का अधिक से अधिक सेवन करो।

कल्याणक भूमियोका दर्शन करनेसे परिणाम बिशुद्धि और समाधि सिद्धि होती है। प्राज्वल्ल जल, वायु, भूमि के स्पर्श से कलुषित विचार भाव स्वयमेव विलय हो जाते है। पुनीत भावो का प्रादुर्भाव होता है। क्रोधादि विकार शमित हो जाते है। अहकार छूट जाता है। क्षमा, त्याग, और वैराग्य उमड पडता है। जिन सत्पुरुषो, महापुरुषो के चरणाबज चिन्हो से जड स्वरूप यह भूमि इतनी पवित्र, निर्मल, हृदय हारिणी, उर्वरा, शस्य श्यामला बन गई तो चचेतन, सजी मनुष्य को उनकी पावन स्मृति क्या पवित्र, निर्दोष नही बना सकती? अवश्य वनायेगी ही। उनकी स्मृति से चित्त भूमि राग-द्वेष विहीन हो ही जाती है। पावन क्षेत्रो क दर्शन से आशा पिशाची नष्ट हो जाती है। आशा नटनी है, विभिन्न चमत्कारी भेष वना ससारी प्राणियो को भ्रमित कर नट की भाति नचाती है। वे नाचने मे ही अपना प्रभुत्व समझ उसके सकेतो पर थिरकने लगते है। भला पराये इशारो पर नाचना क्या सुवुद्ध साधु सन्त महन्तोको उचित है? कभी नही। अरे भाई, जीवन की लीला दूसरे हाथ मे दे दी तो तुम्हारा अपना प्रभुत्व पराक्रम, या अस्तित्व ही क्या रहा है? हम पराश्रित हो वने रहे तो सुख सतोष कहा? हे साधो,

साधना करो, स्वाधीन बनो। मन नपुसक है, इसे अक्ल नही। इसे अपना दास समझो। इसके नचाये नाचते रहे तो तुम्हारा अनन्त ससार कभी नही कट सकता। विषय वासनाओं पर शासन करो। पर के ऊपर शासन करते हुए तो अनादि काल हो गया किन्तु अपने ऊपर शासन नही किया, यही भूल मे भूल है जिसके निमित्त से आज तक ससार मे भटक रहे हो। अपनी आत्मा पर शासन करो, पचेंन्द्रिय विपयो का त्याग करो, षट्काय जीवन का रक्षण करते हुये अपने स्व रक्षण का लक्ष्य बनाओ तब तेरा स्वरूप तेरे समक्ष आ सकता है। अपनी वस्तु पराये आधीन कर तुम क्यो दु खी हो रहे हो ? तुम्हारे पास क्या नही है ? अमूलय निधियाँ है रत्नत्रय रूप। यही तो तुम्हारा अपना निज स्वरूप है। इसका श्रद्धान ही वास्तव मे सम्यग्दर्शन है, इसको समझना ही सम्यग्ज्ञान है। और इसके लिये प्रयत्न करना ही सम्यक् चारित्र है। यही ज्ञान चेतना है। निज स्वरूपानुभव ही तो स्व सवेदन है। सवेदन का अर्थ है ज्ञान प्रतीति जानकारी और स्व का अर्थ है स्वय, निज अपना। अर्थात् अपने निज स्वरुप का भान होना स्वसवेदन है। हे ज्ञानी जीवात्मन् तू चिद्‌ है, बुद्ध है, परमात्मा स्वरुप है, अनन्त शक्ति युक्त है तेरा वैभव तेरे ही पास है फिर क्यो पर को अपना मान दुर्दशा करा रहा है। अरे जो हो गया हो जाने दे आगे को तो सावधान हो।

हे आत्मन् विचार कर मै पर रूप नही और पर कुछ भी मुझ रूप नही। मे ही मुझ रूप हूँ पर पर स्वरूप है। मुझको कुछ नही और अन्य को मुझसे कुछ नही। मेरे द्वारा पर का कुछ भी हो सकता नही और पर मेरा कुछ कर नही सकता। मेरे लिये ससार मे तिलतुष मात्र भी कुछ नही और पर के लिये मेरे पास कुछ नही। मै तेरे लिये हूँ, पर पर के लिये है। मुझसे पर मे कुछ जा सकता नही और पर से मुझमे कुछ भी आकर प्रविष्ट हो सकता नही, मै मै हूँ, पर पर है मेरा अन्य कुछ नही और अन्य मै कुछ नही। मेरा ही मेरा है, पर का पर है। मुझ मे पर का कुछ नही और पर मे मेरा कुछ नही। मेरा मुझमे व्याप्त है और पर मे पर वस्तु ही नियुक्त है। हे भव्य क्यो फिर पर

वृद्धि की चाह मे आह भरता है ? आ जा रे आजा। अपने में आ जा अपने मे खो जा। अपने मे हो जा अपनी को पराये और पराई को अपनी बनाकर रूलाई की परिपाटी को छोड।

मुझे यह पक्ति कई बार याद आती है "हम तो कबहु न निज घर आये। पर घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये।" वस्तु.त एक बार भी अपने मे स्थिर हो अपना ही अनुभव करते तो, पर जन्यु पीडा नही होती। शुद्ध वस्तु में पर का सयोग होते ही विकृत रूप हो जाता है। हम अनादि से पर संयोग ही तो करते आये है ? आज भी वही कर रहे है। हाँ, अब तक यह रहस्य समझ में नही आया था। केवल अनुभूति मिश्रित स्वभाव की लेते रहे अब यह बुद्धी मे ढसा है कि सयोगी परिणति ही दु ख का मूल है। शुभ या शुद्ध निज तत्व का आस्वादन सुख का मूल है। हे आत्मन् ! अपने मे अपना रूप देखो, समझो, जानो और मानो। तभी स्थिर हो सकोगे, ससार भ्रमण छूटेगा। निजानन्द आयेगा। स्वानुभूति जगेगी। फिर सुखानुभव होगा।

जीवन इकाई था, इकायी है और इकाईही रहेगा। अर्थात् आत्मा सदा अकेला था, अकेला है और अकेला ही रहेगा। शुद्ध अवस्था मे सभी एक एक है। वही उसका सही रूप है। नमक नमक की डली है सही है, शाक व्यजन आदि मे पडा कि वस उसका रग वदरग हो गया अव नाना स्वाद वनने लगा कही खारा, कही अच्छा, कही ठीक, कही वेठीक, कही स्वादिष्ठ, कही जहर, कही आनन्द का विषय तो कही झुझलाहट का आदि। यही दशा आत्मा की हो रही है। ससार, शरीर और भोगो के जाल मे पडकर यहाँ से वहाँ मारा मारा फिर कर नाना उपाधियो से युक्त हो भटक रहा है, न कही स्थैर्य है, न शाति, न चैन और न न सुख। भला यह भी कोई वुद्धिमत्ता है, ज्ञानी का कर्म है ? हे भव्यात्मन् इस वदरग का त्याग कर अपने मे आ।

# मानव और अहिंसा

१०५ गणिनी आ. विजयमती माताजी.

मानव प्रदीप है तो अहिसा ज्योति। बिना लौ के कौरा दीपक है और व्यर्थ से विहीन ज्योति भी क्षणभगुर है। दोनो का एकीकरण सामजस्य हो सही प्रदीप है कार्यकारी हैं। इसी प्रकार मानव और अहिसा है। मानव नही तो अहिसा निराश्रय कहा स्थिति रख सकती है ? और अहिसा नही तो मानव दानव से क्या कुछ भिन्न है ? मानवता की प्रतिक अहिसा है। मानव जीवन का प्राण धर्म है, धर्म की मूल दया हैं और दया की जननी है अहिंसा। तभी तो आचार्यो ने " अहिसा परमो धर्म. " कहा है। " यतो धर्म स्ततो जय " जहाँ अहिसा है वहाँ धर्म है वस्तु स्वभाव है। ओर धर्म है वही स्वातन्त्य है मुक्ति है निज स्वभाव है। अहिसा ही आत्म स्वभाव है तभी तो श्री प्रथम तीर्थकर १००८ श्री आदिश्वर प्रभु और अन्तिम श्री १००८ महावीर प्रभु को छोडकर शेष २२ तीर्थकरोने आत्मस्वरूपोपलब्धि के लिए मात्र अहिसा महाव्रत सामायिक चारित्र का भी उपदेश दिया है। यह वह विशाल दृष्टी है जिसमे अन्य समस्त व्रत, नियम, चारित्र - गुण धर्मादिका समावेश स्वयमेव हो जाता है।

मानवताका पोषक साम्यभाव जिसकी आधार शिला अहिसा है। विकास का एक मात्र साधन है संयम जिसका मूल स्त्रोत है दया या अहिसा। मोक्षमार्ग है सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र का एकीकरण और इस एकीकरण माध्यम है अहिसा। भावो की प्रांजलता मिथ्यात्व मल प्रक्षालन करने मे समर्थ होती है। आगम भाषा मे अध करण अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण रूप तीन प्रकाणके परिणाम ही सम्यग्दर्शन रूप गुण के उत्पादक है। क्या निर्दयी हिंस जीव इन शुभ निर्मल पावन परिणामो का पात्र हो सकता है ? कभी नही दिया

भाव, अहिसा रूप कोमलता आर्जव भाव ही इन निर्मल भावो की उत्पत्ति मे कारण होते है। प्रतिशोध, व्देष, कठोर वृत्ति से ये उत्तम भाव जागृत नही हो सकते।

यज्ञार्थी ब्राम्हणो व्दारा पीटा गया मरणासन्न कुत्ता जीवधर कुमार व्दारा सम्बोधित किये जाने पर यदि प्रतिशोध भावना का त्याग न करता तो क्या उसे सम्यक्त्व रत्न मिलता ? क्या वह स्वर्गारोहण कर पाता ? अतुल वैभव और अनुपम सौन्दर्य मिलता ? नही। यह अहिसात्मक भाव जाग्रति का ही फल है। भयदुर वन मे घूमनेवाला क्रूर शिकारी भोलराज अपनी पत्नी के सम्बोधन से यदि क्रूरता नही छोडता तो क्या भगवान महावीर वन सकता था ? शेर की पर्याय मे वही जीव चारण ऋध्दिधारी मुनिराज का धर्मोपदेश सुनकर क्रूर कर्म हिसा का त्याग नही करता तो क्या सम्यक्त्वरत्न उसे प्राप्त होता ? नही। एक मात्र चतुर्दशी को अहिसा व्रत पालन करने वाला चाण्डाल उभय लोक मे पूज्य नही हुआ क्या ? अवश्य ही उसकी धवल कीर्ति व्याप्त हुओ। एक नही अनेको उदाहरण है की एक क्षणभी जिन के परिणामो मे सुनिश्चल हृढ अहिसा भाव जाग्रत हुआ कि उनका अनन्त ससार छिन्न हो अर्ध्दपुगदल परावर्तन मात्र रह गया। सच तो यह है कि मानव जीवनका कोना कोना अहिसा के तेज से भरा है किन्तु उसके ऊपर अन्याय, निर्दयता और क्रूरता ने आवरण डाल रक्खा है। इन्ही को आगम की भाषा मे मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र कहा जाता है। इनका जब विश्लेषण करने पर एक मात्र चैतन्य ज्योति का प्रकाशक अहिसा धर्म ही है। तभी तो भगवान महा-

होती है। रोगी का रोग मिटे या न मिटे परन्तु सेवक - उपचारक को अवश्य सतोष प्राप्त होता है। भिक्षुक का पेट भरे या ना भरे किन्तु दाता को अवश्य साता का आस्तव होता है। उत्तम, मध्यम, पात्र दान लेकर अपना कितना कल्याण करेगा यह तो वह जाने परन्तु दाता तो अवश्य ही उत्तम भोग - सुख सम्पदा का अधिकारी बन ही जाता है।

श्रावक के मुख्य षट्कर्म है। इनका आधार यदि अहिसा है तो सुनिश्चित मोक्ष के साधक है ये अन्यथा नही। मानव जीवन का प्रत्येक कर्त्तव्य हर एक पहलू, हर क्षेत्र अहिसा से अणुप्रणित होकर ही निखर सकता है। महाराणी सीता गर्भभारसे पीडित भी घनघोर विपिन मे रक्षित होती है। महासति अन्जनी के गर्भ का रक्षण उस क्रूर हिंस जीवोसे व्याकीर्ण वनमे होता है। सती चन्दना के चरणो मे नत भील-राज, वेश्या, सेठानी भक्षक से रक्षक बन जाते है यह सब क्या है? उन सतियो के अहिंसा भाव की करामत। उनके अगड् प्रत्यगड् से निकलती हुआी अहिसा की ज्योतिर्मयी सुहानी चिनगारियाँ।

साक्षात मोक्षमार्ग - साधुधर्म इसी अहिंसापर अवलम्वित है। कितने ही व्रत, नियम, तप करे, उपसर्ग परिषह सहन का चोगा धारे यदि अन्तरड मे अहिंसा भाव नही ये, तनिक भी प्रमाद हैं, अपने प्रति उत्साह नही है स्वस्वरूपानुभूति अहिसा की किरणो का प्रकाशन नही है तो परमपद दर है यतिदुर स्वप्न है असभव है। इसीलिए तो कुन्द कुन्दाचार्य की साधु जनो को ललकार है चेतावनी है -

**मिक्ख वक्ख हियय सोहित समाचरदु जो साहु**
**एसो सुदिट्ट साहु उत्तो जिण शासने मयव ॥**

हे भव्य साधो अपने मन, वचन, काय को शुध्द करो। प्रत्येक आहार विहार निहारादि क्रियाओ मे सावधान रहो, प्रमाद का त्याग करो।

वस्तुतः प्रमाद जीवन का घातक है। विषय कषाय पतन के मूल हैं। स्वार्थ अध्यात्मिक उत्थान का बाधक है, हिंसा स्वस्वरूपकी घातक है। मान, माया, लोभादि सुख शांतिके नाशक है। इन सब पर विजय पाने का एक मात्र साधन है अहिंसा।

अहिंसा से सदाचार, शिष्टाचार, नैतिकाचार प्रखर होते हैं। पनपते हैं और ये ही बढकर आत्मा के स्व स्वरूप प्रकाशन मे मूल कारण होते हैं। विवेचन करने पर अहिंसा जीवन के साथ क्षीर नीर वत घुली-मिली है। परमात्मपद पाने का यही एक मात्र उपाय है जीव रक्षण करना-स्व भी जीव है और पर भी जीव है - सर्व समान है, सर्व का रक्षण अहिंसा है मुक्तिद्वार मोक्षमार्ग है - जैसा कहा है -

**जीवा जिगवर जो मुणहि जिनवर जीव मुणेह।**
**सो समभाव परदिउ लहुणिव्वाणि लहहि ॥**

# दशधर्म रचना

रचयता:- ज्ञानानन्द श्री १०५ क्षु.
सन्मतिसागरजी महाराज

## "क्षमा"

क्षमा निधी निज अन्दर चेतन, सम दृष्टी कर देख जरा ।
प्रीति हटाले क्रोध दुष्ट से, मिले गुणो का सिन्धु भरा ।।
क्षमा कर मे लेकर के, जिन जग क्रोध परास्त किया ।
महसा मुक्ति वधू ने आकर, जग मे उनका वरण किया ।। १ ।।

अग्नी सज्ञा क्रोध पाप को, जो भी मिले जलाता है ।
पडित राजा साधु गुणीजन, को भव मे भटकाता है ।।
द्वीपायन से महामुनि पर, जब इसने अधिकार किया ।
भस्म किया तब नगर द्वारिका, मुनि नरक दुख घोर लिया ।। २ ।।

क्षमा शील आभूषण को भी, पाण्डव गजमुनि आपनाया ।
जलती रहे देह भर भर कर, किन्तू क्रोध नही आया ।।
देखो मुनी पाँच सौ धानी, मे पिरते भी क्षमा रखी ।
गणनायक को क्रोध आ गया, उनने पाई मुक्ति सखी ।। ३ ।।

क्षमा घर को पहिन अनेकों; मुक्ति गये औ जायेगे ।
धरम क्षमा भूषण वीरो का, कायर क्या अपनायेगे ।।
चिन्तामणी कल्पतरु से बढ, इसकी महिमा भारी है ।
"सन्मति" शील क्षमा गुण ले ले, सहज मिले शिव नारी है ।। ४ ।।

क्षमा निधि निज अन्तर चेतन ! समदृष्टी कर देख जरा ।
प्रीति हटा के क्रोध दुष्ट से मिले गुणो का सिन्धु भरा ।।

# "मार्दव

निधी मार्दव गुण निज अन्दर, चेतन क्यों कमजोरी है।
दृष्टि फुकाते निज के अन्दर, जले भान की होरी है॥
नान वशी हो बहु दुःख पाये, आकुलता ढेरी है।
मार्दव गुण प्रकटाते जो नर, मुक्ति वधु उन चेरी हैं॥ ५॥

मदोदरि की बात न मानी, रावण ने अभिमान किया।
सभी जान के भी सीता को, देने से इनकार किया।
सफल जरा भूल से अपना, सारा कुटुम्ब नशाय दिया।
पश्चाताप किया दुर्गति जा, हा मैंने क्यो मान किया॥ ६॥

ज्ञानी चक्री भरत मानवश, चक्र चलाया बाहुबली।
अपयश फैला था दुनिया मे, निन्दा छाई गली गली॥
मान वृक्ष की रक्षा मे बहु, भूप रक बरबाद हुए।
राज तजा अरु वंश नश के, भव सिन्धु ना पार हुए॥ ७॥

भान दुष्ट शत्रु मानव को, मिट्टी मे मिलवाता है।
अकडा रहे नही झुकता यह, दुर्गति पथ विधाता है॥
याते मान करो मत कोई, धारो मार्दव गुण प्यारा।
'सन्मति' शील क्षमा आभूषण, अभय लोक दे सुख धारा॥८॥

निधी मार्दव गुण निज अन्दर, चेतन क्यों कमजोरी है।
दृष्टि फुकाले निज के अन्दर, जले मान की होरी है॥

## "आर्जव"

आर्जव निधी लखो निज चेतन, तज माया से यारी है।
देर करो मत अब इक क्षण की, यह दुस्सह बीमारी है।
जिसे लगी भव भव पछताया, सारी हिम्मत हारी हैं।
आर्जव गुण जिनने प्रगटाया, उनकी महिमा न्यारी है ॥ ९ ॥

माया जाल बिछा रानी ने, सुखानन्द पर फैलाया।
कुवर बचा बे दाग किन्तु, रानी को महलो चिनवाया।
आलव जरा मुनिराज लिया, त्रियच्च योनि का बध किया।
घोर तपस्या का फल ले कुछ, मामडल गज जन्म लिया ॥ १० ॥

बन्ध होय तिर्यञ्च गती का, किन्चित मायाचार करे।
रावण कंस आदि नृप जग मे, इसके फल वे मौत मरे।
माया कुटिल महा डायन है, उभय लोक दुख देती हैं।
जिस पर भी आसीन हुई यह, क्षण मे गुण हर लेती है ॥ ११ ॥

आर्जव गुण का धनी पूर्ण माया से, सखे बचाता है।
स्वर्ग लोक के सौख्य भोग वह, मुक्ति रमा को पाता है।
"सन्मति" ले माया से बचना, सरल भाव कर सुख पाओ।
जैसे बने जगत में रहते, आर्जव गुण को अपनाओ ॥ १२ ॥

आर्जव निधी लखो निज चेतन, तज माया से यारी हैं।
देर करो मत अब इक क्षण की, यह दुस्सह बीमारी है ॥

## " शौच "

शुचिता धर्म अनादी चेतन ! क्यो कर इसको भूला है ।
सर्व सुखो की खान यही है, मुक्ति पुरी का झूला है ।।
शत्रु लोभ ने इसे भुलाया पीकर ममता का प्याला ।
लोभ पाप का बाप कहा है. करदे इसका मुह काला ।। १३ ।।
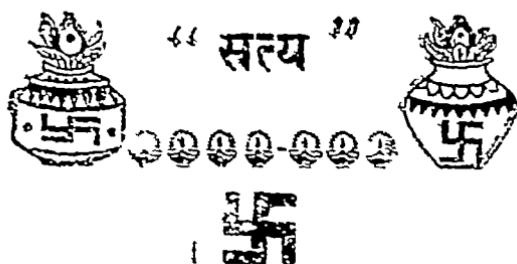
जिस पर रग चढ गया लोभका, उमय लोभक मे दुख पाया ।।
देखो पण्डित अर्थ लोलुपी, वेश्या घर भोजन खाया ।।
फल के लोभ सुभौम चक्र ने, णमोकार को ठुकराया ।
फलत, जाकर नरक गती मे, घोर सागरो दुख पाया ।। १४ ।।

लोभ वशी हो एकेन्द्री से, पचेन्द्रिय दुख पाते है ।
श्रावक साधु जो कोई भी अन्त समय पछताते है ।।
लोभी मानव ना खावे ना खरचे मम मम मरते है ।
आप जाय दुर्गति किन्तु. औरो को सचय करते है ।। १५ ।।

शौच धर्म की महिमा न्यारी, जो भविजन अपनाते है ।
नर देवेन्द्र पूज्य हो जग मे, शाश्वत सुख को पाते है ।।
जैसे बने इसी क्षण "सन्मति" शुचिता गुण को प्रगटाले ।
प्रीति हटा के लोभ दुष्ट से. मक्ति रमा सहचर पाते ।। १६ ।।

शुचिता-धर्म अनादी चेतन ! क्यो कर इसको भुला है ।
सर्व सुखो की खान यही है मुक्ति पुरी का झूला है ।।

सत्य धर्म निज का गुण चेतन, अमृत रस का प्याला है।
ठुकरा देना नही भूलकर, सौख्य दिलाने वाला है ॥

ना अपनाना छुपा पाप को ख्याति लाभ के वश होकर।
किंचित भी छू गया अगर यह दुर्गति मे खावे ठोकर ॥ १७ ॥

वसु राजा ने वचन बद्ध हो, अज का बकरा अर्थ किया।
फलक जाकर नरकगति मे, घोर सागरो दुःख लिया ॥

कथा ना जानो ! सत्य घोष को, वणिक लाल ले ठुकराया।
गोबर खाना पडा समय मे, काला मुह कर निकराया ॥ १८ ॥

चढा भले ही शूली पर हो, सत्य सत्य को पायेगा।
सिंहासन पर भले विराजा, मृषा पेट फट जायेगा ॥

देखो राजा श्री पाल को, ना अति बात पुरानी है।
धवल सेठ अरू मनोरमा की, इसमे जुडी कहानी है ॥ १९ ॥

पण्डित राजा आदि साधुगण सत्य तजे जग दुखपायें।
धूर्ण रहे आसीन सत्य पर उभय लोक उचे सुख पाये ॥

" सनमति " लें आलम्ब सत्य का, तज के मृषा कटुक वाणी।
शिव वनिता से सहज मिलन हो सीख दे रही जिनवाणी ॥ २० ॥

सत्य धर्म निज का गुण चेतन अमृत रस का प्याला है।
ठुकरा देना नही भूलकर सौख्य दिलाने वाला है ॥

संयम धर्म निजी है चेतन, शिव सुख को प्रकटाता हैं ।
इसे धार ले अवसर रहते, क्यो भव मे भटकाता हैं ।।

सयम बिना जनम नर तेरा, नही सार्थ हो पायेगा ।
बिषय वासना मे रत होके, दुर्गति दुःख उठायेगा ।।

देखो रावण बक राजा से, इन्द्री वश हो नरक लहे ।
और कहूँ कितनो की गाथा, संयम बिन बहु दुःख लहे ।।

मारीची पोता भगवन का, सयम तज भव भरमाया ।
करी साधना जब संयम की. महावीर सा भव पाया ।।

संयम द्विधा एन्द्री प्राणी, रूचि से इसे जु अपनाये ।
राग द्वेष अरु सर्व कषाये, पाँच पाप सह दफनाये ।।

शान्ति सिन्धू कें समरस से, अवगाह कराने वाला हूँ ।।
मन मन्दिर मे भेद ज्ञान का दीप जलाने वाला हूँ ।।

संयम से उपकार सदा. निज पर का होता आया है ।
सयम विना मनुष जीवन को, आगम पशू बताता है ।।

" सन्मति ' साध सदा संयम को दर्शज्ञान मय अपनाना ।
उभय लोक मे सुख का कारण, सहज होय मुक्ति पाना ।।

संयम धर्म निजी है चेतन. शिव सुख को प्रकटाता है ।
इसे धारले अवसर रहते क्यो भव मे भटकाता है ।।

## "तप"

तप है रतन महा उपकारी, चेतन शुद् बनाता हैं।
मलिन अनादी से निज गुण को, क्षण मे प्रकटाता है ॥

तप की महिमा तीन लोग में, वायु सम छा जाती है।
बिना बुलाये मुक्ति सुन्दरी, सहज पास आ जाती है ॥

अन्तर बाही तप दो विधि है, द्वादस उत्तर भेद कहे।
जो अपनाते पूर्ण शक्ति सह, कर्म कालिमा नाहि रहे।

तीर्थंकर चक्री महाराजा, धनी निर्धनी नर सारे।
जो भी निकले है भव वन से उनने पहले का धारे।

देखो अज्जन मे पापी को, तप ने पावन बना दिया।
किन्चित भी अपनाया जिसने, उभय लोक मे सौख्य लिया ॥

तप से हैं भयभीय जगत मे, जे निज गुण ना पायेगे।
विषय भोग मे सुखा देह फिर, दुर्गति में पछतायेगें ॥

तप से बडा मित्र नही कोई, इच्छा रहित अगर होवे।
न ही देह परिजन धन साथी, इनमे पड के क्यो रोवे ॥

तप से ध्यान साधना करके, भेद ज्ञान को प्रकटाले।
"सन्मति" सम्यक् शील साथ तप, इसी समय से अपनाले।

तप है रतन महा उपकारी, चेतन शुद् बनाता है।
मलिन अनादी से निज गुण को, क्षण भर में प्रकटाता है।

# "त्याग"

त्याग धर्म तेरा है चेतन, क्यो पर को अपनाता है।
छोड आसरा ले निज का तू, क्यो इनमे दुख पाता है।
त्याग किया जिन देख कीर्ति रे! तीन लोक मे छाई है।
प्रफुल्लित हो मुक्ति लक्ष्मी, उन्हे बुलाने आई है॥

संचय जिनने किया संग का, त्याग नाम टुकराते हैं।
वे भव सिन्धु छिद्र नाव सम, डूबे और डुबाते है।
त्याग छोड मारीची सा खुद, डूबा संघ डुबाय दिया।
सम्यक् त्याग किया मन बच से, फिर तिज को निज पाय लिया॥

मात्र काग के मांस तजन से, भील देव योनी पाई।
दानी राजा हरिश्चन्द्र की, सर्व लोक महिमा छाई।
राजुल और नेमि की प्रीति, नव भव से बढती आई।
ज्ञान भेद सह किया त्याग जब, शिव रमणी वरने आई॥

त्याग करने से पतित आत्मा, भी पावन बन जाता है।
ज्ञान चरित दर्शन सुख गुण जो, उन्हे सहज पा जाता है॥
चिन्तामणि रतन से बढ़के, त्याग धर्म को अपनाले॥
विषय वासना रामदितज, "सन्मति" निज की निधि पाले॥

त्याग धर्म तेरा है चेतन, क्यो पर को अपनाता है।
छोड आसरा ले निज का तू, क्यो इनमे दुख पाता है।

ब्रह्मचर्य निज महा धर्म है, चेतन ज्ञान कराता है।
भूले हुये निजी ब्रह्मा से, क्षण मे आप मिलाता है।।
ब्रम्हज्ञान युत मानव जग मे, सर्व श्रेष्ठ पद पाता है।
विषयों मे रम के रे नाहक, क्यो नर रतन गवाता है।।

महादेव ने महामुनी ने, विषय वासना वश होके।
उभय लोक मे अति दुख पाये, महाब्रह्म व्रतको खोया।।
ब्रह्मयति की अमर कीर्ति को, निश दिन देव इन्द्रगाते।
जो भी करे साधना व्रत ले, भव नश शिव रमणी पाते।।

कुवर सुन्दरी दोनो ने असि धारा व्रत सह रह पाला।
महिमा फैली भूमण्डल पर स्वेत हुआ चदुआ काला।।
स्वादारा सतोष महाव्रत, सेठ सुदर्शन ने पाला।
देखो शूली से सिहासन, असि हो गई फूल माला।।

अग्नि परिक्षा दे सीता ने, सत्य शील जग लहराया।
द्रौपदि मैना मनोरमा वहु, शील राख यश फहराया।
' सन्मति " ले सन्तोष शील से, सीचो निजगूण की प्यारि।।
अनुपम समरसम फल पाओ, वरण करे मुक्ति नारी।

ब्रह्मचर्य निज महा धर्म है, चेतन ज्ञान कराता है।
भूले हुये निजी ब्रह्मा से, क्षण मे आप मिलाता है।।

# आकिंचन

अकिञ्चन है धरम निराला, चेतन इसको अपना ले।
मन सा वचन काय से प्यारे, निज मे रमि निज को पाले ॥
किञ्चित जिन पर ना अपनाया, भेद ज्ञान का पी प्यासा ।
उन्हे खोजती फिरे निरन्तर मुक्ति रमा अनुपम बाला ॥

परिजन मित्र नारि पुत्रादिक, इनसे नाही कुछ नाता ।
क्रोध देह मौहारि रिपु है, इनको क्यो रे अपनाता ॥
चक्री भूप महासाधू गण, जो भी इनवे प्यार करे ।
ज्ञानादि चारित्र नाशि गुण, अन्त दुर्गति दुख मरे ॥

फास तनक सी होने पर भी, देह दाह उपजाती है ।
रूक लगोटी की भी इच्छा, रे ससार बढाती है ॥
आकिञ्चन गुण को अपनाया, भरत आदि वरू बाहुबली ।
केवल लक्ष्मी को प्रकटाया, क्षण मे नाशे कर्मदली ॥

आकिञ्चन से बढते जग मे, धर्म नही बतलाया है ।
आकिञ्चन के धनी गुणी का, यश देवो ने गाया है ॥

अवसर मिला अरे अनमोलक, अकिंचन को एकटाले
लालायित है मुक्ति सुदरी, "सन्मति" ले इसको पाले ॥

आकिञ्चन है धर्म निराला चेतन इसको अपनाले ।
मनसा वचन काय से प्यारे, निज मे रमि निज को पाले ॥

पचमगति साहिताय परमात्मनें नमः

# अपुनरागमपथ

मगल स्मरण

दर्शनमात्मविनिश्चितिरात्मपरिज्ञान निष्टाते बोधः।
स्थितिरात्मनि चरित्र निश्चय–रत्नत्रयं वन्दे ॥

अनादि अवहमान काल से ससार के मध्य मे चतुर्गति रुपि पथ के पथिक अनन्तों वार गमनागमन करते हुये भी अपना लक्ष्य गन्तव्य स्थल को एक वार भी प्राप्त नही कर सकते कारण उ का गमन पुनरागम मे परिवर्तित हो जाता है। ठिक हि है – कौन वुद्दिमान पथिक अपना गन्तव्य स्थल को प्राप्त किये विना हि उसका गमन स्थगित कर देता है। वह पथिक अनादि अनन्त काल से अविश्रांत गमन करते हुये भी अपना लक्ष्य स्थल मे नही पहुँचने का कारण क्या है? इसका सिर्फ एक ही उत्तर 'विपरीत गमन' यदि कोई पथिका लक्ष्य एक सरल रेखा के पूर्व मे पहुँचने का है, किन्तु वेह उस सरल रेखा के पश्चिम दिशा मे गमन कर रहा है, तो वह अनन्त भ व-ष्यत काल पर्यन्त कितना क्षिप्र गति मे गमन करे ना क्यो तो भी वह उस सरल रेखा के पूर्व दिशा मे नही पहुँच सकता, यदि वह सम्यक् मार्ग मे गमन करना प्रारम्भ कर देगा तव वह निश्चित

रूप में एक दिन ना एक दिन अपना लक्ष्य स्थान को प्राप्त करके पुन: पुनरागमन नही करेगा। वह अनुपम, अनादि काल से अप्राप्य अत्यन्त दुर्लभ, अत्यन्त सरल एव प्रशस्थ पथ हुआ-सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग.'। सम्यक् दर्शन, सम्यग्ज्ञान एव सम्यक् चारित्र तीनो का एकीकरण ही अपुनरागम पथ है। दसणणाण चरित्ताणि मोक्खमग्ग जिणा बिति।

Self reverence, self-knowledge, self control
These three alone Lead life to sovereign power."

आत्म विश्वास आत्म ज्ञान एव आत्म नियत्रण तीनों मिलकर जीवन को एक महान् शक्ति की ओर ले जाता है। The unity of heart, head and hand leader to liberation हृदय (श्रध्दा) मस्तिष्क (ज्ञान) हस्त (आचरण) के एक्यसे मुक्ति प्राप्त होती है, यह पथ पथिक को अपना लक्ष्य स्थलमे पहुचा देता है, एव पथिक वहाँ पहुँचकर अनादि कालीन गमना गमन के पथ क्लान्त से निवृत्ति होकर भविष्यत अनन्तकाल अपुनरागम करके वहाँ कृत्यकृत्य होकर अनन्त सुख का अनुभव करने के कारण इस पथ को धर्म भी कहते है, य. कर्म निबर्हणम्; ससार दुखत सत्त्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे स धर्म। अर्थात् जो कर्मो के नाशक, गमनागमन के (ससार के) दु खो से जीवो को निकालकर अपुनरागम स्थल मे (मोक्ष) मे पहुँचा देता है उसको धर्म कहते है। इससे विपरीत जो-पथिक को अलक्ष्य स्थल मे (ससार मे) गमनागमन कराता है वह दु.ख होने के कारण वह पुनरागमपथ (अधर्म) है अर्थात् " यदीयप्रत्यनीकानि भवन्ति भवपध्दति',। जो सुख देने वाला है वह धर्म है जो धर्म है वह वस्तु का अपना स्वभाव हैं "वत्थु सुहावो धम्मो," - " The religion is the characteristic of the substance" जो अपना स्वभाव है उसका ही सेवन करना चाहिये अर्थात अपना स्वभाव मे रमण करना ही अपुनरागम पथ है, निश्चय से- यह पथ पथिक का (आत्मा का) स्वभाव है।

**दसणणाण चरित्ताणि सेविदव्वाणि साहुणा णिच्चं ।**
**ताणि पुण जाण तिण्णिवि अप्पाणं चेव णिच्छयदो ।। स. सा. १९।।**

Right belief knowledge and conduct should always be pursued by a saint from the practical standpoint know all these three again, to be the soul itself from the real stand point

यह पथ अन्य कोइ अचेतन पदार्थों से बनाया हुआ नही है, क्योकि यह पथ अन्य अचेतन द्रव्य मे पाया ही नही जाता है, " दसणणाण चरित्त किंचिविणात्थि दु अचेदणे विसए । "

सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, आत्मा का स्वभाव होने पर भी स्वय के दुर्बलता का सुयोग लेकर मिथ्यादर्शन, ज्ञान, चारित्र आत्मा को अनादि से चर्तुगति मे गमनागमन करा रहा है। जब पथिक कालादि लब्धि प्राप्त करके त्रयात्मक अपुनरागम पथ को प्राप्त कर लेता है तब वह अपना लक्ष्य के अभिमुख गमन करना प्रारम्भ कर लेता है एव सपूण त्रयात्मक पथ को प्राप्त करने के बाद वह वहाँ कृत कृत्य होकर निवास करता है। वह त्रयात्मक पथ हुआ- (१) 'दर्शनमात्मविनिश्चत'- आत्मा का निश्चय करना सम्यक्दर्शन है। (२) आत्मपरिज्ञान मिष्यते बोध - आत्मा का परिज्ञान सम्यग्ज्ञान है; (३) 'स्थितिरात्मनि चारित्र- आत्मा मे ही रहना सम्यक् चारित्र है।

जब पर्यायार्थिक दृष्टि से देखते हैं तव यह पथ त्रयात्मक है किन्तु जब द्रव्यार्थिक दृष्टि से देखते हैं तब वह पथ शुध्द आत्मा ही है।

चर्तुगति रुपी पथिक के जब पचमगति प्राप्त करने का समय उत्कृष्ठ से अर्धपुदगल परावर्तनकाल एव जघन्य से अन्तर्मुहुर्त काल वाकी रह जाता है तब उसको सम्यक्मार्ग का श्रध्दान (सम्यक्दर्शन ) होता है, श्रध्दान के साथ साथ उसको सम्यक्ज्ञान हो जाता हैं। उस समय उसके आनन्द अश्रु के साथ साथ दुःखाश्रु वहने लगते हैं। अनन्त कालीन पथ भ्रष्ट, क्लान्त सान्त पथिक जब अपना पथ को प्राप्त कर लेता है तव आनन्दअश्रु विगलित करता है एव पूर्व के स्वय के भूल के

कारण को स्मरण करके दु खाश्रु विगलित करता है। लक्ष्य स्थल में निश्चित रुप में पहूँचा देने का पथ को प्राप्त करके वह लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उस ओर अपना पदाक्षेप (सम्यक्‌चारित्र) प्रारम्भ कर देता है। जितना २ वह अग्रेसर होता है उतना २ अपने लक्ष स्थल के निकट होता जाता हैं इस प्रकार त्रयात्मक मार्ग से अपने लक्षस्थल मे पहुँच जाता हैं। यदि एक भी अंग कम हो जायेगा तब वह अपने लक्ष्य स्थल में प्रवेश नही कर सकता। कहा है –

**हतं ज्ञान क्रिया हीनं हता चाज्ञानिनां क्रिया।**
**धा वन् किलान्ध को दग्धः पश्यन्नपि च पंगुल।। त. रा.**
**सयोग मेव हि वदति तज्ज्ञान ह्येक चक्रेण रथः प्रयाति।**
**अंधश्च पंगुश्च वनं प्रविशिष्टौ तौ सप्रयुक्तौ नगर प्रविष्टौ।।**
**गो. क**

चारित्र के बिना ज्ञान नष्ट है अर्थात किसी काम का नही एवं ज्ञान के सहचारि दर्शन भी किसी काम का नही। जिस तरह वन में आग लग जाने पर उसमे रहने वाला पगू मनुष्य वहाँ से निकल जाने का मार्ग को जानता है 'इस मार्ग से जाने पर मै अग्नि से बच सकुंगा इस बात का उसको श्रध्दान भी है परतु चलने रुप क्रिया (चारित्र) नही कर सकता इसलिए वही जलकर नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार ज्ञान (ज्ञान के सहचर दर्शन) रहित क्रिया (चारित्र) भी निरर्थक हे जिस प्रकार वहाँ रहने वाला अन्धा जहाँ वहाँ दोडने रुप क्रिया करता है किन्तु न उसको मार्ग का ज्ञान एवं श्रध्दान ही है कि यह निश्चित मार्ग नगर मे पहुचाने वाला है। इसलिए वह वही जलकर नष्ट हो जाता हे।

दो चक्रवाला रथ एक चक्र से गमन नही कर सकता। उसी प्रकार अकेले सम्यग्दर्शन वा सम्यग्ज्ञान वा सम्यक्‌चारित्र से मोक्ष नही प्राप्त हो सकता क्योकि यह सिध्दान्त है कि जो कार्य तीन कारणो से होती है वह कार्य एक किम्वा दो कारणो से नही हो सकती। तीनो ही कारणों की समवाय से ही उस कार्य की सिध्दी हो सकती है, जिस प्रकार वन

मे आग लगने पर जब अन्धा और लगडा पृथक पृथक् रहते है तब तो वे वही जलकर नष्ट हो जाते है, किन्तु जिस समय वे मिल जाते है अर्थात अन्धा के कन्धे पर लँगडा बैठकर अन्धा को रास्ता दिखाये एवं अन्धा उसके अनुसार क्रिया करे तो दोनो ही नगर मे आ सकते है, इसी प्रकार सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तीनो का समवाय ही मोक्ष मार्ग है। 'अनन्ता सामायिक सिध्दा' से भी सिध्द होता है कि तीनो का समवाय ही मोक्ष मार्ग है, ज्ञान रुप आत्मा के तत्व श्रध्दान पूर्वक ही सामायिक रुप चारित्र हो सकता है। सामायिक अर्थात पाप योगो से निवृत होकर अभेद समता ओर वीतरागता में स्थित होना है ।

इस त्रयात्मक मार्ग मे जिसके नेतृत्व मे कार्य प्रारभ होता है वह हुआ सम्यक्दर्शन। क्योकि 'तस्मिन् सत्येव यतो भवति ज्ञानं चारित्र च।" सम्यकदर्शन के होने पर ही सम्यक्ज्ञान एव सम्यकचारित्र होता है। जिस प्रकार प्रथम मे एकादि संख्या के बिना अनेक शून्य '०' का मूल्य कुछ नही होता, किन्तु प्रथम मे एकादि संख्या की सद्भाव मे उत्तर कि शून्य का मूल्य दश गुणा वृध्दि हो जाता है इसी प्रकार सम्यक दर्शन के बिना "शमबोध वृत्त तपसा पापाण स्येव गौरव पुस हो जाता है। अर्थात सम्यग्दर्शन के बिना कषायो के उपशमन, ज्ञान, चारित्र और तप इनका महत्व पाषाण के भारीपन के सामान व्यर्थ है। 'पूज्य महामणेरिव तदेव सम्यक्त्व सयुक्तम' परतु वही उनका महत्व यदि समकत्व से सहित है तो वह मूल्यवान मणि के महत्व के समान पूजनीय है। इसलिए सम्यक्दर्शन मोक्ष मार्ग मे ज्ञान चारित्र की अपेक्षा श्रेष्ट एव कर्णधार के समान है। परन्तु सम्यक्दर्शन से ही एकान्त से मोक्ष प्राप्ति नही हो सकती। यदि दर्शन मात्र से ही मोक्ष माना जाय तो सम्यग्दर्शन प्राप्ति के बाद उत्कृष्ट से अर्धपुदगल परावर्तन काल पर्यन्त क्यो ससार मे परिभ्रमण करते है? क्षायिक सम्यग्दृष्टी के दर्शन मोहनी के समस्त कर्म क्षय हो जाने के बाद भी वह उत्कृष्ट से आठ वर्ष अन्तमुर्हूत कम् पूर्व कोटि अधिक तेतीस सागर पर्यन्त ससार मे क्यो भ्रमण करते है? सम्यग्दर्शन की पूर्णता १९ वाँ गुण स्थान मे हो गई तो भी ससार मे उत्कृष्ठ से ८ वर्ष कुछ अन्तमुर्हत

कम एक पूर्व कोटि वर्ष तक क्यो विहार करते है ? यह समस्त प्रश्नो का उत्तर एक ही है - अभी तक सम्यग्ज्ञान एवं सम्यकचरित्र का पूर्णता की अभाव ।

यदि एकान्त से ज्ञान मात्र से ही मोक्ष माना जाय तो, एक क्षण भी पूर्ण ज्ञान के वाद ससार मे ठहरना नही हो सकेगा उपदेश तीर्थ प्रवृति आदि कुछ भी नही हो सकेगें। परन्तु १३ वॉ गुण स्थान मे सम्पूर्ण ज्ञान होने पर भी उत्कृष्ठ से ४ वर्ष कुछे अन्तमूर्हत कम एक पूर्व कोटि वर्ष तक मंगल विहार करते हुयें अपुनरागमपथ का उपदेश देते है, यह संभव ही नही है कि दीपक भी जल जाय और अँधेरा भी रह जाय । उसी तरह यदि ज्ञान मात्र से ही मोक्ष हो तो यह समव ही नही हो सकता कि ज्ञान भी हो ज़ाय और मोक्ष नही हो । यदि पूर्ण ज्ञान होने पर भी कुछ सस्कार (चार अघातिया कर्म । ऐसे रह जाते है । जिसके नाश हुए बिना मुक्ति नही हो सकती । इससे यह सिध्द हुआ कि सस्कार क्षय से मुक्ति होगी ज्ञान मात्र से नही । फिर यह सस्कारो का क्षय ज्ञान से होगा या अन्य कारण से ? यदि ज्ञान से है तो ज्ञान होते ही संस्कारो का क्षय भी हो जायेगा और उत्तर क्षण मे ही मोक्ष हो जाने से तीर्थोपदेश आदि नही बन सकेगे । यदि सस्कार क्षय के लिये अन्य कारण अपेक्षित है तो वह चारित्र ही हो सकता है, अन्य नही । मोक्ष प्राप्ति रूप कार्य तीन कारणो से होता है। १३ वॉ गुण स्थान तक दर्शन एव ज्ञान की पूर्णता हो गई तो भी कार्य नही हुआ । यह नियम है कि 'प्रतिबन्धक का अभाव होने पर सहकारी समस्त सामग्रियो के सद्भावको समर्थ कारण कहते है एंव समर्थ समर्थ के होने पर अनन्तर समय मे कार्य की उत्पत्ति नियम से होती है । अत 'पारशिक' न्यायसे सिध्द हुआ कि सस्कारो का पूर्ण रूप से नाश का अभाव सम्यक-चारित्र कि पूर्णता की आभा ही है । १४ वॉ गुण मे चारित्र कि पूर्णता से प्रतिबन्धक का नाश होता है एव अनन्तर समय मे मोक्ष रूपी कार्य की उत्पत्ति नियम से होती है । इसमे अनन्तर पूर्व क्षण वर्ती मोक्ष चरित्र पर्याय उपादान कारण है, और अनन्तर उत्तर क्षण वर्ती रूपी पर्याय कार्य है । इससे सुनिश्चित सिध्द हुआ मोक्ष रूपी कार्य मे

उपादान कारण सम्यक्चारित्र है। सम्यक्चारित्र का पूर्ण शीलेशों के अर्थात १४ वाँ गु में होता है।

**सीलेसिं संपत्तो, णिरुद्धणिरसेसं आसवो जीवो।**
**कम्मरयविप्प मुक्को गय जोगो केवली होदि॥ गो । जी ६५**

जो सम्पूर्ण १८००० शील के (चारित्र के) स्वामी हो चुका हैं और पूर्ण संवर तथा निर्जरा का सर्वोत्कृष्ट एवं अन्तिम पात्र होने से मुक्तावस्था के सम्मुख दर्शन को है। समस्त पुकार योग से रहित है, अपुनरागमनपथ के यात्री अपुनरागमन पथ के समर्थ कारण है, उन्ही के अयोग केवली किम्वा शील का अर्थात चारित्र का स्वामी कहा जाता है।

अपुनरागमन पथ के पथिको नें इस चारित्र से परम उपकार को हृदयगम करके उसके प्रति अपना कृतज्ञता ज्ञापन करानें के लिये चारित्र का अन्यून स्तुति करते है एवं उसका आर्शीवाद की कामना करते हैं। यथा —

**शिव सुख फलदायि यों दयाछाय योद्ध,**
**शुभ जन पथिकानां खेदनोदे समर्थः।**
**दुरितर विजतापं प्रापयन्नंत भाव,**
**स भव विभव हान्यै नोऽस्तु चारित्रवृक्ष॥ वीर भक्ति॥**

जो पथिको के मोक्ष रूपी शास्वतिक अनुपम सुख रूपी फल को देने वाला है, शान्ति प्रदान करने वाला दया रूप छाया से प्रशस्त हैं जो कि पथिको के सताप को दूर करने मे समर्थ है, पाप रूप सूर्य के सताप का अन्त करनेवाला है वह चारित्र वृक्ष हमारे ससार मे जो गमनागमनादि भव है, उसके विनाश के लिये होवे।

पथिको ने केवल अत्यन्त मधूर लालित्य लच्छेदार शब्द से स्तुति करके अपना मनमना पाड़ित्यपना प्रगट करके कालादि लब्धि के ऊपर अपना कर्त्तव्य को तिलाज्जलि देकर प्रमादि होकर ससार भोगों मे लिप्त नही रहे। परन्तु प्रमाद त्याग करके असंगहयवलवीर्य के अनुसार

चारित्र को पालन किये ।

**चारित्रं सर्वं जिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्य ।**
**प्रममाणि पंचभेदं पंचम चरित्र लाभाय ।वीरभक्ति ।। "६"**

समस्त तीर्थंकरो ने स्वयं चारित्र को धारण किये एव समस्त शिष्यो को चारित्र धारण करने का उपदेश दिये । अत समस्त कर्मो के क्षय के साधक पचम यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति के लिये सामायिकादि पच भेद से युक्त चारित्र को मै प्रणाम करता हूँ ।

सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मे पूर्व की प्राप्ति होने पर उत्तर की प्राप्ति भजनीय है अर्थात हो भी न भी हो । परन्तु उत्तर की प्राप्ति मे पूर्व का प्राप्ति निश्चित है वह होगा ही । जिसे सम्यकचारित्र होगा उसे सम्यग्ज्ञान और सम्यकग्दर्शन होगे ही परन्तु जिसे सम्यकग्दर्शन है उसे पूर्ण सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चरित्र हो भी और न भी हो । क्षायिक सम्यकग्दर्शन की प्राप्ति होने पर क्षायिक ज्ञान हो और न भी हो क्षायिक सम्यकग्दर्शन की प्राप्ति होने पर क्षायिक ज्ञान हो भी नही हो, किन्तु जहाँ क्षायिक ज्ञान है वहाँ क्षायिक सम्यकग्दर्शन निश्चित रुम मे ही है, जहाँ सम्पूर्ण क्षायिक सम्यकचारित्र हो भी न भी हो । किन्तु जहाँ सम्पूर्ण क्षायिक चारित्र है वहाँ सम्पूर्ण क्षायिक सम्यग्दर्शन एव सम्पूर्ण क्षाायिक ज्ञान होगा ही हैं, इस प्रकार सम्यक्-चारित्र मे त्रयात्मक मार्ग रहेगा ही है ।

चारित्र का उपादेयता इह लोक पर लोक देश समाज राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक, व्यक्तिगतादि प्रत्येक क्षेत्र मे व्यापक है, यह सारा विश्वस्वीकार करते है ।

It wealt is lost nothing is lost.
It helh is lost some thing is lost.
It chatacter is lost every thing is lost

यदि धन नष्ट हुआ, तो कुछ नष्ट नही हुआ क्योकि धन पुदग्ल की पर्याय है । ए व पुण्य का दास है, पुदग्ल का स्वभाव मिलना एव वियोग

होना। धन आत्मा से अत्यन्त भिन्न है। यदि स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट हुआ क्यो कि 'शरीर माध्यम् खलु धर्म स धनम्' शरीर के माध्यम से धर्म साधन होता है, अतः स्वास्थ्य नष्ट होने से धर्म मे व्याघात होने से होता है। यदि चारित्र नही रहा तो सर्वस्य नष्ट हो गया, क्यो चारित्र जीव का स्वभाव, सर्वस्व एव धर्म है। "चारित्त खलु धम्मो चारित्र निश्चय से धर्म है। धर्मो कि समुदाय हि धर्मि है।

यदि धर्म ही नही रहा तब धर्मी (वस्तु) कैसे रह सकता है, जैसे अग्नि का प्रकाशत्व, उष्णत्व, पाचकत्व आदि धर्म नही रहेगा तो अग्नि ही कैसे रह सकता है। किन्तु जिस पथिक का अपुनरागम पथ प्राप्त करने का समयाब्धि अन्यन्त वेशि है उसका प्रवृत्ति विपरित होता है।

जानामि धर्म न च मे प्रवृत्ति, जानामि अधर्म न च मे प्रवृत्ति। धर्म को जानुगा किन्तु धर्म से प्रवृत्ति नही करुगां। अधर्म को जानुगा किन्तु अधर्म से निवृत्ति नही हुगा। उसका विचार धारा स्वतन्त्र न होकर स्वछन्द होता है।

As like this –

If character is lost nothing is lost.
If healf is lost some–thing is lost.
But wealth is lost every thing is lost

यदि चारित्र नष्ट हुआ कुछ भी नष्ट नही हुआ क्योकि यह तो ब्राह्म वस्तु है यदि स्वास्थ्य नष्ट हुआ कुछ नष्ट हुआ। क्योकि धन कमाने मे एव भोग करने में व्याघात हुआ। किन्तु धन नष्ट हुआ तो सर्वस्य नष्ट हो गया क्योकि gold is god and god Is gold सुवर्ण (धन) भगवान है एव भगवान सुवर्ण है, अतः धन नष्ट होने से सब कुछ नष्ट हो गया, इस प्रकार जिसका श्रद्धान ज्ञान एव आचरण है वह अपना गमनागमन पथ को प्रशस्त कर रहा है। परन्तु जो अपुनरागमन के पथिक है उसका आचरण इससे विलक्षण होता है।

**दयी दम त्याग समाधि संततैः पथि प्रयाहि प्रगुण प्रयत्नवान**
**नयंत्यवश्यं वचनाम गोचरं विकल्पदूरं परमं किमप्यसौ ॥**

आत्मानुशासन ॥ १०७ ॥

हे अपुनरागमपथ के पथिक ! तू अत्यन्त प्रयत्नशील होकर सरल भाव से धर्म के मूल दया, गमनागमन पथ के अत्यन्त दुर्निवार ५ इन्द्रिय रुपी अश्व एव मन रुपि सारथि का दमन, अपुनरागमन पथ के वोझा स्वरूप अन्तरग एव बहिरग २४ प्रकार परिग्रह का त्याग और अपुनरागगमन पथ मे गति करने रूप ध्यान की परम्परा के मार्ग में प्रवृत्त हो जाओ, वह मार्ग निश्चय से तुम्हारा अनन्त काल से अप्रप्य लक्ष स्थल जो अत्यन्त उत्कृष्ट निरापद स्थान् को प्राप्त कराता है जो वचन से अनिर्वचनीय एवं समस्त गमनागमन विकल्पो से रहित है। वह ही तुम्हारा अविनश्वर अपुनरागमपथ का फल है शाश्वतिक सुख, अनुपम आल्हाद, सच्चिदानन्द रूप। अतएव हे ! अनादि कालीन पथ भूला पथिक तुम अपना पथ को प्राप्त करके पुनः अवहेलीत भावसे उस पथ को त्याग करके गमनागमन पथ मे अनन्तकाल (अर्ध पुदग्ल परिवर्तनकाल) तक परिभ्रमण करके दुख, क्लेश, सताव उठाने का पात्र वन नही।

**मोक्ष मार्गस्य नेतारं भेत्तार कर्म भू भृताम् ।**
**ज्ञातारं विश्व तत्वानां वन्दे तद् गुण लब्ध्यं ॥**
**जयतु अपुनरागमपथ !**

**लेखक : क्षु. कनकनन्दी**

# धर्म के अभाव में

– लेखक –

क्षुल्लक १०५ तीर्थसागरजी महाराज

एक समय था, जब भारत देश सोनेकी चिडियाँ के नाम से जाना जाता था। सोने की चिडियाँ का तात्पर्य देश की खुशहाली से है। इस देश मे दूध की नदियाँ वहती थी। यहाँ खाद्यन्न के भडार के भडार भरे रहते थे। यहाँ के शिल्पकार देश मे ही नही वरन् ससार मे प्रसिद्ध थे। उनके द्वारा की गयी शिल्पकारी ससार को आश्चर्य चकित करती थी। वह समय था आध्यत्मिक समय अर्थात धामिक वातावरण जो इस देश का प्राण था। उस समय को विचारते हुए हम वर्तमान दशा पर विचार करे तो एक विशाल अन्तर नजर आता है। वह सूर्य का उजाला था, तो यह रात की कालिमा। आज देश वासी भूखे मरते हैं, बच्चों को दूध के दर्शन नही होते है। यदि आपको इस देश का पूर्णतया दिग्दर्शन कराया जाय तो उसकी दशा देखकर आप विह्वल हो उठेंगे। इस परिवर्तन का कारण क्या है ?

आज देश मे अनेको संस्था चल रही है और सब इस वात का दम भरती है कि हम देश को पूर्णतया खुशहाल वना देगे। मेरी विचार है कि जब तक डॉक्टर रोगी का मर्ज नही पहचानता है तब तक उचित चिकित्सा भी नही कर सकता और जहाँ रोग का निदान हो जाता है वहाँ चिकित्सा सरल हो जाती है। इसी प्रकार हमे यह देखना हैं कि

हमारी इस स्थिति का कारण क्या है जब तक रोग कारण को दूर नहीं होगा तब तक रोग मिट नही सकता, जिस प्रकार फूटे हुए वर्तन मे पानी नही ठहर सकता, इसी प्रकार मेरा विचार है कि इस सबका कारण हमारा नैतिक पतन है।

जब भारत देश सोने की चिड़ियाँ कहलाता था, तब देश में धार्मिक विचारो की जागृति थी यहाँ के निवासी सदाचारी और सत्री का लक्ष्य आत्मा के उद्धार के साथ साथ गृहस्थ जीवन न्याय युक्त व्यतीत करना था, जिससे पुण्य और बुद्धि की वृद्धि होती थी। यहाँ तक की धर्म के साधको को अनेको सिद्धीयो सिद्ध हो जाती थी। जहाँ ऐसी पुण्यात्माए विचारण करती थी, वहाँ उनके पुण्योदय से अनेक प्रकार की आनदकी सामग्रियाँ उपस्थित हो जाती थी। मेरा ऐसा विश्वास है कि जब तक हम धर्म का पूर्ण अवलम्बन नही लेगें। तब तक हम जीवन को सुखमय नही बना सकते। सर्वज्ञ तीनो लोक के ज्ञाता हैं। भगवान महावीर अपनी दिव्य ध्वनि मे हमे वर्तमान समय में क्या करना है यह देशना दे गए हैं। हम उसके विपरित आचरण कर रहे हैं, हम सदाचार को त्याग कर बूरे आचरणो की ओर प्रवृत हो रहे है। उमें ही हम उत्थान का मार्ग समझ रहे है। बन्धुओ दूध मे विष मिला देने से दूध विष रूप हो जाता है न कि विष दूध का रूप धारण करता है।

आज हमारी धर्म पर से श्रद्धा समाप्त होती जा रही है जिसके कारण हम निरन्तर दुःख के अंधेरे मे गिरते जा रहे हैं। धर्म के प्रभाव से चक्रवर्ती पद तथा सच्चें मोक्ष सुख को प्राप्त होते है। धर्म के प्रभाव से शेर और बकरी आपस की शत्रुता भूलकर विकार भावो को त्याग कर एक घाट पर पानी पीती हैं। तब फिर धर्म के माध्यम से मानव मानव से अपनी द्वेष भावना को त्यागकर, अगर सगठन में रहे तो कौनसी बडी बात हैं।
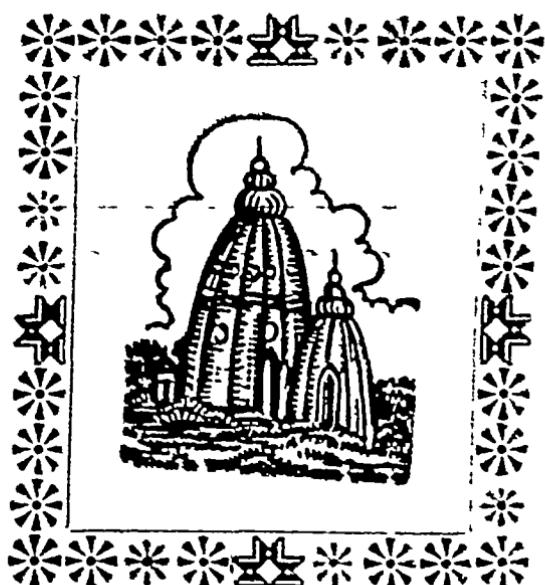
बन्धुओ! हम धर्म जाती, विषय लम्पटी, इन्द्रिय लोलुपी व्यक्तियो की बातो मे न आकर और धर्म को ही हितकारी मान 'सर्वज्ञ' द्वारा कथित और उनके लघुभ्राता वर्तमान युग के 'दिगम्बर मुनियो' के

द्वारा प्रवृत मार्ग पर चलकर और उनकी शरण मे रहकर अपने आचरणो और खानपान आदि की शुद्धता रखते हुए धर्म की रक्षा करने को सदैव तत्पर रहे। इसीलिए महापुरुषो ने कहा है–
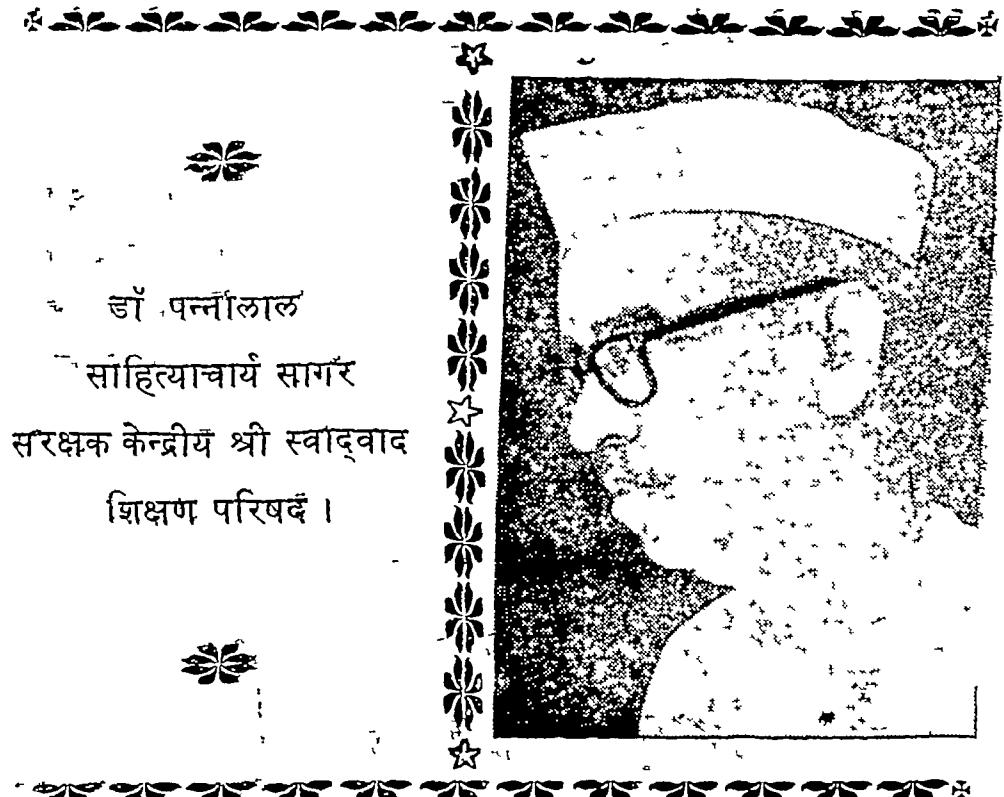
**"धन दे तन को रखियै, तन दे रखिये लाज।**
**धन दे तन दे लाज दे, एक धर्म के काज॥**

अत देश की वर्तमान बिगडती हुई स्थिति को सुधारने के लिए और समृद्धशाली एव स्थायित्वता प्राप्त करने के लिए हमे सर्वज्ञ द्वारा कथित मार्गका अवलबन लेते हुए सत्य सगठन सदाचार का प्रचार करते हुए एव सद्चारित्र का पालन करते हुए धर्म की रक्षा करने का सकल्प करना चाहिये।

# श्रमणचर्या

डॉ पन्नालाल
साहित्याचार्य सागर
सरंक्षक केन्द्रीय श्री स्वाद्वाद
शिक्षण परिषद ।

प्रवचनसार के चारित्राधिकार का प्रारभ करते हुए श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने लिखा है —

" पडिवज्जदु सामण्ण जदि इच्छसि दुख्ख परिमोक्ख । "

यदि दुख मे छुटकारा चाहते हो तो श्रामण्य मुनिपद को प्राप्त होओ । तात्पर्य यह है कि मुनिपद निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुद्रा धारण किये बिना यह जीव सासारिक दुखो से निवृत नही हो सकता । " श्रमणस्य भाव कर्म वा श्रामण्यम् इस व्युत्पत्ति के अनुसार श्रामण्य शब्द का अर्थ

होता है श्रमण मुनि का भाव अथवा कर्म। शाश्वत सुख की प्राप्ति कैसे हो सकती है? इसका उत्तर कुन्दकुन्दस्वामी ने यहा दिया है—

जो निहृद मोह गठी राग पदो से खवीय सामण्ये।
होज्ज समसुह दुक्खो सो सोक्ख अक्खय भहदि॥ १०३

जो मिथ्यात्व रूपी गाठ को सर्वथा नष्ट कर मुनिपद मे सम सुख दुख होता है अर्थात सुख और दुख मे मध्यस्थ भाव धारण करता है वही शाश्वत अविनाशी सुख को प्राप्त होता है।

यह जीव अनादि कालीन मिथ्यात्व के कारण निज स्वरुप को भूलकर शरीरादि पर पदार्थो मे अह बुद्धी करता चला आ रहा है और चारित्र मोह के उदय से उन्ही पर पदार्थो मे इस्ट अनिष्ट बृध्दि कर राग द्वेश करता आ रहा है। यही अहकार और ममकार को बुध्दि ससार का मूलकारण है। अतः ससार की निवृत्ति के लिये सबसे पहले पर से भिन्न और स्वकीय गुण पर्याय से अभिन्न ज्ञाता दृष्टा स्वभाव वाले आत्म द्रव्य का निर्णय करना आवश्य है। आत्म द्रव्य का निर्णय हुए विना चारित्र का सही प्रयोजन सिद्ध नही होता और चारित्र के विना आत्मद्रव्य की भी सिध्दि नही होती अर्थात आत्म द्रव्य विकार भावो से रहित होकर शुद्धावस्था को प्राप्त नही होता। यही

भाव अमृतचन्द सूरि ने निम्न श्लोक मे प्रदर्शित किया है।

द्रव्यस्य सिद्धौ चरणस्य सिद्धि—
द्रव्यस्य सिद्धिश्चरणस्य सिद्धौ।
बुद्हवेति कर्माविरता परेडपि,
द्रव्याविरूध्द चरण चरन्तु॥

अर्थात् द्रव्य आत्म द्रव्य की सिद्धि होने पर उसका शरीरादि से भिन्न अस्तित्व स्वीकृत करने पर चारित्र की सिद्धि होती है, और चरित्र की सिद्धि होने पर आत्म द्रव्य की सिद्धी होती है। आत्म द्रव्य अपने ज्ञाता दृष्टा स्वरूप मे लीन होता है। ऐसा जानकर अन्य लोग भी पदानुकुल क्रियाओ से विरक्त न होते हुए आत्म द्रव्य के अविरुध्द

चारित्र का आचरण करे । तात्पर्य यह हैं कि ऐसा चारित्र धारण करे जो आत्मा के यथाख्यात स्वरूप की उपलब्धि मे सहायक हो क्योकि इस प्रकार के चारित्र के बिना आत्मा का यथाख्यात स्वरुप प्रकट नही हो सकता है । कुन्दकुन्द स्वामी ने समय प्रायत्त के मोक्षाधिकार के प्रारभ मे कहा हैं कि जिस प्रकार बन्धन मे पडा मनुष्य बन्धन के कारण तथा उसको तीव्र मद मध्यम अवस्थाओ को जानता हुआ भी बंधन से तब तक नही छूट सकता जब तक कि वह छैनी हथौडा लेकर बधन को काटने का पुरुषार्थ नही करता उसी प्रकार कर्म बध को तथा उसके भेद प्रभेदो और उनकी तीव्र मन्द मध्यम अवस्थाओ को जानने वाला मनुष्य भी तब तक कर्म बध से नही छूट सकता जब तक कि वह चारित्र के द्वारा उस कर्म बध को नष्ट करने का पुरुषार्थ नही करता है। सर्वार्थसिद्धि का अहमिन्द्र ३३ सागर का दीर्घ काल तत्व चर्चा करते हुए व्यतीत कर देता है, पर उस चर्चा के माध्यम से मुक्ति प्राप्त नही कर सकता, इसके विपरित अविरत सम्यक्दृष्टि मनुष्य, एक मुहुर्त के सम्यक् चारित्र से भी कर्म बन्धन को नष्ट कर शाश्वत् सुख को प्राप्त हो सकता है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्यक्दर्शन और सम्यक्ज्ञान पूर्वक प्रकट होने वाले चरित्र से ही शाश्वत् सुख प्राप्त होता है । तथाकथीत चारित्र्य को धारण करने वाले मुनि का नाम कुन्दकुन्द स्वामी ने "श्रमण" रक्खा है। प्राकृत के 'समन' शब्द की सस्कृत छाया 'श्रमण' 'शमन' और समन हो सकती है। 'श्रमण' का अर्थ होता है – कर्मक्षय के लिये श्रम पुरुषार्थ करने वाला और 'समन' शब्द का अर्थ होता है अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियो मे समता भाव मध्यस्थ्य भाव प्राप्त करने वाला । इन्ही सब अर्थो को दृष्टिगत रखते हुए कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है –

समसत्तबधवग्गो समसह दुक्खो पसंसणिदसमो ।
समलोट्ठ कचणो पुण जीविदमरणे समो समणो ॥ ४१ ॥

अर्थात् जो शत्रु तथा बन्धु वर्ग मे समता भाव रखता है, जिसे सुख दु ख समान है, जो प्रशशा और निन्दा मे मध्यस्थ भाव रखता हैं, जो पाषाणखड और सुवर्ण मे मध्यस्थ रहता है तथा जो जीवन और मरण मे मध्यस्थ रहा है तथा जो जीवन और मरण मे सायभाव मे युक्त होता है वही श्रमण है।

श्रामण्य अर्थात मुनिपद की पूर्णता किसके होती है? इसका उत्तर कुन्दकुन्द ने दिया हैं। —

दसणणाण चरितेसु तीसु जुगव समुट्ठिदो जो दु।
एयग्गम सामण्ण वस्स पडिपुण्ण ॥ ४२ ॥

अर्थात् जो सम्यक्दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक्चारित्र, इन तीनो मे युगवत् प्रवर्तत्ता है वह एकाग्रता को प्राप्त है ऐसा माना गया है और उसी का श्रामण्य—मुनिपना पूर्णता को प्राप्त होता है— मुनिपद का प्रयोजन निर्वाण धाम को प्राप्त करना, सिद्ध होता है।

जो श्रमण, अन्य द्रव्यो को प्राप्त कर उनमे मोह और राग द्वेष करता है वह अज्ञानी है तथा विविध प्रकार के कर्मो से बँदा को प्राप्त होता है। उसके विपरित जो श्रमण बाहृय पदार्थो मे मोह और राग द्वेष को प्राप्त नही होता है वह ज्ञानी है और निश्चित ही कर्मो का क्षय करता है।

श्रमण पद का इच्छुक गृहस्थ, बन्धु वर्ग तथा स्त्री पुत्रादिक से विरक्त हो दीक्षाचार्य की शरण मे जाता है और गद् गद् स्वर से गुरुचरणो मे निवेदन करता है —

णाह होमि परेसि ण मे पर णत्थि मज्झमिह किंचि।
इदि णिच्छिदो जिदिंदो जादो ॥

अर्थात् हे प्रभो। मै किन्ही अन्य का कुछ भी नही हूँ और न कोई अन्य मेरे है। मै इस बात का दृढ निश्चय कर चुका हूँ तथा स्पर्श-नादि इन्द्रियो पर भी मै पूर्ण विजय प्राप्त कर चुका हूँ। अतः मुझे अपने चरणो मे आश्रय दीजिये। दीक्षाचार्य उसकी भावनाओ की

परीक्षा कर उसे दिगम्बर दीक्षा देते हैं। आत्म कल्याण का इच्छूक श्रमण गुरु आज्ञा के अन्तर्गत अपनी चर्या का निर्दोष पालन करता है। ज्ञान ध्यान और तपश्चरण ही उसकी आत्म–साधना के साधन होते हैं। ज्ञानाराधना की प्रेरणा करते हुए कुन्द कुन्दाचार्य ने कहा है –

---

१ मुज्जदि वा रज्जदि वा दुस्सादि वा दव्वमण्णामासेज्ज।
जढि समनो आणाणी बज्झदे कम्मेहि विहिहेहिं ॥ ४३ ॥

२ अट्ठेसु जो ण मुज्झदि ण हि रज्जदि णेव दोस मुवयादि।
समचो जपि सो णियद खवेदि कम्माणि विविहाणि ॥ ४४ ॥

---

एयग्गगदो समाणो एयग्गं निच्छिदस्स अत्थेसु।
णिच्छिती आगमने आगमचेट्ठा तदो जेट्ठा ॥ ३२ ॥

आगम हीणो समणो णेवप्याण पर वियणादि।
अविजाणतो अट्ठे खवेदि कम्माणि किधमिक्स् ॥ ३३ ॥

आगम चक्खू साहू इन्दिय चक्खूणि सव्वयूदाणि।
देवा य ओहि चक्खू सिध्दा पूण सव्वदो चक्खू ॥३४ ॥

सव्वे आगम सिध्दा अत्था गुण पज्जरहिं चित्तेहि।
जाणति आगमेणं हि पेच्छिता ते वि ते समणा ॥ ३५ ॥

आगम पुव्वा दिठ्ठी ए भवदि जस्सेह सजमो तस्स।
णव्यीदि त्रणदि सुत्त असजदो होदि किघसमणो ॥ ३६ ॥

तात्पर्य यह हैं कि जो एक एकाग्रता को प्राप्त होता है वही श्रमण कहलाता है। एकाग्रता उसी के होती हैं जो पदार्थों का दृढ निश्चय कर चुकता है और पदार्थो का निश्चय आगम से होता है। अतः आगम को जानने की चेष्टा करना उत्तम हैं। आगम ज्ञान से हीन श्रमण, निज और पर को नही जानता हैं तथा जो निज और पर को नही जानता है वह कर्मो का क्षय कैसे कर सकता है? साधु का नेर आगम हैं। समस्त प्राणियो का नेर इन्द्रिय है, देवो का नेर अर्वाघ ज्ञान हैं और सिद्ध भगवान का नेर सब ओर हैं अर्थात उनका वर्णन आगम से उपलब्ध है। अत श्रमण उन सभी पदार्थो को आगन से

जानते है। जिस साधु को दृष्टि आगम पूर्वक नही है उसके सयम नही है ऐसा शास्त्र कहते है। अत सयम रहित मनुष्य श्रमण कैसे हो सकता है ?

आगम ज्ञान की प्रशसा के उपरान्त कुन्दकुन्द स्वामी कहते है कि श्रद्धा और चारित्र से रहित आगम ज्ञान भी कार्यकारी नही है। देखिये -

ण हि आगमेण सिज्झदि सद्दहण जदि हि एत्थि अत्थेसु।
सद्दहमाणो अत्थे असजदो वा ण निव्वादि ।। ३७

यदि जीवादिजीव पदार्थो का श्रद्धान नही है जो मात्र आगम ज्ञान से यह जीव सिध्द होने वाला नही है। तथा पदार्थों की श्रद्धा करने वाला प्राणी यदि असमत है चारित्र से रहित हैं तो वह भी निर्वाण को प्राप्त नही होता हैं। तात्पर्य यह हैं कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र की युगपत् प्राप्ति ही निर्वाण का अमोघ साधन है।

चरणानुयोग मे प्रतिपादित अट्ठाईस मूलगुणो का पालन करता हुआ श्रमण सदा आत्म साधना मे लीन रहता है। बाह्य प्रपन्चो से वह दूर रहता हैं। समन्त भद्रजी स्वामी के शब्दो मे साधुको कैसा होना चाहिये ? यह ध्यान मे रखने के योग्य है -

विषयाशावशातीतो निरारम्यो परीग्रह .।
ज्ञान ध्यान तपोरक्तस्तपस्वी स प्रशस्यते ।।

जो पन्चेन्द्रियो के विपयो की आशा से रहित हो, आरम्य और परिग्रह से रहित हो तथा ज्ञानध्यान और तप मे सलघ्न रहता हो - इन्हे सुरूचि पूर्वक करता हो वह तपस्वी प्रशंसनीय है।

"श्री वीतरागाय नमः"

# 'मानव जीवन की सार्थकता'

ले. बा ब्र शान्तिमती सागर

सयोजक श्री केद्र स्याद्वाद

शिक्षण महिला परिषद

---

श्रमण सस्कृति के अमर गायक आचार्य अमितगति ने ससार की चतुरशीति लक्ष योनियों मे मनुष्य भव को सर्व प्रधान अथवा सर्व श्रेष्ठ बताया है ! "भवेषु मनुष्यभव प्रधानम्' वस्तुत मनुष्य के समान अन्य कोई जीव पर्याय इतनी उत्कृष्ट नही है ! क्योकि बुद्धि का अपार भण्डार, ज्ञान का अक्षय विकास, विवेक की अपूर्व निधि और बल वैभव की सम्पन्नता का अपार समूह इस मानव को प्राप्त है। इस भ्रमण शील ससार मे उन्नति की ओर अग्रसर मानव अपने सपूर्ण विकसित चैतन्य से सभी प्राणियो से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध कर रहा है, यही मानव इस शरीर से आत्मा को भिन्न मानकर परमात्मा बनता है एव बना है अत. मानव के सिवाय किसी को सिद्धालय की उचाईया सुलभ नही है। आज मानव को कितने वैज्ञानिक साधन उपलब्ध है।

मनुष्य जन्म की सार्थकता का यह आधार निर्देशन है, क्योकि जीव की यह परिणति भौतिक हैं, अध्यात्मिक पूर्णता ही इसे पूर्ण कर सकती है। मानव की सपत्ती विवेक हैं, इस विवेक को क्षीर समुद्र के चौदह रत्नो से अमृत कलशो से और कुबेर की कोष सम्पदा से नही खरीदा जा सकता वह तो अमूल्य है, सृष्टि के समस्त पदार्थ एक ओर के पलवे पर रख दिये जाये तब भी दूसरी ओर रखी गयी इस आत्म सपत्ति का पलवा भारी रहेगा आत्म विज्ञान की खोज मनुष्य के भौतिक विज्ञान की समस्त उपलब्ध साधनो से ऊपर है उत्कृष्ट हैं।

हे भव्य मानव जो बाह्य दृश्य जगत और इसके पुदगल स्कन्ध जो स्त्री पुत्र, मित्रादि रुप मे दिखायी दे रहे है, ये सब साथी नही, सार विहीत है, ससार मे भ्रमण, तडपन कराने वाले है, मृगतृष्णा के विशाल सरोवर के समान है, जिस प्रकार नरियल का जटा है, न उसमे मिठास है और न क्षुधा शाति, उसी प्रकार ये सब स्वार्थी ससार है। इस ससार मे एक अनेकान्तात्मक ज्ञान ही अपना सच्चा साथी हैं, जिसक व्दारा आत्मा से आत्मा की दर्शनानुभूति करते हुए दर्शन ज्ञान एव चारित्र मय होकर अत मे समाधिलीन हो सकते है। मानव यदि विवेक रखता है, ससार की असारता समझता है तो ये दर्शन ज्ञान चारित्र को अपनाता है, नही तो दर दर की ठोकरे खाता है।

## ※——— विवेक हीनता पर दृष्टांत ———※

एक पुरुष बन मे प्रवेश करता है लकडी लाने के लिये, लकडी एकत्र कर थकावट दूर करने हेतु वह एक वृक्ष की शीतल छाया मे जा बैठा वहा उसे एक चितामणि रत्न हाथ लगा 'असने विचार किया कि यह पत्थर बहुत सुन्दर है, इसे घर ले चलेगे' वृक्ष के नीचे बैठे हुए उस लकडहारे के मन मे आया कि आज तो यही कोई ठण्डा जल पिला दे, बस देर ही क्या थी विचार आते ही निर्मल जल आ गया। उसे पीकर बडी प्रसन्नता हुई और विचारने लगा कि आज तो कई प्रकार के सुन्दर भोजन भी मुझे यही प्राप्त हो जाये। विचार करते ही कई देवांगनाये अनेक प्रकार के मिष्ट तथा नमकीनादि खाद्य पदार्थों के द्वारा सजाये गये थाल लेकर उसके समीप आ, कहने लगी कि भोजन कीजिये। ऐसा सुनते ही आनदित हो उठा उसका मन और वह जीमने लगा। देवाङ्गनाये हवा करती जाती है उसी बीच आता है एक कौआ और वह अपनी कटु वाणी मे बोलता शुरु कर देता है, उस पुरुष ने उस काग को उडाने के लिये उसी पत्थर को [illegible] दिया है। काग ने समझा कुछ खाद्य पदार्थ होगा ऐसा जान [illegible] उडा।

उसी समय देवाङ्नाये आदि सभी माया लोप हो गई, वह मूर्ख विवेक हीन अकेला बैठा रह गया। फिर सोचा ये सब उस हीरे अर्थात पत्थर की ही करामात थी एवं पछताने लगा। कहावत है–

**अब पछताये होत क्या चिडियां चुन गई खेत।**

अत अब सोचा विचारी करने से कोई लाभ नही जिस समुद्रसे मोती मिलने पर पुन. वही गिर जाये तो „मिलना वडा दुर्लभ है, इसी प्रकार हमे यह मानव जन्म प्राप्त हुआ है यदि विवेक एव ज्ञान से काम नही लिया तो पाना निरर्थक हो जायेगा। भर्तरिहरि ने नीति–शतक मे कहा है– येषा न विद्या न तपो न दानं ज्ञान न शील न गुणो न धर्म ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरुपेण मृगाश्चरन्ति ॥

अत जिस मानव मे विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील सदाचार एव धर्म नही है। वह मानव पृथ्वी पर भार स्वरुप पशु ही है जो मनुष्य के रुप मे विचरण करता है। अगर पशु की उपमा से रहना है और इस मुल्यवान नर जन्म की सार्थकता करना है तो हम अपने कर्तव्यो का पालन करे जो हम कोरी बातो का पुल बाधते रहते है, यह करूगा साधू बनूगा इन सब कल्पनाओ को छोडकर जिस समय जो विचार किया उसी को आचरण रुप लाए तो अधिक कहने की थोडा ही कार्य रुप मे ले लिया यह मानवजीवन सार्थक एवं महान होगा।

लेखिका ब्र. आदेश जैन

संघस्थ श्री १०८ गणधर मुनि कुन्थुसागरजी महाराज
एवं श्री १०५ आर्यिका रत्न गणिनी विजयमती माताजी

सर्वाभ्युदर्य सर्वोदर्य दोनो पर्यायवाची शब्द है। जिसका अर्थ है- सबका अभ्युदर्य, उदय, विकास। राजैलिक सामाजिक, शैक्षणिक, नैतिक, आध्यात्मिका सभी क्षेत्रो मे जीवो का सम्यक्विकास होना उत्थान होना सर्वाभ्युदय है। किन्तु इस प्रकार के अभ्युदय को जन्म देने की क्षमता जैन धर्म मे ही है यत. एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्यन्त समस्त जीवों के रक्षण की भावना यही दृष्ठिगत होती है। प्रत्येक भव्य जीव मे ईश्वरत्व शक्ति विद्यमान है, ऐसी जैन धर्म की मान्यता है, 'जीवा जिणवर जो मुणहि जिनवर जीव मुणेह। सो समभावं परिठ्ठिउ लहु लिव्वाण लहहिं॥ इसलिये सबकी विनय करो, तृण का भी अपमान मत करो। सभी जीवो के प्रति मृदुता का व्यवहार रखो, इस विषय पर बल डालते हुए आचार्य कहते हैं।

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं
विलष्टषु जीवेषु कृपा परत्वं
माध्यस्थभ वं वि रीत वृत्तौ
सदा ममात्मा विदधातु देव ॥

"मेरी भावना" पद्य में भक्त कहता है-

गुणी जनो को देख हृदय मे मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।

**होऊँ नही कृतघ्न कभी मै द्रोह न मेरे उर आवै ।**
**गुणग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषो पर जावै ।।**

विचार करे, मन्थन करे, चिन्तन करे और भारत की पुनीत संस्कृति को याद करे, कितनी गुरुता, गरिमा और गौरव भरा है। त्याग और संयम के तेज से जिसके अन्तस्थल की समस्त विकृतिया नष्ट हो चुकी है, वही मानव इस धरा पर पुनः समाजवाद, समानतावाद अथवा सर्वोदय की सृष्टि कर सकता है।

राष्ट्र को कल कारखानो से, गगन चुम्बी भवनों से निर्माण पथ पर अग्रसर नही किया जा सकता, उसका मूल धन तो श्रेष्ठ मानव है। सादा जीवन उच्चविचार ही सर्वाभ्युदय को ला सकता है। सात्विकता जीवन का वह समतल है, जिस पर प्रगति के पद चिन्ह अकित किये जा सकते हैं। समस्त विकास, अभ्युदय, उत्थान एवं पवित्रता को व्यक्त करने वाला मनुष्य का सात्विक जीवन है। सात्विकता वह शुद्ध हवा है जो प्राणी को एक नयी पुलक, उत्साह एव उमग से भर देता है, साथ ही दुर्भावनाओ के काले मेघ इससे टकराकर बह जाते है, नष्ट हो जाते है।

किन्तु सात्विकता का जनक वैराग्य है। जिसके अन्तस्थल मे ससार, शरीर, और भोगो से वैराग्य है, वही अहिंसादि पच महव्रत १० धर्म को धारण कर पापो से अपनी रक्षा कर सकता है। अनित्य, अशरणादि १२ भावनाओ के चिन्तन मे वैराग्य भाव पुष्ट होता है। द्वादश अनुप्रेक्षाये अभ्युदय मे विशेष रुप से सहकारी है। इनमे आत्म बल बढता है। आत्म विकास मे ही सर्वागीण विकास गर्मित है। कहा है 'धर्मेण निधनं श्रेय न जय पाप कर्मणा' धर्म पूर्वक मृत्यु अच्छी है, पाप की आधार शिला पर स्थित अभ्युदय अच्छा नही अस्तु' आत्म निरीक्षक, आत्म परीक्षक बनकर आत्म विशुद्धि आत्मोत्थान का प्रयत्न करे। आज हम श्रेष्ठ नही ज्येष्ठ बनने के लिये प्रयत्नशील है किन्तु स्मरणीय यह है कि श्रेष्ठ बन सकता हैं। यथा धनवान पुरुष धन का प्रयोग जब दान में करता हैं तभी उसे लोक महान कहते है।

बुद्धिमान अनेक है पर जो बुद्धिका उपयोग आगम के अध्ययन अध्यापन में करता है, वह श्लाघनीय हो जाता है अस्तु श्रेष्ठत्व से ज्येष्ठत्व की प्राप्ति होती है।

आत्मा का सच्चा हित आत्मज्ञान सहित धर्माचरण मे है। कहा है।

**अन्नेन गात्र, नयनेन वक्त्र न्यायेन राज्य लवणेन भोज्य।**
**धर्मेण हीन बत जीवितव्यं न राजते चन्द्रमसा निशीथम्॥**

जिस प्रकार अन्न के बिना शरीर की शोभा नही, आँखो के बिना मुख की शोभा नही है, न्याय के बिना राजा की शोभा नही, लवण के बिना भोजन की शोभा नही है उसी प्रकार धर्म के बिना जीवन की शोभा नही होती है। "धर्म पथ साधे बिना नर तिर्यञ्च समान' जिन धर्म ही समस्त सुख का भण्डार है।

आत्मानुशासन मे गुणभद्राचार्य ने लिखा है।

**'कृत्वा धर्मविघातं विषय सुखान्यनुभवन्ति ये मोहात्।**
**आच्छिद्य तरून् मूलात् फलानि गृण्हन्ति ते पापा॥'**

जो प्राणी अज्ञानता से धर्म को नष्ट कर विषय सुखो का अनुभव करता है, वह पापी वृक्षो की जड से उखाड कर फल को ग्रहण करना चाहता है।

लौकिक सासारिक सुख भी धर्म का प्रतिफल है अस्तु धर्म सेवन करे। इस धर्म के २ विभाग है-

१) मुनि धर्म २) श्रावक धर्म।

साधु पाँचों का सर्वथा त्याग कर आरम्भ परिग्रह मे सर्वथा विरत हो मात्र आत्मशोधन के कार्य में सतत् प्रयत्नशील रहते है। रत्नकरण्डश्रावकाचार में आचार्य साधु का लक्षण बताते हुए -

**"विषयाशावशातीतो निरारम्भो परिग्रह.।**
**ज्ञान ध्यान तपो रक्तस्तपस्वीस प्रशस्यते।"**

साधु मार्ग निवृत्ति मार्ग है और गृहस्थ मार्ग प्रवृत्ति मार्ग है। गृहस्थ पापो से पूर्ण विरत तो नही होता किन्तु देव शास्त्र गुरु के प्रति उसके हृदय मे श्रद्धा होती है अर्थात् वह सम्यग्दृष्टि तो होता है पर चारित्र मोहनीय का तीव्र उदय होने से विपय भोगो का त्याग करने मे सर्वथा असमर्थ होता है। ऐसा प्रवृत्ति मार्ग भी कथञ्चित् श्रेयस्कर है। इस विषय में आचार्य कहते है जिस प्रकार हायड्रोजन और ऑक्सीजन के मिलने से जल की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार मोक्ष मार्ग तक जाने हेतु गृहस्थ चर्या और मुनि चर्या है, यदि इनमे से एक भी पङ्गु हो जाय तो मोक्ष प्राप्त नही होगा।

सम्यक् श्रावक के अन्दर किन २ गुणो का सद्भाव आवश्यक है, इस पर प्रकाश डालते हुए आचार्य कहते है--

**न्यायोपात्त धनो यजन्गुणगुरुन् सद्गीस्त्रिवर्ग भजन्।**
**अन्योन्यानुगुणं तदर्हगृहिणी--स्थानालयो ह्रीमयः॥**
**युक्ताहार विहार आर्य समिति प्राज्ञः कृतज्ञो वशी।**
**श्रृण्वन् धर्मं विधि दयालुरघभीः सागार धर्म चरेत्॥**

उपर्युक्त १४ गुण जिस श्रावक के अन्दर हो, वह श्लाघनीय है। वही आत्मोन्नति के साथ २ देश और राष्ट्र का अभ्युदय करने मे समर्थ होता है।

१) न्यायपूर्वक धनोपार्जन करना २) गुण और गुणी की पूजा करना ३) पर निन्दा और कठोरता आदि दोष रहित प्रशस्त तथा उत्कृष्ट वचन बोलना ४) निर्बंध त्रिवर्ग का सेवन ५) त्रिवर्ग योग्य स्त्री ग्राम गृह का सद्भाव ६) उचित लज्जा ७) योग्य भोजन विहार ८) सत्संगति ९) विवेक १०) उपकार स्मृति ११) जितेन्द्रियता १२) धर्मश्रवण १३) दयालुता १४) पापभीति। इन १४ गुणों से सच्चे, श्रेष्ठ श्रावक की पहचान होती है। ऐसा श्रावक सतत् मुनि धर्म की वाञ्छा करता हुआ सतत् कर्मो की निर्जरा करता रहता है। कर्म निर्जरा या कर्मक्षय से ही संपूर्ण अभ्युदय, सम्यक् विकास सम्भव है।

जिसका जीवन सर्वत, सभी क्षेत्रो मे विकासोन्मुख हो, वही सर्वाभ्यु-दय के पथ पर आरुढ कहा जाता है।

विपत्ति आने पर भी जो अपने कर्तव्य अथवा धर्म को नही छोडता है, वही प्रात कालीन सूर्य के समान अपनी प्रभा से भूतल को आलौकिक करने मे समर्थ है। सती अन्जना, मनासुन्दरी, चन्दनबाला, महारानी सीता के पावन जीवन चरित हमे अभ्युदय की कला सिखाते है। अनेक सघर्षो के बीच भी मानव अपना विकास कर सकता है। सेठ सुदर्शन की कथा को पढने से ब्रम्हचर्य की महत्ता का परिज्ञान होता है। ब्रम्हचर्य रूप भाव की जागृति होती है। पुरूषोत्तम राम का आदर्श आज भी हमारे विकास मे सहायक है। अधिक क्या कहा जाय भारत की पुनीत सस्कृति हर समय मुझे पुकार पुकारकर कह रही है कि हे आर्यपुरुपो ! विषयभोगो से विरत होकर आत्म स्वभाव मे आ जाओ। आत्मस्थ पुरुष ही सर्वाभ्युदय की चरम सीमा को प्राप्त कर सकता है।

# यही है जीवन

० कवी ०

दिव्य ध्येयकी ओर तपस्वी
जीवनभर अविरत चलना है।
जीवन एक रात है
तो कल सुबहकी पहचान करना है।
महकसे फूलको सजाना है।
जीवनको फूल बनाना है।
सपने और अरमानो को भूलकर
वास्तवताको अपनाना है।
सूरजकी ओर बढ़ना है।
और जीवनकी ओर चलना है।

यह नंगेकी दुनिया है भाई
यह नगो का बजार है
अगर तू नगाही चला आया है।
तो नगाही चले जानेवाला है
सबकी बिदाई यहाँ से होनेवाली है।
सबको यही छोडके चले जानेवाला है।
अगर ले जानेवाला है। –
तो सिर्फ अपने कर्मोका फल ले जानेवाला है।
और बदले मे इस मिट्टीका कर्जा
मिट्टी कोही चुका के देनेवाला है ॥

# "जीवन का लक्ष्य"

**– ब्र. अनिता जैनसागर –**

---

जिस प्रकार पक्तिका साथ छोडकर सघन अधकार मे टिम-टिमानेमेही दीपक के प्रकाश की सार्थकता है, बादल छोडकर अकेले धूलकणो मे समा जानेपर भी जलबिंदू के अस्तित्व की परिपूर्णता है, उसी प्रकार मानव जीवन की भी परिपूर्णता, सफलता, अपने लक्ष्य की पूर्ती में अर्थात् गन्तव्य स्थान को पा जाने मे है। जीवन सभी जिते हैं, पर उनका ही जीना सार्थक और सफल है, जो अपनी मजिल तक ले जानेवाले मार्ग पर आरूढ है और उसे पा लेते है।

जीवन जीना भी एक कला है; जो जीने की कला को जान लेता है उसकी अनादि भटकन, तड़पन समाप्त हो जाती है, वह अपने लक्ष्य में सफल हो जाता है. अत हमें लक्ष्यहीन जीवन नही जीना चाहिये। हमारे जीवन का एक लक्ष्य हो, एक मार्ग हो, जिस पर हम अबाध चल सकें।

हमारे जीवन का लक्ष्य स्वभाव के प्राप्ती के साथ सफल जिव-सृष्टी के प्रति वात्सल्य भावना को लिए हो, जो हमारे आत्म-स्वरूप की प्राप्ती मे साधक है। हम स्वय तो जीए, पर दुसरोको भी कुछ दे सके, ऐसी निःस्वार्थ त्याग भावना भी हमारे जीवन का लक्ष्य होना

चाहिये। हम अपने कर्तव्यो को पहचाने और तदनुरुप अपने आचार-विचार मे समन्वय लाय। यह एक साधना होगी; और साधना का मार्ग एक ऐसी गुरुतम पद्धति है, जिसमे इच्छा निरोध, अहम् विसर्जन और, तृप्ति (सतोष) समाहित हैं। अधिकाअधिक सतोष और तृप्ती पा लेना अपने आप मे पश्मोपलब्धि है।

हम अपने प्रस्तुत जीवन मे क्रम-क्रम से दैनिक जीवन की आवश्यकताओ की पूर्ति कर, शेष संग्रह को दुसरो के लिए त्याग कर परिग्रहको परिमार्जित करे। परिग्रह परिमार्ज ही वह मार्ग है, जिस में सतोष जन्मता है; और जीवन साधुता की ओर अग्रेसर हो सकता हैं। अनावश्यक आवश्यकताओ और आकाक्षाओ को भी दुसरो के परमार्थ समर्पित कर प्रवृत्ति से निवृत्ति मार्ग की ओर चरण बढाओ। यही है सफलता हमारे जीवन की।

अनेको महान आत्माओने अपने अपने कालमे जन्म लिया; और अपने गतव्यस्थान की प्राप्ति की है। हम उनके जीवन-वृत्त देखेगे तो पायेगे कि, उन सब महान आत्माओ का "चाहे वह भगवान महावीर हो, भगवान राम हो या महात्मा बुद्ध हो" सभी का प्रमुख उद्देश कल्याण के साथ साथ सर्वकल्याण रहा है। भगवान महावीरने कहा है,

"परस्परोपग्रहो जीवानाम्"। जीव परस्पर मे एक दुसरे का उपकार करते है, और सम्यक्चारित्रकी परिपूर्ण के ध्येय को ध्यानमे रखकर चरम समाधिस्थ हो स्वयं को पा जाता हैं।

सि. चक्रवर्ति नेमिचद्रचार्य गोम्मटसार मे कहते है,

अण्णोण्णुवयारेण च जीवा<br>
वट्टति पुग्गन्ताणि पुणो,<br>
देहादीणिव्वत्तण कारण मूदा<br>
हु णियमेण ॥ ६०६ ॥

जीव परस्पर मे उपकार करते हैं। एक जीव दुसरे जीव की सेवा व उपकार करकेही जीवित रह सकता है। अत जीवन का लक्ष्य उपकार करना अवश्य होना चाहिये। उपकार करनेसे जीव इस लोक

मे ही नही परलोकमे प्रशसा का पात्र रहता है। धर्म स्वतक सीमित नही है। विशाल है आत्मकल्याण का मार्ग ही परकल्याण का कारक है। कहाँ भी है,

May I always feel and think
To act in a ...... and simple way.
May I always do good to others
As long as I can do every day.

तो हमारे जीवन का तो प्रमुख उद्देश तो मुक्ती होना चाहिये परकल्याण होना चाहिए और उसको जो साधक तत्व है, आचार-सहिता है, सत्यमार्ग है, उस पे निष्ठ होकर आरूढ होना चाहिए। यही सफलता है, चरमोपलब्धी है, सार्थकता है, मानवी जीवन की।

" ओम् शान्ति "।

**लेखक : १०५ क्षु. कीर्तिमती माताजी**

आत्मा का पर से भिन्न एकत्व स्वरुप बतलाकर वैराग्य रसका सिचन करते हुअे, चैतन्य की आराधना की प्रेरणा देते हुअे, आचार्य देव कहते है, हे, आत्मन ! चारो गति के भ्रमण में या मोक्ष की आराधना मे तू अकेलाही है अन्य कोई तेरा साथी नही ऐसा एकत्व स्वरुप जान कर तू अकेला अपने परमतत्व मे ही स्थित रह ।

नियमसार गाथा १०१ मे एकत्व भावना का वर्णन करते हुए कहा है –

एगो य मरादि जीवो एगो ए जीवदि सयं
एगस्थ जादि मरण एगो सिज्झदि णिरयो ॥ १०१॥

अनादि अनत कालसे अकेला आत्मा अन्य किसी सहायता के विना नि सहाय रूप स्वय ससार या मोक्षरुप परिणामित होत रहा हैं। ससार मे प्रत्येक जीव की आयुस्थिति प्रतिसमय अल्प हो रही है। अर्थात आयु की ठानिरूप मरण प्रतिसमय हो रहा है। आयू के रचकण प्रतिक्षण दौडते जाते है, जिसे इन्द्र भी नही रोक सकता। आयू समाप्त हो जानेसे इन्द्र को भी वैभव छोडना पडता है। आयू पूर्ण होने पर एक भव दूसरे भव मे जाते हुए जीव को क्या कोई रोख सकता है? नही, वह असहाय रूप से ससार मे जन्म मरण करता है। रात को सोनेवाला यह जीव सबेरे उठेगा या नही ऐसा विश्वास भी नही किया जा सकता। चाहे सम्राट हो हजारो लाखो सेवक या बडे बडे वैद्य उसके समीप हो, मृत्युसे छुडाने मे समर्थ नही हैं इसी असहायता को तो देख कर हे आत्मन्! तू अपने एकत्व स्वभावको पर से पृथक देख तो सही! तभी तुझे सच्चा सुख मिलेगा। ससार मे शरीर धारण कर के भव भव में भटकना पडे यह तो शर्म की बात है। उससे छूटकर अशरीरी हो तो यह गौरव की बात है। देखो ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति की आयू ७०० वर्ष की थी, वहाँसे मरकर कहाँ गया? नरक मे, ३३ सागर वर्ष की आयू दुख भोगने के लिए। चक्रवर्ति पदके एक एक क्षण विरूद्ध उसने असख्यात वर्ष उसने नरक का दुख सहन किया। चक्रवर्ति होते समय 'उपभोगो' में भी उसका कोई सहायक नही था, और अब नरक मे ही अकेले अपने दुख भोग रहा है। अरे भाई, आचार्य देव तेरा एकत्व स्वभाव बतलाकर स्वाश्रित मोक्षमार्ग साधने को कहते हैं- तू अकेला, जगत मे तुझे किसकी ओर देखकर अटकना है? पराश्रयसे तूने अनन्त जन्म-मरण किये, अब तो उनका पल्ला छोडा कोई (स्त्री-पुत्र-मित्रादिक) सुख दुख मे सहायक नही होते, वे तो मात्र अपनी आजीविका के लिए ठगोकी टोली की भाँति तेरे साथ चल रहे है। उनकी सहायता लेने जायेगा तो लुट जायेगा – तेरी चरित्र सम्पदा छिन जायेगी, इसलिए उनकी ओर मत देख, अपने स्वरूप मे दृष्टि डाल। अरे; त्रिखण्डाधिपती को भी पिने को पानी नही मिला, और सगे भाई के हाथ से मृत्यु हुई। अरे भाई इस दु खरूपी ससारमे कौन शरणभूत है? मुझे मराठी का एक काव्य याद आता है –

हे समज मना, विचार करुनी पाही। तव जीवलग कोणी नाही ।।
तू सोड जीवा माता-पिता घनदासा क्षणी भाव भावना बारा ।।
कोणी भोगितसे सगितसे सपत्तीचे सौख्य। कोणी भोगी अगणित दु ख।।
श्रम करूनि जीवा नच पोटभरी अन्न। दिनरात भोगी कोणी चैन ।।
वहीवाट ही ससाराची।सुख दु खी रक रावाची। भोगितो जीव एकची
सुख दु खाचा भोवता तू असणारा ही एकत्व भावना धार।।
आत्माकी ऐसी एकत्व भावनाने परिणमित सम्यकज्ञानी कैसे होते है ?
वे अपने आपका कैसा अनुभव करते है ? तो कहते है की --

एकोमे सासदो आप्पा णाण दसण लक्खणो।
से मामे बहिरा भावा मव्वे सजोग लक्खा ।।

सासारिक विकल्पो के कोलाहल से रहित ऐसी मेरी सहजशुद्ध ज्ञान चेतना मे अतिंद्रिय आनद सहीतउपभोग करता हूँ। और मेरे अनुभव मे आया हुआ जो शाश्वत ज्ञान-दशनमय एक स्वभाव उसके सिका अन्य सब परम भाव मुझसे बाह्य नाटच है। ऐसे निजस्वरूप का ज्ञानी अेकत्व भावना द्वारा अनुभव करता है।

एक थालीमे एक साथ बैठकर भोजन करने वाले तीन व्यक्ति-योमे एक उसी भव मे मोक्ष जानेबाला होता है, एक स्वर्ग मे जाता है, और एक नरक मे जाता है। इन प्रकार अपने अपने परिणामो से जीव अकेलाही स्वर्ग-नरक मे या मोक्ष मे जाना है। अरे भाई मेरा एकत्व चैतन्य तत्व-जिसमे विकल्पोका कोलाहल नही है, जिसमे दूसरो-का सयोग नही है, ऐसे परमतत्व को स्वानुभव मे लिए बिना भव-भ्रमण का अन्त नही आ सकता। इसलिए अकेला-असग होकर अतर की गुँफामे परमतत्व को खोज कर उसमे स्थिर हो, जिससे तू अके-लाही अपने मे अपने परम आनन्द का उपयोग करेगा, सच्चे सुख को, पायगा।

# आत्म सिद्धि का उपाय

लेखक : विद्वत्रत्न पं. सुमेरूचंद दिवाकर न्यायतीर्थ शास्त्री
धर्म दिवाकर-सिवनी B A LL. B. (M P)

**साधक :-**

अपनी वास्तविक और अविनाशी आनदमयी स्थिती को प्राप्त करने मे प्रयत्नशील जिन आध्यात्मिक विभूतियो का स्वय जीवन ज्योतिर्धर का काम करता है, उन्हे साधु या सत सज्ञा प्राप्त होती है। साक्षर व्यक्ति वाणी और लेखनी के माध्यमसे साधु का काम करता हुआ दिखाई दे सकता है, किंतु उसके साथ उज्ज्वल जीवन की आतरीक ज्योति न रहने से वह साधना से अपरिचित व्यक्तियो के लिए यथार्थत. हितकारी नही होता है। आत्म विकास का परमसाधन भगवती अहिसा की परिपूर्ण साधना है। इसके अभाव मे वास्तविक साधुत्व का अस्तित्व ही असभव हो जाता है।

**अरिहंत :-**

जैन धर्म मे अहिसा की श्रेष्ठ ज्योति को धारण करने वाली परम पुनीत आत्मा को शत्रु का संहारक-अरिहंत कहा है। सहारक को अहिसा का परिपालक सुनकर कुछ अद्भुतपना सा अनुभव होता है। यथार्थ मे चिंतन व्दारा यह समस्या सुलभ जाती है। धवला-टीका में आचार्य विरसेन स्वामी ने लिखा है "अरिः मोह तस्य हननात्, अरिहत कहा जाता है।

**मोक्ष-शत्रु :-** तत्वानुशासन शास्त्र मे

बद्य हेतुषु सर्वेषु मोहश्चवकी प्रकीर्तित. ।
मिथ्याज्ञान तु तस्येव सचिवत्व मशिश्रियत् ।।१२।
ममाहकार ना॰नौ सैन्यानी च तत्सुतौ ।
यदायत सुदुर्भेद. महिव्यूह प्रवर्ततते ।।१३।।

नागसेन आचार्य ने आत्मा को पतित करने वाली सामग्री मे मोहनीय कर्म को चक्रवर्ती कहा है । उस मोहका आश्रय प्राप्त कर ज्ञान भी विपरीत रुप हो जाता है । यह ज्ञान मोह का महासचिव है । अहकार और ममकार नाम के मोह से प्रसूत दो पुत्र है, । जो मोह की सेना के मुख्य सेनानायक है ।

यह जीव 'मै' को भूलकर 'अह राजा, इद मम गृह अय मे पुत्र. आदि रुपसे अहकार और ममकार के कारण स्वय को नाना रुप से सोचा करता है । पुज्य पाद महर्षी कहते है अनतानत धी शक्ति - मै अनतज्ञान, अनत शक्ति का भडार हूँ । इस परम सत्य को मोह के कारण यह जीव नही समझ पाता है । इष्टोपदेश मे लिखा है-

मोहेन सवृत ज्ञान स्वभाव लभते नही
मत्त पुमान पदार्थाना यथा मदन कोद्रवै. ।।७।।

मोह के कारण अच्छादित ज्ञान वस्तू के स्वभाव (निज रुप) को नही जान पाता है । जैसे मादक कोदो के सेवन व्दारा उन्मत्त व्यक्ति यथार्थ स्वरुप को नही जानता है ।

**मोह विजय :-**

इस विषय मे सभी पुरुष महमत है कि मोह विजय आध्यात्मिक स्वतत्रता के लिए परम आवश्यक है, किंतु उसका यथार्थ उपाय क्या है इस विषय मे स्पष्ट मार्ग नही दिखता है । इस सम्बध मे जैन साधको से महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त होता है । मुद्राराक्षस सस्कृत के के अति प्राचीन नाटक का एक पात्र कहता है -

'सासण-महताण पडिवज्जह' अरिहतो की शिक्षाओ को अगीकार करो ।

क्यो ? 'मोह बहिवेज्जाण-' ये अरिहत मोह व्याधि के निवारक वैद्यरुप है ( अक ४ )

इस प्रमुख शत्रु मोह के महासकट से किस प्रकार विमुक्ति मिले यह विकट समस्या है। यह समस्त ससार यथार्थ मे Temp'e of Maya माया का मदिर है। इसके भीतर रहने वाला जीव मोह-रोग से आकात हो जाया करता है।

**मोह के प्रकार :–**

महाश्रमण भगवान ज्ञातृपुत्र महावीर ने कहा था। मोह दो प्रकार का है। १) दर्शन और २) चरित्र मोह है। जिससे आत्मा विवेक विहीन वन वाहरी वस्तुओ द्वारा शाति और उनमे अपने 'स्व' को खोजता है, वह दर्शन मोह कर्म है। इससे यह जीव आँख वाला अधा इस अभिमान को प्राप्त करता है। पारस पुराण मे मूधरदासजी ने कहा है –

लोचन हीने पुरुष को अध न कहिए मूल।
उर लोचन जिन के मुदे, ते आधे निरमुल।

मोही जीव को सत्पुरूष कहते है–

मृग नाभि मे सुगधी सुधे वो धास गधी।
दुनिया सभी है अधी समझे नही इशारा ॥
महबूब मेरा मुझ मे है मुझको खबर नही।
ऐसा छुपा है परदे मे आता नजर नही ॥

**मोह क्षय का उपाय :–**

यह महान आश्चर्य की बात है, कि शरीर मे स्थित चैतन्य मूर्ति आत्मदेव की दर्शन मोहनीय कर्म के कारण झाकी भी नही मिल पाती। योगीश्वर कहते है।

तिलमध्ये यथा तैल दुग्धमध्ये यथा घृतम्। काष्ठमध्ये यथा वन्हीः, देहमध्ये तथा शिव ॥

स्वर्गीय महान दिगबर जैन महर्षि आचार्य शातीसागर महाराज ने परलोक यात्रा के पूर्व ३६ दिन का उपवास किया था। उस अद्भूत आत्म-विशुध्दि की मगल समय मे उन्होने ८ सितबर सन् १९५५ को सध्या के समय कहा था "दर्शन मोहनीय का क्षय करो। आत्म चिंतन से दर्शन-मोह का क्षय होता हैं। कर्मो की निर्जरा भी आत्म चिंतन होती है।"

आतमा के विषय मे आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है :-

**एगो मे सासदो आदा णाण- दसण-लक्खणो ॥**
**सेसा मे बहिरा भावा सव्वे संजोगल क्खणा ॥**

मेरा आतमा ज्ञान् तथा दर्शन लक्षणवाला है, वह एक है अविनाशी है। शेष पदार्थ मुझमे भिन्न है। वे सयोग लक्षण युक्त है। यथार्थ मे वे मेरे आत्मस्वरुप नही है।

उच्च आतमसाधक गुणभद्र आचार्य ने कहा है 'अकिंचनोऽहं' मै अकिंचन हूँ, अर्थात मै अव्दैत आत्मा हूँ। इस प्रकार के चितन व्दारा साधक श्रेष्ठ आध्यात्मोकर्ष की प्राप्न करना है।

आतमा के व्दितीय किंतु यथार्थ मे अद्वितीय शत्रु चरित्र मोहनीय के विषय मे आचार्य शातीसागर महाराज ने कहा था। सयम धारण करो, डरो मत। सयम के बिना उच्च आत्मानुभव नही होता। उसके बिना चरित्र मोह का क्षय नही होता। प्रमादी और अकर्मण्य व्यक्ति सयम के प्रति विमुख बन आतमशोधन का प्रयत्न करते है। इस भ्रात मनोवृत्ती वालो को प्रकाश देते द्वार आचार्य श्रीने कहा था, 'तुम्हे आत्मचिंतन नियमत करना चाहिए। उसके साथ सच्चरित्र भी बनने का उद्योग करते रहना चाहिए। इन दोनो प्रवृत्तियो के द्वारा यह जीव मोह क्षय कर अरिहत बनता है। मोक्ष प्राभृत का यह कथन अत्यत मार्मिक है।

तामण णज्जइ अप्प विसएसु णए पवेहए जाम।
विसए विरत्त चित्तो जोई जाणे इ अप्पाण ॥६६॥

जब तक आत्मा विषय भोगो मे आसक्ति युक्त रहता है, तब तक वह अपनी आत्मा को नहीं जान पाता। जो योगी विषय से विरक्त चित्त होते है, वे आत्मा को जानते है।

आत्म सिद्धी के लिए अध्यातम विज्ञान और संयम साधना आवश्यक है। सत्संयम के माध्यम से साधक बहिर्मुखता का परित्याग कर अंतर्मुख बनने की समर्थ सामग्री प्राप्त करता हैं। आत्मसाधना का कर्म उपपदो में परा विद्या श्रेष्ठ ज्ञान के अंतर्गत माना गया है अज्ञानी व्यक्ति सच्ची आत्मसिद्धी के रहस्य को नही समझ पाता। यह कथन सत्य हैं।

परख सकती नही रत्नो को हर इंसान की आंखे।
दिखाई ब्रम्ह क्या देवे जो न हो ज्ञानकी आंखे।

आत्मसिद्धी के लिए विशुद्ध आत्मविश्वास, आत्मज्ञान तथा श्रेष्ठ चरित्र रुप त्रिवेणी साधक को निमग्न होना आवश्यक है। इन के ही कर्म फल का क्षय हो जाने से आत्मा अकलंक होती हैं। उसे परमात्मा मान साधक गण सदा प्रणाम करते है।

**वितराग भक्ति :-**

आत्मसिद्धी रुपी प्रासाद का आरोहण हेतु विशुद्ध जिनेंद्र भक्ति आवश्यक है। कर्मपटल रेसीसे दबा हुआ चैतन्य रत्न की प्राप्ति के लिए भक्ति रुपी कुदाली का प्रहार चाहिए, ऐसा वादिराज सूरि एकीभाव स्त्रोत्र (पद्य १५) ये कहते है। जिनेन्द्रि की भक्ति तिर्थंकर पद प्रदाण करती है निर्वाण की जानती है, ऐसा आचार्य समंतभद्रने कहा है। बिपत्ती के सामरी जीव को मिलने वाली दुषित रागादि दुस्प्रवृत्तयों का क्षयभक्ति से होता है। पापका पहाड भक्ती के व्दारा नष्ट हो जाता है। कुंदकुंद स्वामी जैसे महान आध्यात्म विद्या के आचार्य भक्ति को मुक्तीप्रदायी मानते है। वह भाव पाहुड की देशना माननीय हैं।

जिणवर-चरणम्बुहह जयति जे परमयक्ति-शारण
ले जन्म हेलि मुल खणति वर-भाव-सत्थेण ।।१५१।।

जो श्रेष्ठ भक्ति संयुक्त हो जिनेश्वर के चरण कमलो को प्रणाम करते है वे महान विशुद्ध भाव रुपी शस्त्र के व्दारा जन्म जरा मरण रुप ससार की वेळ का अच्छेदन करते है ।

भक्ति तथा सदाचार शुन्य व्यक्ति स्मप्रथे भी आत्मोत्कर्ण नही कर सकता हैं। जिन शास्त्र की भक्ति, जिनवाणी के अनुसार इद्रियों तथा कष्षायो का दमन करने वाला साधक आत्मासिद्धी के पथरी प्रगति करता हैं ।

# अहिंसा परमोधर्म

— लेखक —

**गजानन शास्त्री देसाई ज्योतिषी**

यह उक्तिका अर्थ सब लोगोको मालुम होगा, लेकिन विद्यार्थीयों जैसा पाठातर करनेसे फायदा नही, इस वचनका सारासार विचार चालू जमानेमे उसका कुछ उपाय करके समाज सुधर जानेके लिये कुछ फायदा होता है, या नही, ये देखना चाहिये। यह सोचना हम-सामान्य लोगोके लिये अधिकतम है।

आज-कल 'धर्म यह अफुकी गोली है', निधर्मी समाज होना चाहिये, निधर्मी राज होना चाहिये, प्रगति मे धर्म यह राह रोकनेवाला है। इस तरह की कल्पना प्रचलीत है। याने कुछ लोग ऐसे समज पाते है की, यदी हम यह धर्म की बातको दूर हटाएँ, तो हम प्रगत हो जायेगे, हममे एकत्वकी भावना पैदा होगी। और हमे सुख, ऐश्वर्य प्राप्त होगा। यह ख्यालमे रखना चाहिये।

धर्म यह महत्वपूर्ण है 'उध्दरेदात्मनात्मानम' हम लोगोका उध्दार करनेवाली यह बात है। हम हिंदु, जैन, पार्शी, बौध्द, ख्रिश्चन मुस्लीम इत्यादी कौनसे ना कौनसे धर्म के लोग है।

इश्वर ने यह जग निर्माण किया हो, या अन्य किस प्रकार उसका निर्माण हो गया हो, लेकिन वह जग हम देख सकते हैं। उसमे

रहनेवाले अनेक प्राणीयोमेसे 'मनुष्य' यह सबसे जीदा ज्ञानी प्राणी है। मानव ने अपनी जरूरतो का हल करने के लिये और दूसरोको विना नुकसान पहुँचाये। अच्छे बर्ताव के लिये, कुछ नियम बनाये होंगे। क्यो कि हम लोग अपनी जरूरत को पूरा करने के लिये सब कुछ करने के लिये तैयार होते है, याने किसीको जानसे मारनेका बुरा बर्ताव करते है। उस वक्त हम कुछ सोचते भी नही। यह सब जानते है और इस कारण यह नियम बनाये और यह नियमकोही धर्म कहते है। महाभारत मे धर्म की व्याख्या करते हुअे भगवान व्यासजी कहते है, 'धारणा धर्म मित्याद् धर्मो धारयते प्रजा यस्यात धारण सयुक्त सधर्म इति निश्चय:' 'धृ' याने धारणा समाज की धारणा, प्रजा सुस्थिती मे रहने के लिये नियमो की आवश्यकता है यही नियम को धर्म कहते है। इन्ही नियमोका पालन करता यह भगवान के अनुकूल है, यह कल्पना का, इस विषय मे विवेचन किया है। यही धर्म का मूल है, इसको यदी आजके जमानेमे लोग धर्म नही कहते, तो भी उस नियमोके नुसार वर्ताव करते है

इस लेख का ज्यो शीर्षक है, उसमे धर्म के बारेमें अहिंसा को महत्व पूर्ण स्थान है। अहिंसाके, मेरे खयालसे दो प्रकार होते है। एक शाररिक हिंसा और दुसरी मानसिक हिंसा, इन मे से शारिरीक हिंसा, हम अपने आँखोसे देख सकते है और मानसिक हिंसाको देख नही पाते। लेकिन वह बडी खतरनाक होती है। शरिर से आदमी एक दफा ही मारा जाता है, लेकिन उसके मनपर ज्यो मानसिक हिंसा होती है, उसकी बार-बार याद आना, यही, बडी हिंसा है इस मे कोई आशंका नही।

गीता मे ईसका वर्णन है, कुछ भी हो, इस तरहका शरिरिक या मानसिक नुकसान, किसीको नही पहुंचना यह, अच्छी बात समजी जाती है, और तज्ञ लोक इसे सच्चा धर्म मानते है।

यदी सब लोग इस प्रकार नही सोचते होंगे तो भी उपर लिखें हुअे गुणोका थोडेमे पालन करना भी कोई कम नही। दया धर्मका मूल है, इस न्याय से हम मे ज्यो दया प्राप्त होगी, वह बडा कार्य

फैरेगी। इसके कारण हम में आपसी-प्यार, सहानुभुती, दया प्राणी-मात्र के तरफ दिखायीदेगी आत्मा, आत्माको पहचानेगा और दुसरो का दूख, अपना दुख और दूसरो का सुख यह हमारा सुख, यह भावना पैदा हो के धर्म की भिन्नता नष्ट हो जायेगी। ऐसी परस्पर प्रेम की भावना मे धर्म की रुकावट कहाँ आ जाती है? ईश्वर-कभी खोज करने की कोई जरुरत नही, उस मे आपको ईश्वरत्व मिलेगा।

धर्म, आप माने या ना माने, उपरयुक्त भावना हम मे प्राप्त हो गयी, तो बडा महत्वपूर्ण काम हो गया। मनुष्य जनम का सार्थक इस मे है। यह सोचने मे कोई सदेह नही। इस मे देश की-समाज की व्यक्तिकी भलाई, कल्याण हो जायेगा। यह कल्याणप्रद कार्य, हमेशा के लिये, महान तपस्वी, त्याग मूर्ति १०८ विमलसागर महाराज करते है। वे संसार रुपी सागर में "दीप" जैसे है। इनकी आज ६५ (पैसठवी) वरस गाठ है। भगवान से यह नम्र प्रार्थना है की, इस तरह की इनकी अनेक बरसगाठ मनाने का हमें योग दे। और हम जैसे सामान्य लोगो को, उनका उपदेश और मार्गदर्शन हमेशा मिले।

इस प्रकार, जिन्होंने १९८० का यह चातुर्मास, परमपूज्य विमलसागर महाराज और उनके साथ २०-२२ साधु और साध्वी इनकी उपस्थितीमे मनाया, लाखो रुपयोका खर्च करके कष्ट उठाके, हजारों श्रावकोंको पुण्यसंचय करनेका योग प्राप्त किया, ऐसे परम उदार भक्त राज श्रीमान रिखबलाल गुलाबचद शहा (नीरावासी) म्हसवडवाले और उनकी परमभक्तिमार्गी पतिव्रता सौ लीलावती भाभी इनका "ऋणनिर्देश" करने के बीना रहा नही जा सकता। इस तरह की पवित्र, पुण्यकारक कार्य, इन दोनो के तरफसे अनतकाल हो जाये। ऐसी महाराजजी की चरणो में हार्दिक प्रार्थना।

यह सीधा-साधा लेख लिखने की आज्ञा करनेवाले महाराज, इनके चरणो मे शतश: प्रणाम कर के यह लेख पूरा करता हूँ।

॥ श्री ॥

# मन्गलमय श्रुत का अवतरण

लेखक · श्री. प. दयाचन्दजी साहित्यानाथ सागर

जिसके द्वारा यह आत्मा, भूत भविष्यत् वर्तमान कालसम्बन्धी समस्त छह द्रव्य, उनके गुण और उनकी समस्त पर्यायोंको जानता है उसे ज्ञान कहते हैं । "जानति, ज्ञायते अनेन, ज्ञप्तिमात्रवा ज्ञानम्" इस विग्रह के अनुसार संस्कृत व्याकरण मे ज्ञानर्थक ज्ञा धातुसे कर्ताकरण एवं भाव साधन मे ज्ञान शब्द की सिद्धी होती है । ज्ञान के आवारक कर्म की अपेक्षा से ज्ञान के पाच विभाग सामान्यदृष्टिसे होते हैं १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मन पर्ययज्ञान, ५ केवलज्ञान । मतिज्ञानावरणकर्म के क्षयोपशम से मतिज्ञान श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशन से श्रुतज्ञान, अवधिज्ञानाबरण कर्म के क्षयोपशम से अवधिज्ञान मन पर्यणज्ञानावरण कर्म के क्षयोणशम से मन.पर्ययज्ञान और केवलज्ञानावरण कर्म के सम्पूर्णक्षय से केवलज्ञान का उदय होता है । इससे सिद्ध होता हैं कि पाच ज्ञानो मे से पूर्व के चार ज्ञान क्षायोपशमिक और अन्त का एक ज्ञान क्षायिणक होता है ।

उक्त पांच प्रकार के ज्ञान तीनभागो में विभक्त हैं १ परोक्षज्ञान २ एक देश प्रत्यक्षज्ञान । ३ सर्व देश प्रत्यक्षज्ञान जो ज्ञान इन्द्रि ज्ञान इन्द्रिय, मन, प्रकाश, उपदेश आदि बाह्य निमित्तो से तथा मतिज्ञाना-वरण, श्रुतज्ञानवरण का क्षयोपशम रुप अन्तरग निमित्त से आत्मा मे उदित होता है उसे परोक्षज्ञान कहते है जैसे मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञान । जो ज्ञान इन्द्रिय मन आदि बाह्यनिमित्तोकी अपेक्षा न कर मात्र अवधिमन पर्ययज्ञानावरण के क्षयोपशम रुप अन्तरगनिमित्त की अपेक्षा से आत्मा मे उदित होता है और द्रव्य क्षेत्र काल भाव की सीमा के अन्दर होता हैं उसे एकदेश प्रत्यक्षज्ञान कहते हैं जैसे अवधिज्ञान एव मन पर्ययज्ञान ।

जो ज्ञान बाह्यद्रव्य की अपेक्षा के विना केवल, केवल ज्ञाना-वरणकर्म के क्षयरुप अन्तरगकारण की अपेक्षा से आत्मा में विशद रुप से प्रकट होता हैं वह सर्व देशप्रत्यक्षज्ञान हैं जैसे केवल ज्ञान, इस ज्ञान को सूर्य की उपमा दी गई हैं।

यद्यपि उक्त पचज्ञानो मे श्रुतज्ञान क्षायोपशमिक एव परोक्षज्ञान है तथापि इसके विकास करने के लिये आत्मकल्याणार्थी मानव को जीवन मे अति आवश्यकता हैं। इस विषय मे श्री अमृतचन्द्राचार्य का कथन है -

इत्याश्रित सम्यक्त्वे, सम्यग्ज्ञान निरुप्य यत्नेन ।
आम्नाययुक्तियोगै, समुपास्य मित्यमात्महितै ।।

(पुरुपार्थ सिद्ध्युपायश्लोक ३१)

साराश- आत्मश्रध्दा के साथ आत्महितार्थी मानवो को प्रमाण नय, एव अनुयोगोद्वारा विवेकपूर्वक वडे प्रयत्नो से समीचीन ज्ञान की आवश्यकता है और उसकी उपासना करना चाहिये । अतएव श्रुत का अवतरण तथा श्रुत का विवेचन करना इस लेख का मुख्य लक्ष्य है श्रुत की परिभाषा - " तदावरणक्षयोपशमे सति निरुप्यमात्र श्रुयते अनेनेति तत् शृणलति, श्रवणमात्रवा श्रुतम् "

(सर्वार्थ सिध्दि पृ ६१)

अर्थात – श्रुतज्ञानावरणकर्म का क्षयोपशम होने पर मतिज्ञान के व्दारा जाने गये पदार्थ को जो विशेषरुप से श्रवण करता है, जिसके व्दारा श्रवण किया जाता है और जो श्रवणमात्र ( सुनना ) है उसको श्रुतज्ञान कहते है। श्रु–श्रवणे धातु से क्त प्रत्यय करने पर धातु शब्द की सिद्धी व्याकरण से होती है। यहाँ पर श्रवण शब्द का अर्थ श्रोत्र (कर्णइन्द्रिय) से सुनना तो प्रसिध्द ही है, परन्तु यहा पर इससे अतिरिक्त अभ्यास, विचार, वर्नन, फल, प्रमाणता, स्मरण, तर्क युक्ति सज्ञा अनुमान इन अर्थो का भी ग्रहण करना चाहिये। कारण कि तत्त्वार्थ सूत्र मे कथित " श्रुतमनिन्द्रियस्य " इस सूत्र के अनुसार श्रुतज्ञान तथा श्रुत का बिषयभूत पदार्थ मन का विषय माना गया है श्रवण शब्द के विशेष अर्थ के विषय मे अन्यप्रमाण –

--श्रुतशब्दोऽयं श्रवणमुपादाय व्युत्पादितोऽपि रुढिवशात् कस्मिंश्चित् ज्ञानविशेषे वर्तते। यथा–कुशलवन कर्मप्रतीत्या व्युत्पादितोऽपि कुशल शब्दो रुढिवशात् पर्यवदाते निपुणे वर्तते।

(सर्वार्थ सिध्दि सूत्र २० प्र अ पृ ७२)

साराश यह है कि यद्यपि श्रुतशब्द श्रवणार्थक श्रु धातु से सिध्द होने पर भी अभ्यास विचार आदि ज्ञानविशेष मे प्रसिध्द के कारण प्रयुक्त देखा जाता है जैसे कि ' कुशलवन ' शब्द का कुशो का छेदन करना अर्थ प्रसिध्द होने पर भी प्रसिध्द के कारण उसका प्रयोग कुशल अर्थात निपुण या चतुर अर्थ में देखा जाता है।

उक्त पचज्ञानो मे श्रुतज्ञान की यह विशेषता हैं कि वह स्वार्थ हैं अर्थात स्वय पदार्थ को जानता हैं और परार्थ भी हैं अर्थात जाने गये पिषय को शब्दों व्दारा दूसरे व्यक्तियो को ज्ञान भी कराता है। केवल ज्ञान, मन.पर्ययज्ञान, अवधिज्ञान और मतिज्ञान ये चार ज्ञान वस्तुको स्वय तो जानते है पर शब्दोव्दारा दूसरे प्राणियो को ज्ञान नही करा सकते, इसका कारण विशेष यह हैं कि श्रुतज्ञान के पास महान् शब्द–भण्डार है अन्य ज्ञानों के पास नही है। इसी विषय का स्पष्टीकरण श्री पूज्यपाद आचार्य ने किया है– "सम्यग्ज्ञान प्रमाण तत्र प्रमाणद्विविध

स्वार्य परार्थंच । तत्र स्वार्थं प्रमाण श्रुतवर्ज्य । श्रुत पुन स्वार्थं भवति परार्थच । ज्ञानात्मक स्वार्थं, वचनात्मक परार्थम" इति (सर्वार्थं सिध्दि पृ ९ सूत्र ६).

इसी अपेक्षा से श्रुत के दो सामान्यभेद हो जाते है १ द्रव्यश्रुत्त २ प्रभावश्रुत । द्रव्यश्रुत शब्दात्मक और भावश्रुत ज्ञानात्मक होता हैं द्रव्यश्रुतज्ञान का शब्दभण्डार –

**तेत्तीस वजनाइ, सत्ताचिसा सरा तहा भणिया ।**
**चत्तारिय जोगवहा. चउसट्ठी मूलवण्णाओ ॥**
(गो. जीवकाण्ड गाथा ३५२।

अर्थात – अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ- इन नव मूलस्वरो मे प्रत्येक के हृस्व (एकमात्रावाला), दीर्घ (व्दिमात्रिक), फ्लुत (त्रिमात्रिक) इन तीन भेदो को करने पर २७ भेद होते है। १ अनुस्वार, २ विसर्ग, ३ जिव्हामूलीन, ४ उपध्मानीय– इन चार योगवाहो को २७ मे जोड देने पर स्वर वर्णो के ३१ भेद हो जाते है। व्यजनवर्ण ३३ प्रकार के होते है ५ कवर्ग– क ख ग घ ङ, । ५ चवर्ग– च छ ज झ ञ । ५ - टवर्ग– ट ठ ड ढ ण, ५ तवर्ग – त थ द ध न, ५ पवर्ग– प फ ब भ म, अन्तस्थ– य र ल व, ऊष्म– श ष स ह, । इस प्रकार स्वरवर्ण- ३१ ३३ =व्यजनवर्ण मिलकर कुल श्रुतज्ञान के ६४ अपुनरूक्त मूलवर्ण होते है।

इन ६४ मुलवर्णो का विरलन कर प्रत्येक के ऊपर दो अक लिख कर परस्पर सम्पूर्ण ६४ सख्याके दो के अको का परस्पर गुणा करने से जो राशिलब्ध हो उसमे एक घटा देने पर श्रुतज्ञान के कुल अपुनरूक्त मूल अक्षर होतेहै। अथवा उक्त ६४ मुलवर्ण होते है, इन के स्वर सहित्त व्दिसयोगी जो राशिलब्ध वर्ण जैसे क का कि की कु कू के कै को कौ क क इत्यादि। व्दिसयोगी व्यजनवर्ण जैसे– क् + ष्=क्ष्, त्+र्=त्र्, ज्+ञ्=ज्ञ्, न्द्, च्द्, क्य् क्य् क्प् ख्य्, ञ्य् इत्यादि। स्वरव्यजनसहित त्रिसयोगी वर्ण क्ष क्षा क्षि क्षी इत्यादि । स्वरव्यंजनसहित चतुसयोगीवर्ण- ह्री, चन्द्र, प्रज्ज्वलन॰

याच्त्र्या सुरक्ष्य, वैचित्र्य इत्यादि। स्वरव्यंजनयुक्त पचसंयोगीवर्ण- क्ष्वी समरस्करता क्ष्मा ताक्ष्यं (गरूड) स्फा इत्यादि स्वरव्यजनयुक्त षट्सयोगीवर्ण → कात्स्न्यं निवृत्ती इन्त्यादि। स्वरव्यंजनयुक्त सप्तसयोगीवर्ण→ ह्म्ल्र्व्युं- म्म्ल्र्व्युं इत्यादि। स्वरव्यजनयुक्त अष्टसंयोगीवर्ण → थ्म्ल्र्व्युं- म्म्ल्र्व्युं- सूम्ल्र्व्युं इत्यादि। स्वरव्यंजनसहित नवसंयोगीवर्ण ऋ्म्ल्र्व्युं ख्म्ल्र्व्यूं इत्यादि दशसयोगीवर्ण म्म्ल्ल्र्व्यूंरू इत्यादि। इस प्रकार क्रमश बढते हुए चौसष्ट सयोगीवर्ण तक समस्त सयोगीवर्ण सिद्ध हो जाते है, जिनकी सम्पूर्णसख्या- १२४४६६४४०७३७०९५५१६१५ इन बीस अंक प्रमाण होती है इतने श्रुतज्ञान के सम्पूर्ण अपुनरुक्तअक्षर मुख्यरुप से होते है, पुनरुक्तवर्णों की सख्या का कोई नियम नही हैं।

उक्त अक्षरो के व्दारा अंगप्रविष्ट और ऋंगबाह्य इन दो भेद रुप श्रुतज्ञान की रचना होती है। मुख्य गणधर के व्दारा जिसकी रचना की जाती है उसे अंगप्रविष्ट और उनके शिष्य प्रतिगणधर तथा शिष्य परम्परा के आचार्यो व्दारा जिसकी रचना की जाती है उसे अग-वाहय श्रुतज्ञान कहते हैं। द्रव्य अंगप्रविष्ट शब्दरुप और भावअगप्रविष्ट रुप और भाव अंगबाहय क्षायोपशमिकज्ञानरुप होता है। ऋगप्रविष्ट- श्रुतज्ञान के बारह विभाग -

१ आचाराग २ सुत्रकृताग, ३ स्थानांग, ४ समवायाग, ५व्याख्या-प्रज्ञप्ति, ६ धर्मकथाग अथवा ज्ञातृ धर्मकथाग, ७ उपासकाध्ययनाग, ८ अन्त.कृद्दशांग, ९ अनुत्तरोपपादिकदशांग, १० प्रश्नव्याकरणाग, ११ विणाकसुत्राग, १२ दृष्टिप्रवादाग।

वारहवे दृष्टिप्रवाद के अग पाच- भेद हैं १ परिकर्म, २ सूत्र, ३ ३ प्रथमानुयोग ४ पूर्वगत, ५ चूलिका,। इनमे से परिकर्म के भी पच भेद है १ चन्द्र प्रज्ञप्ति, २ सुर्यप्रज्ञप्ति, ३ जम्बुव्दीपप्रशस्ति, ४ व्दीप-सागर प्रज्ञप्ति, ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति। सूत्र एकप्रकार का ही होता है इसमे ३६३ मिथ्यामयो का दिग्दर्शन कराया गया हैं। प्रथमानुयोगके भेद नही है इसमे ६३ शलका महापुरुषो के चारित्र का वर्णन किया गया है।

पूर्वगत के चौदह भेद होते है → १ उत्पादपूर्व, २ आग्रायणीयपूर्व ३ वीर्यप्रवाद, ४ अस्तिनास्तिप्रवाद, ५ ज्ञानप्रवाद, ६ सत्यप्रवाद, ७ आत्म प्रवाद ८ कर्मप्रवाद, ९ प्रत्याख्यान, १० विद्यानुवाद ११ कल्याण वाद, १२ प्राणवाद, १३ क्रियाविशाल, १४ त्रिलोकविन्दुसार। चुलिका के पच भेद है – १ जलगता, २ स्थलगता, ३ मायागता, ४ आकाश-गता, ५ रुपगता ॥

अगवाह्यश्रुतज्ञान के चौदह विभाग होते है →

१ सामायिक, २ चतुर्विशस्तव, ३ वन्दना, ४ प्रतिक्रमण, ५ वैन-यिक, ६ कृतिकर्म ७ दशवैकालिक, ८ उत्तराध्ययन, ९ कल्पव्यव्रहार, १० कल्पाकल्प, ११ महाकल्प, १२ पुण्डरीक १३ महापुण्डरीक १४ निषिध्दिका।

श्रुतज्ञान का अवतरण –

बारह वर्ष कठोर तपस्या मे लीन श्री महावीर तीर्थंकर ने एकीस वर्ष की अवस्था मे शुक्ल ध्यान के द्वारा, ज्ञानावरण आदिचार घातिकर्मो का क्षय कर, मद्यावन मे भाल वृक्ष के नीचे, वैशाख शुक्ला दशमी के प्रात काल आत्मा मे केवल ज्ञान मार्तण्ड को उदित किया। केवल ज्ञान के साथ अनन्त विशददर्शन, निर्मल सुख शान्ति और अनुपमवीर्य का भी विकास हो गया और अर्हन्त या जीवन्मुक्त पद को प्राप्त कर लिया। तदनन्तर श्री इन्द्रभूति (गौतम) गणधर का सुयोग प्राप्त होने पर, बिहार प्रान्तीय राजगृहनगर के विपुलाचल पर, समब सरण के मध्य, श्रावण कृष्णा प्रतिपदातिथि के प्रात सूर्योदय के समय, श्री १००८ भ महावीर स्वामी की तत्त्वदेशना सर्व प्रथम निरक्षरी दिव्यध्वनि के माध्यम से प्रारम्भ हुई। जिस प्रकार प्रात. दिवाकर उदयाचल से उदित होकर अपनी किरणो के द्वारा लोक मे व्याप्त तिमिर को भेदन कर लोक को प्रकाशित करता हैं उसी प्रकार भ महावीर ने विपुलाचल से उदित होकर अपनी ज्ञानकिरणो के द्वारा अज्ञानतिमिर को भेदन कर मानवो तथा समस्त प्राणियो के हृदय लोक को प्रकाश मान कर दिया था। इसलिये अर्थज्ञान या तत्वविज्ञान के मूलस्त्रोत (आदिकर्ता) श्री भ. महावीर तीर्थंकर है।

तदन्तर भ महावीर द्वारा ध्वनित अर्थज्ञान को उसी काल और उसी क्षेत्र मे विराजमान, निर्मलचार ज्ञान धारी, विप्र, गोतमगोत्री, इन्द्रभूति नामक प्रधान गणधर ने अवधारण कर द्वादश अग और चतुर्दश पूर्व रुप शब्द श्रुतज्ञान का एक हीं मुहूर्त (४८ मिनिट) में क्रमश अवतरण कर दिया। इस प्रकार गौतम गणधर द्वारा सर्व प्रथम भाव श्रुतपूर्वक ग्रथ रचना का मानसपटल मे शुभारम्भ हुआ।

उन गौतम गणधर ने दोनों प्रकार का श्रुतज्ञान अपने दश प्रति-गणधरो को प्रदान किया। प्रतिगणधरो ने वह ज्ञान सुधर्माचार्य (लोहाचार्य) के और उन्हो ने श्री जम्बूस्वामी को प्रदान किया। परिपाटी क्रम से सर्व प्रथम ये तीनो ही सकलश्रुत के धारी कहे गये हैं। यदि इस परम्परा की अपेक्षा न की जाय तो उस समय सख्यात हजार सकलश्रुत के अवधारण करने वाले श्रुतकेवली हुए। गौतम–स्वामी, लोहाचार्य और जम्बूस्वामी ये तीनो ही सप्तऋद्धिधारी, श्रुतकेवली होकर अन्त मे केवल ज्ञान को प्राप्त कर के निर्वाण को प्राप्त हुए। उक्त तीन श्रुतकेवली से पच पूर्व श्रुत ज्ञानधारी आचार्यो को पूर्व श्रुत का ज्ञान प्राप्त हुआ – ये पच आचार्य – १ विष्णु, २. नन्दिमित्र, ३. अपराजित, ४. गोवर्धन ५ भद्रबाहु। तदनन्तर परिपाटी क्रम से १. विशाखाचार्य, २. प्रोष्ठिल, ३. क्षत्रिय, ४. जयाचार्य ५. नागाचार्य, ६. सिद्धार्थदेव, ७ धृतिसेन, ८ विजयाचार्य, ९. बुद्धिल, १०. गगदेव, ११ धर्मसेन ये ग्यारह महापुरुष ग्यारह अग, उत्पादपूर्व आदि १० पूर्व तथा शेष चार पूर्वो के एक देशज्ञाता आचार्य हुए।

तदनन्तर परिपाटी क्रम से – १. नक्षत्राचार्य, २. जयपाल, ३. पाण्डूस्वामी ४. ध्रुवसेन, ५. कंसाचार्य इन पच आचार्यो को सम्पूर्ण ग्यारह अगो का और चतुर्दशपूर्वो का एक देश ज्ञान प्राप्त हुआ। तदनन्तर परम्परा क्रम से – १. सुभद्राचार्य, २ यशोभद्राचार्य, ३ आ. यशोबाहु, ४ आ. लोहार्य इन चार आचार्यों को सम्पूर्ण आचाराग का तथा शेष अग और चतुर्दशपूर्वो का एक देश ज्ञान प्राप्त हुआ। तदनन्तर आचार्य परम्परा क्रम से सभी अग और पूर्वो का एक देश ज्ञान आता हुआ आचार्य धरसेन को प्राप्त हुआ

सोराष्ट्र (गुजरात-काठियावाड़) देश के गिरिनगर नाम के नगर की चन्द्रगुफा मे तपस्या करने वाले, अष्टांग महानिमित्त के पारगामी, श्रीधरसेन आचार्य ने, विचार किया कि पंचमकाल मे भविष्य मे अग-पूर्वरूप श्रुतज्ञान का लोप हो जायेगा, इस ध्येय से उन्होने, किसी धर्मोत्सव क निमित्त से महिमानगरी मे सम्मिलित हुए दक्षिण देश के निवासी आचार्यो के पास एक पत्र भेजा। उस पत्र को अच्छी तरह समझकर दक्षिण देशीय आचार्यो ने बुद्धिशाली, सदाचारी विनययुक्त, धारणाशील, श्रेष्ठकुल मे समुत्पन्न, सकल कला विज्ञानी दो मुनियो को, आन्ध्र देश मे बहने वाली वेणानदी के तट से भेजा।

मार्ग मे उन दोनो साधुओ के आते समय, दो सफेद श्रेष्ठ वृषभो (बैलो) को, गुरुचरणो मे नमस्कार करते हुए, रात्रि के अन्तिम भाग मे धरसेन आचार्य ने स्वप्न मे देखा। इस स्वप्न को देखकर प्रसन्न हुए धरसेन ने 'श्रुतदेवताजयवन्त हो' यह वचन कहा। उसी दिन वे दोनो साधु महाराज आ धरसेन के समीप प्राप्त हुए। गुरुचरणोमे वन्दना आदि कृति कर्म कर दो दिन व्यतीत किये। तृतीय दिन उन साधुओंने आ धरसेन की सेवामे सिद्धात के अध्ययन के लिए निवेदन किया, गुरुजीने "स्वस्ति भद्र चास्तु" यह आशिर्वाद कहा।

तदनन्तर आ. धरसेन ने उन दो मुनिराजो की परीक्षा करने के लिए दो विद्याओं को सिद्ध करणे हेतु दो मत्र अशुद्ध रुपसे दे दिये। उन दोनोने दो दिन के उपवास पूर्वक विद्या सिद्धी को प्रारम्भ कर दिया। विद्या सिद्ध हो जानेपर अधिक अक्षर वाले मन्त्र के साधक श्री पुष्पदंत मुनिराज को लम्बे दतवाली देवी और अक्षरहीन मन्त्र के साधक भूतबलि मुनिराज को कानी देवी सिद्ध होकर सामने आयी। इन विकृतांग देवीयो को सामने देखकर वे आश्चर्य मे पड गये। उन्होने विचार पूर्वक व्याकरण शास्त्र से मन्त्र को शुध्द कर पुन. विद्यासिध्द प्रारंभ किया। जिस से सिध्दि के पश्चात दोनो देवीया स्वाभाविक सुन्दर रुप मे प्रकट हुई। दोनो मुनिराजाओ ने प्रसन्नता पूर्वक गुरु धर-

सेन के समक्ष उपस्थित होकर सव मत्र सिध्दि के वृत्तात को व्यक्त किया, आचार्यने मगल भूयात यह शुभापित प्रदान किया। पश्चात आ. धरसेन ने शुभतिथी नक्षत्र और दिन मे उन दोनो मुनिराजा को जैन सिध्दात को पढाना प्रारभ किया। सतत अध्ययन करते हुए उन्हो ने आषाढ शुक्ल एकादशी के प्रात काल मे अध्ययन को निर्विघ्न समाप्त किया।

यह अतिशय देखकर भूतजाति के व्यन्तर देवो ने पुष्पावली, शख और तूर्यवाद्य ध्वनि पूर्वक एक मुनि की पूजा की इसलिए आ. धरसेनने उनका नाम "भूतवलि" यह निश्चित किया। जिनव्यतर देवोने एक दूसरे मुनि की विशेष पूजा पूर्वक अस्तव्यस्त दन्तश्रेणी को व्यवस्थित सुन्दर कर दिया, इसलिए धरसेन भट्टारक ने आपका नाम 'पुष्पदन्त' घोपित कर दिया, तदनन्तर गुरु धरसेन की आज्ञा से पुष्पदन्त और भूतबलि ने वहा से प्रस्थान कर अन्कलेश्वर (गुजरात) मे वर्षायोग धारण किया। वर्षायोग पूर्ण कर श्री पुष्पदन्त मुनिराज, जिनपालित शिष्य के साथ वनवास को चले गये और भूतबलि द्रमिल देश को चले गये।

तदनन्तर पुष्पदन्त आचार्य ने जिनपलित शिष्य को शिक्षा देने के साथ उनके स्वाध्याय के लिए षट्खण्डागम- सत्प्ररुपणा के सूत्र बनाकर ओर उनको पढाकर भूतवलि आचार्य के पास भेज दिया। अनन्तर भूतबलि ने द्रव्यप्रमाणानुगम को आदि लेकर षठ्खन्डागम ग्रथ की रचना पूर्ण की। वह पुण्यतिथी जेष्ठ शुक्ल पचमी थी। इसी दिन मुनि आर्यिका श्रावक और श्राविकाओने षट्खण्डागमशास्त्र काउत्सव के साथ सामूहिक अर्चन किया। इस इतिहास के अनुसार भारत मे प्रतिवर्ष जेष्ठ शु। पचमी को शास्त्रो का सामूहिक अर्चन होता आ रहा है, इसी समय से श्रुतपचमीपर्व का उदय हुआ। इस प्रकार मूलग्रन्थकर्ता श्री महावीरतीर्थंकार, अनुग्रथ कर्ता श्री गौतमगणधर और उपग्रथकर्ता श्रीपुष्पदतभूतबलि अदि सैकडो आचार्य हुए हैं। जिनमे कुछ विशिष्ठ आचार्यो काउल्लेख निचे किया जाता हैं।

१ आचार्य कुन्दकुन्द रचना- समयसार, प्रवचनसार आदि
२ आ समन्तभद्र ,, गन्ध हस्ति महाभाष्य, आप्त मी मांसा आ
३ आ उमास्वामी ,, तत्त्वार्थसूत्र, इत्यादि सिध्दात
४ आ पूज्यपाद ,, सर्वार्थसिध्दि, सस्कृतभक्ति पाठ आदि
५. आ अकलकदेव ,, राजवार्तिक, अष्टशती, न्यायाविनिश्चय
६. आ विद्यानदि ,, पूलोकवार्तिक, अशटसहस्री आदि न्याय
७ आ भास्करनन्दी ,, तत्त्वार्थ भास्करी टीका आदि सिद्धात
८ श्रुतसागर ,, तत्त्वार्थ श्रुतसागर टीका आदि सिध्दात
९ आ वि श्रुतसागर ,, तत्त्वार्थ सुखवोधिनी टीका आदि सिध्दात
१० आ विवूधसेन ,, तत्त्वार्थ टीका
११ आ. योगिद्रदेव ,, परमात्म प्रकाश आदि आगम
१२ वादीमसिह ,, गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूठामणि आदि
१३. प. प्र आशाधर ,, सागारधर्मामृत आदि २० ग्रथधर्म
१४ आ वीरसेन ,, षट्खण्डागम धवल टीका आदि इ. ग्र
१५ आ अमृतचद्र समयसार, टीका, पुरुषार्थ आदि ५ ग्रथ
१६ आ माणिक्यनन्दी ,, परीक्षा मुख आदि न्याय ग्रथ
१७ महाकवी धनन्जय ,, द्विसधान महाकाव्य, नाममाळा साहित्य
१८ आ शाकटायन ,, शाकटायन आदि ५ ग्रथ व्याकरण
१९ आ जिनसेन ,, आदि पुराण, जयधवलादि ५ ग्रथ
२०. आ हस्तिमल्ल ,, विकान्त कौरव आदि ५ काव्यग्रथ
२१ आ, गुणभद्र ,, उत्तरपुराण आत्मानुशासन आदि ५ ग्रथ
२२ महाकवि हरिश्चन्द्र ,, धर्मशर्माभ्युदय, नेमिनिर्वाण आदि सा.
२३ अ धर्मभूषण ,, न्यायदीपिका।
२४ आ. प्रभाचद्र ,, प्रमेयकमल मार्तण्ड, न्याय कुमुदचन्द्र आदि
२५ आ सोमदेव ,, यशरित्तलकचम्पू, नीतीवाक्यामृत ६ ग्रथ
२६ प अर्हद्दास ,, पुरुदेवचम्पू, मुनिसुव्रतकाव्य म कण्ठामरण
२७ आ. यतिवृषभ ,, तिलोयपण्णाति आदि आगम
२८ आ पात्रकेशरी ,, न्यायविनिश्चयालकार अदि न्याय
२९ आ नेमिचन्द्र सि. च. ,, गोमटसार आदि पचग्रथ
३०. आ. चामुण्डराय ,, चारित्रसार, त्रिषष्ठिलक्षणपुराण।

उक्त आचार्योंव्दारा रचित ग्रन्थों मे जिनजिन विषयो का प्रतिपादनकिया गया है उन विषयो का अन्तर्भाव व्दादश अगो मे यथासभव हो जाता है ।

विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं अनेक शिक्षण सस्थाओ मे जो आधुनिक विषयो का पाठ्यक्रम के अनुसार जो पठन पाठन होता है उन समस्त विषयो का अन्तर्भाव व्दादशाग श्रुतज्ञान मे हो जाता है उदाहरणार्थ कुछ विषय निन्मकथित है समवायाग मे तथा व्याख्या-प्रज्ञीप्त मे कुछ द्रव्योका वर्णन है- प्रश्नव्याकरणाग मे कृषिविज्ञान, वनस्पतीविज्ञान तथा दर्शन शास्त्र का वर्णन है। विपाकसूत्राग और कर्म प्रवाद मे कर्म सिद्धान्त का वर्णन है चन्द्रप्रज्ञप्ति मे चन्द्रलोक का सूर्यप्रज्ञप्ति मे सूर्यलोक का द्वीपसागर प्रज्ञप्ति मे व्दीप नदी पर्वत समुद्रो का वर्ण है । व्याख्याप्रज्ञप्ति मे भौतिकविज्ञान का निर्वेश है । दृष्टि प्रवादाग के सूत्रविभाग मे न्याय शैलीसे ३६३ मतों का निराकरण तथा षठ्दर्शन का विषय है । प्रथमानुयोग मे ६३ शलका परुषौ का पुराण तथा इतिहास' स्थलगताचूलिका मे भूगर्मशास्त्र, मायागता मे इन्द्रजाल जादू मंत्रतत्र, आकाशगता मे खगोल, वायुयान, राकेट आदि, सत्य-प्रवाद मे व्याकरण तथा भाषा विज्ञान, आत्मप्रवाद मे आध्यात्मवादका विद्यानुहाद मे शकुनशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, नागरिकशास्त्र आदि ७०० अल्पविद्या और ५०० महाविद्याओका वर्णन है। इसी मे मंत्रतत्र, पूजनविधान, अष्ट महानिमित्त, तथा नव ग्रहो की शान्ति एवं फल का वर्णन है। कल्याणवाद मे ज्योतिप, अक-वीज रेखागणित और पक्षीयो के भाषाविज्ञान का दिग्दर्शन है। प्राणानुवाद मे → अष्ठाग आयुर्वेद, विषविद्या, प्राणायाम् व्यायाम इन्जेक्शन, आपरेशन और रसा यन शास्त्र का कथन है। एव शारिरीक रक्षा के उपाय का वर्णन हैं क्रियाविशाल मे आर्ट (कला), कामर्स, लेखन मनोविज्ञान, समाजशास्त्र अर्थशास्त्र, सिलाई बुनाई, सगीत वाद्यकला, गृह विज्ञान, नाटयकला, नृत्यकला, शिल्पकला, मुद्रनकला, साहित्य, छन्द अलकार, एकाकी चित्रकर्य, मूर्तिकला अंकलिपी आदि पुरुषोकी ७२ कला ओ का तथ

महिला ओ की ६४ कला ओ का स्पष्ट वर्णन है। लोकविन्दु मे मोक्ष मुक्तिमार्ग, लोक रचना, स्वर्ग-नरक, प्राकृतिक अकृत्रिम पर्वत, नदी समुद्र आदि भूगोल तथा खगोल का वर्णन जाना जाता है। रुपगता चूलिका मे सिह अश्व आदि प्राणियो के रुप धारण करने के मन्त्रातन्त्रा, तपश्चरण, चित्रकर्म, छायाचित्राकन, काष्ठकर्म, लेप्पकर्म, प्रतिमा-निर्माण आदि कलाओ का वर्णन है।

इस वैज्ञानिक युग के अनेक शिक्षितव्यक्तियोका कहना है कि विज्ञान से जो अविष्कार हुए है उनसे जैनधर्म मे विरोध आता है, भौतिक-विज्ञान का वर्णन किसी भी शास्त्र मे नही है, किसी भी पदार्थ मे ऐसी शक्ति नही है जो अभूतपूर्व वस्तु का निर्माण कर सके इत्यादी। उनका यह कथन भ्रमपूर्ण है, इस पर विचार करना आवश्यक है।

जैन धर्म मे छह द्रव्यों का वर्णन है १ जीव, २ पुग्दल, ३ धर्म ४ अधर्म ५ आकाश, ६ काल। इनमे विश्व समस्त पदार्थों का अन्त-र्भाव हो जाता है, इन छट द्रव्यो का समन्वपरूप ही विश्व है। इन छट द्रव्यो को वैज्ञानिको ने भी स्वीकृत किया है। इनमे पुद्गल द्रव्य को वैज्ञानिको मैटर (Metter) कहते है, पुद्गल मूर्तिक है, इस का मूल आधार परमाणु है और परमाणु मे यथासभव रुप-रस-गन्ध, शीत-उष्ण में से कोई एक, स्निग्घ-रुक्ष में से कोई एक यें ५ गूण पाये जाते है, इस परमाणुओ के सयोग और वियोग से ही अनेक वस्तुओ का अविष्कार हुआ। विज्ञानशाला मै जब वैज्ञानिक हजारों प्रयोग करते है तब एक प्रयोग या वस्तु के निर्माण मे सफल हो जाते है। एक ही प्रयोग से कोई वस्तु का आविष्कार होना प्राय असम्भव है।

परमाणुओ के सयोग की प्रक्रिया का वर्णन जैनदर्शन मे पाया जाता है –" स्निग्घरुक्षत्वाद्बन्ध " तत्त्वार्थसुत्र अ, ५ सूत्र ३३। इस लिये परमाणुओ व्दारा वस्तुओ के आविस्कार मे कोई विरोध नही आता और एक एक परमाणु मे अनन्तशक्ति को जैनदर्शन मे स्वीकृत किया गया हैं। इसके अतिरिक्त परमाणु मे परस्पर अवगाहन शक्ति-एव सुक्ष्मपरिणमनशक्ति को माना गया है, परमाणुको अपेक्षाकृत द्रव्य,

अदृश्य, एकप्रदेशी तथा बहुप्रदेशी भी माना गया है। इसलिये मूलरुप या स्कन्धरुप परमाणु से वस्तुओ के आविष्कार मे कोई विरोध नही हैं जैनदर्शन के परमाणुवाद का प्रभाव न्याय वैशेषिक अदिदर्शनो पर भी बहुत बडा है। तत्वार्थसूत्र का पचम अध्याय भौतिक विश्व का ही कथन करता हे। इन आविष्कारो का अन्तर्भाव व्दादशाग श्रुतज्ञान में हो जाता है उदाहरणार्थ कुछ आविष्कारों का अन्तर्भाव निम्न प्रकार है।

सूत्रकृतांग मे शिक्षाप्रणाली का, समवायांग में और व्याख्याप्रज्ञप्ति मे भौतिक विज्ञान का अन्तर्भाव हो जाता है। बारहवे दृष्टि प्रिवाद्यंग की जलगता चुलिका मे स्टीमर जलयान, पनडूब्बी, नल, फुब्बारा, पूल बांध, विद्युत, गेस का, स्थलागता चूलिका मे रेलवे मोटर साइकिल स्कुटर, मोटरसाइकिल आदि का, रुपगताचूलिका मे चत्रकारी काष्ठकला का, आकाशगता चूलिका मे टेलीफोन टेलीग्राफ हेलीकोप्टर वायूयान रेडियो टेलीवीजन राकेट वायरलेस आदि का अन्तर्भाव हो जाता है।

बारहवे प्राणानुवादपूर्व मे हौम्पोपेथी थर्मामीटर सूचीयत्र (इजेक्शन) आपरेशन चेचकटीका पोलियो त्रिपलइजेक्शन शरीरविज्ञान आदि का विलीनीकरण हो जाता है। तेरहवे क्रियाविशाल पुर्व मे केमरा कृषिविज्ञान के यन्त्र माइक्रोफोन नाइलोन चेयर फरनीचर सिलाई मशीन कघाई मशीन माचस ग्रामोफोन चलचित्र (सिनेमा) सेप्टीरेजर टाइपराइटर सेफ्टीलेम्प वाच (घडी) आटाचक्की फाउन्टेन पेन फेन (पखा) प्रेस क्लाथमिल रिवाल्वर टैंक मशीनगन तोप अग्नि स्टोप राजनिति के साधन आविष्कारो इन्जीनियरिंग का विलीनीकरण हो जाता है।

जैनदर्शन कहता हैं कि शुध्दपरमाणु मे गति की इतनीशक्ति (ऊर्जा) है कि वह एक समय में लोक के आदिक्षेत्र से अन्तक्षेत्रतक चौदह राजु प्रामण जा सकता है, इतनी प्रगति हवा शब्द सूर्य किरण और विद्युत मे नही हो सकती। परमाणु के समूह रूप स्कन्धो से प्रयोग तथा परीक्षण व्दारा हजारो वस्तुओ का आविष्कार हो सकता है।

श्रुतज्ञान की महिमा

सुदकेवलं च णाणं दोण्णि वि सरिसाणि होंति बोहादो।
सुदणाणं तु परोक्खं, पच्चक्खं केवलं णाणं ।।

जीवकाण्ड ३६६ गाथा)

अर्थात्– ज्ञान की अपेक्षा श्रुतज्ञान तथा केवल ज्ञान दोनो ही समान है। विशेषता इतनी ही है कि श्रुतज्ञान इन्द्रिय तथा मन की सहायता से होता है इसलिये परोक्ष (अस्पष्ट) है, परन्तु केवल ज्ञान निरावरण होने के कारण समस्त द्रव्य गुण पर्यायो को स्पष्टतया जानता है। अत प्रत्यक्ष है। श्रुतज्ञान पदार्थ को स्वय तो जानता ही है परन्तु लब्धक्षर, निष्पत्त्यक्षर और न्यासरुप अक्षरो के व्दारा दूसरो को भी पदार्थ का बोध कराना है ।।

उपसहार

पचज्ञानो मे से श्रुतज्ञान एक अपना महत्त्व रखता है वह व्दादशागरूप हैं। ज्येष्ठाशुक्ला पचमी (श्रुतपचमी) पावन पर्व पर इसका तपस्वी ऋषियो व्दारा इस लोक मे अवतरण हुआ है जो प्राणिमात्र के कल्याण के लिये उत्तम, शरण और मगलमय है। इसको प्राप्त करने का पुरुषार्थ करना आवश्यक है।

श्रुते भक्ति श्रुते भावितः श्रुते भक्ति सदाऽस्तु मे।
सज्ज्ञानमेव ससार वारण मोक्षकारणम् ।। १ ।।

दयाचन्द्र साहित्याचार्य धर्मशास्त्री
प्रवक्ता
श्री गणेश दि. जैन सस्कृत–
महाविद्यालय सागर म प्र

## -: लोक मूढता :-

अनादी कालसे यह मानव अग्रहती एवं गृहित मिथ्यात्व के कारण ससार समुद्रमे गोते खाता हुआ दुःखी हो रहा है। प्रतिक्षण ईर्षा कषाय अभिमान, राग, दोष आदि स्वार्थ की भावनाओको बैठा बैठा सजोता रेहता हे। खोटे देव, शास्त्र गूरू के अवलंबनसे लोक रुढीयो मे धर्म मानकर संसार वृक्ष मे मिथ्यात्व रुपी जल सिंचन करता रहता है। अगर कभी सच्चे गुरुका समागम भी मिले तो उनकी बात सुनकर जीवन मे उतारने को तय्यार नही।

दृष्टान्त - एक बार की बात है, काफी लोक इकठ्ठे आ गये थे। वहाॅपर एक मुनिराज आये उन्होंने सबसे पुछा आप लोक यहाॅ पर क्यो खडे हुअे हो ? उनमेसे एक आदमी बोला हम लोगोने बहुत सारे पाप किये है। उन पापोसें मुक्त होने के लिये गगाजीमे स्नान करनेके लिय जा रहे है।

मुनिवराजने कहां, क्या गंगाजीमे स्नान करनेसे आप सब पाप मुक्त हो जाओगे? वह सब लोक बोले हाँ, हमारे सबके पाप निश्चितही धुल जायेगे। हमारे गुरु महाराज प्रतिदिन उपदेश करते है, कि कितने भी पाप करो गगाजी में स्नान करने से-सारे के सारे पाप धो जाते है।

मुनिराज उन सबको बिठाकर उपदेशदेने लगे, हे भव्यत्माओ गगाजीमे स्नान करने से मात्र शरिरका मलही धो जाता है। आत्मासे लगे हुअे पाप मलको धोने के लिए सम्यग्ज्ञान गंगाके जलमे स्नान करना होगा।

मुनिराज का उपदेश सुन सभी को ए बोध हुआ, वे दिनरात के किये हुअे पाप मात्र गंगाजी मे स्नान करने से नही छूट सकता, उनसे बचनेके लिये तो, भेद ज्ञान रूपी साबून लगाकर स्याद्वाद ज्ञान गगामें डूबकी लेनी होगी।

हमे इस वर्ष निरा नगरमें सच्चे गुरूका समागम महान पुण से मिला है। इस अवसरपर इनका प्रवचन सुनकर जो लोक रूढीओमे अनादी कालसे धरम मानते आये है, उसे छोड़ेगे, तो सम्यग्ज्ञान एव सम्यचारित्र के अवलवन से अनादि कालसे सचित पाप समुहको समाप्त कर सच्चे सुखकी प्राप्ती कर सकेंगे।

ॐ नम सिद्धेभ्य

श्री सन्मति सागराय नमः

मानव की सुख सुविधा के लिये नाना प्रकार की वस्तुए तैयार की जा रही है सब कुछ प्राप्त है पर शान्ति नही। पाप की आधार शिला पर अवस्थित अभ्युदय सुख और शान्ति प्रदान नही कर सकता। अतः पापो को त्याग कर अपनाना होगा 'सत्यधर्म'। इससे हमको सुख तथा शान्ति की अनुभूति होगी।

**सत्यमेव जयते** - इस सूक्ति के अनुसार विदित होता है कि विजय सत्य की ही होती हैं। ससार के समस्त प्राणियों को इन्द्रियाँ प्राप्त हैं; उनका उपयोगतो सभी करते हैं पर सदुपयोग कुछ ही व्यक्ति करते है। हमे चाहिए कि हम अपनी जीभ का

सदुपयोग ही करे। इस ससार मे सत्य की प्रतिष्ठा है और सत्य के द्वारा ही ससार के सभी कार्य चलते है। यदि सभी ऐसी व्यक्ति मिथ्यावादी हो जाय तो समाज में अव्यवस्था फैल जायेगी और ऐसी स्थिति मे कोई किसी पर कभी भी विश्वास नही करेगा.

जो मनुष्य सत्यवादी होते है, उन पर सभी विश्वास करते है; उनका ही सब जगह सम्मान होता है, वे कभी किसी से डरते नही है, उनका हृदय सदा नि शक्लित रहता है और वे ही महान कहे जाते है। सत्यता-सत्यता ही रहती है; उसके सामने कितनी भी आपत्ति, सकट क्यो न आ जाये; वे ठीक उसी प्रकार दूर भाग जाते है जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के आगे अन्धकार। सत्य अपना रूप नही बदलता अर्थात कहने का तात्पर्य है की सत्य-सत्य ही रहेगा क्यो कि-

सत्यता-सत्यता रहती, पलट हरगीज नही सकती ।
समय संकट का हटने पर अचानक फूल सी खिलती ।

सत्य महान धर्म है। कठोर, झूठ, दूसरो को अप्रिय लगने वाले वचनसे अपने मुख नही निकालना चाहिए. वचन ऐसे बोलना चाहिए। कि जो सत्य हो, अपने तथा दूसरों को प्रिय लगें। पर निन्दा त्याग कर पर के गुणों की ओर दृष्टि डालना चाहिए। जवाहर रुपी सत्य वचन का प्रयोग अपने मुंह से करना चाहिए। जो सुखरूप है और कल्याण कारी है।

'हरिचन्द्र, युधिष्ठर, गाँधी आदि महान पुरुषो को कौन नहीं जानता ? ये, महापुरुष आजीवन सत्य के उपासक रहे। इनका नाम आज भी सत्यता के नाम पर रोशन है। जिनकी सत्य मे निष्ठा होती है वे प्राणो को देकर भी सत्य धर्म की रक्षा करते ह। सत्य से ही सभी कार्योमे सफलता प्राप्त होती है।

--- यद्यपि मनुष्य असत्य के द्वारा कार्य कि सिद्धी कर लेते हैं, पर उसका परिणाम विपरीत ही होता है। असत्यवादी मनुष्यो का अपमान तथा तिरादर होता है। असत्य महान पाप है, असत्यवादियो का हृदय निरन्तर पाप पूर्ण तथा शंकित रहता है। उन पर कोई विश्वास नहीं करता। सत्य और झूठ का परिणाम निकले बिना नही रहता। किसी कवि ने कहा भी हैं कि--

सचाई छुप नही सकती, कभी झूठे असूलो से।
खुशबू आ नही सकती कभी कागज के फूलो से।।

जो मनुष्य सत्यवादी होते है वे विपत्ति काल मे भी सत्य को नहीं छोड़ते और सिह की तरह आपत्तियों का सामना करते है वे ही पुरुष वीर, साहसी, महान धैर्यवान तथा स्वावलम्बी कहे जाते है। सत्य को कण्ठ का भूषण बताते हुए किसी संस्कृत के कवि ने कहा है कि--

हस्तस्य भूषण दान, सत्य कंठस्य भूषण।
नेत्रस्य भूषणं शास्त्र, भूषणं किम् प्रयोजनम ।।

**अर्थात्** – हाथ का भूषण दान, कंठ का भूषण सत्य, नेत्र का भूषण शास्त्र है। अन्य भूषण से क्या प्रयोजन ?
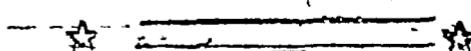
अत बन्धुओ हम सब इस बात को कभी भी न भूलें कि सत्य महान धर्म है। सत्य से ही सर्वत्र यश तथा सत्य की ही विजय होती है।

मृषा महान पाप हैं, दु खकर है, हमेशा त्याज्य है, दु खो की नाली है और भव की निशानी है। इसलिये हम सभी 'सत्य धर्म' को धारण कर वीर, महान, साहसी, धैर्यवान और सत्यवादी बनने का प्रयत्न करें।

॥ सत्यमेव जयते नानृतम् ॥

ब कु. कल्पना जैन
ललितपूर

# हिंसा और अहिंसा

○ लेखिका ○
कु. संगीता सु. शहा नीरा

जिस पावन नगरीमे हमने जनम लिया है, उस पावन भूमी को स्वतत्र करने के लिए महात्मा गाधी जैसे अनेक वीरोने अहिसक युद्ध किया। इनके तत्व अहिसक थे। ऐसे महान नेताओ को स्वतंत्रता प्राप्तीमे सहाय्यक एकही मूलतत्व था, वह था अहिसा धर्म।

अहिसा यह जैनीओका प्राण है। यही परम धर्म है, यही परब्रम्ह है। ससार में अहिसक और हिसक दोनोही प्रकार के प्राणी देखे जाते है। जो मनुष्य दूसरों के दुखो को जानकर उनकी रक्षा करता है, उनके दुखो से उन्हे वचाता है, उनको जीवनदान देता है, वही वास्तव मे सच्चा अहिसक होता है। अर्थात जो मनुष्य दुसरो के दुखो के नही जानता है, उनके दूखो को दूर करनेका प्रयत्न नही करता है, वह भी हिसक मनुष्य है। इस तरह हिसा को रोकने के लिए और जगत को सुखी बनाने के लिए भगवान महावीर ने एक ही उपाय वताया है, वह, "जीओ और जीने दो।

जिस प्रकार सर्व वृक्ष मे श्रेष्ठ वृक्ष 'कल्पवृक्ष,' सर्व रत्नो में श्रेष्ठ रत्न 'चितामणी रत्न' है और सर्व तीर्थो मे श्रेष्ठ 'सम्मेदशिखर' है, उसी प्रकार सर्व मनुष्य मे महान अहिसक मनुष्य है। हिसा चार प्रकार की होती है।– १) संकल्पी २) आरंभी ३) उद्यमी और ४) विरोधी; यह भाव और उनके भेद दो प्रकारके है। इन सव में, सकल्पी हिसा तीव्र दुखद फल को देनेवाली है, क्योकि इस मे तीव्र कषाय होती है।

और आरभी उद्यमी और विरोधी हिंसा मे कषाय की कुछ मंदता रहती है, तभी उस हिसा का फल भी अल्प होता है।

तात्पर्य यह है कि, हिंसा नही करना यही धर्म है। गभीरता से विचार किया जाय तो प्रमादही हिसा है। कोइ कोइ यह मानते हैं कि, सिर्फ जीव वध हिंसा है। जब कि जैनाचार्यो की दृष्टी अत्यत सूक्ष्म रही है, उन्हो ने कहा है कि, प्रमाद पूर्वक प्राणोका घाव हिंसा है, और आत्मा के अदर उठनेवाली राग, व्देष की प्रवृत्ती भी हिंसा हैं, यही जैन धर्म का सार है, परन्तु वर्तमान मे राग-व्देष को हिंसा मानने वालो की सख्या नल समान है।

प्रथम तीर्थंकर आदि प्रभू ने श्रमण धर्म का प्रसार किया। उन के पाच्छात इसी अहिंसा धर्म का अतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने मूल तत्व को विश्व के सामने रखा, उनकी महान अहिंसात्मक वाणी से अनेक मूक प्राणीओ को प्राणदान मिला। भारत्त जैसे अहिंसावादी देश मे अनेक सत महात्मा हुये। जिन्हों ने महान अहिंसा धर्म का अवलबन लेकर के समाज, धर्म एव राष्ट्र की उन्नती के साथ साथ आत्मकल्याण किया। अत. हमारा कर्तव्य है कि, यहाँ वीर की पवित्र अहिंसा को जन जन मे फैलाकर सच्ची अहिंसा धर्म की गंगा को सारे विश्व मे बहा दे।

जिनकी ६५ वी जन्म जयन्ती मनाई जाती हैं। वह सन्मार्ग दिवाकर आचार्य विमल सागरजी महाराज भी अहिंसा की पावनमूर्ति है। मित्र-शत्रू मे राग-द्वेष की कल्पना से रहित है। अत. उनके चिरायु की कामना है।

# 'धर्म और विज्ञान'

ले. कु. स्मिता हिरालाल शहा

प्राय: व्यवहारमें ऐसा कहाँ जाता हैं, कि धर्म और विज्ञान मे, बहुत बड़ा अंतर, हैं जो पार नही हो सकता। कोई कहते हैं, अतीत में जिसे धर्म कहते थे, उसीका परिवर्तन वर्तमान में अब 'विज्ञान' मे हो भया हैं, इसीलिए धर्म अब कालबाहृय है, कोई कहते है, 'धर्म और विज्ञान एक ही सिक्के की दो बाजू हैं। लेकिन ये सब 'एकांत वादी' हैं। इन लोगोने न धर्म समझा हैं, अच्छी तरह से न विज्ञान।

सत्य तो यह है कि, धर्म का अंशमात्र विज्ञान हैं। वस्तु का स्वभाव हैं धर्म और उस स्वभाव को जानने का प्रयत्न करता हैं विज्ञान। विश्व के समस्त पदार्थों का पृथ:करण करके, उनके विशेष और सामान्य गुण जिस शास्त्र मे बताए हैं, वह शास्त्र एक ही हैं, 'जैनशास्त्र आगम'। इसका अर्थ यही है कि आजका विज्ञान यदी कुछ सिद्ध करता है, तो आगम को ही सिद्ध करता आ रहा है! देखिए, कुछ वर्ष पहले, वैज्ञानिक वनस्पती मे जीव नही मानते थे, लेकिन आज उन्हो ने उसे मान लिया हैं। 'अणू की खोज' यह बीसवी शतक की देन मानते है, लेकिन अनादि कालसे केवली भगवान उसे बताते आ रहे है। आईन्-

स्टाइन के सापेक्षतावाद सिद्धान्त (Relativity-theory) का सब मर्म स्याद्वाद में निश्चित है। इसी सिद्धान्त के अनुसार कालद्रव्य का निमित्त आज वैज्ञानिकोंने मान्य किया है लेकिन अनादिकालसे तीर्थंकर वाणी उसे कहती आ रही है। पहले जब वैज्ञानिक अंधकारको प्रकाश का अभाव मानते थे, तभी जैनाचार्यों मे कहाँ था, 'नही अंधकार और (प्रकाश दोनो पुद्‌गल द्रव्य की स्वतंत्र पर्याय है, और) आज वैज्ञानिकों ने भी इसे मान लिया है।

ये कुछ उदाहरण सुनकर भी, कई लोग मुझे कहते है, कि बहनजी आपके आगम में कुछ ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं, कि जिन्हे विज्ञान से स्पष्ट विरोध होता है, और कुछ ऐसे भी है, विज्ञान से सिद्ध नही हो सकते। पहले विधान के लिए, वें दृष्टान्त देते है चीटीका। कहते है, चीटीको तो आगम मे तीन इंद्रियों कहाँ है लेकिन इसे प्रत्यक्ष बाधा आती है; क्योकि चीटी को आकार वगैरह का ज्ञान होता है; और विना चक्षुन्द्रीय के सिवा वह कैसे होगा? तो उन्हे मैं पुछती "चीटी को वर्णज्ञान है, या नही इसका आपके विज्ञान मे क्या उत्तर है? वे कहते,

-'विज्ञान के अनुसार तो नही होता।'

- तो फिर जैनशास्त्र मे नेत्र का विषय 'वर्ण' बताया है। आकार नही, इसी अपेक्षासे चीटी को नेत्र नही ऐसा बताया है। क्यों कि आकार का ज्ञान तो स्पर्शनेद्रीय से भी होता है। और आज वैज्ञानिक नेत्र का विषय प्रकाश को मानते है, और जैनाचार्य 'वर्ण' को। हम प्रकाश को नेत्र का विषय माने, तो नेत्र से अंधकार का ज्ञान कैसा होता हैं? दोनो को नेत्र का विषय माने, फिर छाया का ज्ञान कैसा होता है? ये प्रश्न सामने खडे हो जाते हैं। जैनाचार्योंने बताया हैं, कि एक प्रकाशपर्याय मे ही आप पुद्‌गल के 'स्पर्श, रस, गंध, वर्ण' ये चारो गुण पा सकते है। हर एक पौद्‌गलीक वस्तुमें अपना वर्ण गुण है। जब प्रकाश और वस्तू का संयोग होता है, तब दोनो के वर्णगुण का मिश्रण होता है; और जो वर्णपर्याय निर्मित होती है, उसे हम चक्षूसे जानते है। इसी सिद्धात को वैज्ञानिको ने दुसरी तरह से बताया है, 'जब

प्रकाश वस्तुपे तव उसमे से वर्णो का शोषण हो जाता है; और अत मे जो वर्ण वस्तूसे विकिरीत होता है, उसीका हमे ज्ञान होता है। इससे यही सबुत होता है कि स्वयमेव प्रकाश नही, वल्की वर्णगुण ही नेत्र का विषय है।

प्रयोजन यह है कि हम सूक्ष्मता और अपेक्षा कृत दोनोका निरीक्षण करेगे, तब हमे दोनो मे विरोध नही मिलेगा।

कुछ लोग कहते है कि आप तो 'आत्म-तत्त्व' को उपादेय समझते है लेकिन कहा है आत्मा? वैज्ञानिको ने आत्मा को नही लेकिन 'जीव' को तो मान लिया है। और शरीर मे रहने वाला जीवही 'आत्मा' है। केवल आत्मा को वैज्ञानिक सिद्ध नही कर सके, लेकिन असिद्ध भी नही कर सके। इसीका मतलब है कि 'आत्मा' उनके लिए 'सिद्धान्त-कल्पना' स्वरूप है, याने वह सिद्ध हो सकता है, लेकिन अपनी अपात्रता के कारण हम उसे सिद्ध नही कर सकते।

देख लीजिए, जिनागम का जो भाग अब तक सिद्ध नही हुआ; वह 'सिध्दान्त-कल्पनामे शेष है। विज्ञान उसे सिध्द भी नही कर सकेगा, क्योकि विज्ञान को मर्यादा है, मतिज्ञान की। विज्ञान आधारित है, तर्क के उपर। उसके प्रयोगोपर भी मर्यादा है। लेकिन जैन सिध्दात है 'केवली भगवान की वाणी' जिनके ज्ञानपर कोई मर्यादा नही है। और उस मर्यादा रहित ज्ञान को ही जैनिओ ने 'विज्ञान' कहाँ है। आज विज्ञान का अर्थ 'विशेष-ज्ञान' किया जाता है, लेकिन जैनिओने तो 'विशुध्द-ज्ञान' को विज्ञान कहाँ है जो केवल अनुभव का विषय है। वैज्ञानिक तत्त्व 'परिस्थितीनुसार' सिध्द हो जाते है, जब उतनी विशुध्द अवस्था हो जाए, तब अपने आप ही सब ज्ञान मे आता है।

तात्पर्य यह है, कि केवल ज्ञान से जो विज्ञान स्वरुप धर्म भगवान ने बताया, उसी को केवल ज्ञान के अश स्वरूप धर्म मति-ज्ञान से याने आजके विज्ञान से हम समझने का, जाननेका, प्रयास कर रहे है। मतलव जैनधर्म का ही अश स्वरूप आज का विज्ञान है

अतमे

'हे विज्ञान स्वरूप प्रभो,'

अज्ञ है हम लोग जो चाहे,

अजुली मे सागर धरे।

व्यर्थ है, उन लोगोकी जो

सागर से मुँह फेर लेवे ॥ १ ॥

अज्ञ है हम लोग जो चाहे,

हाथ पैरोसे सागर तरे।

धन्य है, उन लोगोकी जो,

धर्म नौकासे जलतरण करे ॥ २ ॥

श्री महावीराय नमः

# सच्चे सुख का उपाय

लेखक : ब्र. हरकुँवर कुमारी जैन

संसार मे जितने प्राणी है वह सुख चाहते है। और सुख प्राप्ति का उपाय भी करते है। लेकिन उन्हे सुख की प्राप्ति नही होती। और वे दुःखी ही रहते है। इसका मूल कारण है कि वे वास्तविक सुख को नही जानते। वे इन्द्रिय जनित सुख को ही सुख मानते है। अत वे सच्चे सुख की प्राप्ति मे असमर्थ रहते है।

इन्द्रिय जनित सुख कैसा है ? जैसे किसी व्यक्ति को खाज हो जाती है तो वह उसे खुजलाने मे आनन्द मानता है। फिर खुजलाने के बाद उसे जलन पडती है तब उसे असह्य वेदना होती है। इसी प्रकार इन्द्रिय सुख भी है। जिसमे सरसो के दाने बराबर सुख और पर्वत के बराबर दुःख है। वह इन्द्रिय जनित सुख भी कर्म के आधीन है। यदि पाप कर्म का उदय हुआ तो हमे वह सुख भी नही मिलता। यदि पुण्य कर्म का उदय हुआ तो हमको मिल जाता है।

हमारे दुःख का मूल कारण इच्छामे है। जिनसे हमे आकुलता बढती है। हमारी इच्छाये तो अनन्त है, और वस्तुये सीमित है। अतः हम इनकी पूर्ति नही कर सकते। इच्छा (तृष्णा) रूपी गड्ढा इतना बडा है कि इसमे तीन लोक की सम्पत्ती भी तृण के समान है। अत. हम इच्छाओ को सीमित करे तब ही इस गड्ढे की पूर्ति कर सकते है। कहा भी है- 'इच्छा निरोधः तप.'।

अर्थात् इच्छाओ को तोडना ही तप है। आकुलता को घटाने के लिये जितना हम त्याग करे उतनी ही हमारी आकुलता कम होती

जायेगी और हमे सुख और शान्ति की प्राप्ति होगी । आकुलता का पूर्ण अभाव कहाँ है ? मोक्ष मे ।

हमारे कुछ भाई-बहन कहते है कि मोक्ष तो पचम काल मे है नही । परन्तु आचार्य कहते है कि भैया । मोक्ष का मार्ग तो जितना हमारा त्याग एव ज्ञान बढता जाता है उतने अशो मे हमारा राग कम होता जाता है उतने अशो मे हमारी मुक्ति निश्चित है । मुक्ति का अर्थ है बधन से छुटकारा प दौलतराम जोने छहढाला में मोक्ष सुख तथा मोक्ष के मार्ग को कहते है ।

"आत्म को हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिये ।।
आकुलता शिव माहि न ताते शिव मग लाग्यो चहिये ।।
सम्य दर्शन ज्ञान चरन शिवमग सो दुविध विचारो ।।
जो सत्यारथ रुप सो निश्चय कारण सो व्यवहारो ।

अर्थात् सम्यग्दर्शन ज्ञान और चरित्र ये तीनो की एकता ही मोक्ष मार्ग है । सो इसके दो भेद है । निश्चय मोक्ष मार्ग और व्यवहार मोक्ष मार्ग सो निश्चय मोक्ष मार्ग तो सत्य है । ओर व्यवहार मोक्ष मार्ग निश्चय मार्ग तक पहुँचाने मे कारण है । अर्थात् ससार में और कोई दुसरा मार्ग नही है । यही सच्चे सुख का उपाय है ।

# व्दीपायन मुनि

— लेखक —
प. तेजपालजी काला
नादगांव

सौराप्ट्र नाम के देशमे एक व्दारावती नामका अत्यन्त सुन्दर नगर था। बाईसवे तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ का जन्म इसी महानगर मे हुआ था। इनके चचेरे भाई–श्री बलभद्र और नारायण कृष्ण दोनो इस नगर मे राज्य करते थे। एक रोज दोनो यादव नरेश भाई जगत्पुज्य श्री नेमीनाथ भगवान के समवशरण मे जो गिरनार पर्वत पर बनाया गया है। वहॉ दोनो भाईयो ने भगवान की बहुत भारी विनय पूर्वक अष्ट द्रव्य से पूजन कर भगवान को बहुत भारी विनयपूर्वक भक्ति भाव से नमस्कार किया और उनकी बहुत स्तुति को भगवान की दिव्य ध्वनि से होनेवाला धर्मोपदेश सुनकर बडे भाई बलभद्र ने हर्षित होकर हाथ जोडकर भगवान से प्रश्न किया – हे भगवान। कृपा कर यह बताइये कि नव मे नारायण श्री कृष्ण की यह सम्पदा और राज्य कब एक रहेगा। तब भगवान ने अपनी दिव्यवाणी से बताया कि– बलभद्र। श्री कृष्ण यह सम्पदा और वैभव बारह वर्ष तक रहकर नप्ट हो जायगी। मद्य के प्रभाव से सर्व यादवोका नाश हो जायगा।

व्दीपार्थन कुमार के क्रोध से व्दारावती नगर जब जल जायेगा और तेरो इस छुरी को पाकर जरत्कुमार के हाथ से श्री कृष्ण की मृत्यु होगी ।

भगवान नेमीनाथ की सर्वत्र वाणी से इस प्रकार समस्त यादव कुल का नाश सुनकर बलभद्र और कृष्ण बहुत चिंतित हुए । उन्होंने उसी समय व्दारावती नगर मे आकर नगर की समस्त मद्य दुकानो की मद्य नगर से बहुत दुर गिरनार पर्वत के एक कुंज मे डलवा दी । द्वीपायन कुमार जी जिस समय समवशरण बैठे हुए थे । उन्होने अपने कारण से यादव कुल का नाश न हो इस कारण उसी समय मुनि दिक्षा धारण कर न्दारावती नगर से बहुत दूर पूर्व देश में चले गये है। बलभद्र नें अपने छुरी से श्री कृष्ण की मृत्यु होनें पाये ऐसा सोचकर उसे खुब घिसकर बिगाड दी और उसे खुब दुर गहरे समुद्रमे डुबा दी । जरतकुमार नगर छोड़ कर बहुत दूर गहरे जंगल मे चले गये ।

इस प्रकार यादव वश का सर्वनाश से वच सके सभी प्रकार के प्रयत्न किये गये । बहुत ही सावधानी से कार्य किया गया लेकिन किसी ने भी यह नही सोचा की केवल ज्ञान लोचन भगवान सर्वज्ञ की वाणी कभी अन्यर्थ नही होगी । मोह वश ऐसी ही विचित्र दशा होती है । वास्तव मे प्रभाव बहुत दुर्निवार होता है वडे-वडे शासनशक्ति और बुद्धि शाती महापुरुष मोह के आगे हतप्रभ हो जाते है । श्री वलभद्र के द्वारा समुद्रमे डाली गई छुरी एक मछलीने निगल ली । कर्म धर्म सयोग से जरत्कुमार थे जो वहुत दूर जंगल में चले गयें थे । एक रोज उस मछली व्दारा निगली गई थी वह छुरी जो उसने समुद्र के किनारे पर आकर उगल दी वह छुरी जरत्कुमार को प्राप्त हो गई । उस छुरी को उसने मारने के लिए तीव्र वाण वना लिया । पाप कर्म के उदय से ऐसा कौन सा अनिष्ट काम हे । जो नही होता ।

बारह वर्ष पूरे भी नही होने पाये थे कि तव ही द्वीपायन मुनिने भूल से यह समजकर कि वारह वर्ष पूर्ण हो गये अव द्वारका नगरी के नष्ट होने का भय समाप्त हो गया है । हर्षित चित्त होकर उस

गिरनारी पर्वत के पास आ गये। जहा की श्रीकृष्ण ने द्वारावतीनगरी की सारी शराब गिरनार के पास एक कुज मे फिकवा दी थी। द्विपायन मुनि वहा आकर कठोर आतपपन योग धारण कर लिया और ध्यान मे लिन हो गये। अधिक मास की गिनती न होने के कारण द्वीपायन मुनि भूल से बारह वर्ष बीस दीन मे ही यहाँ आ गये थे वास्तव मे कर्म क योगो को कोई नही टाल सकता हैं।

उन्ही दिनो मे अर्थात बारह वर्ष समाप्त होने थे अवसर पर यादव कुमार पाप कर्म से प्रेरित होकर उस पर्वत पर जहाँ द्विपायन मुनि ध्यान लगा रहे थे। खेलते हुए आगये और रास्ते मे प्यास से पीडित होने के कारण उन्होने उस पर्वत के पास पहुच कर पडे हुए पानी के कारण कुए का सुखा हुआ मद्य जो पानि मे मिल गया उस मद्ययुक्त जल को पिकर वे सारे यादव कुमार उन्मत्त हो गये और पागल बनकर उन्होने ध्यानमग्न तपस्वी द्वीपायन मुनी को पत्थर आदि से खुब मारना शुरु कर दिया। एव कुचेष्टा करने लगे। गालिया देने लगे। विनाश काल मे ऐसी ही बुद्धि होती है।

द्वीपायन मुनि यादव कुमार के उपद्रव से कठगय प्राण हों गये थे। वे अपने ध्यान से चलायमान हो गये। उन्हे भयकर क्रोध आ गया। जब बलभद्र और कृष्ण को यह बात मालुम हुई तो वे उसी समय द्वीपायन मुनि के पास आकर बहुत भक्ति के साथ यादव कुमारो के द्वारा दिये गये कष्ट के लिए क्षमा माँगने लगे। किन्तु द्विपायन मुनि का कोध शान्त नही हुआ। उसी क्रोध दशामे उन्हौने दो अगुलिया उठाकर बताई। जिसका यह अभिप्राय था कि बलभद्र और कृष्ण को छोडकर समस्त यादव द्वारावती नगर के साथ जल जायगे!

ऐसा ही हुआ। द्वीपायम मुनि के बायें कधे से एक अत्यन्त अयुथ तैज सफय पुतला निकला जिससे सारी द्वारावती नगरी समस्त यादव कुमारो के साथ जला दी और उसके साथ मे द्वीपायन मुनि भी, जलकर भस्म हो गये द्वीपायन मुनि मरकर भयकर क्रोध के कारण मरकर श्रावन नामक व्यंतर देव हूए। केवल बलभद्र और कृष्ण ये

पुण्य पुरुष जैसे तैसे बच पाये थे। सच है। क्रोध के वश में होकर पापी और मुर्ख पुरुष यहाँ क्या क्या अनर्थ नही करते।

पाप के उदय से कृष्ण नारायण की समस्त सम्पदा नष्ट हो गई मात्र बलभद्र और कृष्ण मे दोनो यादवशी पुण्य पुरुष अपने शरीर मात्रं परिग्रह के साथ द्वारावती से निकलकर घूमते हुए ऐक घोर जगल म चले गये।

पुण्य के उदय से यह प्राणी सुखी होता है और पाप के कारण से दुख ही प्राप्त होता है। अत बुद्धिमान पुरुषो को चाहिए कि वे पाप का परित्याग कर सदैव पुण्य कार्य करे अपने मन वचन काय को अशुभ कार्यो मे नही लगावे। श्री जिनेद्रदेव की प्रति दिन पूजा करना सत्य-पात्रो को दान देना शील पालन और उपवास करना ये पुण्यकार्य हैं। इनका आचरण मनुष्यो को सदैव करना चाहिए।

घोर छयावान जगल मे घूमते हूए श्री कृष्ण को बहुत प्यास लगी तब उनको पानी पिलाने के लिए बलभद्र पानी इधर उधर ढुंडने लगे। वे जरा दूर चले गये थे। इतने मे जरत्कुमार उस वन मे घुमते हुए आये उनके पास वही छुरी थी जो बलभद्र मे समुद्र मे फेंक दी थी और उसी मछली ने निंगल कर फिर समुद्र किनारे पर उगल दी थी बाण के रुप मे थी उसे जरत्कुमार ने बहुत तीक्ष्ण बना लिया था। उस वाण कों जरत्कुमार नें किसी जगली जानवर के आहट के भय से छोडा और वह बाण छुटकर दुर्देव से श्री कृष्ण के पाव मे जाकर घुस गया जहा श्री कृष्ण जगल मे पानी की प्यास से मस्त होकर पडे थे वाण लगते ही श्री कृष्ण का प्राणान्त हो गया। इतने मेंभी बलभद्र जब पानी लेकर श्री कृष्ण के पास आयें उन्होंने श्रीकृष्ण निश्चेस्ट देखकर उन्हे पानी पिने को कहा पर श्री कृष्ण जब कुछ बोले नही तो श्री बलभद्र बहुत शोका कलित हुए। उधर जरत्कुमार भी जब अपना बाण ढुढते वहा आये तो उन्हे भी अपना बाण अपने भाई श्रीकृष्ण के ही पाव मे लगने से प्राणान्त हुआ देखकर बहुत ही दुख हुआ। जिस दुखद घटना से बचने के लिए उन्होने बहूत दुर जाकर बियावान जगल मे रहना

स्विकार किया । अपनेही हाथो से अपने भाई की हत्या न हो इसलिए पन्रतु बचा न सके ।

श्री बलभद्र को अपने छोटे भाई श्रीकृष्ण नारायण पर इतना स्नेह था कि वे श्रीकृष्ण के मृत शरीर को छह माह तक अपने साथ लेकर घुमते रहे । लोगो के समझाने पर भी वे श्रीकृष्ण को मरा हुआ विश्वास नही करते थे ।

छह माह के अनन्तर किसी पूर्व जन्म के देव मित्र द्वारा जब बार बार अनेक प्रकार से समझाया गया तब कही श्री बलभद्र का मोह दूर हुआ उन्होने श्री कृष्ण के मृत शरीर का दहन किया और शीघ्र ही वैराग्य प्राप्त कर जिन दीक्षा धारण कर ली ।
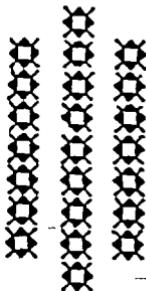
तुंगी शिखरपर घोर तपस्या करके समाधिमरण किया और महिन्द स्वर्ग मे देव हुआ ।

द्विपायन मुनि का आज्ञापन योग के द्वारा प्राप्त महान पुण्य क्रोध के कारण एक क्षण भर मे नट हो गया और वे दुर्गतियो को प्राप्त हो गये । कषाय से आतमा का महान पतन होता है । अतः सुखभिलाषी पुरुषो को चाहिए कि वे आतमपतन एव दु ख की शरणभूत क्रोध कषायका परित्याग कर क्षमा धारण करे । क्षमा ही सब धर्मो का मूल है । इस के धारण करनेसे आतमा मे अपूर्व शन्ति प्राप्त होती है ।और समस्त कर्मो का क्षय होकर मोक्ष का अरुप अनन्त सुख भी मिलता है ।

# जन्म जयन्ती की सार्थकता

बा. ब्र. ले. **कमलेश जैन**
ललितपूर

क्रान्ति– बहिन जयजिनेद्र ।

कमलेश– जयजिनेन्द्र बहिन ।

क्रान्ति– बहिन, क्या बात है, आज तो बडी प्रसन्न दिख रही हो ?

कमलेश– बहिन, तुम्हे नही मालुम ? आज ही एक नया समाचार मिला हैं। कि नीरा नगर मे आचार्य श्री विमलसागर महाराज जी की जन्म–जयती मनाई जा रही है ।

क्रान्ति– अरे, यह तो बडी खुषी की बात है। लेकिन क्या बच्चो की तरह महाराज जी की भी जन्म–जयती मनाई जाती हैं।

कमलेश– हाँ, मनाई जाती हैं, श्रावको के द्वारा। आचार्यश्री न स्वय मनाते है, न अनुमोदना करते है ।

क्रान्ति– फिर श्रावक क्यो मनाते है !

कमलेश– देख, बच्चे के जन्म से माँ–बाप को खुशी होती। बच्चे के बढते जानेसे, उसकी लीला देखकर माँ–बाप को, परिवार के लोगो को खुशी होती है ना ?

क्रान्ति- हाँ इसी कारण तो वे बडी खुशी से बच्चो की जन्म-जयंती मनाते है।

कमलेश- बिलकुल उसी तरह आचार्य श्री के गुणो से ओत-प्रोत हो कर अपने आनद की पुष्टी के लिए हम लोक उन की जयंती मनाते है।

क्रान्ति- तो बहिन, कौनसी है, वे विशेषताएं कि जो हम लोगो के लिए आनदो कारी है, या हमको इतनी प्रभावित करती है, कि हम उन की जयंती मनाते है ?

कमलेश- बहिन, एक नही, ऐसी अनेक विशेषताएँ, आचार्य श्री मे देख ३६ मुलगुणो का पालन कितनी अनतिचार पूर्वक कर रहे है है कि श्रावक भी आश्चर्य चकित हो, दूर देशो से भी पहुँचते है। सुना है कि नीरा का रूप अब अतिशय क्षेत्र जैसा हुआ है।

क्रान्ति- बहिन, इन गुणो के बारे मे तो मुझे कुछ जानकरी दे।

कमलेश- सुन, आचार्य श्री कितनी कठोरता पूर्वक द्वादश तपो का पालन कर रहे है। चातुर्मास मे एक दिन उपवास और एक दिन आहार ऐसा क्रम है। अहार मे भी अन्न पदार्थोका त्याग है। देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि 'क्षुधा' ही आचार्य श्री के वश मे हो गई है, और निद्रा भी। चोबीस घण्टे मे सिर्फ दो या तीन घण्टे निद्रा। शेष समय मे ध्यान स्वाध्याय मे निमग्न। धन्य है वे मुनिराज, जो पंचाचारो मे निरतर लीन आत्म-साधना मै रत है। शिक्षा और दीक्षा यही उन के विहार का प्रयोजन है उन के आशीर्वाद से 'ज्ञान-साधना' के लिए विद्यालय शुरू हुअे है।

क्रान्ति- लेकिन बहिन, जन्म-जयंती मनाने मे क्या सार्थकता है ?

कमलेश- अच्छा प्रश्न है। महाराज श्री के गुणो से प्रमुदित होकर जब हम जयती मनाते है, तब यह भावना हो जाती है, कि

अरे, इन गुणो के सपर्क मे हमे इतना आनद प्राप्त हो रहा है, तो जब हम इन गुणोको स्व मे पायेगे, तो कितने आनद का कारण होगा। तो हमे अपने जन्म-मरण के दुःख को हटाने के लिए उन के पदचिह्नो पर चलने की शिक्षा लेनी चाहिये, यही जन्म-जयती मनाने की सार्थकता है।

क्रान्ति- तो फिर इतनी धूम-धाम से क्यो मनाते हैं?

कमलेश- धर्म प्रभावना के लिए। जिन लोगो को यह मार्ग मालूम नही है, उन लोगो को बताने के लिए। हम दुर्भागी जीव है जिन्हे इस पचम काल मे तिर्थकरो का समागम नही है। अब प्रवर्तन करनेवालो इन मुनिराजो की जन्म-जयती ऐसी धूम-धाम से मनानी चाहिये मानो जन्म-कल्याणिक हो रहा है।

क्रान्ति- तब तो बहिन हम सब भी वहाँ चलेंगे?

कमलेश- हाँ, हाँ, जरुर चलेगे। ऐसे शुभ अवसर को हम खोयेगे नही।

क्रान्ति- बहिन, अब मदिर जाने का समय हो गया है।

कमलेश- अच्छा, चलो।

(दोनो का प्रस्थान)

# आचार्य श्री से वार्ता

श्री. क्षु. सन्मतिसागर ज्ञानानन्दजी

—मैंने आचार्य श्री को पूछा कि पूज्य श्री जन्म—जयती किन को मनाना चाहिये ?

आचार्य श्री ने उत्तर दिया कि जन्म जयन्ती उन पूजा पुरुषो को मनाना चाहिये, जो जन्म मरण के चक्कर से परे हो चुके है ।

—मैंने कहा पूज्य श्री जन्म जयन्ती मनाने से क्या लाभ है ?

आचार्य श्री ने कहा कि पूज्य पुरुषो की जन्म—जयन्ती मनाने से मन मे यह भावना आती है कि जिस प्रकार ये जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाये । इस भावना के साथ तदरुप क्रिया की ओर पुरुषार्थ भी जागृत होता है ।

—मैंने कहाँ पूज्य श्री आप कहते हो, पूज्य पुरुषोकी जन्म जयन्ती मनानी चाहिये । आज कल तो घर घर मे अपने वच्चोकी भी जन्म जयन्ती आनन्द के साथ मनाई जाती है।

आचार्य श्री ने कहा, जन्म दिवस पर आनन्द का तो प्रसग ही नही उठता, जो आयु लेकर आये थे, उसमे से एक वर्ष व्यतीत हो गया, यह खेद की वात ही है। ससार की लीला उल्टी चलती है, लोग कहते है कि १० से एके हो गये, अरे एक वर्ष वढा नही है उल्टी कम तो हो गया।

पूज्यश्री आप भी तो अपनी जन्म जयन्ती धूमधाम से मनावते हो?

आचार्य श्री बोल उठे कि मेरी जयन्ती कोई नही मनाता मैं स्वय ही अपनी जयन्ती मनाना चाहता हूँ। जब चारो ओर से लोग शुभ कामना करते है, कि आचार्य श्री दीर्घ आयु हो, कोई कहता है, कि जब तक सूर्य और चाँद रहै, तब तक आचार्य श्री उपदेश करते रहे यह सब तो संसार मे रखने की भावना आते है, यह कोई नही कहता कि आचार्य श्री शीघ्र समाधि भरण करके अपने गतव्य स्थान को प्राप्त कर सच्ची सुखानुमूर्ति करे।

— मैने कहाँ, पूज्य श्री आप अपनी जयन्ती मनाने का प्रयत्न कैसे कैसे करते है ?

— आचार्य श्री ने कहा, जन्मदिन पर ही नही प्रति-क्षण स्व जयन्ती की भावना भाता रहता हूँ। जयन्ती का अर्थ है, 'जयवन्ता' होना अर्थात् जन्म के चक्कर से बच जाना। जन्म-मरण के चक्कर से बचने के लिए प्रतिक्षण भावना बदवती रहती है, पुरुषार्थ चालू रहता है। जो जयवन्त हो चुके है, ऐसे तिर्थकर आदि महा-पुरुषोंके जीवन की ओर दृष्टी देनेसे भी पुरुषार्थ जागृत होता है। प्रथमानुयोग, करणा नुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग का चिन्तन स्याद्वाद एव अनेकान्त मय दृष्टी को बनाकर करने से भी जयवन्त होने का मार्ग प्रदर्शित होता है। तीनो लोगो का चिन्तन करते हुअे व्रत-समिति गुप्ती रुप आचरण का पालन करते हुअे, भावो को शुद्ध बनाने से कर्म मुक्त होते है, और कर्म-मुक्त होने पर ही जयवन्त होते हैं। अत मैं तो प्रतिक्षण जन्म-मरण के चक्कर से बचने का चिन्तवन धर्म के अवलम्बन पूर्वक करता रहता हूँ, यही मेरा स्वय की जयन्ती मनाने का उपक्रम है।

— पूज्य श्री सासारिक प्राणिओके प्रति आप की क्या भावना है ?

आचार्य श्री कहने लगे कि मेरी यही भावना है, समस्त प्राणि-ओके प्रति कि शीघ्र तित शीघ्र समस्त प्राणी जयवन्त हो, सच्चे सुख को प्राप्त करे।

– पूज्यश्री आशिर्वाद दीजिए ताकि जयन्ती की वास्तविकता, धर्म का मर्म स्याद्वाद एव अनेकान्तात्मक वस्तु स्वरुप को स्याद्वाद ज्ञान गगा के माध्यम से जन जन तक पहुँचाने मे सफलता मिले ।

हाँ हमारा पूर्ण आशिर्वाद हैं, आप सब को पूर्ण सफलता मिलेगी श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद एव स्याद्वाद ज्ञान गगाके माध्यससे सारे विश्व मे प्रचार एव प्रसार पूर्ण रूप मे होगा ।

अरे ! कितना आश्चर्य ! महान् लाछन ! आप कहेंगे बहिन जी हम तो श्रावक है, अष्ट मूलगुणका का पालन करते है, शूद्र जल का त्याग भी किये हुये है, रात्री मे जल का भी त्याग किये हुये है, अस्पताल की दवाइयो तो छूते भी नही, तब भला सप्त व्यसन "जुआ खेलना, चोरी करना, मास खाना, मदिरापान करना, वेश्या गमन करना, शिकार खेलना, परस्त्री सेवन करना" का सेवन क्यो करेगे ?

अरे भइया ! अभी तक हम इन सात कुकर्मो को ही व्यसन समझते रहे है तथा मूल मे भूल बनाये रहे। 'व्यसन' का अर्थ हमारे आचार्यो ने भी 'खोटी आदते' लिया है। 'व्यसन' शब्द की जब हम व्युत्पति करते है तो इसका अर्थ निकलता है वि+असन, वि माने बुरा तथा असन माने भोजन = बुरा भोजन। तो बुरा भोजन जिस तरह हमारे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होने से अपथ्य कहा गया है, उसी प्रकार बुरी आदते हमारे आत्मिक स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होने से

अपथ्य ही है, अत: असेवनीय कही गई है। अत: खोजने पर या चिंतन करने पर ज्ञात होता है कि इन सप्त व्यसनो के अतिरिक्त हमारे मे कुछ अनादिकालीन ऐसी कुआदते पडी हुई है जो प्रतिसमय हमारी आत्मा को राग-द्वेष से क्लेशित कर हमारा संसार वर्द्धन कर रही है। तथा मोक्षमार्ग को भी अत्यत दूर कर रही है। वह आदते है दूसरों की निंदा करना व दूसरो की चुगली कर देना।

अब हमे सर्वप्रथम निंदा का अर्थ समझना अत्यंत आवश्यक है। निंदा का अर्थ हैं दूसरों के अवगुणों को देखकर अन्य व्यक्तियो के सामने प्रगट कर देना अर्थात दूसरों मे अवगुणो का अस्तिपना व स्वयमे गुणों के अस्तिपना का प्रचार करना ही निंदा है। निंदा करते समय मन मे जिसकी निंदा की जा रही हो उसके अपयश का व स्वयके यश फैलाने का हो भाव रहता हैं। तथा साथ मे मान-कषाय का भी उदय रहता व, तत्सम्बन्धी कर्मो का बंध होता हैं। हम अनेको शास्त्रो के ज्ञाता होते हुये भी निंदा करते समय यह नही सोचते कि निंदा करने से अर्थाय मानकषाय से अगली पर्याय नारकी, वृक्ष या किल्विषिक देवों की मिलती है जहाँ हजारों वर्षो की आयु खडे-खडे ही निकाल देना पडती है।

हम तत्वार्थ सूत्र का पाठ भी प्रतिदिन करते है। आचार्य उमास्वामी ने तत्त्वार्थ सूत्र के छटवे अध्याय के सूत्र '२५' मे कहाँ है कि—

**"परात्मनिंदा प्रशंसे सद्सद् गुणोच्छादनो भ्धावने च नीचैर्गोत्रस्य"**

दूसरे की निंदा और स्वयं की प्रशंसा करने से नीच गोत्र का बंध होता है। आज नीच गोत्र वालों की संख्या बढने का मुख्य कारण जिना-गम के अनुसार यही समझमे आता हैं। आचार्य कहते है कि, हे भोले ससारी प्राणी! तू इन ससारी माया-मोही; राग, द्वेष व विषयों से लिज जीवोंसे यश प्राप्ति की इक्षा करेगा, तो तुझे भी अनत काल तक उन्ही के समान इस चतुर्गतिरूप ससार में परिभ्रमण करना पडेगा। अत इस इच्छा को छोड मोक्षमार्ग मे लग।

दुसरी बात, हम सभी सम्यग्दृष्टि है। अशो के मिलने से अशी का निर्माण होता हैं। उसी प्रकार सम्यक् दर्शन के भी आठ अग है जिन मे नि.शकित निर्विचिकित्सा, तथा अमूढदृष्टि ये स्वय मे ही अनुभव करने योग्य है; व उपगृहन स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना दूसरो के प्रति प्रयोग मे आनेवाले है। उपगृहन का अर्थ (जो बात कभी कर आये है) दुसरो के दोपो का आच्छादन करना। जब हमारे मन मे दुसरो के दोष देखकर उन्हे प्रकट करने का भाव समाया होगा, तब उसके दोषो को आच्छादन करने के विपरीत उन्हे उद्घटित ही करेगे। तथा जब दूसरो के दोषो का प्रचार करेगे तब मोक्षमार्ग से च्यूत होनेवाले है। प्रगट करने का भाव समाया होगा, तब उस के दोषो को आच्छादन करने के विपरीत उन्हे उद्घटित ही करेगे तब मोक्षमार्ग से च्युत होनेवाले को पुन उसी मे लगाकर स्थितीकरण भी कैसे कर सकेगे ? हम ससार मे जिन्हें अपना सम्बन्धो या हितैषी समझते है, अर्थात् जिन से हमारी कषायो के मिलनेसे राग या मित्रता है, उनमे लाख अवगुण होने पर भी उनका उपगृहन ही किये रहते हैं। तब यह सिद्ध होता है कि जिसकी हम निंदा कर रहे है, उससे प्रति द्वेष भावना छिपी हुई हैं। जब हम धर्मी भाई-बहेनोसे वात्सल्यता न रखेगे, उनके अवगुणही देखेंगे, तब धर्म की प्रभावना किस प्रकार कर सकेंगे। अतः यह सिद्ध हुआ कि मात्र सारहीन तथ्य के कारण हम सम्यक्त्वी कहलाने के अधिकारी नही बन पा रहे है, क्योकि अत के चार अगोकी तो चार अगोकी तो सिद्धि हो गयी, वह हमारे मे हैं नही। अब अत की असिद्धि होने पर प्रारम्भ के अगो की सिद्धि हम स्वय अपने मे कर ले व बना ले अपना मोक्षमार्ग।

निंदा करने के दोषो को जानने के पश्चात मन मे भावना उठती हैं कि क्या हम इन से स्वय को बचा सकते हैं ? हाँ। कैसे ? सर्वप्रथम तो हम छिद्रान्वेषी न होकर गुणान्वेषी बने। फिर भी हमे किसी मे ऐसा दोष दिखायी दे जिस से धर्म का ऱ्हास होता हो या उस के पद के अनुकूल कार्य न हो, तब उस से यह पता लगाये कि किस परिस्थिति मे उस से यह गुटी हुई हैं, सब कुछ समझकर वात्सल्य भाव

से उस का स्थितीकरण कर दे। तब होगी हमारे सम्यक्त्व की पहचान वानेगा हमारा मोक्षमार्ग।

अब आप कहे कि बहेनजी ठीक है, हम न करेगे, लेकिन कोई हमसे आकर किसी की बुराई करे तो हम सुन तो सकते है ? नही। यदी कोई किसी दूसरे की निन्दा करना हमारे सामने प्रारम्भ करे, तो सर्वप्रथम कोई बात बनाकर उस प्रकरण को बदलाने का प्रयत्न करे। यदि सामनेवाला बदलना न चाहे, फिर उसे समझाये कि देखो, सीता के जीव ने पूर्व-पर्याय मे मुनि = अर्यिका के पास बैठा देखकर किंल्पित निदा की थी, पश्चात स्वय ही घर-घर जाकर अपना अपराध स्वीकार किया था, फिर भी फलस्वरूप सती सीता को स्वय वैसे लाघन का भार होना पडा। राज महल रहनेवाली सीताको घने जगलो मे भटकना पडा। यह तो मिला, अशमात्र निंदाका फल, तब हम हमेशा ही ऐसे कुकर्म करते हैं, तब हमारी क्या गति होगी, हम स्वय ही समझ ले।

अत यदि हमे ससार सागरसे पार होने के लिए बनना है मोक्षमार्गी, तब मोक्ष महल की प्रथम सीडी सम्यक्त्व को जाज्वल्यमान बनाये रखने के लिये करना है पालन सम्यक्त्व के अगोका तथा जिन कार्योंसे हमे कुछ लाभ न मिलकर हानि ही मिले, तब छोड़ना होगा ऐसे कार्योंको, मोडना होगा मुख दुष्परिणामोसे।

# सन्मार्ग दिवाकर श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी के प्रति उद्‌गार

# साधुसन्त त्यागी व्रति विद्वान तथा श्रावक श्राविकाओं द्वारा

## कीर्ति स्तम्भ

कीरति जिनकी सारे विश्व मे छाई हुई है,
सरस्वती जिनके कण्ठ मे समाही हुई है।
छबिरीतरागी हर मन को भाई हुई है,
ऐसे विमल चरण मम दृष्टि आई हुई है॥ १॥
प्रभावना जिनके निमित्त से धर्म की हो रही है,
मिथ्यात्व दृष्टि जिनकी देशना खो रही है।
समता स्वरूप लखि, मुक्ति प्रमुदित हो रही है॥ २॥
ऐसे ऋषि चरण मे भावना खो रही है
सन्मार्ग सारे विश्व को जिनने दिखाया,
डूबते पतित आत्माओंको, किनारे लगाया।
मोह मत्सर क्रोध को जिनने भगाया।
ऐसे विमल चरण मे ज्ञानानंद आया॥ ३॥
संघपर अनुशासन जिनका कडा है,
भारत में मुनिसघ जिनका बडा है।
चारित्र रत्न उर में जिनके घडा है,
ऐसे विमल चरण मे सन्मति खडा है॥ ४॥
उपाध्याय मुनि भरत से जिन सघज्ञानी,
माता ऋषि दिखत है नित आत्म ध्यानी।
चित्रा विचित्र भक्ती जिसकी सुहानी,
आशिश दो मुनिवश, वनजाऊँ ज्ञानी॥ ५॥

चरणसेवक ज्ञानानन्द

* * *

# विमल गुरु स्तवन

ज्ञानानन्द

आचार्य विमल के सुमिरण से, मिटता मिथ्यात्व अंधेरा ।
हो वन्दन गुरुवर मेरा ।। टेक ।।

तुमरे चरणो मे देश देश के भक्त निरन्तर आते ।
तुमरी अमृत वाणी सुनकर के, मंत्र मुग्ध हो जाते ।।
हो सौम्य छवि चारित्र मूर्ति, मन को विषयो से फेरा ।
हो वन्दन गुरुवर मेरा

हो स्याद्वाद की मूर्ति कभी, एकान्त पास न लाते ।
अज्ञान तिमिर को हटा आप, सशय मत भेद मिटाते ।।
हो निर्विकार ना कछू सग, निज मे ही डारा डेरा ।
हो वन्दन गुरुवर मेरा

फहरा के ध्वजा धर्म की, तुम सोते से जगत जगाया ।
यथाजात ले रूप पूर्ण अपने को, सुखी बनाया ।।
करि आत्म निरीक्षण ध्यान लीन हो मोह रिपु को फेरा ।
हो वन्दन गुरुवर मेरा ..

"सन्मति" पाने को शान्ति सुधा, तुमरे चरणों शिर नाता ।
आशीष पूर्ण दो गुरुवर जोडू, निज आतम से नाता ।।
ना और भावना एक यही, हो भेष दिगम्बर मेरा ।
हो वन्दन गुरुवर मेरा .

आचार्य विमल के सुमिरण से, मिटता मिथ्यात्व अंधेरा ।
हो वन्दन गुरुवर मेरा.

# आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन

**-न्याय प्रभाकर, सिद्धान्त वाचस्पति आर्यिकारत्न श्रीज्ञानमतीमाता**

जना घनाश्च वाचाला सुलभा स्युर्वृथोत्थिता ।
दुर्लभा ह्यन्तरार्द्रास्ते जगदभ्युज्जिहीर्षव ॥

जैसे गर्जना करनेवाले मेघ बहुत ही सुलभ है गरजकर चले जाते हैं। किन्तु जलवृष्टि करनेवाले मेघ खेती आदि मे सफल करके जगत् को सुख देने वाले मेघ दुर्लभ हैं-बहुत कम हैं। वैसे ही इस ससार मे कर्णप्रिय मधुर उपदेश देने वाले लोग बहुत सुलभ है किन्तु जिनका अत करण करुणा से आर्द्र है ऐसे जगत् के प्राणियो के अभ्युदय को चाहने वाले सच्चे उपदेष्टा बहुत ही दुर्लभ है।

इन्ही दूर्लभ मणियो मे एक मणि हैं आचार्य विमलसागरमहाराज इन्होंने पता नही कितनी भव्यात्माओ को मोक्षमार्ग मे लगाया है। आज के युग मे कोई धन के लिए, कोई स्वास्थ्य के लिए तो कोई पुत्र के लिए न जाने कहाँ कहाँ मस्तक रगडते फिरते हैं किसी भी देवी, देवता या पीर फकीर को नही छोड़ते हैं। ऐसे समय मे कुछ मंत्र देकर कुछ औषधि बताकर और कुछ सान्त्वना देकर अपने शुभाशीर्वचनो से श्रावको को अपनी ओर आकृष्ट कर लेना मिथ्यात्व रूपी महाअधकूप से उन्हें निकाल लेना यह हर किसी साधु के बस की बात नही है। वर्तमान मे आचार्य विमलसागरजी महाराज इस कार्य मे एक कुशल साधु हैं। मैंने यह अनुभव किया है कि जो लोग मत्र यत्र देनेवाले साधुओ की निंदा करते हैं वे ही आपत्ति के समय आचार्य विमलसागर जी के पास पहुंचकर उनसे मत्र यत्रो की याचना करके अपने सकट का परिहार कर लेते हैं।

ऐसे परमोपकारी साधुओ को देखकर कुछ विद्वान जो कि अपने आपको महासुधारक मानते है वे पडितमन्य विद्वान् इन साधुओ की निंदा करते भी तृप्त नही होते हैं। वास्तव मे वे आगमज्ञान से अपरिपूर्ण है। मूलाचार मे कहा है कि साधु " विद्या-मत्र, औषधि अर्थात आकाशगामिनी, रूप परिवर्तिनी, जलस्तभिनी आदि विद्याओ को सर्प, विच्छू आदि के विप को दूर करनेवाले अक्षर रूप मत्ररो को, स्वर, व्यजन आदि द्वारा शुभ-अशुभ निमित्तो को या औषधि आदि प्रयोगो

को बतलाता है तो दोष है; कब ? जब कि वह इन बातो को मधुर आहार लाभ के लिए बतलाता है तब, और जब वह परोपकार की भावना से बतलाता है बदले मे उन श्रावको से मिष्ट आहार की वान्छा नही करता है तो कोई दोष नही है प्रत्युत धर्म ही है। यदि वह साधु धर्म प्रभावना परोपकार आदि के उद्देश्य से यंत्र मंत्र आदि देता है तो वह दोषी नहीं है। यही बात मूलाराधना में भी कही है–

जो साधु धन के लिए, मिष्ट भोजन के लिए या सुख के लिए मंत्रादि करता है वह अभियोग्य भावना से दूषित है अन्य नही। जो साधु अपनी अथवा परकी आयु को जानने के लिए या अन्य-परोपकार, धर्मरक्षा, धर्मप्रभावना आदि कारणो से मंत्रादि प्रयोग करता है या अन्य को देता है वह दोषी नही है।[२]

इन आगम वाक्यो को देखकर प्रत्येक मुनि निंदको को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि बहुत से साधु प्राय छहो रस छोडकर एकातर से एक बार नीरस आहार लेते है मात्र कारुणिक भावना से ही मत्र, यंत्रो को बताते हैं वे साधु दोषी नही है।

आचार्य विमलसागर जी की कठोर तपश्चर्या उनका नीरस आहार उनकी निर्दोष साधना उनके लिए तो श्रेयस्कर है ही है उनके भक्तो के मन मे भी त्याग का अंकुरारोपण कर देती है। ऐसे गुरुदेव के जन्मजयती के अवसर पर मेरा उन्हें शतश नमन है। वे शतायु हो और चिरकाल तक धर्मामृत की वर्षा करते रहे इसी सद्‌भावना के साथ मैं उनके श्रीचरणो मे श्रद्धासुमन अर्पित करती हूँ।

**आर्यिका ज्ञानमती**

---

१. मूलाचार अध्यायक, सतेन निमित्तेन भिक्षामुत्पाद्य यदि भुक्ते तदा तस्य निमित्तनामोत्पादन दोष । रसास्वादनदैन्यादिदोषदर्शनात्। मूलाचार टीका पृ. ३५४

२. द्रव्यलाभस्य, भृष्टाशनस्य, सुखस्य वा हेतुं मंत्राद्यभियोगकर्म प्रयुक्ते य स एव अभियोग्य भावनाकरोति नेतर । स्वस्य परस्यवा आयुरापि परिज्ञानार्थं कौतुकं उपदर्शयन्, वैयावृत्य प्रवर्तयामीति वा। उद्यत ज्ञानदर्शनचारित्र परिणामादरवर्तनान्न दुष्यतीति भाव । भगवती आराधना, पृ २२३ [ ज्ञानपीठ से प्रकाशित ]

* * *

ॐ नम सिद्धेभ्यः

# उद्गार

ले. गणनि १०५ आ विजयामती माताजी

शैले शैले न माणिक्य मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवः न हि सर्वत्र चन्दन-न वने वने ॥

यद्यपि माणिक-रत्न पर्वत मे रहते है किन्तु प्रत्येक गिर पर नही प्राप्त होते हैं इसी प्रकार प्रत्येक गज-हाथी के मस्तक से गजमुक्ता नही निकलते, किसी विशिष्ट करि के मस्तक से ही निकलते हैं। वन तो वहुत होते है परन्तु चन्दन का वन यत्र-तत्र एकादा ही होता है इसी प्रकार मनुष्य सर्वत्र है लेकिन सभी साधु नही होते, विरले ही मनीषी साधु वनते हैं।

साधु का जीवन साधना है, साधना का स्रोत त्याग है, त्याग का हेतू विषय विरक्ति है और वैराग्य का साधक है सयम-जीवदया-प्राणीरक्षण। वास्तव मे साधु त्याग, वैराग्य और सयम की त्रिवेणी होता है। जिसके पावन प्रवाह से, निज की निर्मलता से जन-जन के मानस का कल्मष धुलता जाता है। पाप पङ्क धुल धुल कर वह जाता हैं। ऐसी ही स्वच्छ, सुशीतल, सुमधुर धारा हैं। श्री सन्मार्ग प्रदर्शक आचार्य प्रवर १०८ श्री विमलसागर जी महाराज। आपकी निर्मल वुद्धिरुपी दर्पण मे दर्शक का अन्तर्वाह्य स्वरूप स्पष्ट झलकता है। न केवल इतना ही किन्तु उपस्थित व्यक्ति के भावो के साथ उसके अतीत जीवन की घटनाएँ, परिवार स्थिति, आदि भी सिनेमा के चित्र की भाति स्पष्ट झलकती हैं। यह है तप पूत भावना की प्राञ्जलता। आपका निमित्तज्ञान शिरोमणि पद अपना सार्थक्य प्रदर्शित करता हुआ अगूठी मे हीरे की भाति शोभित है।

वात्सल्य गुण तो अडिग होकर वैठा है। शत्रु भी हो आपकी अमृतोपम-वाणी, सरस व्यवहार, उदात्तवृत्ति से क्षणभर मे मैत्री भाव को प्राप्त हो जाता है। सतत चेहरे की मुस्कान आपके अन्तकरण की वात्सल्य भावना का प्रदर्शन करती है। स्मरण शक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण है आपकी २०-३० वर्षो के अरसे के वाद भी व्यक्ति के चेहरे मात्र देखने पर तत्काल उसका नाम, गाँव परिचय वताने की अद्वितीय क्षमता है। यह है वीतराग प्रज्ञा का वैभव। कषाय आपको छू भी नही पाती। यदि वाह्य निमित्त और अन्तरङ्गोदय से क्वचिद् कदाच उदय आ भी गया तो वह क्षणभर मे मेघ पटल की भाँति विलीन होता जाता है, विद्युत्वत

चमक कर नष्ट हो जाता है, रह जाता है निर्मल-प्रकाशित हृदयाकाश। वास्तव मे आप तरण-तारण हैं। भक्तो के रक्षक हैं। पिता पुत्र की रक्षा करता है, माँ, वात्सल्यमयी दुग्ध से उसका पालन करती है तो वहि न अपने स्नेह से उसे सजाती है। परंतु इन महामना गुरुराज के द्वारा ये तीनो ही कार्य एक साथ सम्पादित होते हैं तभी तो आबाल वृद्ध अहर्निश आपकी क्रोड की प्रतीक्षा मे मचालते रहते है। धन्य है यह दिन, वह माता और वह भूमि जिसने नरसिंह को जन्म दे जन, जन का मन हरण कर कल्याण पथ प्रदर्शक प्रदान किया।

प्राय ज्ञान, तप की विषमता दृष्टिगत होती है। जो विद्वान है वह त्याग से दूर और त्यागी है तो ज्ञान से कम। परन्तु आपने इस भ्रान्त कल्पना का उन्मूलन किया है। आपका ज्ञान और तप का सयोग मणि काञ्चनवत् फब कर समाया है। त्याग मूर्ति ध्यान की आधार शिलापर आसीन है। रतन्त्रय का साकार रुप वन्दनीय, अभिनन्दनीय हैं। यह स्व स्वरुप मेरा भी आपकी ज्योतिर्मयी किरणो से आलोकित हो प्रकट हो इस भावना के साथ साथ चरणो मे शत-शत नमस्कार। इन गुरु मक्त्यात्मक शब्दावली के साथ "स्याद्वाद ज्ञानगड्गा" उत्तरोत्तर विकासोन्मुख हो यह मेरी शुभकामना है।

# विमल सागराय नमोस्तु

आर्यिका सुपार्श्वमति

पूज्यवर को मैंने सर्व प्रथम गृहस्थावस्था मे नागोर मे ब्रह्मचारी के रुप मे देखा था। आप के हृदय मे सार्धमियो के साथ कितना वात्सल्य था कितनी गुरुवोके प्रति अगाढ भक्ति थी, यह लेखनी से लिखी नही जाती। आपके सघ मे मैंने ब्रह्मचारिणी अवस्था मे तीन चार चतुर्मास किये है। आचार्य श्री का उज्वल जीवन सबको न्याय, नीति क्षमा का प्रकाश प्रदान करता है। आपकी प्रतिमा अद्वितीय है, जिसके कारण ससारिक प्राणियोको शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, स्वाभाविक, लौकिक, अलौकिक, पारमार्थिक सभी कार्य स्वत सिद्ध हो जाते हैं। दुखियोको तो आपकी शरण अमृत की लता है।

आप भव्य जीवो को ससार समुद्र से पार करने के लिये नौका के समान है। सयमरूपी उद्यान को सुरक्षित रखने के लिए सुयोग्य मालाकार है। जन्म जरा मृत्यु से पीडित ससारी प्राणियो के लिए चतुर वैद्य है। ससाराटवी मे धर्म मार्ग को भूले हुए प्राणियो के मार्गदर्शक है। भवरूपी मरुस्थल में तृषा से आक्रान्त प्राणियो के लिए निर्मल नीर है। धर्म की ध्वजा है आपने अनेक भव्य प्राणियो को महाव्रत अणुव्रत प्रदान कर के भव बधन से छुडाया है।

भौतिक वाद के चका चौंध से व्याकुल आत्मज्ञान से पराङमुख, विषय कषायो में लीन, स्वपर भेद ज्ञान से शून्य इस विश्व के प्राणियो के लिए आचार्य श्री देदीप्यमान सूर्य है। आप ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान है। आप मे ओजस्वी शार्स है जिससे मानव खिचकर आप के चरणो मे नत मस्तक हो जाते है। आचार्य श्री के गुणो का क्या वर्णन करू - उन्होने अनेक जिन मन्दिर निर्माण कराये हैं, अनेक भव्यो को जिनेश्वरी दीक्षा देकर ससार समुद्र से निकालने का प्रयत्न किया है। जिन्होने रत्नत्रयरुपी रत्न की भस्म करनेवाली क्रोधरूपी अग्निको क्षमारूपी जलसे शात किया है। वैराग्यरूपी पाश के द्वारा पचेन्द्रियरूपी मृगो को बाधकर समस्त जीवो को अभयदान देनेवाले सयम को धारण किया है। समस्त सुखो की खानभूत सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररुपी बहूमूल्य आभूषणो से शोभित है। उन विमल सागर मुनिराज के चरण कमलो मे शत शत प्रणाम शत शत प्रणाम!

॥ श्री ॥

## श्री १०८ विमल सागरजी महाराज के जन्मोत्सव के अवसर हेतु रचित स्तुति

**रचयता श्री सु माताजी**

हे गुरु महान गौरवनिधान,
संयम विधान सद्गुण सुधाम ।

हे तापस वर शिव सतत ध्यान
शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणाम ॥

हे विमल विमल मति देन हार,
हे संघ शिरोमणि सुदृढ विचार ।

हे विमल सिंधु तुम गुरु महान,
शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणाम ॥

तुम बाल ब्रह्मचारी महान,
भव्य कमल बोधक आस्वान ।

हे विमल सिंधु तुम गुरु महान,
शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणाम ॥

हे भव्य जीव संबोधकार – हस्तावलम्ब भव सिंधुतार
हे धर्म प्रचारक सुगुण निधान,
शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणाम ॥

तुम देश देश में कर विहार,
की ना अतीव सुधर्म प्रचार
हे रत्न त्रय की मूर्ति महान
शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणाम ॥

* * *

# हमारी शुभकामना

विनीत **क्षु. गुणसागरजी**
**क्षु. नंगसागरजी**

स्याद्वाद ज्ञानगगा आचार्य विमलसागर जयन्ती अंक के लिए शुभकामनाओ साथ साथ, उस चमकते हुए सितारे, चन्द्रमा के समान शीतल वात्सल्यमूर्ति दिग-म्बर धर्म के अविनेता श्री १०८ आचार्य विमल सागरजी महाराज जन्म जयन्ती नीरा नगरी मे विशाल रुप मे मनाई जा रही है, यह नीरा समाज के लिए परम गौरव की वात है।

आचार्य श्री अपने सद्‌गुणो के कारण सारे विश्व मे भव्यात्माओ के हृदय कमलाशन पर आशीन हैं। आपने कितना उपकार किया है, समाज का जो अवर्णीय है, एकान्त की धधकती ज्वाला मे आपके आशीर्वाद से ही सम्यग्ज्ञान जलसिंचन करने मे सफलता मिली हैं। भटकते भव्यात्माओ को आपके आशीर्वाद सही आगम और अध्यात्म के ज्ञान की कुजी मिली है। आपके निशाञ्छ सदोपदेशो से ही सारे विश्व मे धर्म प्रभावना हो रही है, आपके सानिध्य मे शेकडो आत्माए आदमी क्या जानवर भी आत्म कल्याण मे सलग्न है। उदाहरण के लिए एक कुत्ता आज भी आपकी भक्ती अपना जीवन व्यापन कर रहा है। यह वात आज स्पष्ट हो गयी हैं की जैन धर्म का अवलम्बन लेने का अधिकारी हर प्राणी है, चाहे वह मनुष्य हो या पशु।

अनुकूल और प्रतिकुल सभी को आप एक दृष्टिसे देखते हो यह आपकी परम प्रशसनीय विशेषता है।

आपकी ६५ वी जन्म जयन्ती पर हम सब यही शुभ कामना करते है कि आप दीर्घ जीवी हो और सत्य अहिंसा अनेकात्मक धर्म की प्रभावना करते हुए ससार समुद्र मे गोते खाते हुए जीवो को यथार्थ मोक्ष मार्ग का सदोपदेश देते रहे।

* * *

# विमल स्तवन

**श्री १०५ क्षु अनंगमतीजी**

**आ** — आध्यात्मिक पद के अधिनेता
**चा** — चारित्र निधि के गुरु विजेता।
**र्य** — यतिवर विमल सिन्धु दुखहारी,
नितप्रति नमन त्रिकाल हमारी ॥ टेक ॥

**श्री** — श्रीश पद के पाने वाले,
**ए** — एकरूप को ध्याने वाले,
**क** — कलह क्रोध हटाने वाले,
**सौ** — सौलह कारण भाने वाले,
**आ** — आगम रुप दर्शाने वाले,
**ठ** — ठारह दोष नशाने वाले
यतिवर विमल .. ... ... हमारी ॥ १ ॥

**सत्**— सत् पथ मार्ग फैलाने वाले,
**मा** — मायाचार भगाने वाले
**र** — राग द्वेष को हरने वाले
**ग** — गर्व परिणति हटाने वाले
यतिवर विमल ... ... .. हमारी ॥ २ ॥

**दि** — दिनकर सम कान्ति के धारक,
**वा** — वाचा से सब के हो हारक,
**क** — कचन सम देही के धारक,
**र** — रत्यारत्य विचार के हारक,
यतिवर विमल .. ... ... हमारी ॥ ३ ॥

**वि** — विशुद्ध परिणति रमने वाले,
**म** — ममता धो समता को धारे,
**ल** — लखकर निजगुण विमल कहाये,
यतिवर विमल .. .. . हमारी ॥ ४ ॥

**सा** — सागर सम शुचि निर्मल मन है,
**ग** — गर्जन गौ का जिनके मुख है,
**र** — रत्नत्रय के पूरित धन है,
**जी** — जीवन सूर्य सदा विकसित है,
यतिवर विमल सिन्धु दुखहारी।
नितप्रति नमन त्रिकाल हमारी ॥

# एक माह अभी नहीं हुआ

पूज्य आचार्य विमलसागरजी महाराज का सघ आजसे करीबन २३ वर्षे पुर्व कोल्हापूर मे पधारा था, तब आपके सघ मे मात्र एक महिने का सकल्प करके यात्रा कराने के लिए घर छोडा था।

आपके सघ मे पदयात्रा एवं साधुसमुह को आहार दान देते देते परिजनोंसे मोह मुडता रहा और आचार्य महाराज की वीतराग भावना एव कल्याणकारी उपदेश को सुनते सुनते निजगुणोकी ओर जुडता रहा।

आचार्य श्री के आशीर्वाद से भारत के समस्थ अतिशय एवं सिद्धक्षेत्रो की तीन तीन वार वदना हो गई। इतने लवे समय मे सवसे वडी विशेषता आचार्य श्रीमे यह पाई कि कितने भी उपसर्ग आये परंतु साहस को नही छोडा, समता एवं विवेक से सहन किया, आपके समक्ष शेकडो विरोधी भी आ कर खडे हो गये, तो उनको भी अपनी वात्सल्य भावना हृदय सरलता से अनुकूल वना लिया, और मेरा तो अभीतक एक माह पूरा नही हो पाया है।

इस ६५ वी पावन की दिनोपकारी ज्ञानधान में निरत सन्मार्ग दिवाकर श्री १०८ आचार्य रत्न एव उनका संघ चिरकाल स्थित रहकर धर्म प्रभावना एवं आत्म कल्याण करते रहै।

विनीत- ब्र चित्रावाई दिघे

सघ सचालिका आचार्य विमलसागरजी महाराज सघ।

# उद्‌गार

परम वात्सल्य क्षमा भूषण से सुशोभित सन्मार्ग दिवाकर परम पूज्य श्री १०८ आचार्य रत्न विमलसागर जी महाराजकी ६५ वी पावन जन्म जयन्ती पर श्री स्याद्वाद ज्ञान गंगा का आचार्य विमलसागरजी जयन्ती विशेषाक प्रकाशित होने जा रहा है, यह परम प्रशसनीय गुरू भक्ति का प्रतीक कार्य है।

आचार्य जी को विश्वमे कौन नही जानता? अपने वात्सल्य गुणसे वे लोक-प्रसिद्ध है। आपकी पावन कीर्ती पताका सारे विश्वमे छाई हुई है। आपके नजदीक रहकर सोनागिर जी मे आपकी गरिमा को पहचाना है, मतभेद होते हुये भी मतभेद नही पाया। पन्थव्यामोह भी आपसे नही है यही कहते है की जिसकी मरजी आये, जहाँ की जैसी आमनाय हो वैसा करो हमे कोई आपत्ति नही है। इसी कारण हर आदमी आपके दर्शन करतेही आपका भक्त बन जाता है।

धर्म प्रभावना एव सम्यग्ज्ञान के प्रसार मे भी आप अग्रणीय है सेकडो तीर्थ क्षेत्र इस बातकी साक्षी दे रहे है। ज्ञानानन्दजी महाराज भी आपके आशीर्वाद से ही सम्यग्ज्ञान के प्रचार मे सफलता पा रहे है।

आप युगंयुगान्तरो तक भव्यात्माओको सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देते रहे, आप के आशीर्वाद से सचित ज्ञान गगा शाश्वत बहराती रहे यही हमारी शुभकामना है।

**ब्र विमल कुमारजी ब्र जिनेश कुमारजी**
**ब्र. महेश कुमारजी ब्र शिखर चन्द्रजी**
**ब्र नरेश कुमारजी**
श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद सोनागिरजी (म. प्र.)

* * *

# शुभ कामना

प. पूज्य आचार्य श्री विमलसागर मुनिमहाराज हे अहिंसा, भूतदया व विश्वशांतीचे प्रतिक आहेत त्याच्या आश्रयाला गेलेल्या जीवाचा उद्धार हा ठरलेलाच अशा या पुण्यश्लोकी महान संताची ६५ वी जयन्ती साजरी करण्याचे महान भाग्य आपल्या सर्वांच्या महान भाग्योदयाने प्राप्त झाले आहे याप्रसगी श्रीना निरामय आयुसरोग्य चिरकालपर्यंत लाभो हीच श्री जिनेश्वरचरणी प्रार्थना

**श्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य**
महास्वामी—कोल्हापूर

* * *

# धर्म प्रभावना।

धार्मिक क्षेत्र मे अनादिकाल से तीर्थंकरो के अनन्तर आचार्यों के द्वारा धर्म-रक्षण एव प्रभावना होती आई है, जब जब धर्मपर सकट आया तब तब आचार्योंने सन्मार्ग दिखाया। अकलक और निष्कलक तो अपने नाम को अमर कर गये।

इसी आचार्य परम्परा मे आचार्य विमलसागर जी महाराज का नाम गौरव से लिया जा सकता है। आप भी धर्म-प्रभावना मे पीछे नही है। आपकी यश पताका सारे विश्व मे छाई हुई है। आपके सदोपदेश से स्याद्वाद एव अनेकातवाद का प्रकाश विश्व के अन्दर हो रहा है। आपके उपदेश से अनेको तीर्थ-क्षेत्रोपर विशाल समवशरण, मदिर एव सरस्वति भवनो का निर्माण हुआ है। आप के आशीर्वाद से ही स्याद्वाद शिक्षण परिषद के माध्यम से सम्यग्ज्ञान के प्रसार मे क्षु श्री सन्मतिसागर 'ज्ञानानद' जी को सफलता मिली है। आप के वात्सल्य गुण के कारण हर प्राणी आप की और आकर्षित होता है।

धन्य है नीरा नगरी के समस्त श्रावक श्राविका जिन्हे सन्मार्ग–दिवाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज का चातुर्मास एव जन्म–जयती मनाने का सौभाग्य मिला है। श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद द्वारा स्याद्वाद ज्ञान गगा का जयन्ती विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है, यह भी परम गौरव की बात है।

आचार्य श्री की ६५ वी जन्म–जयती पर यही शुभ कामना है कि धर्म-प्रभाकर श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज दीर्घ आयु को प्राप्त हो और धर्म–प्रभावता तथा आत्म-कल्याण मे संलग्न रहें।

**ब्र. धर्मचन्दजी शास्त्री**

* * *

**श्री रमणिकलाल रामचंद्र कोठडिया**

सादर जय जिनेंद्र।

आपका पत्र 15-8-80 का मिला। आप प्रात स्मराणेय परम पूज्य आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के ६५ वे जन्म–दिवस पर स्मारिका निकाल रहे है। सो प्रसन्नता है। स्याद्वाद शिक्षण परिषद ज्ञानगगा को पूज्य आचार्य की मंगल आशीर्वाद प्राप्त है। यही इसकी उन्नतीका द्योतक है। हमारी शुभ कामनाएँ है।

**ब्र रविंद्रकुमार जैन**
सपादक
सम्यक्कज्ञान हस्तिनापूर

* * *

SRI. RIKHABLALJI G SHAH,
ADHISHTALA,
SHRI. SYADWADA SHIKSHANA PARISHAD,
SHAKAH NIRA (PUNE),
MAHARASTRA STATE

Saddharmabandhu,

It is a matter of great gratification to realise from your letter that you are going to celebrate 65th Janma Jayanthi" of His Holiness Parama Pujya Acharya Shri. 108 Vimal Sagar Maharaj This is nothing but a holy service of Jina Dharma since Pujya Vimal Sagar Maharaj is a Saddharma incarnate He established a considerable reputation by diving deep within his soul and remaining in the vicinity of the Holy Trinity, the blessed Ratnatraya Dharma.

The Jain Society is highly indebted to His Holiness for his profound knowledge of the tenents profounded by Lord Mahavir and his magnificent way of its propogation among toiling humanity

Jina Dharma is Vishwa Dharma May the entire universe fare well through his preaching of this Vishwa Dharma

It is very good of you to bring out a Souvenir "Shri Syadwad Jnanaganga" on this happy occasion commemorating 65th Janma Jayanthi of Pujya Vimal Sagar Maharaj We bless your venture for its grand success

"Bhadram Bhuyat, Vardhatam Jinashasanam"

With Good Blessings

Swasti Sri Bhattarak Charukeerti Panditacharyavarya Swamiji
SRI DIGAMBAR JAIN MATH,
MOODBIDRI - 574227 (D. K Dist)
(KARNATAKA)

* * *

# हमारी शुभ कामना है

सत शिरोमणि, सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्यमुर्ती श्री १०८ आचार्य रत्न विमलसागरजी महाराज ६५ जन्मदिन घूमधाम से मनाने का शोभ्य जिन्हे प्राप्त हुआ है वे निरा निवासी समस्त श्रावक श्राविकाय महा पुण्यशाली है, क्यो कि पुण्य के विना भली वस्तु को सयोग नही मिलता।

आचार्य श्री को किर्ति रूपी ध्वजा सुशिष्येरुपी हवा से दिग दिगातरो मे फहरा रही है। समता एव वत्सल्य मुनिराजोका सर्व श्रेष्ठ गुण है, जिसकी आपमे प्रती समय दिलोरे उठती ही रहती है। आपकी शाति मुहातो मत्र काधिकाम काती है जो भी सच्चे मनसे एक वार दर्शन कर लेता है उसके उपर मत्रभत प्रभाव पड जाता है, वह आपको विस्मरण नही कर पाता, आपकी शरणमे आने के अनतर उसे अपुर्व सुख एव शाती मिलती है।

"ध्यानेन शोभत योगी" इस युक्ति को तो आपने अपने जीवन का अभिन्न अग बना लिया है। शास्त्र मे जब सारी दुनिया सोती है तब आप जागन का के प्रतिदिन ६ घटे एकाशन मे ध्यान करते है।

धर्म प्रभावना मे आपका नाम आग्रणीय है, अगणित मदिर पंचकल्याणक महोत्सव, विद्यालय, पाठशाला सरस्वती भवनो की स्थापना की गई है।

उदाहरण के लिए राजग्रही सरम्वती भुवन, सम्मेद शिखर, समोशर सोना गिरजी, मे नंगानगकुमार के मदिरोकी स्थापना जोता जागता उदाहरण है। श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद के माध्यम से आखिल भारत मे सम्यग्ज्ञान ज्योती जगाने का सकल्प श्री क्षु सन्मती सागर ज्ञानानंद महाराजने लिया है इसमे भी आपका ही पुर्ण आशीर्वाद एव सहयोग है। सफला के पुष्प रुपमे सम्यक्ज्ञान के प्रसार मे निरत परिषद की अनेको सख्याये उनके अतर गत पाठशालायें सोनागीरजी, गजपथाजी मे विद्यालय आदि की स्थापना।

पथ एवं पक्ष का मोह मे भो आप परे है यही कहते है कि जिस स्थान की जैसी मान्यता है वैसी मानो उसमे हमारा कोई कोई विरोध नही। समस्त साधुओ को आप अपने आप समानही देखते है, अभिमान का तो नाम नही है। जब किसी छोटे साधुको भी विद्या होती है, तो आप ग्राम वहर तन पहुंचाते है, यह सोना-गिरजी का आंखो देखा दृष्य है। आपके सानिध्य मे करीबन दशमाह रहकर जो कुछ पाया है वह शब्दोमे लाना अशक्य है।

ऐसे परोपकारी विश्वबंध आचार्य श्री के पावन चरणोंमे श्रद्धा भक्ती भावना से शतशत वार नमोस्तू करते हुऐ यही शुभ कामना हम सबको है कि आचार्य भी शतायुवने और मिथ्यात्व अध कर मे भटके भव्यात्माओको सन्मार्ग प्रदसित करते रहे।

आचार्य विमल पावन नौका
भवि शरण गहै भव सिंधुतरें।
जन्मदिवस पर यही कामना,
शतवर्ष पुर्ण आचार्य करे॥

**बा ब्र सुनीता, अनीता, कमलेश,**
**क्रांती, कल्पना एवं हरकुवर जैन**

* * *

# सन्मार्ग दिवाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज जी की जन्म-जयती पर दो शब्द

परम पूज्य तपोनिधि सन्मार्ग दिवाकर १०८ आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज जी की ६५ वी जयती दिवस समारोह पर हमारी व समस्त परिवार की ओर से शुभ मगल कामना करते इस ईश्वर से प्रार्थना करते है कि आप चिरायु हो। पूज्य आचार्य जी परम दयालु है आपके समक्ष जो भी व्यक्ति अपनी कठिनाई को लेकर जाते हैं आपके आशीर्वाद से उसकी कठिनाई सहज मे ही दूर हो जाती है। आपके आशीर्वाद से सोनागिरजी गजपन्था आदि स्थानो मे श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद शाखाओ का निर्माण पूज्य श्री ज्ञानानद क्षु सन्मतिसागर जी महाराज जी ने कराया, तथा उसमें सफलता प्राप्त की। सभी विद्यालय सुचारू रूप से चल रहे है, साथ ही आपके सघ मे २० पिछी हैं पूज्य उपाध्याय जी भरत सागर जी महाराज जी के प्रवचन सुनकर नवयुवको मे ज्ञान की जागृति होती है, तथा ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तव मे इस ससार रूप सागर मे तथा मोह रूप जाल में फसकर जीव अपना कल्याण कभी नही कर सकता क्योकि यह जीव अनादि काल से कर्मों का वध कर रहा है, कहा भी है-जर-जोरू-जमीन झगडे की जड तीन यह कहावत गलत नही है। जव भी कोई झगडे होते है इन चीजो को लेकर के होते हैं।

(१) धन, रुपया पैसा, जेवर।

(२) स्त्री, पुत्र, कुटुबीजन की आपसी कलह।

(३) जमीन, मकान आदि के विषयो को लेकर व्यक्ति ज्ञानवान होता हुआ भी वह अपने विचारो मे इतना परिवर्तन कर बैठता है उसे न तो धर्म की बात रूचती है, न ही कोई साधु समागम रूचता है, इस प्रकार वह अपना अहित कर बैठता है, यदि मनुष्य सच्चा सुख चाहता है, तो उसे यह विचार करना चाहिए कि यह ससार असार है, इसमे जरा भी सुख नही है, जीव अनादि काल से राग-द्वेष-मोह के कारण जन्म मरण के दुख उठा रहा है, इसलिए धर्म की शरण लेकर इस जीव को अपना स्वरूप पहिचानना चाहिए, आत्मा का स्वरूप क्या है शुद्ध ज्ञान दर्शन चेतन वाला है तथा इसमे परमात्मा वनने की शक्ति है। जब इस जीव को यह विश्वास हो जायेगा तभी यह संसार के दुखो से छुटकारा पा सकता है, आत्मा का कल्याण कर सकता है, व सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है।

तो इस जयती के शुभ अवसर पर हमे अपने जीवन को सन्मार्ग की ओर

लगा देना है, जीवन के लक्ष्य को निश्चित करना है तभी है सार्थकता इस जयती मनाने की। आचार्य जी के कहे मार्ग का अनुसरण करे तभी इस नरजोवन की सार्थकता है।

**गुलाबचंद सराफ पाटनावाले,** सागर
स्थाई अधिष्ठाता श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद
केद्रीय प्रधान कार्यालय सोनागिरजी

***

श्री १०८ आचार्य विमलसागर महाराजके चरणोमे।

शेर **कवि–डॉ. वसंत रणदिवे (नीरा)**

चद्र किरणे शीत है भव दाह तो मिटता नही।
तम मिटाते रविकिरण मिथ्यात्व तो मिटता नही।
देखा मगर मिथ्यात्व और भव दाह को मिटते हुवे।।
जैन शासन एक रवि है मिथ्यात्व मिटने के लिये।।

चमकते अगणित सितारे विश्वके आकाशमे।
चद्र बरसाता है शीतल किरण केवल भुवनमे।।
एकही नक्षत्र ऐसा खिलगया अबर तले।।
विमल सागर सद्गुरु हम दीन दुखियोके मिले।।
रत्नका भाडार है वे झलकते है तेजसे।।
बस एकही हीरा दमकता राशिमे दिव्यत्वसे।।
सद्गुरु कि देशनासे विश्वमे गुलशन खिले।।
विमलसागर सद्गुरु हम दीन दुखियोको मिले।। २
दिव्यध्वनि ॐकार श्री महावीर वाणी हृदयमे।
तृषित चातक तृप्त है आनद छाया जगतमे।।
हृदय फूले बोधसे सौगध चदनसा चले।।
विमलसागर सद्गुरु हम दीन दुखियोको मिले।। ३
विर शासन के लिए जीवन दिया मुनिराजने।
शतबार वंदन है हमारा परम पावन चरणमें।
देशना प्रभु आपकी नित्य ही हमको मिले।।
विमल सागर सद्गुरु हम दीन दुखियोको मिले।। ४

***

## श्री शिखरचन्दजी प्रतिष्ठाचार्य भिण्ड

अध्यक्ष केद्रीय स्याद्वाद शिक्षण परिषद
विद्वत समिती कार्यालय सोनागिरजी

ससार मे अनेक जीव पैदा होकर अथवा जन्म लेकर मरण को प्राप्त होते है। और इसी प्रकार जन्म और मरण का क्रम चलता रहता है। किन्तु जिस किसी भव्यआत्मा का ससार छेदन होनेवाला है। वही भव्यआत्मा दिगम्बर जैनेन्द्रो दिक्षा लेकर मुनि मुद्रा धारणकर २८ मूलगुणो का पालन करने मे तत्पर तथा तेरह प्रकार के चारित्र का आरधक बनकर मोक्षमार्ग पर चलकर ससार के भ्रमण का नाश कर सकता है। और ऐसे ही निरग्रथ वीतराग दिगम्बर गुरूओकी जन्मजयती मनाई जाती है। एव इसी प्रकार के महापुरुषो की जन्मजयती मनाना चाहिये।

जैन समाज के वीच मे ऐसे वर्तमान मे अनेक दिगम्बर आचार्य तथा साधुगण आज भी मौजूद है। और पंचम काल के अत मे भी मौजुद रहेगे। आज हम जिनकी जन्म जयन्ती मनाने के लिये जा रहे है। वह परम निस्पृही ससार शरीर भोगो से विरक्त निरग्रन्थ श्री १०८ आचार्य सन्मार्ग दिवाकर श्री सद्गुरूदेव विमल सागर जी महाराज हमारे आपके बीच मे मौजुद है। जिनकी परम वात्सल्यमय भावना से निरतर जैन शासन का प्रचार एव प्रसार हो रहा है। इसके साथ ही आचार्य श्री के द्वारा भव्य प्राणीयो का कल्याण हो रहा है।

नीरा नगरी का अहो भाग्य है। जो ऐसे वीतरागी सदगुरू देव सत विमलसागर स्वामी की वैयावृत्ती कर रही हैं। और स्यादवाद शिक्षण के माध्यम से इन गुरूओ की जन्म जयंतीपर विशेषाक निकालकर गुरुभक्ति का पावन परिचय दे रही है। यह सम्यक श्रद्धा का परिचायक है।

आज वर्तमान मे कुछ एकान्तमिथ्या दृष्टी जन परिग्रह को धारण, किये हुवे ससार शरीर का पोषण करते हुवे नाना प्रकार के विषय लम्पटी अपने को सद्गुरू सत कहलवाते है।

अत मे श्री १०८ सन्मार्ग दिवाकर श्री आचार्य विमलसागर के चरणो मे अपनी श्रद्धाजली अर्पित करते हुए त्रयवार उनके पावन चरणो मे नमोस्तु नमोस्तु करता हुआ यह भावना करता हू कि "मेरे कव होय वादिन की सुधरी" तन विन वसन असन विनवनमे निवसौ नासा दृष्टि घरी॥ श्री १०८ आचार्य विमलसागर जी के द्वारा "सिद्धक्षेत्रेसुसर्वत्र कृतामहती प्रभावना॥

येनत विमलाचार्य सन्मार्ग दिवाकर ॥ १ ॥

अर्थ जिनके द्वारा अनेक सिद्ध क्षेत्रो पर महान जैनशासन की धर्म प्रभावना हो रही है। और सम्यक् मार्ग को प्रकाशित करने में सूर्य के समान है। ऐसे श्री १०८ विमलसागरजी महाराज जयवत हो, शुभभूयात।

# भक्तांजली

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि परम पूज्य १०८ आचार्य रत्न सन्मार्ग दिवाकर श्री विमलसागर जी महाराज का ६५ वाँ जन्म जयती मनाने का भव्य आयोजन नीरा ( महाराष्ट्र ) की देवशास्त्र गुरुभक्त समाज ने किया है।

यह निश्चय ही भारी सुन्दर गुरुभक्ति का द्योतक सराहनीय कार्य है। जिसके लिए निरा की समस्त गुरुभक्त दिगम्बर जैन समाज का हम हार्दिक अभिनदन करते है।

इस उपलक्ष मे आप जो "स्याद्वाद शिक्षण परिषद" के तत्वाधान मे प्रकाशित होनेवाले "स्याद्वाद ज्ञान गगा" नाम का एक विशेषाक निकालने जा रहे है। यह भी एक गुरुभक्ति का द्योतक है।

वास्तव मे परमपूज्य १०८ आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज दिगम्बर जैन समाज के नही समस्त विश्व के एक महान विमल पवित्र तपोघन साधु है। आप एक रत्नमय विशिष्ठ दिगम्बर जैन आचार्य परमेष्ठि है।

आप एक बहुत बडे चतुर्विधी सघ के कुशल नायक है। आप ससार के दुखी प्राणीयो के अकारण बन्धु है।

भारत प्रसिद्ध श्री गोपाल दिगम्बर जैन सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय मुरेना मे रहकर आपने जो धर्मशास्त्रो का अध्ययन किया और उसके फलस्वरूप आपके विमल हृदय में ससार शरीर और भोगो की नश्वरता से स्वभावत वितरागता पैदा हुई। और सम्यग्दर्शन की दृढ श्रद्धा उत्पन्न हुई। उससे आपने आपका कल्याण किया।

आपने युवा अवस्था मे ही जव कि मनुष्य प्राय विषय भोगो में ही आसक्त रहता है। दृढ सकल्प के साथ समस्त विषयों की आसक्ती से मुह को मोडकर स्व परमपूज्य महान विद्वान तपस्वी १०८ आचार्य श्री महावीर कीर्तिजी महाराज दैगम्बरी से दीक्षा धारण कर ली उसका स्वपर कल्याण में उपयोग कर जो धर्म और समाज का महान कार्य कर रहे है।

प्रतिदिन हजारो लोग आप जैसे एक महान लौकोत्तर परोपकारी साधु के दर्शन कर अपने को धन्य मानते है। आपकी विशिष्ट आत्म निष्ठा और तपस्या का ही फल है। आपने एक अपूर्व सिद्धी प्राप्त की और उसका उपयोग आप निरपेक्ष बुद्धि से समस्त दर्शनार्थ आये हजारो जैना-जैन समाज के द्वारा पूछे गये प्रश्नो का समाधान कर सन्मार्गदर्शन करते है। उनको धर्ममार्ग में लगाने की प्रेरणा करते है। सयम और त्याग की पवित्र सरणी सर्वत्र प्रवाहित करते है। इसलिए भक्त समाज द्वारा आपको भक्ति प्रदत्त सन्मार्ग दिवाकर यह पब बहुत ही सार्थ है।

आपने समस्त भारत मे सघ सहित घुम-घुमकर जैन धर्म का प्रचार किया है। आपने कई क्षमोथ जिर्णोद्धार करा दिया है। और कई जगह पचकल्याण प्रतिष्ठा कराकर धर्म की महान प्रभावना कि। आपने कई साहित्य प्रकाशन का सरक्षण भी किया है।

तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर जी की 'पहाडी तल हरियो में लाखो रुपयो की लागत से वना महान समवशरण मदिर जहा विश्व का एक अत्यत सुन्दर आकर्षण मनोहर और चमत्कार पूर्ण शिल्प है। यह दिगम्बर जैन समाज को श्रद्धा की एक महान पवित्र तीर्थ है।

इसी प्रकार गतवर्ष आपने श्री सोनागिरजी के पावन सिद्ध क्षेत्र के पहाड पर श्री नग अनग की विशाल सुन्दर खडगासन की प्रतिष्ठा कराकर एव वहाँ पर स्याद्वाद शिक्षिण परिषद की स्थापना कराकर जो सस्कृत महाविद्यालय साहित्य प्रकाशन और धर्म प्रचार आदि सॉस्कृतिक सहज कार्य कराये है।

वास्तव में वर्तमान युग में स्व परमपूज्य १०८ आचार्य शान्तिसागर जी महाराज की पावन दिगम्बर की एक महान आदर्श रत्नत्रय विशिष्ट आचार्य तपस्वी साधु हैं दिगम्बर जैन समाज की पावन गरिमा है। और विश्व की एक महान विभूति है।

हम आपकी इस ६५ वी जन्म जयति के पावन अवसर पर आपके पवित्र साधु चरणो में वदन करते है।

आपको चिरकाल आयु प्राप्त हो। और धर्म की प्रभावना ही हम १००८ श्री विरप्रभु से प्रार्थना करते है।

( ले तेजपाल काला, नादगाव, नासिक )

* * *

## अभिप्राय

प पू आचार्यप्रवर श्री विमलसागर महाराजजी की जन्म जयन्ति पर आपने स्याद्वाद ज्ञान-गगा का प्रकाशन कर केवल जैन समाज का नही अपितु सारे बहुजन समाज का बडा हित किया है।

मैं चाहता हूँ कि प पू श्री. सन्मति सागर महाराजकी स्याद्वाद प्रशिक्षण शिबिर समाज युवा सगठन को विचार, धर्माचरण व एक निर्व्यसनी समाज की निर्मिती में योगदान करता रहे, आपका कार्य दिग्विजयी रहे। नीरा में आपने इस दिशा में बहुत कार्य किया है।

सपादक
**दिव्यध्वनी प्रतिष्ठान ट्रस्ट**
२२/४, रेल्वे लाईन्स सोलापूर ४१३ ०११

# पूर्वपरिचित

निरा नगर-निवासी सेठ रिखबलाल एवं समस्त श्रावक श्राविकाए तथा मंत्री रमणिकलाल कोठडिया आप सबने परमपूज्य चरित्र शिरोमणी सन्मार्ग दिवाकर आचार्य विमलसागरजी महाराज का ससघ वर्षा योग एव धुमधामसे आचार्य श्री की ६५ वी जन्म जयती महोत्सव मनानेका निश्चय धुमधामसे कर महाराष्ट्र के गौरवमें चार चाँद लगा दिये है।

वात्सल्य मूर्ती आचार्य श्रीसे मेरा परिचय आजसे ही नही है जब आप मुरेना विद्यालय में अध्ययन करते थे तब मै वहाँपर अध्यक्ष था। तभी से आपकी कार्य-क्षमता वात्सल्य एवं बुद्धीकी कुशाग्रता को जानता हूँ।

आपकी जितनी भी प्रशसा की जाय वह अपूर्णही होगी, साधुत्व के जितने भी गुण होते है वे सभी आपमे देखनेको मिलते है। आपका हृदय फूल से भी कोमल है। जब भी मै आपके समक्ष जो योग्य बात लेकर गया आपने स्विकार किया।

आपके सघ में उपाध्याय भरत सागरजी जैसे साधक ज्ञानी मुनिराज है। अनेको माताअे भी होनहार है। ब्र चित्राबाई जी की भक्तीको परम प्रशसनिय है। जिनको मै २५ वर्ष से जानता हूँ।

आचार्य श्री के ही परम आशीर्वादसे ज्ञानानंद क्षु श्री सन्मती सागर सम्यक् ज्ञान के प्रसारमे आपके संघ में रहकरहा संलग्न है। क्षुल्लकजी सर्व गुण सपन्न है। परंतु इनमे एक कमी यह है कि वे हर किसीका विश्वास कर लेते है। वादमें वही व्यक्ती उनके सम्यक्ज्ञानके प्रसारमें वाधक वन जाता है। अस्तु आचार्य श्री ससघ जब तक सर्व चाँद तारोका अस्तित्व रहे तव तक भारत वसुधरापर सुखपूर्वक विहार करते रहे यही हमारी शुभ कामना है।

विनीत

मत्री

श्री केद्रीय स्याद्वाद शिक्षण परिषद

विद्वत समिती सोनागिरी

* * *

## मंगलकामना

वास्तव मे जो सन्मार्ग ( मुक्तिमार्ग ) के दिवाकर हैं, एक विशाल दि जैन-सघ के कुशल आचार्य हैं, मन्दकषाय होने से आप के परिणाम नम्र सरल गम्भीर और पवित्र रहते हैं अत विमलसागर हैं। आप के विशाल सघ में प्रतिष्ठित साधुओ में कभी कोई सघर्ष नही होता है अतः आप सफल अनुशासक हैं। आप के निमित्तज्ञान एव मन्त्रवाद से मानव प्रभावित होकर वीतरागदेवशास्त्रगुरु में दृढ़श्रद्धानी हो जाता है अत प्रभावक हैं। आप अपने सघस्थ साधुओ की तरह निकटवर्ती अन्यसाधुओ को भी सहर्ष अपनाते हैं, अत आप परमवात्सल्यभावी हैं। आपके सघद्वारा सर्वत्र विहारकाल में ही सभा, प्रवचनसभा, शिबिर, पाठशाला, प्रशिक्ष ण आदि के महान प्रभावना कार्य होते रहते हैं अत रत्नत्रय के उपासक हैं।

उक्त विशेषताओ से परिपूर्ण श्री १०८ विमलसागरजी आचार्य के ६५ वी जन्म जयन्तीके पवित्र दिवस पर हम दीर्घायुष्य एवं सुखपूर्ण जीवन की कामना करते हैं।

**दयाचन्द साहित्याचार्य धर्मशास्त्री**
प्रवक्ता
श्री ग दि जैन सस्कृत महाविद्यालय (सागर म प्र )

* * *

## भव्यभावना

आध्यात्मिक परम साधक, विशुद्ध श्रद्धा ज्ञान और चारित्रसे शोभायमान सन्मार्ग-दिवाकर १०८ सुरिवर विमलसागर महाराज जैसी लोकोत्तर आत्माके द्वारा वीत्तराग शासन की महिमा जन-मानसमे प्रतिष्ठित हो रही हैं। अपनी सयम साधना और विमलश्रद्धा के फलस्वरूप सारे देशमे उनकी कीर्ति-वैजयती उत्तेष्ठित हो रही है। वें बडे सहृदय, सरलमनस्वी, मुनिश्वर हैं। वें सर्वज्ञ प्रणित आगम के बडे श्रद्धाळू नर-रत्न हैं।

उनके गौरव-प्रसार सवधी समस्त सत्कार्य अभिनदनीय हैं। पावन पत्रि-काका प्रकाशन लोक कल्याणकारी हो, ऐसी मेरी आतरीक भावना है।

आपका सेवक
**सुमेरुचद्र दिवाकर**
शिवनी (म प्र.)



* * *

卐 ॐ 卐

**जन्मदिनांक**
आश्विन कृष्णा ७
संवत् १९७३

**मुनिदीक्षा**
फाल्गुन शुक्ला १३
( सोनारगिर सिद्धक्षेत्र पर )
संवत् २००९

चारित्र-चक्रवर्ती विद्या-वारिधि धर्म-दिवाकर परमपूज्य आचार्य श्री १०८ श्री मुनि विमलसागरजी की ६५ वी जन्म-जयन्ती पर भक्ति-भाव से अभिनन्दन-पत्र चरण-कमलमें श्रद्धापूर्वक सादर समर्पित

# अभिनन्दन-पत्र

मंगल भगवान वीरो मगलं गौतमोगणी ।
मंगल कुन्द कुन्दाद्यौ जैन-धर्मोस्तु मंगल ।।

**आचारिय विमल सागरजी की जहाँ जनम-जयंति मना रहे हैं ।**
**महाराष्ट्र प्रांत के पुणे जिले में जो नीरा-नगर को सजा रह हैं ।।**

**आ** – आनन्द-ठाट-उत्साह नगर में आज बड़ा जो दीख रहा है ।
'आचार्यश्री' की जन्म-जयति, 'नगर-नीरा' जहाँ मना रहा है ।।

**चा** – चारित्र-चक्रवर्ती गुणधारी-आचार्यश्री वे पूज्य सभी के ।
घट-घट में जो बसे हुए कल्याण-भावधारी जन-जन के ।।

**रि** – रिपु-कर्मन के जारण हेतु लगे हुए हैं आत्म-ध्यान में ।
शत-शतवार प्रणाम् हमारा, विनय-भावसे चरण-कमलमें ।।

**य** – यम-नियमोका पालन करते और कराते मुनि-सँघ से ।
यत्नाचार सहित क्रियायें होती जिनकी नित्य-नियम से ।।

**वि** – विकट-परिस्थितिमें भी जिनको, कर न सकी विचलित जीवन मे ।
दृढ-विश्वास, अटल-श्रृद्धा रख, ऊँचे उठे निरन्तर पद में ।।

**म** – 'मनसा-वाचातथाकर्मणा' तीन गुप्तियें सयमित होकर ।
मद-मत्सर-लिप्सादि विकारो को धोती रहती वहाँ पर ।।

ल – लकीर खींच कर मर्यादा की, कभी न लांघी जहाँ आपनें।
प्रयास यथोचित करके बल्कि मजबूत बनायी उसे, उन्होंनें ॥

सा – सात्विकता चारित में लाकर साम्यभाव अपनाया जिनने।
बदल सके वे शत्रु-भाव को, मैत्री-भाव मे दिलसे अपने ॥

ग – गहन-तत्त्व दर्शन-विषयो के अध्ययन में रत रहे निरन्तर।
कथनी अरु करती में इनने, आने दिया दिया कुछ भी अन्तर ॥

र – रसना में मधुराई जिनके शान्ति मिला करती हम सबको।
चरणो में जाते ही जिनके खींच लेती हर-दिल को ॥

जी – जीवेश ( परमात्मा ) बनाने मे आतमकूं तल्लीन रखा करते दिन-रात।
होने न कभी देते वे ऐसी भूले जिनसे पहुँचे घात ॥

की – कीरी से कुँजर तक प्राणी सभी दया के पात्र जिन्हें।
विनय-भावसे श्रद्धा-पूर्वक प्रेषित है प्रणाम्, उन्हें ॥

ज – जप-तप-ज्ञानादि को मानें जो मुनिवर रत्नोसम, श्रेष्ट।
रहकर लीन उन्ही में निश-दिन, ' पर-वस्तु ' को समझेनेष्ट ॥

हां – हाँक-हाँककर मुनि-सघ को, ले चलने की क्षमता जिनमें।
चल रही व्यवस्था अनुशासनवद्ध ठीक-ढँग से, सही दिशामें ॥

ज – जटिल-समस्याओ का हल जो नेक सलाह देकर, हमको।
राह दिखा देते है, जिसपर चलकर, हल कर सकते उनको ॥

न – नत-मस्तक ही चरण-कमल में नमन करें हम वारम्वार।
विनय हमारी यही आप से, लगा दीजिए वेडा पार ॥

म – मझधार भँवर मे फँसी पडी है जीवन-नौका भारी जर्जर।
निकाल दीजिए बाहर उसको, पतवार हाथ में तुरत थामकर ॥

ज – जड-चेतन के भेद-ज्ञान को समझ स्वयने, समझाया।
राह भटकते कितनो की ही सही राह पर ला, चलवाया ॥

यँ – यन्त्र-मन्त्र-अरु तन्त्र सभी के जानकार रहे जीवन में।
जहाँ जैसे भी अवसर आये निपट सके उनसे क्षण में ॥

ति – तितिक्षा (सहिष्णुता) कितनी बढी-चढी है, दृष्टि भी पैनी जिनकी।
टिक न सकी है झूठी बाते उनके आगे नही किसी की ॥

म – 'मन मे क्या है'-जान जाय जो विना कहे ही मन की बाते।
अवसर पर आने पर वे मुनिवर सकट अपने तुरत हटाते ॥

ना – नाराजी को कभी न धरते, वल्कि भुला देते तत्क्षण
राग-द्वेष के उन दोषो से, रखते दूर सदा अपना मन ॥

र – रहम-दया-करुणा मय जीवन, सन्त मुनिगण का होता।
उनके उस करुणा-सागर मे हम भी लगाना चाहते गोता।

हे – हेर रहे है उत्सुकता से, नेत्र उन्होकी उस छवि को।
जिस छवि के दर्शन से मिलता, कई गुणा आनन्द-सुख हमको ॥

हैं – हैसियत-शक्ति-सुविधामे सव छीनी जा रही हम सवकी।
ऊँचा-बाँध बनाकर जहाँ पर, डुबा रहे हर साधन वल्कि ॥

* * *

म – महत्व 'निरा' को मिला जिन्होके 'वर्षायोग' वहाँ होने से।
मना रहे जो जन्म-जयन्ति आचार्य श्री की ठाट-बाटसे ॥

हा – हालत बदल गयी 'नीरा' की, धार्मिक वातावरण बना।
क्या बुढढे क्या वालक सारे हो रहे धर्म पर जहाँ, फना ॥

रा – रात्रि-काल मे मौन रहे अरु इक करवट से शयन करे।
मध्य-रात्रि के बाद नियम से अध्ययन अपना पूर्ण करे ॥

ष – षट-आवश्यक का पालन कर पच-महाव्रत को धारे।
आरम्भ परिग्रह को तेज करके विषयाशाओंको टारे ॥

ट्र – ट्रस्टी बन जहाँ मुनि-सघ को, भली-भाँति से चला रहे है।
वही व्यवस्था सुन्दर देकर स्वस्थ हवायें वहा रहे है ॥

प्रां – प्रान्त प्रान्त के नगर-ग्राम को छाना जिनने पद-यात्रा कर।
हर सस्कृति, भाषा, जलवायु से परिचित हैं आचार्य प्रवर ॥

त – तदवीर तथा तजबीज जिन्होकी अनुभव से रहती भरपूर।
परम तपस्वी उन आचार्य श्री के, आगे धन-दौलत सब, धूर।।

के – केवल-ज्ञान प्राप्त करने के, ही हो अतिम लक्ष्य, जिन्होके।
उनकी दैनिक-जीवन चर्य्या प्रगटाती वे भाव हृदय के।।

पु – पुरुषार्थ कडा कर पा सकता है आत्तम वह परमातम-पद।
आचार्य श्री ने अस्तु उठाये उसी ध्येय के अपने कद।।

णे(ने)– 'नेह' लगाकर वीतराग में, वीतरागी बनना चाहने।
जन्म-मरण नही होता जहाँ फिर, वह परम-धाम पाना चाहते।।

जि – जिव्हा, मन को वश में करना-सरल नहीं-है टेढीत्वीर।
लेकिन उन पर विजय प्राप्तकर, आचार्य दयालु बने अमीर।।

ले – लेन-देन निपटाना चाहते साफ-साफ जो 'स्व-पर' का।
वे लेते रहते लेखा-जोखा, नित्य-नियम से अस्तु उनका।।

मे – मेड बाँधकर अलग करे ज्यो खेत-खेतको, एक दूसरे से।
वैसे ही वे महाव्रती भी पृथक करे चेतन को, जड से।।

जो – जोत-ज्ञान की प्रज्ज्वलित करके मिथ्या-तम को हटा रहे।
आचार्य श्री वे पूज्य हमारे, भटको को पथ दिखा रहे।।

नि – निर्लेप-भाव से जन-जनका जो, सहज ही करते हैं कल्याण।
उनके आदेशो पर कर दें, हम अपना सब कुछ कुर्बान।।

रा – राका (चन्द्रमा) की ज्यो स्निग्ध चाँदनी की शीतलता, ताप हरे।
आशीर्वाद आचार्य श्री का वैसे ही दु:ख दूर करे।।

न – नयनो से उस निर्मलता के भाव झलकते हो जिनके।
भक्ति-भाव से नमन करे हम चरण-कमल में, सहज उन्होके।।

ग – गर्व गलित हो चुका जिन्होका दरिया-दिलकी गहराई में।
बस रहे आज वे इसीलिए ही भक्त गणो के हृदयो मे।।

र – रस-रूप-गंध की ओर लपकने से रोके रखते जो मनको।।
उनके चरणो की पूजाकर पा लेते हम वाँछित-फल को।।

कों – कोई भी जा पहुँचे उनके निकट सुनाते दुखडा अपना।
शान्ति से सुन धैर्य्य बँधाते देकर उनको बडी सांत्वना ॥

स – सतवादी अरु सतोगुणी चारित्र-चक्रवर्ती मुनिराज।
चरण-कमल में प्रणमे उनके, अनित्य-विश्वका जैन-समाज ॥

जा – जाज्वल्यमान जिनकी यश-कीर्ति, चमत्कार से सन्नद्ध होकर
करती रहती बडी प्रभावित, भक्तगणो को आशिष देकर ॥

र – रत्ती भर भी मोहन रखते दिगम्बर जैन-मुनि, पर से।
आदर्श यही है जैन-मुनिका, परिग्रह त्याग करे दिल से ॥

हे – हेर-फेर हो सकती थोडी क्रियाओ में युग अनुसार।
सिद्धान्तो के ध्येय किन्तु वहाँ रहते, सबके ही, इकसार ॥

हैं – हैंकड पानेवाले पड जाते जिनके आगे ठँडे, कितने।
हठवाद्रो को चला सकेनही उनके सम्मुख कोई, अपने ॥

इन भावो के साथ

– विनय-भक्ति पूर्वक हम हैं आपके ही श्रद्धालू भक्तगण–
केसरीमल ओमप्रकाश-अशोककुमार-नरेन्द्रकुमार काला
एवं समस्त काला परिवार, बडवानी म. प्र.
राधाबाई लुहाडिया नगर सेठानी, बडवानी म. प्र
बडवानी नगर की समस्त दिगम्बर जैन-समाज एवं जैन संस्थाये
बडवानी म. प्र. Pin 451-551

* * *

# — विनयांजली —

हमे यह जानकर अत्यत प्रसन्नता हुई है कि आप परम पूज्ज प्रात· स्मर्णीय १०८ आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की ६५ वी जयति के शुभ अवसर पर श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद सोनागिरजी शाखा निरा की ओर से " स्यादवाद 'ज्ञान गगा " विशेषाक प्रकाशित कर रहे है। आचार्य श्री करूणासागर महापुरुष है जो चारो अनुयोग और अनेक भाषाओ के पूर्ण अधिकारी है। आप सदैव ज्ञान ध्यान मे रत रहते हे। वाल व्रम्हचारी पूर्ण तपस्वी हैं। और इस महान तप के प्रभाव से आप को अनेक ऋदियाँ प्राप्त हुई है। आप प्राचिन ऋषिमार्ग प्रथानुसार पच मत्र और तत्रो का भी पूर्ण ज्ञाता है। आपकी धर्मदेशना से अनेक आत्माओ का कल्याण हुआ है। और हो रहा है। जिन शासन देवी भी आपकी कठिन घोर तपश्या से बडी प्रभावित है। आप पर आने वाले उपसर्गों को अपने नियोग साधन कर दूर किये है। यह आपके ध्यान और तप का ही प्रभाव है।

इस परम पावन ६५ वी जयती के मगलमय पर्व पर हम सभी आप के चरणो मे वारम्वार नमोस्तु निवेदन करते है। तथा वीरप्रभू से मगलकामना करते है। कि आप की इस ज्ञानगगा के अमृतजल को हम चिरकाल तक पान करते रहे। तथा आपका रत्नत्रय सानन्द और पूर्ण आरोग्यता पूर्वक चलता रहे।

आप मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करे।

विमलसिधु आचार्य श्री का जन्म दिवस शुभ मना रहे।
पैसठ वा है। यह जन्म दिवन मगल वादिय बजा रहे॥

गुरु चरणो में शत-शत वन्दन, हम चरण कमल मस्तक धरते।
"लाड निर्मला" मिलेशुभाशिष, चिरकाल आशा ये ही करते॥

卐 卐

## मुक्तक

अपनी निधिया बांट रहा जो, यश का वह अधिकारी है।
दुखियों का दुख दूर करो जो, वो ही पर उपकारीं है॥
मुक्ति मार्ग का लक्ष्य बनाकर रत्नत्रय को अपनावे।
जिन मुद्रा धारण करने वाला, हो मुक्ति का अधिकारी है॥ १॥
आत्म निरिक्षण से मानव में, शक्ति नई आ जाती है।
भेद विज्ञान जगा जिन उर मे, बाधाऐं भग जाती है।
बना महान वही है। जग में विषय वासना जिन जी सी।
विषयों का दास बना उसकी, नैया गोते खा जाती है॥ २॥

ले लाडलीप्रसाद जैन
सवाई माधोपूर

# श्रद्धासुमन

परमपूज्य १०८ श्री आचार्य विमलसागरजी महाराज की ६५ वी जन्मजयंती के उपलक्ष्य मे श्री स्या. शि. परिषद की ओर से ' स्याद्वाद ज्ञानगगा का जन्म-जयती विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है, यह जानकर मुझे अत्यत प्रसन्नता हुई

आचार्य प्रवर पूज्य महाराजश्रीने स्व-पर हितकारी जिस अध्यात्म मार्ग का अनूसरण किया है, उस पर चलकर अनेक भव्य आत्माओने अपना उद्धार किया है, तथा अपनी मंगलमयी वाणी से ससार ताप-ससप्त दु खी जीवोको सुखमय सत्पथ दर्शाया है।

इसी श्रेयोमार्ग के पथिक, प्राचीन साधु एव आचार्य परम्परा के श्रेष्ठ सवाहक, सन्मार्ग दिवाकर तपो-निष्ठ-ज्ञान-प्रकाशक गुणोके सागर, सत्पथदर्शक पूज्य गुरुवर्य श्री विमलसागरजी महाराज स्व-पर कल्याण हेतु सुदीर्घजीवी होकर अहिंसामयी जैन धर्म का प्रचार- प्रसार करते हुए सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय मगलकारी अमृतवाणी की वर्षा करते रहे, तथा भौतिकता से भ्रमित मानवोको सन्मार्ग दर्शाते हुए तृष्णा-सतप्त प्राणीयोको शीतल धर्म-पीयूष का पान कराते रहे। ऐसी मेरी मनोऽभिलाषा है। ' स्याद्वाद ज्ञानगगाके सफल प्रकाशन की भी कामना मैं करता हूँ।

अन्तमे कविरत्न प गुणभद्रजीके शब्दो में सघसहीत आचार्यश्री के चरण-कमलोमे नम्रीभूत हो मैं अपने श्रद्धासुमन समर्पित करता हुँ।

नि सङ्ग जो है वायुसम, निर्लेप है आकाशसे।
वनराजकेसम है निडर, जीवन न पर की आशासे॥
जग की किसीभी वस्तुसे, मन में न जिनको राग है।
प्रत्येक मानव के लीये, आदर्श जिसका त्याग है॥
छोडे सकल जग के विषय, इससे न मनमे विक्रिया।
क्षमता, क्षमा, तप, त्याग, सयमसे भरा रहता हिया॥
उन साधु-पुरुषोंके पदो में लीन मन अविराम है।
सविनय हमारा भावपूर्वक कोटि कोटि प्रमाण है॥

अभयकुमार शास्त्री
बीना (म. प्र.)

# निस्पृह उपकारी

उ प्र के जिला एटा की भूमि को अपने जन्मसे चिरकिर्ती का पात्र बनाने वाले आचार्यरत्न श्री १०८ विमलसागरजी महाराज की ६५ वी जन्मजयती पर मै आचार्य श्री के चरण कमलोमे नतमस्तक होता हुआ दीर्घ काल तक इनका मार्ग दर्शन और आशीर्वाद चाहता हुँ।

आचार्य श्री मे किशोरावस्थासे ही धार्मिक रूझान रही हुँ। साधु सेवाने आपके मनमे वैराग्य की भावनाये उत्पन्न कर दी, जो जल्दी ही परिपक्व हो कर आचार्य श्री को परिवारीक बन्धमें से छुडाकर पारलौकिक सम्पदा प्राप्त करनेवाली जिनेश्वरी दीक्षा की ओर ले चली।

आज लगभग ३० वर्ष से निर्ग्रंथ अवस्थामे रहकर आपने जैन मुनि की कठिण चर्या का निर्वाह करते हुए आपने भारत भूमिपर विहार कर के दिगबर जैन धर्मका जो मूर्त स्वरूप में प्रचार किया है, उसे कभी भुलाया नही जा सकेगा

आपका ससर्ग एव मार्ग-दर्शन हमें और हमारी समाज को सदा मिलता रहे यही हमारी कामना है।

जिनेंद्रप्रकाश जैन

एटा, प्रधान सम्पारक करूणादीप पाक्षिक

# शुभकामना

भारत देश ऋषि-परम्परा के लिये प्रसिद्ध और विश्वमे गौरवान्वित हैं। पूज्य १०८ आचार्य श्री विमलसागरजी मुनिराज व उनके विशाल सघ के पापक्षयी दर्शन कर मेरा सौभाग्य जागा है। निरा नगर में आचार्य श्री के चातुर्माससे धर्म-पिपासुओको शुभ प्रसंग का लाभ लेना चाहिए। आचार्य श्री के ६५ वे जन्म-दिवस के उपलक्ष्य मे आप "स्यादवाद ज्ञान गगा" का विशेषाक प्रकाशित कर एक महत्वपूर्ण काय कर रहे है। स्याद्वाद, भाषाप्रयोग की नि.शक सफलताके लिए अचूक सिद्धान्त है। विशेषाक मे प्रकाशित पठनीय-मननीय विषयोसे जन प्रश्न जागृति हो, ऐसी हमारी शुभकामना है.

प प्रेमचद "दिवाकर" शास्त्री

सस्कृताध्यापक, श्री गणेश दि जैन स महाविद्यालय

सागर (मध्य प्रदेश)

# प्रथम दर्शन

मैं रीवा में मार्च २७ से जौलाई ५९ तक कृषि संचालक म प्र. कार्यालय में कृषि सूचना तकनीकी सहायक के पद पर रहा। वहा प्रात एव रात्री को प्रवचन होता था। समाज के सभी सदस्य शास्त्र सभा में आते थे।

रविवार ८ फरवरी १९५९ रात्री मे मन्दिरजी में समाचार आयें कि, चिऐंला रोड से मुनिवर विमल सागरजी महाराज सघ सहित कल पधार रहे हैं। सोमवार ९ फरवरी प्रात. ९ बजे चिएं ला गाँव मे महाराज श्री के दर्शन किये मेरे जीवन मे उनके यह प्रथम दर्शन थे। रीवा मे आहार हुए प्रवचन हुआ बाद मे मैं भी बोला। उसी दिन किशन गड से एक बस शिखारजी जा रही थी उन सबने दर्शन किये प्रवचन सुने। महाराज के साथ फलटन के सेठ थे जिन्होने सघ शिखरजीको निकाला था। अमर पाटनके लोग सघको छोडकर वापिस हो गयें।

मगलवार १० फरवरी को महाराज ने आहार श्री मोहनलालजीके घर हुये मैंने भी आहार किये। महाराज बडे गौरसे मुझे देखते रहे आहारके बाद उपदेश हुआ। अतमें बोले सागरमल तुम रात्रीका भोजन त्याग करो' मैंने कहा बहुत मजबुरी है मेरा आफिस घर मे तीन मील दुर है फिर मुझे दौरोपर भी जाना पडता है इसके बदले कुछ और नियम दे दीजिये। सब सभामे सन्नाटा छा गया मैंने रीवामे बहुत प्रसिद्धी पायी थी। वे मेरे प्रारभिक दिन थे। सबेरे यह मालूम हुआ की मैं रातके भोजनका त्यागी नही हूं। मैं एक कैदी की तरह खडा रहा बोले तीन बजे तक सोच लेना मनुष्य और देव इनमे जो गति चाहिये हो बना देना। तुम एक बडे होनहार विद्वान बनोगे सयोग तो दीक्षा तक का है चाहो जैसा उपयोग कर लो। चाहो कुएमे गिर पडो या घरपर बैठे रहो।' सन्नाटा छा गया मैं कुछ बोलू महाराज स्वय बोले 'मैं यहांसे जब जाऊगा जब तुम रात्री भोजनका त्याग करोगे तुमने मुझे आहार भी दीजीये।' मैंने शान्त मनसे रात्री भोजनका त्याग कर दिया महाराजने अशीर्वाद दिया आर मेरे जोवनमे इसी मुनिवरसे वह प्रथम त्याग था। इस घटनाको २१ वर्ष हो गयें। ठीक तीन बजे महाराजजीका सघ शिखारजी की ओर रवाना हो गया। रामनई गाव तक छोडने गया। मेरी गोदमे मेरा प्रथम पुत्र बिवेक चार माह का था बोले कितने लडके है मैंने कहा यही प्रथम है और कन्याऐं उत्तर दिया दो चलते समय आशिर्वाद दिया बोले लडका होन हार है इसे पढाना।

जलेसर में महाराज श्री को आचार्य पद दिया गया। उस समय में मेरा एक भाषण हुआ था महाराज बोले। एकही भाषा में सयम रखना चाहिये। अच्छा बोल रहे हो फिर भाषा मृदु होना चाहिये।

बुधवार, २० अक्तूबर १९७९ मे सम्मेदालसकी यात्रा से संघ सहित लौट रहा था। राजग्रही मे आचार्य श्री का सघ विराजमान था दीडदो बजे प्रवचन शुरुहुआ सभा में मैं अपने सभी साथियो सहित पीछे बैठ गया तीन बजनेको थे महाराजने प्रवचन समाप्त कर कहा अब आप प सागरमलजीसे कुछ सुनियें। मैं थोडा देर बोला सभा समाप्त हुई बादमे बोले १२ वर्ष पहले एक नियम लिया था अब दुसरा ले लो मैंने कहा अज्ञा दिजिए महाराज श्री बोले देवगतिमे व्यसन नही है यहा मनुष्यो की तरह॥ तुम्हारे जीवन में कोई व्यसन नही है क्यो व्यर्थ का बोजा लिये हो। त्याग के बिना सयम नही होता। उसी दिन सप्तव्यसन का त्याग किया बोले यदि नियम नही तो भी आश्रव तो होता ही रहता है। अब तुम आजसे मनुष्य हो गये अब देव बनना हैं तो व्रत लेना ही पडेगे।

शनिवार १ नुहम्बर १९७९ सोनागिर सिद्धक्षेत्र पचकल्याण इतना अशिर्वाद मुझे आचार्य श्री महाराज का कभी नही मिला मेरे प्रवचन के बाद महाराज श्री बोले जो कहना था, मैं चाहता था, वह प सागरमलजी नें कह दीया है अब जो रुचिकर हो वह तो मेरा यही आदेश है।

रविवार २ दिसम्बर सोना गिरजी विशाल पचकल्याण समारोह में महाराज श्री ने कहा था श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद मे यदि तुम्हारी तरह एक मण्डली आजवि तो जो चाह रहे वह मेरे जीवन कालमे भी पूरा हो जायेगा।

महान तपस्वी आचार्य श्री महाराजके श्री चरणोमें शतशत वन्दन।

प सागरमल जैन
चौबेजी के मन्दिर के पास
किला अदर, विदिशा, (म प्र.)

## प्रेरणाके स्रोत

पाम पूज्य प्रात स्मरणीय सन्मार्ग दिवाकर श्री १०८
आचार्य विमल सागर जी महाराज के सम्पर्ग मे, मैं
सन १९६३ मे आयाथा तभी से न ज्ञाने आपने क्या
जादुसा कर दिया, कर्म क्षेत्र से दृष्टि स्वभाविक धर्मक्षेत्र
की और मुडगई, मन करता है हर समय आपके समागम
मे ही व्यतीत हो, परतु जकडे हुये है संसार बधन मे।
आपसे यह आशीर्वाद चाहते हुये कि मैं भी वीतराग मार्गका
अनुशरण करू, यह शुभ कामना करता है कि
आचार्य श्री शतायु होते हुये धर्म प्रभावना करते रहे।

नेमीचद जैन
किला दतिया (म प्र.)

## शुभकामना

मुनिभक्त भागचन्दजी पाटनी।

कितना सौभाग्य शालीनी है निरानगरी, जहाँ पर विश्ववंद्य आचार्य रत्न श्री विमलसागरजी महाराज का हो रहा है।

निरावालोकी भक्तीभावना प्रशसनीय है, सभी तन मन एव धनमे सलग्न है, यह आँखोसे देखकर आया हू। निरासे चतुर्मास करानेका श्रेय सेठ रिखवल लालजीको है।

कितने पुण्यशाली है वे लोग जिन्हे आचार्य श्री की ६५ वी जन्मजयंती मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हैं।

आचार्य श्री की गरिमा कौन नही जानता। गुरूओ की गरिमा की विवेचना करनेमे कौन समर्थ है, जो सतत आत्मसाधना तत्व चिंतवन मे निमग्न रहते हुये धर्म के सरक्षण मे तत्पर रहते है।

आचार्य शिरोमणी श्री शान्तीसागरजी महाराज द्वारा सिंचित है यह धर्मरूप बगीचा, जिसकी रखवाली में एव सवर्धन मे लीन है आचार्य विमलसागरजी महाराज।

करीबन २३ वर्ष से आचार्य श्री के समागममे हु। अनेक गुणोके साथ आपमें वात्सल्य गुण परम प्रशसनीय है, जिसके कारण कितना भी विरोध करता हुआ आदमी क्यूँ न आये, वह भी आपके दर्शन करतेही शान्त हो जाता है।

धर्म प्रभावना एवं सम्यकज्ञान के प्रसारमें भी आपका नाम अग्रणीय है।

आचार्य श्री की ६५ वी जन्म जयंती पर हमारी सबकी यह शुभ कामना है की आचार्य श्री दीर्घ आयु प्राप्त करे और अज्ञान मित्यात्व कषाय के वसीभूत होकर भव सागरमे गोते खाते हुयें अन्य प्राणीयोको सन्मार्ग दिखाकर सच्चे सुख की प्राप्ती का उपदेश देते रहे।

# आपके आशीर्वाद से

श्री १०८ सन्मार्ग दिवाकर आचार्य श्री विमल सागरजी महाराज की ५६ वी जन्म जयती नीरा नगरमे दिनाक २९—९ ८० से १—१० ८० तक मनाई जा रहा है एव दिनाक ३० ९ ८० को स्याद्वाद ज्ञान गगा आचार्य विमल सागर जयता विशेषाक का विमोचन होगा ऐसा सुअवसर महाराष्ट्र प्रातके नीरा नगर• को मिल रहा है उनके भाग्य का कहा तक सराहना की जा सकती है। आचार्य श्रीजैन जगत को क्या क्या दिया हैं यह यहा गिनाना सुर्य को दिपक दिखाना है इस पचम कालमे जबकि एक तरफ धर्म का ह्रास हो रहा है। मनुष्य को आत्मिक व बौद्धिक शाती के लिए सघर्ष करना पड रहा है और उसके लिये स्याद्वाद ज्ञान गगा एक मात्र टिमटिमाता हुआ तारा है, जो मनुष्य के अज्ञानरूपी मलसे मलीन आत्मा को प्रक्षालित करनेका एकमात्र साधन दिख रहा है, और उससे अन्नतानत्व आत्माओने अपने कर्म मल को प्रक्षालित कर सच्चे सुखको प्राप्त किया है कर रहे है , और करते रहेंगे।

इतने बडे सघ का सचालन निर्विघ्न सुचारु रूप से करना आचार्यो के ही वस की बात है, महाराज श्री के दर्शनो का लाभ मुझे बचपन से ही मिल रहा है। महाराज श्री मघ सहित बिहार करते हुये ब्यावर भी पधारे थे, वहाँ भी सानिध्य का लाभ मिला था अभी हाल ही में श्री सोनागीरजी सिद्ध क्षेत्र मे श्री मुनी नगानग कुमार की मुर्तियो की स्थापना एव प्रतिष्ठा तथा स्याव्दाद शिक्षण परिषद " जिसके कई पुष्प है " का निर्माण महाराज श्री के आशीर्वाद का ही फल है। महाराज श्री के चरणो में मेरी सादर नमोस्तु बारम्बार अर्ज करता हूँ एव श्री वीर प्रभू से प्रार्थना करता हूं कि महाराज श्री की जन्म जयती हम इसी तरह बारम्बार उत्साह से मनाते रहे और जैन धर्म के प्रचार व प्रसार में उनका आशीर्वाद वरद हस्तो से मीलता रहे और धर्म और समाज का रथ जो कि श्री स्याव्दाद शिक्षण परिषद के रूप मे उन्नीत के रास्तेपर अग्रसर हुआ है वह अपनी पूर्ण गति से मार्ग की विघ्न वाधाओ को झेलता हुआ, पार करता हुआ, अपने सभी पताकाओ जैस-ब्रम्हचार्य आश्रम, सस्कृत महाविद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, माध्यामिक विद्यालय, प्राथमिक शाला, महिला आश्रम, ध्यान केन्द्र एव स्याव्दाद ज्ञानगगा, को फैहराता हुआ अपनी सुगध फैलाता हुआ, दिनो दिन अपने लक्ष्य की ओर आगे दौडता रहे। महाराज श्री के आर्शीवाद से ही यह सब सम्भव हुआ है कि जैन समाज के पटल पर ऐसी सस्था का उदय हुआ है अब उन्ही के आशीर्वाद की कामना है उसकी सफलता व उन्नति के लिये।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पेड जिसका वृक्षारोपण आचार्य श्री के आशीर्वाद से ज्ञानान्द जी महाराज द्वारा हुआ है व अपनी शाखायें द्रुत गति से

बढावेगा और वह दिन बहुत दूर नही जब वह अपनी सुरभित सुगध से सबको अपनी ओर आकर्षित करेगा और अपने आपमें एक उदाहरण बनेगा। बस इन्ही शब्दो के साथ आचार्य श्री के चरणो में विनम्र नमन करता हूँ। महाराज श्री के सामने मै अलपज्ञ हूँ औरज्यादा कुछ लिखने मे अपने आपको असमर्थ महसूस करता हूँ।

धर्म के प्रति है सेवा आपकी, सेवा मानो मधुर चन्दन ।।
इसलिये मैं हृदय से, करता हूँ आपका अभिनदन ।।

सुरेन्द्र कुमार रानीवाला

## आशा

यह जान कर परम प्रसन्नता हुई कि निरा नगर में विश्ववन्द्य आचार्य विमल सागरजी महाराज की ६५ वी जन्म-जयती मनाई जा रही है।

आजका आदमी प्रायः कर के मिथ्यात्व, अज्ञान, कषाय में रचापचा होने के कारण दुखी है। प्रतिक्षण इया रूपी ज्वाला मे घुलसता रहता है, लम्बी लम्बी योजनाये बनाता रहता है, जिसे जीवन मे पा नहा सकता, उस की कल्पना करता रहता है जिसे पा सकता है, उसके लिए पुरूषार्थ नही करता, कहता है जो भी होना है, निश्चित है, पुरूषार्थ की आवश्यकता ही क्या है?

ऐसे एकान्तवादी अज्ञान तिमिर से अन्ध आत्माओ को अगर सम्यक्मार्ग दिखाने म कोई समर्थ है, तो वें है सच्चे २८ मुलगुणो के धारक दिगम्बर गुरू।

सन्मार्ग दिवाकर आचार्य विमल सागर जी महाराज के चरणोका अवलम्बन मिले मात्र तीन वर्ष ही हुअे है। आपके आशीर्वाद से जीवन में अनोखा परिवर्तन हुआ है, आपके आदेश से ही केन्द्रीय स्याद्वाद शिक्षण परिषद का आडीटर पर मुझे न चहाते हुअे भी स्वीकार करना पडा है।

जब मैं आप का आशीर्वाद मिला है, तबसे जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा है। आपके आशीर्वाद से हजारो ही नही लाखो भव्यात्माये सन्मार्ग पर आ चुके है। आप के आशीर्वाद से धर्म प्रभावना एव सम्यग्ज्ञान के प्रचार की गति मे भी वृद्धी हुई है।

आप जैसे निःपक्ष धर्म नेताही सही शिक्षा दे सकेगे। अतः स परिवार यही शुभ कामना है हम सब की कि धर्मप्रभाकर, निमित्तज्ञानी, समता सागर, करूणा कर श्री १०८ आचार्य विमल सागरजी महाराज चिरायु रहते हुअे भव्य प्राणियो को सन्मार्ग बताते रहे।

बाबूलाल राजेन्द्रप्रसाद जैन
अम्बाह, जि मुरेना (म. प्र)

# शुभ कामना

परम पूज्य प्रात. स्मरणीय चारित्र रत्न सन्मार्ग दिवाकर विश्व वन्दय श्री १०८ आचार्य विमलसागर जी महाराज को यह ६५ वी पावन जन्म जयन्ती है।

करीव दश वर्ष पूर्वसे राजगीर मे आपके समागम मे विशेष रूपसे आया था। आपकी महिमा आपार है, शब्दो मे कोई क्षमता नही जिनके माध्यम से गुरू गुणो का वर्णन करने मे मैं मक्षम हा सकुँ। जोभी कोई आपको शरण में आकर आशीर्वाद ले लेता है, उसके सारे के सारे सकट मिटजाते है। परोपकार, वात्सल्य भावना प्रतिक्षण आपमे हिलोरे लेती रहती है।
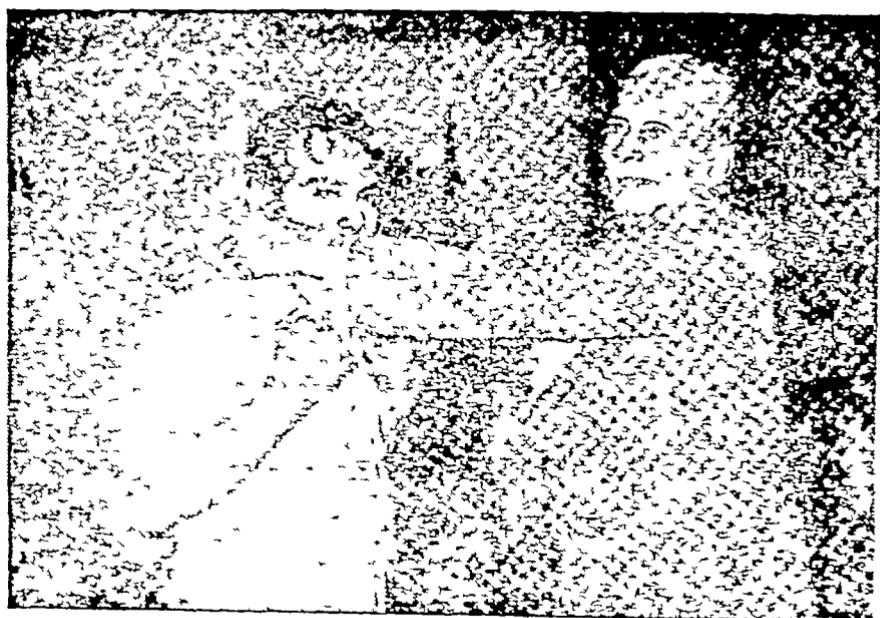
आपके आशीर्वाद से ही मैं समाजिक क्षेत्र मे आया हूँ। आप आपने मुखसे जो भी कह देवे है वह नियम से होता है। धर्म प्रभावनामे भी आपने परम पावन अनेको कार्य अपने शुभआशीर्वाद से कराये है। सोनागिर जी नगानगविद्यालय का अध्यक्षपद का भार भी मुझे अचार्य श्री के आदेश से ही ग्रहण करना पडा है। आपका आशीर्वाद श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद को पूर्ण रूपेण प्राप्त है। क्षु श्री सन्मति सागरजीमहाराज भी आपके सनिध्यमे रहकर के सम्यग्ज्ञान के प्रचार मे सलग्न है,।

आपकी पावन जन्म जयन्ती पर यही शुभकामना है सपरिवार कि आप चिरायू हो और धर्म की प्रभावना कर भव्य आत्माओको सन्मार्ग दिखाते रहैं।

पन्नालाल सेठी
पो डीमापूर (नागालेन्ड)
अध्यक्ष श्री स्याद्वाद शिक्षण मस्कृत नगानग महाविद्यालय

# विमल ज्ञान ज्योति

प.पू.गुरुदेवजीके चरण रज
जिनेन्द्र ह बिराजदार MA

मन मदिरकी ज्योति जगाऊँ।
होऊ तुममे लीन प्रभुजी
पान करूँ मे प्रभु वाणीकी
पावन मैं बन जाऊँ ।।१।।

विमल वाणीसे राग घटाऊँ।
दिव्यामृत धारा ऽऽ प्रभुकी
मगलमय ज्योति जगावो प्रभुजी
यही प्रार्थना है प्रभुजी ।।२।।

बने भक्तसे भगवान जान।
प्रभुकी महिमा है अपार
अनत ज्ञान ज्योति उसपार
विमल अनत प्रभुकी महिमा
प्रकटत है सूरज प्रकाश ।।३।।

जो देखे प्रभु चरणको
मुक्ति मिले प्रभु शरणमे
प्रकटे आतम् ज्योत अतरमे
विमल ज्ञान ज्योति मनमे ।।४।।

विमल सागरमे रमता जाऊँ
गाऊँ गीत विमल सागरकी
विमल अनत ज्योति अतरकी
पार करे आगर भवसागरकी ।।५।।

उस पार है परम पद
सम्यक दर्शन सम्यक चारित्र्य
ज्यो साधे ऽदिलमे ज्ञान
पार करे वही जान।।६।।

मोक्ष मुक्ति द्वारकी राणी
मन मदिरकी ज्योति जगाऊँ
होऊ तुममे लीन प्रभुजी
पान करूँ मै वाणीकी
पावन मै वन जाऊँ
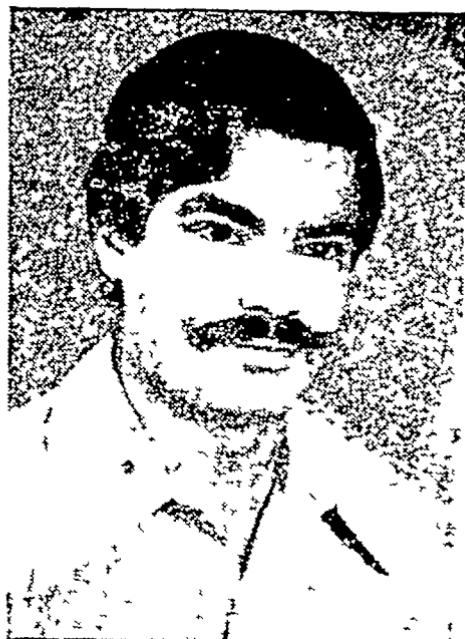
# कल्पवृक्ष विमलसागरजी

विनीत महेद्रकुमार जैन देहली.
अध्यक्ष— श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद
कार्यकारिणी समिति।
केंद्रिय प्रधान कार्यालय सोनागिरी
दतिया (मध्यप्रदेश)

अखिल महाराष्ट्र प्रातके करम सौभाग्यमे परमपूज्य वात्सल्य शिरोमणी आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराजका वर्षायोग निरानगर जि पुना मे सानद सपन्न हो रहा है। निरा नगर निवासी श्रावक श्रविका तो अतिशय पुण्य-शाली है। जिन्हे मनुष्य जन्म को सार्थक बनानेवाली आचार्य श्री को ६५ जन्म जयती मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

आचार्य श्री की अथ महिमा को प्रदर्शित करना अशक्य है। न जाने आपने। अभि तक कितने भव्यात्माओको दिक्षा शिक्षा देकर मोक्ष मार्ग पर लगा दिय। है जो भी आपके पास जिस किसी प्रकारकी भावना लेकर आता है, सच्ची भक्ती के साथ तो उसकी भावना अवश्यही पूर्ण होनी है। मनचाह काम बनता है। अत आप कल्पवृक्षसे कम नही हैं।

आपकी विमल किर्ती अखिल भारत वसुधरा पर छाई हुई हैं। आपकी शाती मुद्राको देखकर विरोधी भी शात हो जाते थे, आपकी आत्मसाधना अर्थात ध्यानकी गरिमाको देखकर कर्म शत्रूभी शिथिल पड गये मेरे उपर तो आपकी असीम कृप है। आपके आदेश एव आशिर्वादसे ही मुझे श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद कार्य-कारिणी समिती के अध्यक्ष पद के भार को स्विकार करना पडा है।

आपके आशिर्वाद एव परम सहयोग से ही ज्ञानानदजी महाराज स्याद्वाद शिक्षण परिषद के माध्यम से आबाल वृद्धोमे सम्यक्ज्ञान ज्योति जगानेमें सफल हो रहे हैं।

स्वपद निर्वाह हेतु आशिर्वाद लेते हुअे मैं परिषद की ओरसे यही शुभकामना रता हूँ की आचार्य श्री ससघ पचमकालके अत समय तक भारत वसुधरापरा विहार कर सच्चे सुखकी प्राप्ती करे।

# परोपकारी गुरुवर्य

भारत देशमे बहुतसे रत्नोने जनम लिया है। भरत चक्रवर्तीके पुरूषार्थ और त्याग की ऐतिहासिक परपरा जिस धरतीपे हुयी है, उसी धरतीपर आजकी पैसठ-वर्षपूर्व विमलसागरजी महाराजने जनम लिया है। इस भवको हम पुनीत समझते है क्यो कि विमलसागरजा महाराजका एव मुनिसघका निरामें चातुर्मास हो रहा है। निरा नगरी स्वर्ग से भी महान प्रतिभासित होती है। जैसे आनदकी गगा बह रही है। जिस प्रकार सूर्यके प्रकाशसे समस्थ जगत् प्रकाश पाता है और तिर्थ करोके जन्मके समय तीनो लोगोमे अपार आनद छा जाता है, उसीप्रकार आचार्य श्री के जहाँ, जहाँ चरण कमल पडते है वहाँ, वहाँ खुशीयोके अपार सागर लेहरा उठते है।

वैसे तो मुझमें इतनी शक्ति नही है कि मैं तिथकर परिषप सदस्य आत्माके बारेमे कुछ कह सकू। यह तो ऐसा लगता है कि मैं सूर्यको दीपक दिखाने जैसी मूर्खता कर रही हूँ। लेकिन जिसप्रकार आचार्य माँनतूगजीने आदिनाथ भगवानकी भक्ति की थी, उसी प्रकार मै भी अल्पबुद्धि होते हुये भी गुरूभक्तिके वशीभूत होकर अपने मनके भावोको रोक नही पारही हुँ।

जिस प्रकार कोयल् अपनी मधुर वाणीसे समस्य प्राणियोको वशीभूत कर लेती है और चमेलीके फूल चलते हुये रहागीर मनुष्यको और भयंकर गरमीमे वृक्षकी छाया रहागीरको अपनी और आकृष्ट कर लेती है। उसी प्रकार आचार्य श्री का वात्स ल्य बर-बसही प्रत्येक प्राणीमात्रको अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है। और मानव इनका वात्सल्य देखकर सहसा चरणोमे नतमस्तक हो जाता है। उन वात्सल्य व्यक्तित्व के विचार हिमालय पर्वत समान उँचे है और सागर के समान गहराई लियें हुये है। कितने भी कठिनसे कठिन समस्यामे क्योन आ जाये लेकिन अपने विवेक और ज्ञानसे सहजही सुलझा देते है। वे जब किसी तत्वपर चिंतन (ध्यान) करते है तब ऐसा लगता है कि साक्षात बाहुबलीजी तपस्या कर रहे है।

वे जैन समाजके ही नही अपितु समस्य भारत वर्ष के एक सजग, सचेन महान विचारक साधु है। अभी कुछ समय पहलेही सोनागिरजीमे श्री स्याद्वाद शिक्षण परिक्षद के अधिवेपनमे कल्याणकी भावनाको रखते हुये महान विद्वान स्वर्गीय श्री पडित मख्खनलालजी शास्त्रीकी अतिम कलमसे "सन्मान दिवाकर" जैसे महान पदवीसे विभोषित हुये है।

मानवकी रूढी कही सिद्धातोसे ग्रासित जीवनको एक नयी राह दे रही है तथा अतिम तिर्थकर भगवान महावीर जिनके शाशनमें हम वर्तमान समयमें रह रहे हैं। उनके महामत्र 'जीवो और जीने दो' की वाणीका जनम जनमे प्रचार

करते हुये निरंतर धर्म मार्गमें अग्रेसर हो रही है।

यह मुनि संघ देखतेही मनमे अैसा लगता है की सब गुरुवर्य हमपर परोपकारहीकर रहे है। इधर आनेके दो दिन बादही स्याद्वाद शिक्षण परिषदकी स्थापना हुयी। उसमे शामको पुरूष और महिलायेभी पढते है। यह क्लास सुरू हुआ और सब गावके लोगोकी प्रगती बढ गयी है। अैसा लगता है कि साक्षात देव हमपर पुष्पवृष्टी कर रहे। हर एकके मनमे आत्मकल्याणकी भावना हो रही है। यह निरा नगरी मानो एक बडा सिद्धक्षेत्र बन गया है।

जैसे पुष्प स्वय ही खुशबीत है और उसके सहवासमे जो कोई आये उसेभी खूशबुत करते है उसी तरह आचार्य श्री के ज्ञानकी, करूणाकी एव तपकी आभा उनके आसपास सर्वत्र फैली हुयी है। देख लीजिए उपाध्यायश्रीको लगातार सात दिन अतराय होनेपरभी विचलित नही होते। उन्होने तो क्षुधापरिषहपर विजयही प्राप्त किया है। आहार हो या न हो दूसरोको सिखानेमे कितने रत होते है। कितनी करुणा धारण किये हुये उपदेश देते है। श्रावक श्राविकाको। स्वय मुक्तिपदकी ओर चलते हमेभी साथ लेनेकी चेष्ठा कर रहे है, श्री क्षु सन्मतिसागरजी ज्ञानके कैसे हमारे आंखोका ढकना खोलके हमे सन्मार्ग बता रहे है, और प्रेरणा मिली है। कि जो कुछ खुशबू उनके सहवासमे हमे मिल रही है उसे अन्यत्र हम सब मिलकर जन-जनतक फैलानेकाप्र यास करे ताकि भव्यात्माए अपने कर्तव्यको समझकर मुक्तिपथके पथिक बने।

हर दिन दोपहर साधुगण, आर्यिकागण तथ क्षुल्लक क्षुल्लीकाजी हमे धर्मोपदेश देते है। सुनकर अैसा लगता है कि सहवास तो चोमासकाही है लेकिन आचार्यश्रीका आशिर्वाद युगयुगतक हमारे शीसपे रहे, जिससे उन्होंके दिखाये मार्ग पर हम दृढ रहे और आगे चलनेका प्रयास करते रहे।

लेखिका – सौ रेणुका रमणिकलाल कोठडिया

मत्री

श्री स्याद्वाद शिक्षण महिला परिषद शाखा निरा

## श्री ॐ नमः सिद्धेभ्यः

(श्री कमल बत्तीसी जी ग्रंथ—)
श्रीमद् जिनतारण स्वामी कृत
"वैराग तिविहि उवन्न,
जनरंजन रागभाव गलियच।
फल रंजन दोष विमुक्क
मनरंजन गारवेन तिक्त्च ॥ ८ ॥

अर्थ— सम्यग्दृष्टि के भीतर तीन प्रकार का वैराग्य पैदा हो जाता है। वह ससार शरीर व भोगो से उदास हो जाता है। जगत के मानवो को प्रसन्न करने का राग भाव भी चला जाता है। शरीर के सुख मे मगन होने का दोष भी छूट जाता है। मन को प्रसन्न करने वाले गारव भाव से या राह से भी रहित हो जाता है।

परम तपस्वी अध्यात्म योगी, आचार्य पूज्य १०८ विमलसागरजी महाराज के ६५ वे जन्जयंति महोत्सव पर श्री वीर प्रभू से हम उनके दीर्घ जीवन एव आरोग्य की कामना करते है। आत्मा कल्याण मे रत यह महामानव युग युग तक समाज का नेतृत्व करते हुये ज्ञान का प्रकाश करते रहे—यही हमारी मगल कामना है।

(ले. भगवानदास शोभालाल जैन सागर म- प्र )

## श्रद्धा सुमन

वृक्षोको ज्यो जाना जाता, उनके फुल-फल पत्तोसे वैसेही पहचाने जाते व्यक्ति उनकोव्यवहारोसे। अच्छे को चाहते हर कोई, पाते है जगमे वे आदर, दुर्जन गण का होता किन्तु जहाँ जाये वहाँ सदा अनादर॥ अच्छोमे जो सर्वश्रेष्ठ है पूजे जाते वे जग मे प्रात.स्मरणीय बन जाते, कल्याण भावनासे जीवन में। उनकी दृष्टी समता-भावी, पूज्य बना देती उनको उन जैसो में मान्य किया हैं, जन जन ने आचार्यश्रीको॥

मना रहे है आज निरा मे जन्मजयन्त्युत्सव जिनका
उनके चरण कमलमें प्रेणित श्रद्धासे वन्दन हम सबका॥

त्याग, तपस्या, तथा साधनाके सग तत्वोकाचिन्तन सोनें मे सुगध कर रहा जिनता जिनवाणी अध्ययन॥ सन्मार्ग पर लगा दिया हैं, जिनने ना जाने कितनो कोआशीर्वाद देकर के अपना बचा लिया गिरने से उन को॥ उन गुरू के भूखें फसे ।ए संकट में भारी चाह रहे हैं, हमे उबारे, देकर आशीष मगलकारी॥

केसरीमल जैन एव समस्त परिवार वडवाळ

रिद्धिधारी श्री आचार्य १०८ श्री विमलसागरजी महाराज आपका पहली बार दर्शन बनारस मे समत २०१५ वैंशाख सुदी ३ मे हुआ आजकि मिती तथा २३ वर्ष आपका आशिर्वाद प्राप्त

आप अत्यत वीतरागी तथा अध्यात्मवृत्ति के साधु है। आपके एकएक शब्द की महानता को स्पर्श करना आज के तुच्छ वुद्धि लोगो की शक्ति के बहार है। तथा आपके जीवन मे कुछ सिद्धिया व चमत्कारीक घटनाओ का जीता जागता उदाहरण मिलता है। ताको प्राणी इस पचकाल मे दुखो कि त्रास से काप रहा है। थरथर आपके दर्शन मात्र से प्राप्त होती है। सेवक लोग आप केदर्शन पाकर शान्ति की सास लेकर पवित्रता का प्राप्त होता है।

धन्य है वह निरग्रथ मुनिदशा अर्थात केवल ज्ञानीक ज्योति मुनि को अन्तर मे चैनन्य के अनन्तगुण पर्यीमो का परिग्रह होता है। विभाव बोन घुट गया होता ह। बाहर मे श्रामण्य पर्यीय के सहकारी कारण भुतपने से देह मात्र परिग्रह है, आप अर्तमूहर्त मे अपने स्वभाव मे डूबकी लगाते है। अन्तरमे निवास के लिए महल मिल गया है। उसके बाहार आना अच्छा नही लगता साधकदशा इतनी बढ गई है आपका वैराग्य महल के शिखर के शिखामणी है।

आपका वैराग्य महल के शिखरके शिरामणी है। आपका निवास चैतन्य-देश में है। उपयोग तीक्ष्ण होकर गहरे-गहरे चैतन्य की गुफा मे चला जाता है। शरीर के प्रति राग घुट गया है। शाती का सागर उमडा हैं। ज्ञान मे कुशल हैं। दर्शन मे प्रबल है। ममाधिके वेधक हैं। मानो वीतराग की मुर्ति है। देह मे प्रबल हैं• छा। समाधि के वेदक हैं देह मे वीरातराग की दशा गई है। जैसे पिता की दूलक पुत्र में दिखाई देती है। उसी प्रकार जिन भगवानकि झलक आप मे दिखती हैं।

रात्री १२ बजे आप जब उठ जाते हैं। तो वैराग्य का ज्वर आता हैं। आनद का ज्वर आता हैं। अदर से चेतना उछलती हैं। चरित्र उघलता हैं। धन्य है मुनिदशा।

आज आपकी जन्म गाठ मनाई जा रही हैं। मैं अपना गुरुदेव के चरणो मे लाखो बार शत-शत वन्दन।

कंचनदेवी पाटनी कलकत्ता

आचार्य श्री का पदस्पर्श इस भूमि को हो कर एक तप से जादा समय हो गया था। भूमिका कण न् कण याद कर रहा था उस पावन स्पर्श को और विचार कर रहा था अब फिर कब जाग उठेगा मेरा भाग्य ? 'निरा' तड्प रही थी धर्म की तृषा से। और अचानक एक दिन वार्ता मिली 'विमल ज्ञान गंगा बुला रही है निरा की ओर। क्या कहूँ ? वार्तासे लोगो की तडपन कम हो गइ, प्रफुल्लीत उल्हसित हो गये सब।

सच बताती हूँ कि मुनिसंघ के साथ चातुर्मास बिताने का यह मेरे जीवन का पहला अवसर हैं। जब पूज्य श्री की शात, सतेज मूर्ति देखी और मन मे विचार आये, मैं कितनी मूर्ख थी, कि अब तक ससारमे ही शांती ढूंड रही थी। लेकिन अब पता हो गया हैं अनुभव हो गया हैं कि पूज्यश्रीके चरणद्वय ही शाती का मार्ग है। पूज्यश्रीके पास आते ही सब विकल्प अपने आस दूर हो जाते हैं उनको हटाना भी नही पडता। अब तक हम होश मे नही थे क्योकी हम ने भोगरूपी अफू सेवन की थी, हम अधे हो गये थें, आप पधारे. और चारो ओर एक जादू की शलाका फिर गई। सब जाग उठे, प्रभू की गरिमाको स्व मे पाने के लिए कहाँ भी हैं न

'अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाग्जन शलाकया।
पक्षुरून्मीलितै येन तस्मैं श्री गुरवे नमः॥

अज्ञान की निद्रा से हमको जगाने वाले, ज्ञान पथ मे, सत्धर्म के रास्ते में अपने आचरण का प्रकाश फैंलानेवाले हे 'विद्यावारिधी,' आपको मेरे कोटी कोटी प्रणाम।

सौ अजली अशोक कोठडिया, नीरा

## " अनोखा सावन "

सृष्टी का चक्र अविरत घूमता रहता हैं । और नित्य समय के अनुसार गर्मी वर्षा, जाडे के दिन आते–जाते रहते हैं । अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार कभी सूरज अपनी सहस्त्रो आँखे खोलकर पृथ्वी को सूखा–जला कर एकदम रुक्ष बना देता है । कभी सृष्टी पर दया–करूणा बरसाने वाले काले–साँवले बादल आसमानमें उदित होते है । आँधी और हरहर बदती हवा के साथ बरसात की रिमझिम धारा अनोखी शांति प्रदान करती हैं । इसके पूर्व की सपूर्ण आतृप्ती, रुखापन हटाकर जहाँ जहाँ हरियाली छा जाती है । नदियों की धाराएँ पूर्ण रुप से भरकर जलदी से सागर की तरफ अपनी साथी वहिनो को लेकर तीव्र गतीसे जाती है । और जाडे के दिनो में हिम के कारण सृष्टी नया ही सन्यस्त रुप धारग करती ह

काल चक्र में घूमते हुए हर काल को अपनी विशेषता होती है, उदा–सन १८५७ इसवी में क्रातविर मंगल पाडेय् झाँसीवाली रानी लक्ष्मीबाईने अपने साथ साथ भुस काल को भी हमेशा हमेशा के लिए अमर बना दिया । वैसे ही सामान्य सावन की अपेक्षा यह सावन निराला–भिन्न एवं अभूतपूर्व है । न कभी इसके पूर्व ऐसा सावन आया था और न भविष्य में आएंगा । सामान्यतं सावन का स्वरुप यह होता है कि –सृष्टी हरित वस्त्र पहनकर सजी हुई दिखाई देती है । रग बिरगे फुल खिलते है । मिट्टी–तालाब सरोवर ही क्या कठिण काले पत्थर भी मृदु शैवाल की शाल ओढे बैठते है तो दृश्य देखते ही बनता है । चारो ओर तृप्ती का समाधान झलकता है । पंक्षी कुल मगल मधुर गीत गाने लगते है । नदियाँ अपने दोनो तीरोंको तृप्त कराती हुई आगे बढती है । आसमान में विभिन्न रगछटा ओके साथ इंद्रधनु झलकता है, वह सीधे Bridge from earth to heaven (पृथ्वी से स्वर्गतक पूल) बनाता है । झूला झुलाते हुए लोग नाना त्योहार मनाते है । परंतु यह अनोखा सावन हम नीरावासी सामान्य जनों के लिए–अनोखी–अजनबी बातो के साथ मौजूद हुआ ।

क्या आप समझे नही ? आचार्य रत्न, ज्योतिविंद, चरित्र चूडामणि, शांत एवं प्रसन्न छबिवाले १०८ श्री विमल सागरजी महाराज, भुपाध्याय श्री भरत सागरजी महाराज और अन्य सन्त मुनिराज इतनाही नही क्षुल्लक–ऐलक–आर्यिका माताजी इनका नीरा गाँव में शुभागमन हुआ ।

जैसे कि पुराणो में कहा गया है–जहाँ भगवान के चरण कमल का स्पर्श होता है वहाँ सुरेन्द्र भी स्वर्गीय कमल पुष्पों को विकसित करते है । ठीक वैसे ही १०८ श्री विमल सागरजी महाराज का नीरा गाँव में ससघ आगमन हुआ और यहाँ का वातावरण ही बदल गया । आचार्य श्री की प्रभावना से लोगो के मन खिलगये । सूर्य फुल जैसे सूर्य की दिशा में देखता रहता है वैसे लोग महाराज श्री की

सेवा में दर्शनार्थी वनकर सुवहसे शाम तक आते रहते है। मिथ्या कल्पनाएँ, मिथ्या विचार, मिथ्या वातो को तज कर जितेन्द्र भगवान की उपासना में जैन-अजैन सभी लगे हुए है। मदिर के आसपास का वातावरण समवशरण जैसा नित्य भरा पूरा और शातता युक्त रहता है।

जीवन में कभी कभी सामान्य वातो से भी परिवर्तन होता है, उदा–रामचरित मानस लिखनेवाले गोस्वामी तुलसीदास एक सामान्य भार्याप्रिय व्यक्ति थे। लेकिन एक वार पत्नीद्वारा की गयी कडी आलोचनासे वे विरक्त होकर आत्मसाधना मे लीन हो गये और एक महान सत वने। ठीक अुसी तरह महाराज के पवित्र चरण स्पर्श से यहाँ मिट्टी भी पावन वनी। हवा सुगधित वनी, कोयलादि पक्षी अपना समय भूलकर मधुर गीत गाने लगे। और लोग तो ऐसे वदले कि कभी पकडकरभी मदिर लाना असभव था वे लोग स्वयस्फूर्तिसे मदिर, भगवान तथा मुनिराजो की चरण सेवा में लीन दिखाई देते है। स्याद्वाद शिक्षण परिषद की महिला तथा पुरुष परिषद भिन्न भिन्न स्थापित कर अुसमें अनेक भव्यात्माएँ सम्यक्ज्ञान की प्राप्ती के प्रयत्न में सलग्न रहे है। अुन्होने अुसे जीवन में आचरण करने का भी निश्चय किया है। पुर्व जिदगी मे की हुअी गलत वातो को छोड दिया है व्यसनोका त्याग किया है। सत्य सगठन सदाचार की स्याद्वाद विचारधारा जन जन तक पहुँचाने का निश्चय किया है।

कुछ वातो-की किन्ही दूसरी वातो से तुलना नही की जाती –वे अपने आपमें वेजोड वैसे आचार्य रत्न विमल सागरजी चद्रमा जैसे शीतल और प्रखर तपाचरण से सूर्य जैसे प्रकाशमान दिखाई देते है। अन्य मुनिवर भी अपनी अपनी ध्यान-साधना उपदेश इनमें लीन रहते है दर्शको की भावनासमझकर अपनी पीछी दर्शनार्थी के सिरपर फेरते हुए महाराज श्री के आशिर्वाद पाने से–मानो स्वर्ग प्राप्ती जैसा अनोखा आनद प्राप्त होता है। हररोज दोपहर महाराजश्री का प्रवचन होता है। तव श्रोतागण वहुत सख्यामें उपस्थित होते है। जब जव भी मैने प्रवचन सुने तो सुनने मे कुछ नही आता था, दिखने में कुछ नही दिखता था मानो हमारी कर्णेन्द्रिय तृप्त हो गयी, दृष्टी भी महाराज श्री का पवित्र दर्शन करके तृप्त हो गयी। अगर किसीने पूछा, 'क्या सुना ? क्या देखा ' तो कह नही पाते–ताकि हमारी जिव्हा अवाक वनती है। महाराज का चरण स्पर्शही हमारे लिए वहुत उद्धारक है।

हित–मित और प्रिय व्यवहारके आदेश से जिव्हा की कटू भाषा बोलने की आदत अनेको ने छोड दी। बात ही बात पर जो तडकते थे वे शातता धारण करने लगे। घर घर के बालक धार्मिक सस्कार धारण करने लगे। जवान और वूढे भी अपने में अत्यत परिर्वतित रहे है।

आचार्यरत्न १०८ श्री विमल सागरजी को अवगत ज्योतिविद्या से अनेको को लाभ रहा। जो कुछ नही चाहते त्रे आचार्य श्री के आशिर्वाद के आशिक तो जरूर

रहते हैं। वसत की हवा एक झोका भी जैसे सुखद और प्राणि मात्र के लिए नया सदेश देनेवाला होता हैं। वैसे महाराज श्री के वास्तव्य का यह 'अनोखा सावन' हमारे जीवन परिवर्तन की नई प्रेरणा चैतन्य देगा। यह 'अनोखा सावन' हमारे लिए सदा संस्मरणीय रहेगा। वे दीर्घायुषी, आरोग्य सपन्न रहे ऐसी शुभकामना करते हुए ऐसा अनोखा सावन जिंदगी में बार बार आए–यह चाह हम नीरावासी रखते हैं।

सौ कल्पना पाटील (निरा)

## जयतीपद

(रचयिता – जिवराज देवचद दोशी, वाल्हे)

थजि जन्माचा उत्सव श्री विमल सूरीचा।
करूनि मुर्दे तोडू आता फेर भवाचा ॥धृ॥

हिरा बहुमोलाचा सुबक वाटतो
दे प्रकाश मर्यादीत मोद दाटतो
निर्जिव परिमारक तो होय तनूचा करूनि ॥१॥

बघता तुज त्याहून ही श्रेष्ठता दिसे
सयम प्रतिपालनात कठिनता वसे
मोले तरि वदनीय होशि जगाचा करूनि ॥३॥

लाभो तुज आयूपूर्ण नित आरोग्यता
विनवी मम वरि प्रभूचरणि ही आता
उज्वल करि पुनरपि जिनधर्म आमुचा करूनि ॥४॥

वीर शके पच्चीशे सहा शुभ महा
भाद्रपवद्य सप्तमी निरेस भव्य हा
उत्सव करि रिखवलाल अतुल सुखाचा करूनि ॥ ५ ॥

देवचद तनय वदा जिवराज मदसा
नमितो पदी तुझ्या मी देइ आशिशा
सुगम दावि मार्ग जना आतमसुखाचा करूनि ॥ ६ ॥

# सौ सौं बार नमन है !

हास्यकवि हजारी लाल जैन 'काका' मु. पो. सकरा (झांसी)

चौथा कालवर्तने लगता हो जाता जिस ओर गमन।
सघ सहित आचार्य विमल सागर को सौ सौ बार नम
सयम और साधना द्वारा सदा ज्ञान की ज्योति जलाइ
युग दृष्टा बनकर के जिनने अधकारमें राह दिखाई,
सत्यशिव का होता हरदम जिनकी वाणीमें दर्शन है,
सघ सहित आचार्य विमल सागर को सौ सौ बार नमन है
जिनके अंतरमें बहती है, वात्सल्य भाव की धारा,
इक्षायें पूरी कर देते, जो निमित्त ज्ञान के धारा,
जिनके दर्शन से होजाता सभी तरह का पाप शमन है,
सघ सहित आचार्य विमल सागर को सौ सौ बार नमन है,
निर्मल नीरनिरा सरिताने लाकर जिनके चरण पखारे,
निरा शहरने घर घर बाधे जिनके खातिर वदन वारे,
ऐसा लगता विमल प्रभूका आया फिरसे समोशरण है,
सघ सहित आचार्य विमल सागर को सौ सौ बार नमन है,
ऐसे परम पूज्य गुरुवरके चरण कमलमें शीस झुकाये,
इनके पदचिन्हो पर जलकर मानवजीवन सफल बनायें,
'काका' तभी सफल हो सकता अपना ये मानव जीवन है,
सघ सहित आचार्य विमल सागर को सौ सौ बार नमन है,

# उद्भव

वर्तमान में चारो ओर धर्म के नाम पर झगडे चल रहे है, कोई मात्र निश्चय नय को ही मानकर स्वच्छन्द होते जा रहे है, कोई माता व्यवहार मय को ही यथार्थ मानकर मात्र क्रियाकाण्ड में ही धर्म मात्र बैठे है। आगम का गहन अध्ययन न होने के कारण परस्पर में कषाय राग द्वेष की वृद्धी कर ससार की वृद्धी करने में लगे है। कुछ लोग कहते है आत्मा मात्र शुद्ध है। कुछका कहना है कि आत्मा अशुद्ध है, कुछ लोग कहते है कि जो होना है वह पूर्व निश्चित है कुछका कहना है कि जैसा पुरूषार्थ करेगे वैसा ही फल मिलेगा।

इस समस्त वादविवादो को समाप्त कर वास्तव मे आगम और अध्यात्म दृष्टि से वस्तु स्वरूप क्या हैं यह वात विना किसी मतभेद के सारे विश्व को, वताने के लिए श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद का उद्भव हुआ है। पर निन्दा हटवाद एव पन्थवादसे यह परिषद हमेशा हमेशा को परे रहेगी।

सत्यतापूर्वक सगठन करते हुये सदाचारी वनेंगे और स्याद्वाद एव अनेकान्तात्मक शिक्षण के माध्यम से अहिंसा परमोधर्म को जीवन मे अपना कर शुद्धत्वको प्राप्तकर सच्चे सुखकी प्राप्ति करेंगे।

जागृति–ज्योतिष शास्त्री जैन दशेन सिद्वान्त एव साहित्य व्याकरणादि विषयो की पढाई पूर्ण होते ही स्वाध्याय प्रारम्भ कर दिया वर्णी जीवन गाथा का उससे दिग् दर्शन हुआ जीवन पथ का, और कुछ शब्द तो घर ही कर गये हृदय मे बदले में वह शब्द थे समाज की रोटियाँ हम खाते है तो उसके उत्थान के लिये हमें कुछ अवश्य ही करना चाहिये। उसी दिन से मन मे विकल्प प्रारम्भ होने लगे कि आत्मोत्थान के साथ-साथ समाजोत्थान कैसे किया जाय। इसी शुभ वेला मे विद्या गुरू मण्डल द्वारा माजी हुई दक्षिणा स्मृत हो उठी वह थी कि हम आपको पढाकर यही चाहते है कि हमारे निमित से आपने जो भी ज्ञान प्राप्त किया है उस ज्ञान को आप जन जन तक पहुँचाये।

तथास्तु कहकर उनके वचनो का समादर किया। प्रतिक्षण वचन हृदय में हलचल मचाते रहे। एक दिन सहसा मन में एक वात आई कि सम्यक्ज्ञान की जागृति के लिये जो कदम उठाये जा रहे है इसमें सफलता तो मिलेगी परन्तु बाधाये भी कम नही आयेगी। मुख पर जो प्रशसा करेंगे पीछे वही जत्र काटने का प्रयत्न करने का प्रयत्न करेगा फिर भी साहस करके युवावर्ग को दृष्टि में रहकर आवाल-वृद्धोमे अनेकात एव स्याद्वादात्मक शैली के माध्यम सम्यग्ज्ञान ज्योति जगाने का निश्चय किया।

स्थापना–अनेको सस्थाओ के अधिकारियो से वात की सम्यग्ज्ञान प्रसार की परन्तु सफलता नही मिली। युवा वर्ग से सम्वन्ध प्रारम्भ कर दिया तो पाया कि युवा

वर्ग बहुत कुछ समझना चाहता है। धर्म के विषय मे बहुत कुछ करने की भावना भी उसके अन्दर छिपी है, परन्तु भयभीत है रूढियो से। सागर नगर में पच-दिवसीय शिक्षण शिविर का आयोजन कराया, जिसमें युवा वर्ग की अभिरूचि को देखकर स्थाई सम्यग्ज्ञान दीप प्रज्वलित रहे। इस भावना से एक सस्था की स्थापना अगहन कृष्णा पन्चमी गुरुवार के दिन दिनाक १-११-१९७७ को कराई जिसका नाम रखा श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद। स्थापना के अनन्तर लगने वाले दो शिक्षण शिबिरो ने भावना को सबल बनाया फलत चतुर्थ शिक्षण शिविर गौरक्षामर एवं पंचम ध्यान साधना शिक्षण शिविर श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में युवायोगी १०८ आचार्य विद्यासागरजी महाराज के तत्वाज्ञान ये आयोजित किया गया।

पचम शिबिर–सागर तृतीय वर्षा योग में अचानक खबर मिली कि आचार्य विद्यासागरजी महाराज को असाद्धरोग ने ग्रसित कर लिया है आपको इसी समय बुलाया है। स्वस्थ होंगे यह आश्वासन देकर उसी समय दशलक्षण पर्व में मैं सागर से नैनागिरजी पहुँचा उनके साता वेदनीय कर्म के उदय से आचार्य श्री को स्वास्थ्य लाभ हुआ।

दीपावली की छुट्टीयो को नजदीक देख मैंने विचार किया कि यहाँ पर एक शिक्षण शिबिर लगाया जाय तो अच्छा होगा। सभा में अपने विचार व्यक्त किये सभी ने अनुमोदना की। साहृय वृद्धीगत हुआ, फलत सप्तदिन का ध्यान साधना शिक्षण शिबिर आयोजित किया गया, जिसमे कुछ कठिनाई तो अवश्य आई, परन्तु सफलता भी अच्छी मिली।

शिक्षण शिबिर में करीवन १५ विद्वानो ने भाग लिया। ५५० युवा छात्रो ने भाग लिया था। सप्त तत्व पर पूज्य आचार्य श्री के प्रवचन हुये थे (सागर में छप चुके हैं) आचार्य श्री के प्रवचन कें समय हजारो की सख्या में भव्यात्माए तत्वज्ञान के लिये एकत्रित होती थी। शिबिर का उद्घाटन साहू श्रेयान्स प्रसादजीके कर कमलो द्वारा हुआ था।

सम्भागीय चयन—पूज्य श्री १०८ आचार्य विद्यासागरजी महाराज के

सानिध्य में शिबिर के समापन के दिन सागर सम्यागीय श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद का चुनाव हुआ। जिसमें सरक्षक समिति के अध्यक्ष समाज रत्न सागरचन्द दिवाकर मंत्री सिघई, जीवन कुमार सागर, विद्युत समिति के अध्यक्ष डॉ पडित श्री पन्नालालजो साहित्याचार्यजी एव मत्री डॉ बम्बूलालजी अनुज वडा को नियुक्त किया गया। युवा कार्य कार्यणी समिति के अध्यक्ष श्री जयकुमारजी चौधरी एव मंत्री श्री जयकुमारजी शास्त्री को चुना गया (वर्तमान में सतोष कुमार जैन निर्मल स्टोर सागरवाले मत्री पद पर काम कर रहे हैं) और भी अनेक पदाधिकारी तथा सदस्यो का चयन हुआ।

मार्गदर्शन --बीना बारहा सागर के पन्च कल्याणक एव गजरथ महोत्सव में प्रस्ताव करते समय महाराजपुर में श्री १०८ आचार्य विद्यासागरजी महाराज से मार्गदर्शन लिया। युवा वर्ग में ज्ञान-ज्योति जागृत करने के लिये उन्होने कहा कि मात्र शिक्षण शिविरो और रात्री पाठशालाओ के माध्यम से पूर्ण ज्ञान का प्रचार कदापि नही किया जा सकता है। आवश्यकता हैं इसके लिए एक नि पक्ष महाविद्यालय की मैंने आचार्य श्री का अर्शीवाद लेते हुए उनके निस्वार्थी हितकारी वचनो को पूर्ण करने का सकल्प किया।

प्रथम अधिवेशन--सागर नगर में परिषद का प्रथम अधिवेशन हुआ, अगहन कृष्णा ३ ४ और पाँचवी रिदिवसीय, जिसमें आगामी अनेको योजनाओ के साथ साथ परिषद का प्रधान कार्यालय सि क्षे सोनागिर जी में रहे और सस्कृत महाविद्यालय की स्थापना भी सोनागिर जी में कराई जावे तथा स्याद्वाद ज्ञान गगा मासिक परिका भी प्रकाशित कराई जावे। किया गया। समुचित योजनाओ को क्रिया रूप देने के लिए केन्द्रीय परिषद का सयोजक सुमति चद शास्त्री मुरेना वालो को चुना गया।

स्रेय --परिषद के माध्यम से पिछले चार वर्षो से धर्म प्रभावना अनेको आयोजनो के माध्यमसे विभिन्न स्थानो पर की गई है। इसका पूर्ण स्रेय समस्त सागर जैन समाज को हैं। जिन्होने तन मन और धन तीनो सम्यग्ज्ञान के प्रसार मे रुचि पूर्वक समर्पित किये। विशेष सहयोग रहा सिंघई जीवनकुमार जी गुलाव चन्द्रजी सराफ पटना वाले। डॉ प पन्नालालजी साहित्याचार्य आदि विद्वान तथा श्रीमान एव युवको के साथ साथ सघस्य समस्त ब्रह्मचारियो एव ब्रह्मचारिणियो को।

सोनागिरजी-- सागर से विहार कर दिया सोनागिरजी की ओर। क्षु गुणसागरजी ब्र जिनेन्द्रकुमारजी, ब्र शिखरचदजी, ब्र जयकुमारजी ब्र जिनेशकुमारजी आदि के साथ विहार करते हुए परिषद की शाखाओ एव पाठशालाओ की स्थान स्थान पर स्थापना करते हुए दिनाक २०।१२।७९ को सिध्दक्षेत्र सोनागिरजी चन्द्रप्रभु भगवान एव आचार्य विमलसागरजी महाराज की शरण मे आकर मन प्रमुदित हुआ।

आश्वासन एव आर्शीवाद-- श्री १०८ आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज एवं समस्त सघ के दर्शन करते ही आनदाश्रुओ को मैं रोकने मे असमर्थ रहा इतना आनन्दित हुआ, मेरा मन भी प्रकट करने के लिए आज कोई शब्द नही है मेरे पास। आचार्य श्री को मैंने समुचित योजनाओ से अवगत कराया उनको सुनकर आचार्य श्री के मुखार विन्द से प्रसन्नता दिखर उठी। और दोनो हाथो से आर्शीवाद देते हुए मुझे गले लगाकर प्रमुदित कन्ठ से बोले। चिंता करने की कोई

बात नही हैं। तुम्हारी सारी की सारी योजनाये सफल होगी और हमारा पूरा सहयोग मिलेगा, इतना सुनते ही कृतहृत्य हो गया मेरा मन आनन्द का सागर उमड पडा।

सस्थायें—आचार्य स्री के आशीर्वाद से मनोबल दिनो दिन वृद्धिगत होता गया फलत परिषद का केन्द्रीय प्रधान कार्यालय सागर से सोनागिर जी नियुक्त हुआ ब्रह्मचार्य आश्रम, छात्रावास नगानग दिगम्बर जैन सस्कृत महाविद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय आदि सस्थाओ की भी स्थापना सोनगिरजी मे कराई। सोनगिर जी में तीन ध्यान साधना शिक्षण शिविर भी आयोजित हुये। जिनमे आबाल वृध्दो को ध्यान साधना के साथ साथ सम्यग्ज्ञान की प्रारभिक रुप रेखाओ से अवगत कराया गया।

सहयोग— सोनागिरजी में जितने भी कार्य हुए हैं इतनी इतनी शीघ्रता से मैं करने में असमर्थ ही था, यह तो आचार्य श्री १०८ विमलसागरजी महाराज के आशीर्वाद एव परम सहयोग से ही सम्पन्न हुये है।

श्री १०८ आचार्य सुमतिसागरजी महाराज, श्री १०८ आ पार्श्वसागरजी महाराज, श्री १०८ आचार्य विद्यासागरजी महाराज, श्री १०८ उपाध्याय भरतसागरजी महाराज, श्री १०८ दर्शनसागरजी महाराज, श्री १०८ मुनि पार्श्व-कीर्तिजी महाराज का सम्यग्ज्ञान के प्रसार के लिये आशीर्वाद प्राप्त हैं।

श्री १०५ क्षु गुणसागरजी, श्री १०५ क्षु सिध्दसागरजी श्री १०५ क्षु तीर्थसागरजी महाराज तथा क्षु अनगमतिजी माताजी का सहयोग भी समय समय पर मिलता रहा हैं।

निर्वाचित अधिष्ठाता श्री ब्र चित्रबाई दिघे, ब्र सुशीलाबाई जी का भी सहयोग मिलता रहा हैं। जिनेन्दकुमारजी (श्री क्षु नगसागरजी) ब्र जयकुमार (श्री क्षु परमसागरजी) ब्र शिखरचदजी ब्र जिनेद्रकुमारजी, ब्र विमल-कुमारजी, ब्र महेशकुमारजी, ब्र सुनीता, ब्र कु अनीता, ब्र कमलेश, ब्र कल्पनादि ने परिषद के शिक्षणादि समस्त कायो मे तनमन एव धन से जो सहयोग अपनत्व की भावना से दिया हैं और भविष्य में देंगे वह अवक्तव्य हैं।

श्री प सुमतिचदजी शास्त्री मुरेना, श्री प श्रीपाल जैन खादो साहब भूसा-वल, श्रीमान सरेन्द्रकुमारजी रानीवाला, श्रीमान रतनलालजी मुरार, श्रीमान सेठ रघ्घुमलजी झासी श्रीमान रमेश चदजी झासी, श्रीमान नेमीचदजी दतिया, श्री महावीर प्रसादजी शिवपूरी, श्री मदनलालजी कटारिया, देवेन्द्रकुमारजी गोधा, श्री पन्नालालजी सेठी डीमापूर, श्री महेन्द्रकुमारजी देहली श्री दिलीप कुमारजी खापरा, श्री दामोदरजी वासवाडा आदि का कार्य एव सहयोग सोनागिरजी मे प्रशसनीय रहा है।

सोनगिरजी मे बिहार— आचार्य विमलसागरजी महाराजने ससघ ९।१।८० को सोनगिर से विहार किया। झासी मे आकर आचार्य श्री ने मुक्तसे कहा कि आपकी बुन्देलखण्ड की यात्रा हो चुकी है, जब तक हम बुन्दलखण्ड की यात्रा करते है तब तक आप सोनगिरजो ही रहो जब हम बाहुबली जी की ओर जायेगे तब आपको साथ में चलना है। तथास्तु कहकर मैं सोनागिरजी आ गया।

सोनगिरजी मे वार्षिक मेलेपर परिषद की ओर से पचदिवसीय शिक्षण शिविर का आयोजित किया गया। महावीर जयती के दिन १०८ मुनि सन्मति भूषणजी महाराज की समाधि सानन्द हुई।

दि १०।४।८० को मैंने सोनागिरजी से विहार कर दिया। झांसी, ललितपुर होते हुए, बीना मे सप्त दिन का शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

विभिन्न स्थानो पर परिषद की शाखाए व पाठशालाओ की स्थापना कराते हुये विदिशा, भोपाल इदौर होते हुए श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज के दर्शन मिले अजड व वडवानी के वीच।

वडवानी से विहार करते हुए मागीतुगी श्री सिध्दक्षेत्र के दर्शन किये। वहाँ के अधिकारियो ने विद्यालय चलाने की स्वीकृति दी।

दि १।६।८० को गजकुमार सहित आठ वलभद्र की पावन सिद्धभूमि गजपन्थाजी आचार्य श्री के सघ सानन्द दर्शन किये। दि २।६।८० को गजपथा (नासिकने) सर्व सम्मीत से स्याद्वाद शिक्षण गजकुमार विद्यालय का उद्‌घाटन ब्र गुणमाला जैन बम्बई के कर कमलो द्वारा मेहताजी की अध्यक्षता में एव खादी साहब के सयोजकत्व में हुआ। मन्त्री वकीलसाहबने विद्यालय को समाज के सहयोग से केन्द्रीय श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद के अन्तरगत चलाने का आश्वासन दिया।

नासिकसे पुना होते हुए दि १८।७।८० को निरा नगर मे घुमधाम से प्रवेश किया। यहाँ के चातुर्मास का श्रेय मनि भक्त रिखबचदजी को हैं।

निरा नगर में श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद की शाखा का चयन कराया। इसी समिति ने चातुर्मास व्यवस्था का भार लिया है। दि २९।७।८०से २०।८।८० तक एक माहका शिक्षण शिविर भी आयोजित हो चुका है। दुसरा शिक्षण शिविर अखिल महाराष्ट्र प्रान्तीय स्तर पर आचार्य श्री की दि २९।१०। से ३।११।८० तक आयोजित किया जा रहा है। वीर शासन जयती अक आचार्य विमलसागरजी जयती अक से निकाला जा चूका हैं और दीपावली अक की भी योजना चल रही है। इन समस्त कार्यों का श्रेय नीरा समाज के साथ साथी मत्री श्री रमणीकलालजी कोठडिया को हैं। जो तन, मन एवं धन से दिन रात सम्यकज्ञान के प्रसार मे सलग्न हैं।

मनोभावना—सोनागिरजी आने से पूर्व परिषद की २५ शाखाएँ और ३० पाठशालाऐ स्थापित हो चुकी थी और इन दो वर्षो मे करीबन २५ शाखाएँ एव पाठशालाओ की स्थापना और भी हो चुकी है। भावना यही है कि जहाँ पर समाज के दस भी घर हैं वहाँ पर परिषद की शाखा एव पाठशाला अवश्य हो ताकि हमारे साथी युवावर्ग एव शिशु वर्ग स्व कर्तव्यो से परिचित हो सके। स्थान स्थान पर प्राथमिक पाठशाला, मिडिल स्कूल, हाईस्कूल, कालेजो की स्थापना कराई जाय। ताकि शिक्षण के साथ साथ स्याद्वादात्मक धर्म भी बताया जाय। विश्व मे फैली हुई अशान्ति को शान्ति रुप परिवर्तित कर सके। सैकडो विद्वान परिषद के माध्यम से निर्मित होकर सम्यग्ज्ञान का प्रसार विश्व के कोने कोने मे ऐसी मेरी मनोकामना हैं। विश्वास भी है कि जब वरिष्ठ आचार्य विमलसागरजी भविष्य-ज्ञानी महाराज का आर्शीवाद एव सहयोग हैं तो मनोभावना सफल निश्चितही होगी। कुछ लोगो को नजाने क्यो यह युवावर्ग का उत्थान सम्यग्ज्ञान का प्रसार पसन्द नही आ रहा हैं, अत वे भी अपने कार्य में सलग्न हैं। मैं भी निश्चित होकर अपने कार्य में लीन हूँ।

स्याद्वाद ज्ञान गगा—युवावर्ग, महिलासमाज, शिशुवर्ग अज्ञानता के कारण दुखी है। भटक रहे है, इन सबको सन्मार्ग दिखाने के लिये अध्यात्म, आगम, आरोग्यता, महिला कर्तव्य युवाजागृति, शिशु चेतना, सामाजिक कुरीतियाँ आदि विषयो को लेकर स्याद्वाद ज्ञान गगा नामक मासिक पत्रिका निकाली जा रही हैं। आशा है इनके माध्यम मे आप सब मिलकर घर घर में सम्यक दीप प्रज्वलित कराने में सहायक बनेगें।

परिषद के उद्देश्य एव विधान का निर्माण श्री सिघई जीवन कुमारजी सागर डॉ पन्नालालजी आहित्याचार्य सागर, सागरचदजी वकील सागर एव कपूरचंदजी एडवोकेट अम्बल वालो द्वारा किया गया हैं।

# श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद की पूर्व जानकारी

मैं सागर विद्यालय में जब शास्त्री अन्तिम वर्ष में था तभी पूज्य क्षु १०५ श्री सन्मति सागर जी महाराज का सागर नगर में १९७६ मार्च माहमें शुभागमन हुआ था।

न्याय एव व्याकरण के गहन अध्यय के साथसाथ आपने युवावर्ग मे धार्मिक जागृति प्रारभ कर दी, न जाने कौनसी शक्ती है आपमे जो युवक कभी धर्म का नाम भी सुनना पसन्द नही करते थे, उन्होने पूज्य क्षुल्लक जी के पास आना प्रारभ कर दिया।

सागर नगर में १९७६ में पूज्य श्री १०८ मुनि आर्यनन्दी जी महाराज पूज्य श्री १०५ परमतपश्वनी आर्यिका राजमती जी एव विजय-मती माताजी के साथ साथ पूज्य क्षुल्लक जी श्री सन्मति सागर जी महाराज का भी चातुर्मास हुआ' आप के साथ मे उस समय ब्र स्री उमेश चन्दजी थे जो अभी श्री १०५ क्षु गुणसागर जी के नाम से प्रसिध्द है। वर्षायोग मे सुमधुर प्रवचनो से सारी नगर मे धार्मिक वातावरण छा गया और सागर नगरी से तीर्थ क्षेत्र सुरक्षा ध्रौव्य फण्डमें करीवन पॉच लाख रूपये का दान दिया।

द्वितीया वर्षायोग में पू श्री १०५ आर्यिका अभयमतीजी एव १०५ श्री सन्मति सागरजी महाराज ने किया इसी वर्षायोगी में पूज्य क्षु जी महाराज ने एक शिक्षण शिविर का आयोजन कराया जिसमे करीवन ५०० युवा छात्रो ने भाग-लिया। कल्पनातीत सम्यग्ज्ञान की जागृति आबाल वृध्द मे हो गयी

स्थापना—श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद की विधिवत

स्थापना अगहन कृष्णापचमी गुरुवार के दिन दि १-११-१९७७ को सागर नगर मे सर्व सम्मति से पूज्य श्री १०५ क्षु सन्मति सागर ज्ञानानन्दजी महाराज द्वारा कराई गई। इसी शुभावसर पर कुमारी कल्पना, कुमारी सुनिता एव कु अनिता जैन ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया और आत्मकल्याण के साथसाथ परिषद के माध्यम में महिला तथा युवावर्ग में धार्मिक जागृति में सहयोग करने का आश्वासन दिया। इससे पूर्व श्रीजिनेन्द्र कुमारजी एव जिनेश कुमार जी होनहार युवक आत्मोत्थान के साथसाथ सम्यग्ज्ञान के प्रसार की भावनासे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले चुके थे।

पिछले वर्षसे युवावर्ग द्वारा पूज्य ज्ञानानन्दजी महाराज के मार्ग निर्देशन अनेको सस्कृतिक आयोजन हो चुके थे। जिनमें सिघई जीवन कुमार जी, गुलाव

चन्दजी पटना वाले, प्रेमचन्दजी कुल्पीवाले, जयकुमारजी चौधरी, अरून कुमार जी सिघई तथा सन्तोष कुमारजी आदि का परम सहयोग रहा।

प्रथम परिषद के चयन मे आदरणीय प डॉ. पन्नालालजी महिलाचार्य अधिष्ठाता, श्रीमान सिघई जीवन कुमार जी एव गुलाबचन्दजी सराफ, सरक्षक पदपर नियुक्त किये गये। अध्यक्षपद जयकुमार चौधरी, मत्रीपद अभयकुमार, सिघई कोषाध्यक्षपदपर, ब्र जिनेन्द्रकुमारजी सयोजक पदपर, सन्तोषकुमार जी सास्कृतिक मत्रीपदपर अरविन्दकुमार एव प्रचार मंत्रीपदपर मुझे नियुक्त किया गया। और भी अनेक पदाधिकारी तथा सदस्यो का चयन किया गया।

पाठशालाएँ – परिषद के अन्तरगत सागर नगर मे विभिन्न स्थानोपर आठ पाठशालाओ का निर्माण हुआ।

जिनमे सैकडो की सभामे छात्रछात्राये तत्त्वज्ञान कर रहे है।

शाखाएँ – सागर नगर से युवकोने नगरान्तर मे धर्म प्रभावना की भावनासे करीव २६ स्थानोपर परिषद की शाखाओकी स्थापना कराई तथा स्याद्वाद शिक्षण पाठशालाओ का भी शुभारभ कराया।

शिक्षण शिविर –परिषद के चयन के अनन्तर सागर नगर मे दो शिक्षण शिविरो का आयोजन हुआ तृतीय शिक्षण शिविरो का आयोजन हुआ तृतीयशिक्षण शिविर गौरव झामर मे आयोजन किया गया, जिसमे ब्र श्री जिनेन्द्र कुमार जी और जिनेश कुमारजी तथा मै स्वय अध्यापन एव उपदेश के लिए गये थे। वहाँ की सफलताने मनोबल की वढा दिया। पचम शिक्षण शिविर का आयोजन श्री सिध्दक्षेत्र नैनागिरीजीमे आयोजन हुआ जिसमे हजारो यूवको ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन श्रीमान सेठ साहु श्रेयास प्रसादजी के कर कमलो द्वारा, ध्वजारोहन राणी मिलवालो द्वारा, एव मगल द्वीप साहू अशोक कुमार जी द्वारा तथा मगलकश्री सेठ लालचन्द जी मागर वालो द्वारा सम्पन्न हुआ

सम्भागीय चुनाव –श्री सिध्दक्षेत्र नैनागिरजी मे
श्री १०८ आचार्य विद्यासागर जी महाराज के मार्गनिर्देशन मे सागर सम्भागीय श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद का चुनाव हुआ, जिसमे सरक्षक समिति के अध्यक्ष सागरचन्द्र दिवाकर मत्री श्रीमान सिघई जीवन कुमारजी, कोशाध्यक्ष श्रीमान गुलाबचदजी पटनावाले। विद्वत समिति के संरक्षक प जगमोहनलालजी शास्त्री अध्यक्ष श्री डॉ पन्नालालजी साहित्याचार्य, मत्री श्री डॉ वाबुलाल अनुज वन्डा वालो को चुना गया। कार्यकारिणी समिति मे अध्यक्ष ली जयकुमार जी चौधरी, मत्री मै स्वय (जयकुमार शास्त्री) सयोजक वीरेन्द्र सिघई। आचार्य विद्यासागर जी महाराज का परिषद को आशीवाद मिला युवावर्ग मे सम्यग्ज्ञान ज्योति जाग्रत करने का।

प्रथम अधिवेशन–सागर सम्भागीय स्थर परपरिपर

का वार्षिक आधिवेशन हुआ जिसमे पूर्व जान कारियो के साथ आगामी अनेक योजनाएँ बनाई। केन्द्रीयस्थर पर परिषद का गठन होने को श्री प सुमती चन्द्रजी शास्त्री मुरेनावालो को सयोजक बनाया और केद्रिय कार्यालय तथा सस्कृत विद्यालय सोनागिर जी स्थापन करने का निश्चय किया गया। ज्ञान प्रसार के लिए स्याद्वाद ज्ञानगगा मासिक पत्रिका निकालने का भी निर्णय लिया गया। बाहर से परिषद की विभीन्न शाखाओ की ओरसे पधारे महानुभावो ने विद्वानो की माँग की अत नवीन विद्वानोके निर्मान के विषय मे भी विचार किया। नवीन पद्धति से छात्रो को परिपद की ओर से धार्मिक कोर्स बनाने कामी निर्णय हुआ जिसके लिए एक समिती निर्माण भी किया गया था।

पूज्य श्री क्षु सन्मती सागर जी महाराज जी का सागरसे सोनगिर जी की ओर विहार हो गया, इसके अननार भी सागर नगर मे धर्म प्रभावना परिषद के माध्यम से पूर्ववत होती रही, तीन शिक्षण शिवीर सागर नगर मे पूज्य महाराज श्री का विहार हो जानेके अनतर भी लगाये जा चुके है। मेरी बाहर सर्विस लग जाने से सागर सम्भागीय परिषद का श्री सतोष कुमार जी को सर्व सम्मति से मत्री बना दिया गया सतोष कुमार जी अच्छे उत्साही युवा है, तनमन एव धनसे परिषद के माध्यमसे सम्यग्ज्ञान के प्रचार में निमग्न है।

सोनागिरजी– सन्माग दिवाकर श्री १०८ आचार्य विमल

सागरजी महाराज श्री के आशीर्वाद से पूज्य क्षल्लकजी महाराज को कार्य कराने मे सोनागिरजी में कल्पनातीत सफलता मिली।

केन्द्रीय कार्यालय एव विद्यालयो की स्थापना सोनागिर जी में सहजमे ही होगई और परिषदकी सभी समितियो का चयन भी पचकल्यानके महोत्सवपर हो चुका है, मुझे भी सास्कृतीक मत्रीपद का भार दे दिया है, यथाशक्ति निभाने का प्रयत्न करूगा।

सोनगिरजी परम पावन सुहाना क्षेत्र है। सागर से जाकर सभी ब्रह्मचारि एव ब्रह्मचारिणियो ने एक वर्ष सोनागिजी सस्कृत विद्यालय मे अध्यय किया है, पूज्य महाराज श्री का विहार हो जाने के कारण अभी सबका अध्ययन सागरमे चालू है।

परिषदके माध्यमसे होनेवाले सोनगिर जी में कार्योकी जानकारी पूर्ण रूपसे पुन देनेका प्रयास करूँगा। परिषद की अभीतक करीबन ५० शाखाएँ एव ६० पाठशालाएँ स्थापित हो चुकी है। इती अलम।

जयकुमार शास्त्री

॥ श्री वीतरागाय नम ॥

# विधान

# श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद

केद्रीय प्रधान कार्यालय सिद्ध क्षेत्र सोनागिर, दतिया ( म. प्र )

पंजीकरण का नम्बर व तिथि ८००८ दि. २१-६-१९७९ ई.

१. नामकरण :— इस परिषद का नाम जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्त स्याद्वादमयी विचार धारा को ध्यान में रखते हुए श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद होगा ।

२. स्थापना —इस परिषद की स्थापना पूज्य १०५ क्षुल्लक सन्मति सागर जी महाराज की प्रेरणासे अगहन वदी पचमी गुरुवार, दि १-११-७७ को सागर नगर में हुई थी ।

३ संस्थापक —श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद के सस्थापक है, पूज्य श्री १०५ क्षु० सन्मति सागरजी महाराज ।

४. परिषद का मुख्य उद्देश्य —श्री दिगम्बर जैन धर्मानुसार अनेकातात्मक वस्तु स्वरूप का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर समस्त देश एव समाज एव विशेषत युवा हृदय मे धर्म के प्रति आस्था कराते हुए अन्दर छिपे अनन्त गुणो का विकास में लाना है ।

५. सामान्य उद्देश्य — १ सच्चे देव, शास्त्र, गुरु एव अनेकान्तमय धर्म पर दृढ श्रद्धा रखना-रखाना ।

२ माता पिता एवं गुरू की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा भक्ति यथा शक्ति करना ।

३ गुणीजनो, विद्वानो एव बडो का समादर करना तथा त्यागी व्रती महानुभावो की व्यवस्था करना एव कराना ।

४ श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद की शाखाये हर नगर व ग्रामो में खुलवाना ।

५ हर ग्राम एव नगर में पाठशालाये वाचनालय एव ध्यान केन्द्र स्थापित कराकर धर्म प्रभावना करना।

६ ज्ञानार्जन हेतु प्रति दिन स्वाध्याय करते हुए ज्ञान क्षेत्र में समय दान दिलाना।

७ ध्यान तथा स्याद्वाद शिक्षण एवं प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन नगर नगरान्तरो में करना, कराना।

८ श्री महावीर की वाणी को देश देशान्तरो में हर मानव तक पहुँचाने का पूर्ण प्रयत्न करना, कराना।

९ आचार्य प्रणीत ग्रन्थो का विकास में लाना एव अनेकान्तात्मक साहित्य को प्रकाशित करना तथा उन पर शोध कराना।

१० युवा वर्ग एवं बाल साथियो के उत्साह वर्धन हेतु व्याख्यान, भजन एव निबन्ध प्रतियोगिताओ का आयोजन करना, कराना।

११ विभिन्न सास्कृतिक आयोजनो के माध्यम से समाज एव देश में धार्मिक रुचि पैदा कराना।

१२ प्रति रविवार को सामूहिक पूजन एव व्याख्यान सभा का आयोजन कराना।

१३ धर्म, शिक्षा, क्षेत्र में योगदान देने वाले एव विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले विद्वानो एवं छात्रो का सम्मान करना।

१४ स्याद्वाद वाणी के प्रचार हेतु स्याद्वाद ज्ञान गगा पत्रिका आदि का प्रकाशन करना।

१५ धार्मिक क्षेत्र में जाति आदि का भेद भाव न रखकर सब मिलकर प्रभावना करना।

१६ ज्ञान दान के प्रति समाज एव साथियो की रुचि जाग्रत कराना।

१७ असहाय छात्र छात्राओ एव गरीबो की सहायता करना उनके शिक्षण आदि की समुचित व्यवस्था करना।

१८ देश और समाज की सेवा करते हुए परस्पर मैत्री भाव रखना।

१९ किसी भी धर्म, जाति, व्यक्ति विशेष की सभा में निन्दा न करना स्याद्वाद के माध्यम से वस्तु स्वरूप की विवेचना करना।

२० सोनागिर जी के अतिरिक्त विभिन्न स्थानो पर विद्यालय एव ध्यान केन्द्रो की स्थापना करना।

२१ युवा वर्ग के साथ महिला समाज में भी धार्मिक जाग्रति लाते हुए उनकी अनन्त शक्ति को प्रकाश मे लाना ।

६. **परिषद का कार्य क्षेत्र** -- परिषद का कार्य क्षेत्र समस्त भूमण्डलान्तरगत होगा ।

७ **प्रधान कार्यालय** --परिषद का प्रधान कार्यालय श्री क्षेत्र सोनागिरजी, जिला दतिया (म प्र.) मे रहेगा ।

८. **उप-कार्यालय** --प्रान्तीय सभागीय जिला एव नगरीय समितियो के कार्यालय उन समितियो के निर्णीय स्थान पर स्थापित किये जावेंगे, मन्त्री के निवास स्थान पर भी उप कार्यालय कार्य की सुविधा दृष्टि से स्थापित किया जा सकेगा ।

९. **साधारण सभा** --अधिष्ठाता, सरक्षक, परम सहायक, स्थाई, सहायक, सरक्षक समिति के सामान्य, कार्यकारिणी समिति, विद्वत समिति, महिला समिति आदि के और श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद के सभी प्रकार के सदस्य साधारण सभा के सदस्य होगें ।

१० **श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद साधारण सभा के अन्तर्गत प्रमुख समितियाँ** --१ अधिष्ठाता समिति । २ सरक्षक समिति । ३ कार्यकारिणी समिति । ४ विद्वत समिति । ५ महिला समिति ।

११. **अधिष्ठाता समिति** --१ श्री गुलाबचद जी सर्राफ पटना वाले (सागर, म० प्र०) । २ इस समिती के वह सब स्थाई सदस्य होंगे जो एक लाख रुपयेसे अधिक की सम्पत्ती परिषद को प्रदान करेगे । ३. निर्वाचित अधिष्ठाता महोदय भी इस समिति के सदस्य होगे ।

१२ **संरक्षक समिति** :--१. इक्यावन हजार रु. (५१०००) से अधिक सम्पत्ति परिषद को दान देने वाले महानुभाव सरक्षक समिति के सदस्य होकर परिषद के स्थाई सरक्षक होगे । २. प्रत्येक जिलेसे एक-एक सदस्य मनोनिती किया जा सकेगा । ३ एक और दो उपनियमो के सदस्यो के अतिरिक्त इक्यावन सदस्य तक संरक्षक समिति में रहेगे । ४. एक स्थाई अधिष्ठाता । ५ एक निर्वाचित अधिष्ठाता । ६. त्यागी वर्ग मे से पाच सदस्य रहेंगे । (५) शेष सदस्यो का चयन सरक्षक समिति के सदस्यो में से अधिष्ठाता समिति करेगी ।

१३ **कार्यकारिणी** -- १ ग्यारह हजार रुपये से अधिक धनराशी परिषद को दान देने वाले महानुभाव स्थाई सदस्य होगे । २. त्यागी वर्ग में से पाच

(५) सदस्य लि ये जावेगें। ३ सरक्षक समिती मे से पाच सदस्य लियें जावेगे। ४ विद्वत समिति मे से पाच सदस्य लिये जावेगे। ५ विशेष योग्यता वाले व परिषद के हितैषियार्थीयो में से पाच सदस्य लिये जावेगें। ६. महिला समिति मे से पाच सदस्य लिये जावेगे। ७ कार्यकारिणी में उपनियम एक की सदस्यता के अलावा मुख्य स्थाई अधिष्ठाता सहित इक्यावन सदस्य होगें। ८ उपर्युक्त २५ सदस्यो का चयन सरक्षक समिती करेगी। ९ शेष पच्चीस युवा १८ से ४० वर्ष तक के सदस्यो का चयन साधारण सभा से अधिष्ठाता समिती की देख रेख में होगा। १० चुनाव में किसी भी प्रकार का विषम्वाद पर अधिष्ठाता मण्डल द्वारा किया हुआ चुनाव सर्वमान्य होगा।

१४ **विद्वत समिति** —१. जिनें अनेकान्तात्मक जैन दर्शन का स्याद्वाद शैली से शास्त्रीय ज्ञान हो, वह विद्वान या आगे करने वाले विद्वत जन इस समिती के सदस्य होगे। २ इस समिती में कार्य सचालन समिती इक्तालीस विद्वानों की होगी।

१५ **महिला समिति** —१ धर्मनिष्ठ योग्य महिलायें इस समिति की सदस्य होगी। २ इस समिति में कार्य सचालन समिति (४१) इक्तालीस सदस्यो की होगी।

१६ **उपसमितीयां** —१ अर्थ व्यवस्था उप समिति। २ सास्कृतिक उप समिती। ३ व्यवस्था उप समिती। ४ प्रचार उप समिति। आदि।

नोट :—प्रति समिती में ग्यारह तक सदस्य रहेगे।

१७ **समितियो की बैठके** —१ प्रत्येक समिति की बैठक वर्ष में कम से कम दो बार अनिवार्य रूप से होगी जो अध्यक्ष महोदय की अनुमति से होगी। २. बैठक की अध्यक्षता समिति का अध्यक्ष करेगा। ३ प्रत्येक प्रस्ताव लेखबद्ध होगा और बहुमत से पास किया जावेगा। ४. आर्ष परम्परा से विरुद्ध कोई भी प्रस्ताव पास नही किया जायेगा। ५ पूर्व की बैठक के प्रस्तावो पर नवीन बैठक में अनुमोदना कराना होगी। ६ बैठक में मन्त्री वि त कार्यों का लेखा जोखा प्रस्तुत करेगा। ७. मीटिंग बुलाने के लिये एक सप्ताह पूर्व सूचना देना आवश्यक होगा। ८ मीटिंग का कोरम १/३ होगा, स्थगित या विशेष आवश्यक मीटिंग के लिये एक सप्ताह की सूचना देना आवश्यक नही। ९ तत्कालीन आवश्यक कार्य विशेष का निर्णय अध्यक्ष मन्त्री सहित पाच सदस्यो की मीटिंग में लिया जा सकेगा। जिसकी पुष्टि कार्यकारिणी में कराली जावेगी। १०. साधारण सभा की मीटिंग स्थाई मुख्य अधिष्ठाता महोदय की अध्यक्षता में होगी तथा शेष समितियो की मीटिंग उन समितियो के अध्यक्षो की अध्यक्षता में होगी।

१८ सदस्य की योग्यतायें '--प्रत्येक समिति के सदस्य के लिए यह भी अनिवार्य होगा कि वह सप्त व्यसनो से विरक्त हो, और अष्टमूल गुणो में प्रीती रखता हो, तथा नित्य देव दर्शन करने वाला हो, सच्चे देव शास्त्र, गुरू में आस्था रखता हो, सदाचारी होकर गुणीजनो के प्रति विनम्र हो।

१९. सदस्यता की विधि --१. निर्धारित राशि जमा करके निर्धारित फार्म भर कर अपने हस्ताक्षरयुक्त कार्यकारिणी में पास करा कर ही सदस्यताग्रहण की जा सकती है। २ कार्यकारिणी बिना कारण बताये फार्म अस्वीकार कर सकती है।

२०. सदस्यता समाप्त '—१ परिषद के नियमो का उल्लघन करने वाले तथा लोकापवादित सदस्य की। २. सदस्यता शुल्क समाप्त हो जाने पर। ३. पागल या मरण हो जाने पर।
नोट '– अनिवार्य योग्यताओ के अभाव में भी सदस्यता कर दी जावेगी।

२१. सदस्यता शुल्क .— १. एक लाख रुपये से अधिक की सम्पत्ति परिषद को दान में देने वाले महानुभाव स्थाई अधिष्ठाता समिति के सदस्य होगे। २. इक्यावन हजार रुपये से अधिक राशि प्रदान करने वाले महानुभाव सरक्षक समिति मे स्थाई सरक्षक रहेगे। ३ ग्यारह हजार से अधिक की धनराशि प्रदान करने वाले महानुभाव कार्यकारिणी के स्थाई सदस्य होगे। ४ पाच हजार रुपये से अधिक धनराशि प्रदान करने वाले महानुभाव परिषद के परम सहायक सम्मानीय सदस्य होगे। ५ एक मुस्त एक हजार रुपये से अधिक धनराशि शक्ति वनुसार प्रति माह अनुदान देने वाले परिषद के सहायक सदस्य होगे ६. एक मुस्त एक सौ एक रुपये १०१) रुपये सदस्यता शुल्क देने वाले महानुभाव परिषद के सामान्य स्थाई सदस्य होगे। ७ ग्यारह रुपये प्रति वर्ष सदस्यता शुल्क में प्रदान करने वाले महानुभाव संरक्षक समिति के सामान्य सदस्य होगे। ८. दो रुपये प्रति वर्ष सदस्यता शुल्क में प्रदान करने वाले महानुभाव परिषद के सामान्य सदस्य होगे।

२२. समितियो के पदाधिकारीगण --१ समितियो के सदस्य अपनो में से ही बहुमत के निर्णयानुसार पदाधिकारियो का चुनाव करेगे २ कार्यकारिणी समिति में दो सरक्षक, एक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एक से पाच तक, एक मन्त्री, दो सहायक मन्त्री, एक कोषाध्यक्ष, एक सयोजक, एक सास्कृतिक मन्त्री, एक प्रकाशन मन्त्री, एक व्यवस्था मन्त्री, एक स्वास्थ्य मन्त्री, एक प्रचार मन्त्री और एक आडीटर तथा एक कार्यालय मन्त्री आदि। ३ शेष समितियो के पदाधिकारी आवश्यकतानुसार रहेगे। ४. सभी मन्त्रीगण एक अपने सहायक मन्त्री पद के लिए नाम प्रस्तावित कर सकेगे।

२३. **समितियो का कार्यकाल** —१ अधिष्ठाता समिति को छोडकर समिती का कार्यकाल ५ वर्ष तथा अन्य समितियो का कार्यकाल ३ वर्ष होगा। २ संरक्षक समिति को अधिष्ठाता समिति को छोडकर शेष समितियो का एक वर्ष का कार्यकाल विशेष परिस्थितियो में बढाने का अधिकार होगा।

२४. **प्रान्तीय संभागीय जिला स्तरीय एवं नगरीय समितियो का गठन** :— परिषद के उद्देश्य की पूर्ति के लिये कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्मित नियमो के अनुसार प्रान्तीय सभागीय, जिला स्तरीय एव नगरीय समितियो का गठन किया जा सकेगा और वे सब समितिया सरक्षक समिति के मार्ग दर्शन में कार्य करेगी।

२५. **चल एवं अचल सम्पत्ति** —१. सम्पूर्ण अचल सम्पत्ति, ध्रौव्य फण्ड, विद्यालय पत्रिका एव एक लाख से अधिक की धनराशि सरक्षक समिति के अन्तर्गत रहेगी। २ मुख्य स्थाई अधिष्ठाता की सलाह से ही अचल एव चल सम्पत्ति में परिवर्तन किया जा सकेगा ३. बैंक में सरक्षक समिति एव कार्यकारिणी समिति का खाता पृथक् पृथक् रहेगा। ४ बैंक से पैसा निकालने हेतु स्थाई मुख्य अधिष्ठाता के चैक पर हस्ताक्षर अनिवार्य होगे। ५. सरक्षक एव कार्यकारिणी समिति का कोषाध्यक्ष एक ही रहेगा।

# कर्तव्य एवं अधिकार

२८. **साधारण सभा के कर्तव्य एवं अधिकार :**—१. साधारण सभा अपने में से पाच वर्ष के लिए एक अधिष्ठाता का निर्वाचन साधारण सभा की खुली मीटिंग में बहुमत से करेगी। २ निर्वाचित अधिष्ठाता महोदय की आयु कम से कम ५० वर्ष की होगी। ३. प्रौढधर्मानुरागी एवं अनेकान्तवादी सदस्य को ही अधिष्ठाता बनाया जा सकेगा। ४. परिषद सस्थाओ के हितो मे कार्यकारिणी सुझाव देगी। ५ कार्यकारिणी द्वारा पेश किये प्रस्तावो को पास करेगी। ६. कार्यकारिणी के लिये २५ युवा सदस्यो का चयन करने का अधिकार साधारण सभा को रहेगा।

२९. **अधिष्ठाता समिति के कर्तव्य एवं अधिकार**.—१ परिषद में होने वाले कार्यों का समय-समय पर निरीक्षण करना। २. विशेष आमंत्रण पर मीटिंगो मे भाग लेना। ३. सरक्षक समिति का चयन करना। ४ कार्यकारिणी समिति का चयन करना। ५. चुनाव में अव्यवस्था होने पर कार्यकारिणी के चुनाव का अधिकार भी अधिष्ठाता समिति को होगा।

३० **सरक्षक समिति के कर्तव्य एवं अधिकार** —१. अचल सम्पत्ति ध्रौव्य फन्ड एव एक लाख से अधिक राशि तथा परिषद द्वारा सचालित विद्यालय आदि की पूर्ण सुरक्षा रखना। २ एक वर्ष मे सस्थाओ के खर्च की सम्भावित राशि के व्यय का बजट पास करना। ३ परिषद के अन्तर्गत चलने वाली सस्थाये एव समितियो का समय पर निरीक्षण करना। ४. कार्शकारिणी के लिये समितियो का समय पर निरीक्षण करना। ५. विद्यालय सचालन हेतु समिति का चयन करना। ६ अव्यवस्था होनें पर विद्यालय समिति को भगकर कार्य अपने हाथ में चुनाव करने तक रखना। ७. कार्यकारिणी में अव्यवस्था होनें पर भग करने का अधिकार संरक्षक समिति को होगा। ८ कार्यकारिणी भग होने पर कार्य सरक्षक समिति के हात में रहेगा। ९ कार्यकारिणी का चुनाव एक वर्ष के अन्दर करना होगा। १०. कार्यकारिणी की अवधि में एक वर्ष घटाने या बढानें का अधिकार सरक्षक समिति को होगा।

३१ **कार्यकारिणी समिति के कर्तव्य एवं अधिकार** — परिषद के समस्त उद्देश्यो की पूर्ति करना। २ कार्यकारिणी के पदाधिकारियो का चयन करना। ३ कार्यक्षेत्र के अनुकूल उप समितियो का चयन करन। ४. कार्यकारिणी एवं अन्य समितियो में होने वाले व्यय के लिए बजट पास कराना।

५ स्याद्वाद ज्ञान गगा पत्रिका की समुचित व्यवस्था करना। ६, कर्मचारियो की नियुक्ति पास करना तथा अनुचित कार्य करने पर उन्हे पृथक करना। ७ सदस्यता हेतु भरे हुए फार्मो का निरीक्षण कर उन्हे स्वीकृत करना। ८. परिषद के अन्तर्गत चलने वाली सस्थाओ मे अव्यवस्था होने पर उनकी व्यवस्था करना। ९ कार्यकारिणी अपनी राय से एक वर्ष मे १० हजार रुपये तक खर्च कर सकेगी। १०. किसी भी सदस्य एव कार्यकारिणी के पदाधिकारियो को (मीटिग मे) कारण बताने पर पृथक करने का अधिकार कार्यकारिणी के ३/४ सदस्य को मीटिंग में होगा।

३२ **विद्वत समिति के कर्तव्य एव अधिकार**--१. अनेकान्तात्मक वस्तु स्वरूप को स्याद्वाद शैली से जन जन तक पहुचाना। २. सदाचार एव धर्म-प्रचार हेतु विभिन्न स्थानो पर ध्यान शिक्षण एव प्रशिक्षण शिवरो का आयोजन कराना। ३ पर्यूषण पर्व आदि शुभावसरो पर विद्वानो को विभिन्न स्थानो पर धर्मोपदेश हेतु भेजना। ४ विद्यालय, पाठशालाओ एव वाचनालयो की स्थापना कराना। ५. स्याद्वाद-मय विचार धारा से सम्बन्धित साहित्य को प्रकाशन मे लाये जाने का प्रयत्न करना। ६. पाठशालाओ एव विद्यालयो के लिये पाठ्यक्रम निश्चित करना। ७ स्वाध्याय के प्रति युवा वर्ग की रुचि जाग्रत करना-कराना। ८ स्याद्वाद ज्ञान गगा पत्रिका का घर २ मे स्वाध्याय प्रारम्भ कराना। ९ शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु कार्यकारिणी को सलाह देते रहना। १०. अपनी राय से ५ हजार रुपये तक शिक्षा क्षेत्र में खर्च करने का अधिकार विद्वत समिति को रहेगा जिसकी जानकारी कार्यकारिणी में भेजनी होगी।

३३ **महिला समिति के कर्तव्य एव अधिकार**.-- १. मुख्य स्थाई अधिष्ठाता महोदय के नेतृत्व में समस्त महिला सदस्य (४१) इकतालीस महिलाओ की श्री स्याद्वाद शिक्षण महिला समिति का चयन करना। २. महिलाओ को सुसंगठित बनाने के लिये प्रति नगर एव ग्रामो में महिला समितियों की स्थापना करना। ३ महिलाओ को सुशिक्षित बनाने के लिये महिलाओ में स्वाध्याय के प्रति रुचि जाग्रत कराना। ४. बाल ब्रह्मचारिणी असहाय परित्यक्ता, एव विधवा महिलाओ की यथाशक्ति समुचित अध्ययन आदि की व्यवस्था करना। ५ भावी पीढी सदाचारी बनें इसलिये महिलाओ को सदाचार एव सादगी की शिक्षा देना। ६. महिला सुधार क्षेत्र में एक हजार रुपये तक खर्च करने का अधिकार महिला समिति को रहेगा। इसकी सूचना कार्यकारिणी में देना अनिवार्य है।

३४ **उप समितियों के कर्तव्य एवं अधिकार**:-- १ महामन्त्री या अपने सयोजक के बत[illegible] सभी उप समितिया तद्-तद् क्षेत्र में कार्य करेगी।

२. बजट पास किये हुए राशि के अलावा (२००) रु तक परिषद के हित में अधिक खर्च करने का अधिकार उप समितियो को रहेगा जिसकी पुष्टि कार्य-कारिणी में करानी होगी।

३५ स्थाई मुख्य अधिष्ठाता के कर्तव्य एवं अधिकार — १ परिषद के उत्थान एव विकास हेतु समितियो को निर्देश देना। २ चैक पर हस्ताक्षर करना। ३ साधारण सभा की अध्यक्षता करना। ४. परिषद की मीटिंगो में भाग लेना। ५ अनुचित व्यवहार करने वाले किसी भी पदाधिकारी या सदस्य को पृथक् करने का अधिकार अधिष्ठाता महोदय को होगा।

नोट —— मुख्य स्थाई अधिष्ठाता महोदय की उचित सलाह सर्वमान्य होगी।

३६ निर्वाचित अधिष्ठाता के कर्तव्य एवं अधिकार —— १ परिषद के उत्थान हेतु समितियो के अध्यक्ष एव मन्त्रियों को परामर्श देना। २ शिविर के प्रमाण पत्रो पर हस्ताक्षर करना। ३ समितियों मे अव्यवस्था होने पर समन्वय स्थापित करना। ४ परिपप के समस्त कार्यो पर नियन्त्रण करना। ५ समितियो की बैठको मे विशेष आमत्रण पर भाग लेना तथा स्थाई मुख्य अधिष्ठाता की अनुपस्थिति में उसके सभी कार्य करना।

३७. संरक्षक के कर्तव्य एवं अधिकार —— १ परिपद मे होने वाले प्रति कार्य मे भाग लेना। २ उचित परामर्श देते रहना। ३. समस्त कार्यो का निरीक्षण करते रहना। ४ समुचित परिपद की सुरक्षा बनाये रखना। ५. अव्यवस्था करने वाले किसी भी सदस्य को कार्यकारिणी की मीटिंग तक पृथक् करने का अधिकार सरक्षक को होगा।

३८. अध्यक्ष के कर्तव्य एवं अधिकार —— १ प्रत्यक समिति का अध्यक्ष अपनी समितियो की मीटिंग की अध्यक्षता करेंगे। २. नियमानुसार या आवश्यकतानुसार मीटिंग बुलाने के लिए मन्त्री को निर्देश देना। ३ कार्यकारिणी का अध्यक्ष कार्यकारिणी की देखरेख के साथ साथ सभी उपसमितियो का निरीक्षण करेगा। ४ परिषद के हित मे या उद्देश्यो की पूर्ति हेतु मन्त्री को (सलाह) परामर्श देना। ५ चैक आदि पर हस्ताक्षर करना। ६. कार्यकारिणी समिति के कार्यो की पूर्ण जानकारी रखते हुए उन पर पूर्ण नियन्त्रण रखना। ७. मीटिंग मे समान मत आने पर अध्यक्ष का निर्णय सर्वमान्य होगा। ८ अध्यक्ष अपनी राय से पाच-सौ रुपये तक परिषद के हित में खर्च करा सकेंगे, उसकी जानकारी-कार्यकारिणी में देना अनिवार्य होगा।

३९. उपाध्यक्षो के कर्तव्य एव अधिकार --१ परिषद के कार्यो मे यथा समय भाग लेना। २. समिति एव मन्त्रियो को उचित कार्य हेतु परामर्श देना ३ मीटिंगो मे भाग लेना। ४ अध्यक्षो की अनुपस्थिति में उनका सम्पूर्ण कार्य करना ५ अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्ष के सम्पूर्ण कर्तव्य एव अधिकारो का उपयोग करना।

४० संरक्षक समिति के मन्त्री के कर्तव्य एव अधिकार -- १ परिषद म चलने वाली समस्त सस्थाओं एव शाखाओं के कार्य का निरीक्षण करना। २ सभी समितियो के मन्त्रियो को उचित परामर्श देना। ३ कार्यकारिणी के बजट में ५ हजार रुपये तक वृद्धि करने का अधिकार होगा।

४१ कार्यकारिणीसमिति मन्त्री के कर्तव्य एव अधिकार --१ कार्यकारिणी के सभी कार्य करना। २. उपसमितियों एव अन्य मन्त्रियो को कार्य हेतु निर्देश देना। ३ अध्यक्ष के निर्देशानुसार या आवश्यकता होने पर कार्यकारिणी या सभी समितियों की मीटिंग बुलाना। ४ शासकीय सभी कार्य करना। ५ कार्यकारिणी की ओर से पत्र व्यवहार करना। ६ स्याद्वाद ज्ञान गगा पत्रिका का प्रकाशन कराना। ७ परिषद के हित मे सरकार से उचित सुविधाएँ लेना। ८ बिल, चैक, वाउचर, रजिस्टर, बही खाते इत्यादि कागजातो का निरीक्षण करना। ९ कार्य-कारिणी द्वारा पास प्रस्तावों को क्रियान्वित करना। १० आवश्यकता होने पर अध्यक्ष के परामर्श से कर्मचारी की नियुक्ति करना। इसकी सूचना कार्यकारिणी में देना। ११ नियमो का उल्लघन करने वाले किसी भी सदस्य छात्र या कर्म-चारी को पृथक् करने का अधिकार होगा। १२ बजट पास के अलावा अपनी राय से परिषद के हित में दो सौ रुपये २००) रुपये तक खर्च करने का अधिकार महामन्त्री को होगा।

४२ विद्वत समिति मन्त्री के कर्तव्य एव अधिकार --१ अध्यक्ष के निर्देश से मीटिंग बुलाना। २ परिषद के शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्यो की पूर्ति कराना। ३ शिविरो की योजना बनाना। ४ विद्यालयो एव पाठशालाओ का निरीक्षण करना ५ परिषद के सदस्य कार्यो में भाग लेना। ६ श्री स्याद्वाद ज्ञान गगा पत्रिका को प्रगतिशील एव युवा हृदयग्राही बनाना। ७ शिक्षा प्रसार एव प्रचार सम्बन्धी कार्यकारिणी को परामर्श देना। ८ विद्वानो की नियुक्ति करना। ९ शिक्षा मन्त्री के सभी कर्तव्य एवं अधिकार भी विद्वत समिति के मन्त्री को रहेगें। १० १००) रुपए (सौ रुपए) तक शिक्षा क्षेत्र में अपनी राय से व्यय करने का अधिकार होगा।

४३. **महिला समिति मन्त्री के कर्तव्य एवं अधिकार** .— १, अध्यक्ष के निर्देशानुसार या आवश्यकतानुसार मीटिंग बुलाना। २. महिला शक्ति उद्घाटन हेतु महिला सम्मेलन कराना। ३. महिला समाज सगठित हो इसलिए स्थानस्थान पर महिला समितियो का चयन कराना। ४. श्री स्याद्वाद ज्ञान गगा पत्रिका के माध्यम से सदाचार एव सादगी की शिक्षा दिलाना। ५. प्रति नगर एव ग्रामो में, महिलाओ मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति प्रारम्भ कराना। ६ महिला समाज को सुशिक्षित बनाने का प्रयत्न करना-कराना। ७ परिषद के योग्य कार्यों में सहयोग देना। ८. सौ रु. (१००) तक महिला जाग्रति हेतु खर्च करने का अधिकार होगा।

४४. **सहायक मन्त्रियो के कर्तव्य एवं अधिकार** --१ रिकार्ड तैयार करना। २. मन्त्रियो के परामर्श से अन्य कार्य करना। ३ मन्त्रियो के कार्यो में सहयोग देना। ४. मन्त्रियो की अनुपस्थिति में सभी कार्य करना। ५ मन्त्रियो की अनुःपस्थिति में उनके सभी कर्तव्य एव अधिकारो का उपयोग करना।

४५ **कोषाध्यक्ष के कर्तव्य एवं अधिकार** — १. परिषद के समस्त धन को सुरक्षित एव व्यवस्थित बैंक में जमा रखना। २ आय-व्यय का पूर्ण हिसाब रखना ३. मन्त्रियो द्वारा स्वीकृत बिलो का भुगतान करना। ४. समिति व उप-समितियो द्वारा एकत्रित राशि को बैंक मे जमा करना। ५. मुख्य स्थाई अधिष्ठाता महोदय के साथ अध्यक्ष मन्त्री या स्वत. के हस्ताक्षर चैक पर कर बैंक से राशि निकालना। ६. परिषद के समस्त कार्यों में सहयोग देना। ७. अनावश्यक खर्चों पर हस्ताक्षेप करना। ८. एक हजार रुपयेतक अपने पास रखना शेष २४ घन्टे मे बैंक मे जमा करना।

४६. **संयोजक के कर्तव्य एवं अधिकार** --१ मन्त्रियो के सभी कार्यो में सहयोग देना। २. मन्त्री द्वारा बताये गये कार्यो को करना। ३ सदस्यता के लिये प्रवेश फॉर्म भरवाना। ४ परिषद के अधिवेशन आदि कार्यो की व्यवस्था बनवाना। ५. परिषद के सभी कार्यों की देखरेख करना। ६ अपनी राय से १०० रुपये तक खर्च करनें का अधिकार होगा।

४७ **सांस्कृतिक मन्त्री के कर्तव्य एवं अधिकार** —१ श्रमण सस्कृति के प्रचार हेतु व्याख्यान-सभाओ का आयोजन करना। २ तत्त्वज्ञान हेतु निबध प्रति-योगितायें आदि कराना। ३ सांस्कृतिक कार्यक्रमो (नाटक, सगीत, प्रदर्शनी एव अन्य मनोरजन साधनों) के द्वारा जनता को आकर्षण कर तत्त्वज्ञान के प्रति अभिरूचि कराना। ४. सास्कृतिक कार्यक्रम की योजनाओ की रूपरेखा

महाविद्यालय में एव पाठशालाओ तथा सभी शाखाओ को देना। ५ सौ रुपयें १००) रुपये तक अपनी राय से खर्च करने का अधिकार होगा।

४८ **प्रकाशक मन्त्री के कर्तव्य एवं अधिकार** --१. परिषद के उद्देश्यो की पूर्ति के लिये अनेकान्तात्मक साहि य का प्रकाशन करवाना। २. स्याद्वाद ज्ञान गगा पत्रिका का प्रकाशित कराना। ३. मन्त्री के परामर्श से प्रेम सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य कराना। ४ ऐसी लघु पुस्तिकायें भी प्रकाशित कराना जिसके माध्यम से युवा हृदय परिवर्तन हो। ५ सौ रुपये १००) रुपये तक अपनी राय से खर्च करने का अधिकार होगा।

४९. **व्यवस्था मन्त्री के कर्तव्य एवं अधिकार** --१. मन्त्री के कार्यो यें सहयोग देना। २ मन्त्री के बनाए हुए कार्य करना। ३. स्टेज आदि को कार्यक्रमो के समय समुचित व्यवस्था करना। ४. परिषद के उपकरणों की समुचित व्यवस्था करना। ५. १००) रुपयें सौ रुपये तक खर्च करने का अधिकार होगा।

५०. **स्वास्थ्य मन्त्री के कर्तव्य एवं अधिकार** -- १ सभी को आरोग्यता प्रदान करना। २ प्रकृति के अनुकूल आहार बिहार की सलाह देना। ३. किसी भी असहाय या सदस्य को रोगग्रसित देखकर उसकी उचित व्यवस्था एव इलाज करना एव कराना। ४ हैल्थ वर्धक ध्यान एव प्राणायाम आदि के शिबिरो का आयोजना कराना। ५ परोपकार की भावना से नेत्र चिकित्सा आदि शिविरो का आयोजन करना तथा औषधालयो की स्थापना करवाना। ६. १०० रुपयें सौ रुपये तक अपनी राय से खर्च करने का अधिकार होगा।

५१. **प्रचार मन्त्री के कर्तव्य एवं अधिकार** — १ प्रत्येक समिति के प्रचार मन्त्री का उत्तरादायित्व होगा कि वह परिषद के उद्देश्यो की पूर्ति के लिये प्रचार सामग्री व सभी प्रकार के आयोजनो द्वारा प्रचार कर देश में सदाचार पद्धति के लिये प्रयत्न करेगा। २ कार्यकारिणी में कोई भी प्रस्ताव पास होने पर उसकी सूचना अखबारो के माध्यम से देना। ३ कार्य सम्पन्नता की सूचना अखवारो के माध्यम से देना। ४ प्रचारको को प्रचार हेतु नियुक्त करना। ५ १००) रुपये सौ रुपये तक खर्च करने का अधिकार होगा।

५२. **आडीडर चैंकिग के कर्तव्य एव अधिकार** --१ परिषद का हिसाव चैंकिग करना। २. हिसाब में त्रुटिया होने पर रजिस्टर में नोट लगाना। ३. आगे विधिवत हिसाब की रूपरेखा समझाना हिसाव में जालसाजी होने पर उसकी रिपोर्ट कार्यकारिणी में प्रस्तुत करना।

५३. **कार्यालय मन्त्री मैनेजर के कर्तव्य एवं अधिकार** --१. कार्यालय की समुचित व्यवस्था करना। २. मन्त्री की आज्ञानुसार कार्यों की पूर्ति करना। ३ आय व्यय का हिसाब रखना। ४ वही खाते में खतौनी करना। ५. परिषद के चल एव अचल सम्पत्ति की देखभाल एव सुरक्षा करना। ६ भवन आदि की टूट फूट होने पर मन्त्री के परामर्श से सुधार कराना। ७ परिषद के कार्यों मे किसी प्रकार का व्यवधान या अकस्मात आपत्ति आ जाने पर मन्त्री को सूचना देना या यथोचित उपाय करना। ८ परिषद के हित में १००) रुपये सौ रुपये तक खर्च करने का अधिकार होगा जिसकी पुष्टि मन्त्री महोदय से करानी होगी।

५४. **कानूनी कार्यवाही** --१ इस संस्था से सम्बन्धित वाद-विवाद के झगडे कार्यकारिणी समिति द्वारा बहुमत से तय किये जावेंगे। २ बहुमत समान होने पर अध्यक्ष का मत निर्णयात्मक होगा। ३. निर्णय हो जानें पर वाद में कोई भी पक्ष कानूनी कार्यवाही का सहारा नही लेगा। ४ अन्य अदालती झगडे श्री स्याद्वाद शिक्षण परिपद के नाम से चलाये जायेंगे। ५. परिषद के पदाधिकारियो की व्यक्तिगत त्रुटियो की कार्यवाही व्यक्ति के नाम से की जावेगी। ६. परिपद की ओर से सरक्षक समिति की मन्त्री या महामन्त्री सभी प्रकार की कार्यवाही करेगा। ७ किसी भी प्रकार के मुकद्दमे आदि को कार्यकारिणी या संरक्षक समिति की सलाह से ही प्रारम्भ या समाप्त किया जा सकेगा। ८. कानूनी अदालती कैसे भी कार्य मन्त्री के ऊपर निर्धारित रहेंगे।

५५. **आय** :--१ अर्थ आय के साधन समस्त दिगम्बर जैन समाज से जुटाये जायेंगे। २ अर्थ आवश्यकता होने पर चन्दा द्वारा अर्थ एकत्रित किया जावेगा। ३ आय श्रोत परिषद के सभी सदस्य भी रहेगें।

५६. **व्यय** .--१. कोष को दृष्टि मे रखकर ही व्यय किया जावेगा। २. अनावश्यक दिखावे में पैसा खर्च नही किया जायेगा। ३ कार्यकारिणी द्वारा पास बजेंट से अतिरिक्त व्यय नही किया जायेंगा। ४. आवश्यक कार्यों में विवेकपूर्वक ही व्यय किया जावेगा।

५७. **सस्थापक की विशेष शक्ति** --१ यदि किन्ही परिस्थितियो में परिषद अपने मूल उद्देश्य से च्युत होती है अथवा अन्य कोई अव्यवस्था ऐसी उत्पन्न होती है जिसमे परिषद को किसी भी प्रकार क्षति हो सकती है ऐसी परिस्थिति में श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद के सस्थापक परमपूज्य श्री १०५ क्षुल्लक सन्मति सागर जी महाराज के आदेश सर्वमान्य होगे। २. सस्थापक के पश्चात उनके

उत्तराधिकारी जो श्रमण सस्कृति के अनुसार शिष्य परम्परा में होगे उनके आदेश सर्वमान्य होगे। ३ सस्थापक महोदय एव उनके उत्तराधिकारी के अनन्तर मुख्य स्थाई अधिष्ठाता की उचित आज्ञा सर्वमान्य होगी।

नोट --स्थाई मुख्य अधिष्ठाता की नियुक्ति एव परिव न सस्थापक महोदय द्वारा किया जावेगा। १. परिषद के अन्तरगत सचालित किसी भी विद्यालय में हिंसात्मक शिक्षा प्रारम्भ नही की जा सकेगी।

५८ विधान में परिवर्तन करने की शक्ति :--१ सरक्षक समिति के बहुमत के निर्णयानुसार आवश्यक परिस्थितियो में परिषद के विधान के नियमों में परिवर्तन होने पर उनको सूचना पजीयक को भेजनी होगी।

५९ शपथ --१ परिषद के समितियो के पदाधिकारियो को देवशास्त्र गुरू की साक्षी पूर्वक शपथ लेनी होगी कि मैं प्रतिज्ञा करता हू कि सत्य निष्ठा के साथ अपने-अपने पद का निर्वाह करूगा। २ शपथ मुख्य स्थाई अधिष्ठाता महोदय दिलायेंगे। ३. शपथ के साथ साथ लिखे हुए प्रतिज्ञा-पत्र पर सभी को हस्ताक्षर भी करने होगे।

६०. विशेष --१. सिद्ध क्षेत्र सोनागिर जी मेले के शुभ अवसर पर परिषद का वार्षिक खुला अधिवेशन अवश्य होगा। २ वार्षिक अधिवेशन में आय-व्यय का हिसाब समाज के समक्ष पेश किया जायगा। ३ नैमित्तिक अधिवेशन विशेष अवसरो पर किये जावेंगे। ३. अधिवेशनो में पूर्वकालीन कार्यों की रूपरेखा व्यक्त कर आगामी योजना बनाना और उचित प्रस्तावो को पास कराकर क्रियान्वित करने का सकल्प किया जावेगा। ५. प्रति वर्ष वार्षिक या नैमित्तिक अधिवेशनो में एक या एक से अधिक विद्वानो को सम्मानित तथा पुरस्कृत अवश्य किया जावेगा। ६ विशेष योगदान देने वाले या विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले श्रीमानो एव छात्रो का भी अभिनन्दन अधिवेशनो में किया जावेगा। ७. अधिवेशनो या मीटिंगो में आमन्त्रित विद्वानो को मार्ग व्यय दिया जावेगा। ८ परिषद में किसी भी प्रकार आपस विषमवाद होने पर अधिष्ठाता मण्डल का निर्णय सर्वमान्य होगा। ९ वार्षिक रिपोर्ट प्रतिवर्ष प्रकाशित कराई जावेगी।

१० सभी कागजात पूर्व रिकार्ड कार्यालय में रहेगा। ११ एक रिपोर्ट रजिस्टर कार्यालय में रहेगा, जिसमें अपनी-अपनी सम्मति तथा शिकायत सर्व-मान्य सदस्य लिये जा सकेंगे। १२ रिक्त स्थान होने पर किसी भी समिति से सदस्य या पदाधिकारियो की पूर्ति मीटिंग में की जा सकती है।

नोट -- चुनाव होने के अनन्तर समितियो के सदस्य एव पदाधिकारियो की नामावली पजीयक रजिस्टर में दर्ज की जावेगी और एक कॉपी पंजीयक महोदय के पास भेजी जावेगी।

६० सस्था का विघटन सधारण सभा मे सदस्यो के ३/५ तीन बटा पाच मत से किया जा सकेगा। विघान के पश्चात अधिनियमो के प्रावधानो के अनुसार शेष सम्पत्ति संस्थापक महोदय द्वारा सस्थापित किसी समान उद्देश्य वाली सस्था को सोंपी जावेगी। इस सम्बन्ध की समस्त कार्यवाही अधिनियमो के प्रावधानो के अनुसार की जावेगी।

स्याद्वाद सम धर्म नहि नही ज्ञान स दान।
सत्य समान न कीर्ति जग शील समान न शान।

१ एकान्तवाद, मिथ्या है।
२ एकान्तवाद को शीघ्र तजेंगे।
भक्तो स भगवान बनेंगे।
३ स्याद्वाद को ध्यायेंगे।
मोक्ष लक्ष्मी पायेंगे।

॥ ॐ जय शान्ति ॥

# स्याद्वाद वंदना

सिद्धात की डगर पर हमको दिखाना चलके ।
यह धर्म है हमारा, धारेंगे ईश बढके ।।
एकान्तवाद तजकर भव कूप से बचेंगे ।
दे स्याद्वाद माता–अमृत जु रस पियेंगे ।।

है देव शास्त्र गुरुवर जितने भी पूज्य हमारे,
उनको विनय करेंगे, काटेगे पाप सगरे ।।
दुर्व्यसन से बचेंगे, सद आचरण करेंगे
माता, पिता की सेवा गुरु वचन उर धरेंगे ।।

यूरोप चीन आदि, जितने भी देशवासी ।
रखि साम्य भाव सब पर देवेंगे धर्म राशी ।।
दुखियो का दुख हरने, हरदमखडे रहेंगे ।
हो सामने जो शत्रु, उनसे भी न डरेंगे ।।

कर्त्तव्य पूर्ण करने, मुक्ति सु पथ गहेंगें ।
मनि भेष धार वन में, वसु कर्म से लडेंगे ।
ले भेद ज्ञान आयुध, " सन्मति " सदा लखेंगे ।
पर भाव को हटाके, मुक्ति रमा वरेंगे ।।

**एकान्तवाद, मिथ्या है ।**
**एकान्तवाद को शीघ्र तजेंगे,**
**भक्तों से भगवान बनेंगे ।**
**स्याद्वाद को ध्यायेंगे, मोक्ष लक्ष्मी पायेंगे ।**

श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद्

अहिंसा परमो धर्मः

श्री स्याव्दाद शिक्षण परिषद का उद् भव
एवं विधान